Paryavaran Chetna Vol. 8 2001-02 No. 3-8, 12

पर्यावरण चेतना

पर्यावरण की एकमात्र राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

वर्ष 8 जुलाई 2001 अंक 3

बढ़ता बोझ
कराहती धरती

बढ़ती जनसंख्या पर नवीनतम एवं विस्तृत रपट

- अद्भुत जीव चींटियां
- मछलियों का शिकारी पक्षी–मछरंग
- जलवायु परिर्वतन के दुश्चक्र में भारत
- परम गुणकारी सीताफल

मूल्य 25 रू

पर्यावरण चेतना

पर्यावरण संचेतना की एक मात्र
राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष : 8 जुलाई अंक : 3

☐ सम्पादकीय कार्यालय : सी-5 दिलकुशा कालोनी लखनऊ, फो-482288
☐ लखनऊ कार्यालय : कीर्ति शिखर अपार्टमेंट, छितवापुर भुईय्यन देवी मार्ग, निकट विकास दीप बिल्डिंग, स्टेशन रोड, लखनऊ, फो–636282
☐ रजिस्टर्ड कार्यालय : बी-1/12 सेक्टर डी–1, कानपुर रोड योजना, लखनऊ, फोन-436767
☐ मुद्रक : उज्जवल प्रिन्टर्स, खुर्रम नगर, लखनऊ फोन - 329138

अनुक्रमणिका

पर्यावरण चेतना

हिन्दी मासिक पत्रिका

दिल्ली प्रदेश एवं हिमाचल प्रदेश के शिक्षा विभाग तथा उत्तर प्रदेश शासन के वन विभाग, स्थानीय निकाय, शिक्षा विभाग, ग्राम्य विकास एवं पंचायत राज विभाग द्वारा अनुमोदित

पर्यावरण संचेतना के प्रसार के क्षेत्र में प्रयासरत राष्ट्र भाषा हिन्दी की एकमात्र पत्रिका

विश्व प्रकृति की धरोहर एवं वसुन्धरा के अनुपम वरदानों की रक्षा हेतु
पर्यावरण संरक्षण के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के महायज्ञ में आपकी सहभागिता अपेक्षित है।

"पृथ्वी मां का ऋण लौटायें, विश्व प्रदूषण मुक्त बनायें"

❁ मुख्य कार्यालय : पर्यावरण चेतना परिसर, पिकनिक स्पाट रोड, इंदिरा नगर, लखनऊ, फोन-359897
❁ रजिस्टर्ड कार्यालय : बी-1/12, सेक्टर-डी1, कानपुर रोड योजना, लखनऊ, फोन-436767
❁ सम्पादकीय कार्यालय : सी-5, दिलकुशा कालोनी, लखनऊ, फोन-482288

पत्रिका का प्रकाशन, मई 1994 से निरंतर हो रहा है। पूरे भारतवर्ष में इसका प्रसार है। स्वतंत्र प्रसार के साथ ही दिल्ली एवं हिमाचल प्रदेश के वन विभाग, ग्राम्य विकास विभाग, शिक्षा विभाग, पंचायती राज विभाग, प्रदेश के स्थानीय निकाय एवं अन्य विभागों द्वारा यह नियमित रूप से मंगायी जा रही है। आपसे अनुरोध है कि आप स्वयं/संस्थान/विभाग/पुस्तकालय हेतु "पर्यावरण चेतना" पत्रिका की सदस्यता ग्रहण करने की कृपा करें एवं पर्यावरण संरक्षण के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के इस महायज्ञ में अपना योगदान करें।

पत्रांक : ....   दिनांक : ....

सदस्यता पत्रक

सेवा में,
प्रसार व्यवस्थापक
पर्यावरण चेतना हिन्दी मासिक
सी-5, दिलकुशा कालोनी
लखनऊ (उ0प्र0)

महोदय,

कृपया अपने कार्यालय/संस्थान/पुस्तकालय के लिये "पर्यावरण चेतना" हिन्दी मासिक की सदस्यता हेतु चेक/ड्राफ्ट (प्रधान संपादक, पर्यावरण चेतना, लखनऊ के पक्ष में देय हो) आपूर्ति आदेश के साथ संलग्न कर भेजने का कष्ट करें।

पर्यावरण चेतना पत्रिका की शुल्क दरें :-

1.	आजीवन सदस्यता शुल्क	रूपये 5000/-
2.	त्रिवार्षिक सदस्यता शुल्क	रूपये 750/-
3.	द्विवार्षिक सदस्यता शुल्क	रूपये 525/-
4.	वार्षिक सदस्यता शुल्क	रूपये 275/-

नोट : कृपया सदस्यता अवधि अंकित करने का कष्ट करें।

भवदीय

पत्रिका प्रेषण हेतु पता
....
....
....

हस्ताक्षर..................
नाम व पद..................
जनपद..................
कार्यालय..................

**पर्यावरण चेतना एक पत्रिका ही नहीं एक अभियान भी है
आइयें! हम सब मिलकर इसे सफल बनायें।**

चर्चा का विषय रही है "पर्यावरण चेतना"

"पर्यावरण चेतना" अपनी सर्वथा नवीन संकल्पना के कारण पर्यावरणविद् और सामान्य पाठकों में चर्चा का विषय रही है। पर्यावरण के प्रति लोगों को जागरूक बनाने के लिए यह एक मिशन की तरह कार्य कर रही है। लेकिन जब तक लोगों में स्वतः स्फूर्त जागृति नहीं आएगी, तब तक वांछित उद्देश्य पूरा नहीं होने वाला क्योंकि सोए हुए को जगाया जा सकता है, सोने का ढोंग करने वाले को नहीं। हम भारतीय की भी यही हालत है।

जब तक पानी सिर से न गुजर जाए, तब तक सक्रिय नहीं होते। अभी भी पानी सर से गुजरने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

– मुकेश सारस्वत
बी०ए०आ०सी०,
मुम्बई

सम्पादकीय–विचारोत्तेजक है !

"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः" को ध्येय–वाक्य मानने वाली पत्रिका "पर्यावरण चेतना"का अप्रैल, २००१ अंक देखा। अपने भागीरथी प्रयासों से आप "पर्यावरण मिशन" को आगे बढ़ाते हुए बड़े पुण्य का कार्य कर रहे हैं। मेरी बधाई स्वीकारिए। इस अंक का संपादकीय बहुत विचारोत्तेजक है। यदि वन तस्करों से वन और उसमें रहने वाले जीवों कर रक्षा नहीं की जायेगी, तो एक दिन ऐसा आयेगा कि इस पृथ्वी पर जीवन की परिकल्पना करना भी दुष्कर हो जायेगा। "समूची मानव जाति के लिए अचम्भे की चीज हैं पिरामिड" और 'बुन्देलखाण्ड के प्राकृतिक पर्यटन स्थलः दशा एवं दिशा' लेख भी अच्छे रहे।

मैं पत्रिका को प्रति माह मंगाना चाहता हूं। इसके लिए मुझे क्या करना होगा? यदि पत्रिका हमारे शहर के बस या रेलवे स्टेशन के स्टालों पर मिल जाती तो, मुझे उसे पढ़ने के लिए इधर उधर न भटकना पड़ता। इस दिशा में कुछ कीजिएगा प्लीज!

–कृष्ण गोपाल शर्मा
डबुआ कालोनी,
फरीदाबाद।

अभी नहीं तो कभी नहीं

किसी ने कहा है कि खुद अपनी ही डाल को काटने वाले कालिदास मूर्ख थे, आज हम अपनी नहीं औरों की डालें काटते हैं, इसलिए योग्य कहे जाते हैं। पर्यावरण से छेड़–छाड़ से खतरे की घंटी बज चुकी है। अपने स्वार्थ की खातिर प्राकृतिक दोहन पर यदि अभी विराम नहीं लगा तो बहुत देर हो चुकी होगी। समय माफ नहीं करेगा और इतिहास की वस्तु बनने में देर कितनी लगती है। हमारी पीढ़ियां हमारी करनी पर पछताएंगी। पश्चिम के देश चेत चुके हैं। और यहां अपने सुख, स्वार्थ, एवं व्यवसाय की खातिर लकड़ी, जीव जन्तु, नदी, पहाड़ आदि को किश्तों में बलि का बकरा बनाने से बाज नहीं आ रहे है। किसी ने सही कहा है :–

जंगल चैला हो गये , गिट्टी हुए पहाड़ । हरियाली माटी मिली , बस्ती हुई उजाड़।

क्या कहा..... शासन या सत्ता कुछ करेगी, क्या करेगी खाक, वे आप से उम्मीद कर रहे हैं। "पर्यावरण चेतना" एक मशाल जलाए अपना अभियान प्रारंभ कर चुकी है। सभी को जुड़ना होगा। मनुष्य सृष्टि का अमूल्यतम वरदान है और प्रकृति उसकी धरोहर। प्रकृति के साथ उसने क्या सलूक किया, किसी ने सही फरमाया है –

जला के सारे दरख्तों को अपने हाथों वो, अजीब शख्स है–साया तलाश करता है।

मै एक दीर्घ समय से पर्यावरण चेतना पढ़ रहा हूं मै भली भांति जानता हूं कि पर्यावरण चेतना ने जो अलख जलायी है उसकी रोशनी में सब कुछ तार–तार दिख रहा है। यदि अब नहीं चेते तो कभी नही चेतेंगे। बिन मौसम बरसात, आंधी, सर्दी, क्या यह चेतावनी नहीं है। पानी के लिए अगला विश्व युद्ध होगा, क्या खतरे की घंटी सुनाई नही दे रही। ऐसा क्यों ? यह सब अचानक नही हुआ। किश्तों में प्रकृति का दोहन हो रहा है। अब कोई भगीरथ आने से रहा।

इस युग के हम हुए भगीरथ, अपनी यही कहानी है,
आगे–आगे प्यास चल रही , पीछे–पीछे पानी।

आइए, इस मुहिम मे शामिल हो कर नये युग के सूत्रपात करने के निमित्त रचनात्मक संघर्ष करें। हम सभी "पर्यावरण चेतना" के साथ हैं।

***– आर० के० सिंह,** सी-501/सी, इंदिरा नगर, लखनऊ।*

स्थायी स्तम्भ अच्छे लगते हैं

मैं "पर्यावरण चेतना" का नियमित पाठक हूं। मुझे पत्रिका व सभी स्थायी स्तम्भ अच्छे लगते हैं। इसके अतिरिक्त लेख भी रोचक और जानकारी से भरपूर होते हैं। लेकिन मुझे एक बात बहुत खलती है। कि पत्रिका देर से प्रकाशित होती है। यदि महीने के पहले हफ्ते में ही उसे प्रकाशित कर दिया जाए, तो अच्छा रहेगा। पत्रिका का मूल्य भी बहुत ज्यादा है। कृपया इसे थोड़ा कम करने के बारे में विचार करें।

– हरिओम मिश्र,
प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक, केन्द्रीय विद्यालय नं०–२, देहरादून

धरती का है आवरण

धरती का है आवरण – पर्यावरण, पर्यावरण
इसे बचाने को अब तो, इक शुरू हो गया जागरण।
नई सदी में सब मिलजूलकर ऐसी अलख जगाएंगे,
पर्यावरण चेतना" को हम, जन–जन तक पहुचाएंगे।

सुलेखा भारद्वाज
कक्षा–१२, महानगर गर्ल्स इण्टर कालेज लखनऊ।

सम्पादक की कलम से...

सारा विकास बराबर कर दिया बढ़ती आबादी ने
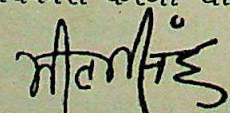
आज जिस रफ्तार से विश्व की आबादी बढ़ती जा रही है उससे साफ जाहिर है कि यह संख्या अब छह अरब पर ही नहीं रुकने वाली है। और लगभग यह निश्चित सा हो गया है कि मनुष्य के इसके दुष्परिणाम भुगतने होंगे। जहां तक विश्व की आबादी में भारत के योगदान का प्रश्न है वहां अब बात भी साफ हो चुकी है कि भारत की आबादी एक अरब का आंकड़ा पार कर चुकी है और इस प्रकार भारत अब आबादी के लिहाज से विश्व में चीन के बाद दूसरे नम्बर पर आ गया है।

यहां यह भी जरूरी नहीं है कि आबादी बढ़ने के नकारात्मक दृष्टिकोण से ही सोचा जाए बल्कि इसके अच्छे परिणाम भी हो सकते हैं लेकिन यह तभी सम्भव है जब आबादी के बढ़ने के साथ-साथ देश के विकास की गति में भी तेजी आए। और प्रकृति पर भी इसका अतिरिक्त बोझ न पड़े।

वास्तव में आज सब कुछ उल्टा-पुल्टा ही है आबादी बढ़ने का सीधा असर हमारे प्राकृतिक संसाधनों पर पड़ता है। यह सही है कि जन्म लेने वाला प्रत्येक शिशु सिर्फ मुंह ही नहीं बल्कि दो हाथ भी लेकर आता है। लेकिन उन हाथों की सार्थकता तभी है जब के देश के विकास एवं प्रकृति के संरक्षण में लगें न कि प्रकृति पर ही बोझ बनकर उसे नष्ट करने में लग जाएं। आबादी बढ़ने के साथ-साथ मनुष्य ने अपने आवासों के लिए जंगलों को काटा उसने अपने घर तो बनाए लेकिन जंगल के जानवरों से उनका आवास छीन लिया। और धरती को भी वनविहीन किया। इसी का परिणाम है कि जलवायु असंतुलित होती जा रही है। अति वर्षा, सूखा, भूकम्प, आदि समस्याएं मनुष्यों की स्वार्थी प्रवृत्तियों का ही परिणाम हैं।

जमीन पर पक्के मकान और सड़कें बनती जा रही हैं। वर्षा का पानी नदी, नालों से बह जाता है। धरती में पानी न जा पाने के कारण शहरों का भूजलस्तर तेजी से गिरता जा रहा है। अंत में इस सबका खामियाजा मनुष्य को ही भुगतना पड़ेगा। शायद यह हमारी निर्यात ही है कि हम संकट को रोकने के लिए पहले से कतई नहीं तैयार होते हैं और उल्टे उधर से आंखे मूंद कर जिस डाल पर बैठते हैं उसी को काटना शुरू कर देते हैं।

इसमें दो राय नहीं है कि हमने विकास नहीं किया है। कई क्षेत्रों में भारत ने महत्वपूर्ण सफलताएं हासिल की हैं। मसलन स्वास्थ्य, रक्षा, संचार सहित अन्य कई क्षेत्रों में भारत की सफलताएं अभूतपूर्व रही हैं। किन्तु विकास के अलावा जनसंख्या वृद्धि की दर बहुत अधिक रही है। यही कारण है कि हम जितना आगे बढ़ने के प्रयास करते हैं। हमारी आबादी विकास की रफ्तार को बहुत ही धीमा कर देती है। इसका सीधा असर हमारी अर्थव्यवस्था के साथ ही हमारे ऊपर ही पड़ता है। अगर हमारे देश के नागरिक विकास करना चाहते हैं तो उन्हें जनसंख्या वृद्धि पर रोक लगाना ही होगा।

(डा० मीता सिंह)
प्रधान संपादक

बढ़ता बोझ कराहती धरती
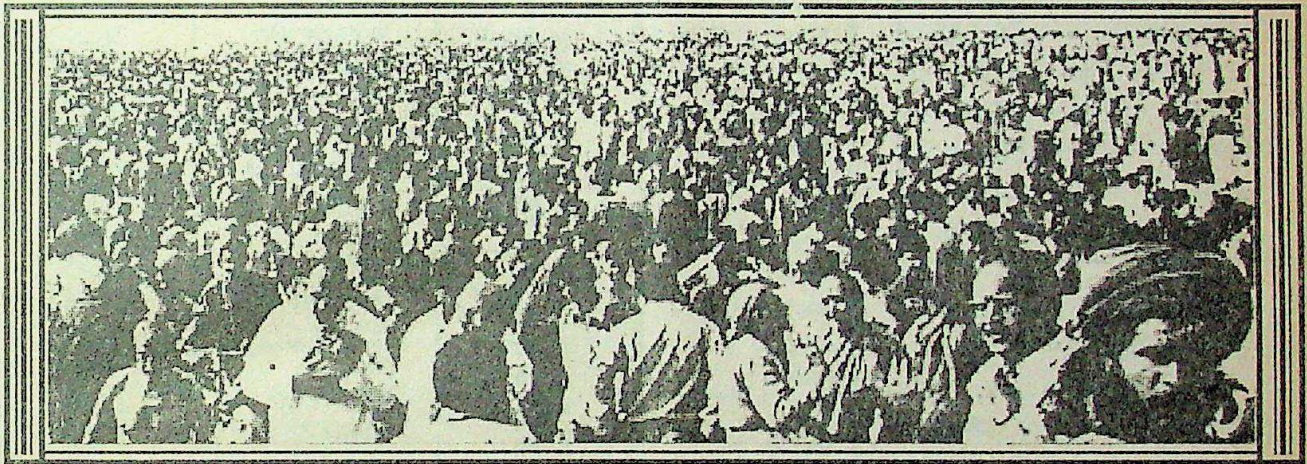
आज विश्व भर मे सिर्फ एक ही चर्चा है कि समस्त संसार में मनुष्य की आबादी ने छह अरब का आंकड़ा पार कर लिया है। उसमें भी अकेले भारत ने चीन के बाद दूसरा स्थान हासिल करते हुए आबादी के क्षेत्र में काफी उन्नति की है। अब भारत की आबादी एक सौ तीन करोड़ तक पहुंच चुकी है। उल्लेखनीय है कि विश्व भर में लगभग हर देश में समय के अनुसार आबादी घटने या बढ़ने के कारणों तथा उससे हानि–लाभ पर विश्लेषणात्मक चर्चाएं होती रही हैं। लेकिन आज जब जनसंख्या बहुत अधिक रूप से बढ़ गयी है और इसका सीधा असर हमारी प्रकृति एवं संसाधनों पर पड़ रहा है तब बुद्धिजीवी वर्ग, एवं पर्यावरणविदों के साथ ही जागरूक नागरिक भी इस दिशा में चिन्तित हो उठे हैं।

–राजेश कश्यप

एक अनुमान के अनुसार 1830 तक विश्व की कुल जनसंख्या एक अरब थी। यह 1930 तक बढ़कर दो गुनी हो गयी। जबकि इसके बाद के पन्द्रह वर्षों में जनसंख्या बढ़कर चार सौ करोड़ अर्थात चार अरब हो गयी। इससे 1830 से 1930 की अवधि में जनसंख्या की वृद्धि काफी धीमी रही है। परन्तु बाद के वर्षों में इसमें तीव्र वृद्धि हुई है। 1987 में जनसंख्या बढ़कर 11 जुलाई, 1987 को पांच अरब हो गयी। पांच अरबवें शिशु का जन्म इसी दिन युगोस्लविया में हुआ। यही कारण है कि तभी से प्रतिवर्ष ग्यारह जुलाई को जनसंख्या दिवस मनाया जाता है। संयुक्त राँट्र संघ के अनुसार 12 अक्टूबर, 1999 को विश्व की आबादी 6 अरब हो गयी। यही कारण है कि संयुक्त राँट्र संघ जनसंख्या कोषों ने 12 अक्टूबर,1999 को छह अरब जनसंख्या के दिवस के रूप में घोषित किया है। परन्तु विश्व विकास रिपोर्ट 2000-2001 के अनुसार अक्टूबर 2000 में विश्व की जनसंख्या 6 अरब नहीं हुई थी। रिपोर्ट के अनुसार 1999 के अंत तक विश्व की जनसंख्या 5.97 अरब ही हुई थी। इससे इतना तो स्पष्ट है कि विश्व जनसंख्या के प्रथम एक अरब से दो अरब होने में सौ वर्ष का समय लगा। दो अरब से तीन अरब होने में तीस वर्ष तीन अरब से चार अरब होने में पन्द्रह वर्ष चार से पांच अरब होने में बारह वर्ष तथा पांच अरब से छह अरब होने में बारह वर्ष का समय लगा है। अंतिम अंतराल से स्पष्ट हैं कि वर्तमान में विश्व की जनसंख्या वृद्धि दर में गिरावट आ रही है। विश्व विकास रिपोर्ट, 2000-2001 के अनुसार 1999 में चीन की आबादी 1250 करोड़, भारत की 997.5 करोड़, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका 272.9 करोड, इंडोनेशिया 207.8 करोड़, ब्राजीला 168.1 करोड़, रूसी महासंघ 146.5 करोड़ पाकिस्तान की आबादी 134.8 करोड़, बांग्लादेश की आबादी 127.7 करोड़, जापान की आबादी 126.6 करोड़, तथा नाइजोरिया की आबादी 123.9 करोड़, हो गयी थी,वर्तमान जनगणना के मद्देनजर

भारत की जनसंख्या वृद्धि

जनगणना वर्ष	जनसंख्या (करोड़ में)
1891	23.60
1901	23.84
1911	25.21
1921	25.13
1931	27.90
1941	31.87
1951	36.11
1961	43.92
1971	54.82
1981	68.33
1991	84.63
2001	102.70

चीन ने अपनी आबादी एक अरब दो करोड़ पैंसठ लाख तक पहुंच जाने पर कहा है कि उसकी जनसंख्या अब नियंत्रित है और "एक बच्चा' प्रति दंपती की पारिवारिक योजना आगे भी जारी रहेगी। नेशनल ब्यूरो आफ स्टेटिस्टिक्स के आयुक्त चू चिशिन ने पांचवीं रॉट्रीय जनगणना के आंकड़ों का खुलासा करते हुए गत दिवस कहा कि पिछले दस सालों में औसत सालाना विकास दर 1.07 रही जो पिछले 1980 के मुकाबले 0.4 फीसदी कम है। उन्होनें कहा कि तेजी से बढ़ रही जनसंख्या पर नियन्त्रण पर लिया गया है और प्रजनन दर के भी कम कर लिया गया है। जनगणना आंकड़ों के अनुसार एक परिवार का औसत आकार 3.44 व्यक्ति है जो 1990 में 3.96 था।

उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों की जनसंख्या

जिले	जनसंख्या (लाख में)	जिले	जनसंख्या (लाख में)
इलाहाबाद	49.50	महाराजगंज	21.67
कानपुर नगर	41.37	मिर्जापुर	21.15
आजमगढ़	39.50	फैजाबाद	20.88
जौनपुर	39.11	मथुरा	20.70
गोरखपुर	37.85	बस्ती	20.69
मुरादाबाद	37.50	फिराजाबाद	20.46
लखनऊ	36.81	सिद्धार्थनगर	20.39
सीतापुर	36.17	अम्बेडकर नगर	20.25
आगरा	36.11	रामपुर	19.22
हरदोई	33.97	मऊ	18.49
बरेली	35.99	झांसी	17.47
गाजियाबाद	30.90	बलरामपुर	16.85
खीरी	32.00	पीलीभीत	16.44
सुल्तानपुर	31.91	चंदौली	16.40
वाराणसी	31.48	मैनपुरी	15.93
बिजनौर	31.31	कानपुर देहात	15.84
बदायूं	30.69	फरूखाबाद	15.77
गाजीपुर	30.49	बांदा	15.00
मेरठ	30.02	ज्योतिबा फूले नगर	14.99
अलीगढ़	29.90	सोनभद्र	14.63
बुलंदशहर	29.23	जालौन	14.55
कुशीनगर	28.92	संतकबीर नगर	14.25
रायबरेली	28.72	कन्नौज	13.85
सहानपुर	28.48	संत रविदास नगर	13.52
एटा	27.88	हाथरस	13.33
गोंडा	27.66	कौशाम्बी	12.95
बलिया	27.52	श्रावस्ती	11.75
देवरिया	27.30	गौतमबुद्ध नगर	11.91
प्रतापगढ़	27.27	औरेया	11.79
बाराबंकी	26.73	बागपत	11.64
शाहजहांपुर	25.49	हमीरपुर	10.42
बहराइच	23.84	ललितपुर	9.77
फतेहपुर	23.06	चित्रकूट	8.01
		महोबा	7.09

विश्व विकास रिपोर्ट, 2000-01 के अनुसार सर्वाधिक जनसंख्या वाले देश

देश	1999 में जनसंख्या (करोड़ में)
चीन	1250
भारत	997.5
सं. रा. अमेरिका	272.9
इंडोनेशिया	207.8
ब्राजील	168.1
रूसी महासंघ	146.5
पाकिस्तान	134.8
बंगलादेश	127.7
जापान	126.6
नाइजीरिया	123.9
विश्व	5947.7

दूसरी ओर अब यह अधिकारिक रूप से घोषित हो चुका हैं कि भारत की आबादी एक अरब का आंकड़ा पार कर चुकी है। इसके अनुसार विश्व का हर छठा व्यक्ति भारतीय है। एक मार्च 2001 को देश की आबादी 102 करोड़ 70 लाख 15 हजार 247 आंकी गयी है। इसमें पुरुषों की आबादी 531,277,078 और महिलाओं की 495,738,169 है। पिछले दशक की तुलना में जनसंख्या में वृद्धि की रफ्तार में 2.52 प्रतिशत की रिकार्ड कमी आंकी गयी है। हम दशक भर में साक्षरों की संख्या में इजाफा करने में कामयाब रहे हैं। आजादी के बाद पाहली बार निरक्षरों की तादाद पर लगाम कसने में भी सफलता हाथ लगी है।

जनगणना विभाग द्वारा जारी किए गए अंतरिम आंकड़ों के अनुसार भारत में उत्तर प्रदेश सबसे अधिक जनसंख्या वृद्धि वाला राज्य है। यहां पिछली जनगणना की तुलना में आबादी में 16.17 प्रतिशत की वृद्धि हुयी है। अकेले उत्तर प्रदेश की आबादी पड़ोसी देश पाकिस्तान की आबादी से अधिक है।

आबादी बढ़ने के अनुपात में दूसरे स्थान पर महाराँष्ट्र (9.42) और तीसरे स्थान पर बिहार (8.07) हैं।

पिछली जनगणना की तुलना में आबादी धनत्व में प्रति वर्ग किलोमीटर 57 व्यक्ति का इजाफा हुआ है। सबसे सधन आबादी पश्चिम बंगाल की है यहां प्रति किलोमीटर 904 लोग रह रहे हैं। पिछले दशक में देश भर में नारी जागरूकता के आन्दोलनों की झलक भी जनगणना में दिखी है। 1991 की जनगणना की तुलना में इस बार स्त्री-पुरुष अनुपात में छह अंको की बढ़ोत्तरी हुयी है।

1991 में एक हजार पुरुषों पर सिर्फ 927 महिलाएं थी। ताजा संकेतों में महिलाओं की संख्या 933 दर्ज हुयी है। केरल में तो पुरुषों की तुलना में स्त्रियों की अधिक आबादी है। वहां हजार पुरुषों की तुलना में 58 महिलाएं स्त्रियों की सबसे कम संख्या हरियाणा में है। यहां हजार पुरूषों की तुलना में 139 स्त्रियां कम हैं। बच्चों की जनगणना में लिगंभेद की खाई बढ़ी है। पिछली जनगणना में छह साल तक के हजार बच्चों में 945 बालिका शिशु की संख्या थी, वह इस जनगणना में घटकर महज 927 रह गयी है। जनगणना के आंकड़े बताते हैं कि साक्षरता के लिहाज से बिहार आज भी सबसे पिछड़ा राज्य है। यहां साक्षरता दर देश में सबसे कम 47.53 प्रतिशत आंकी गयी है। केरल ने साक्षरता दर में एक बार फिर से आने को देश का सबसे अव्वल राज्य साबित कर दिखाया है।

वर्तमान जनसंख्या वृद्धि की स्थिति को देखते हुए इस बात से भी अनमान लगाएं जा रहे हैं कि अगले पचास सालों में भारत जनसंख्या के मामले में चीन को पीछे छोड़ देगा और विश्व का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश हो जायेगा। जनसंख्या विकास के बारे में संयुक्त राष्ट्र के जनसंख्या विभाग के सहयोग से कुछ अंतराँट्रीय संस्थानों के एक पैनल द्वारा तैयार रिपोर्ट में कहा गया है कि वर्ष 2050 तक भारत की जनसंख्या चीन की अनुमानित जनसंख्या 1.5 अरब को पारकर 1.6 अरब हो जायेगी जबकि विश्व की कुल आबादी उस समय तक बढ़कर नौ अरब तक पहुंच जायेगी।

गत दिनों जारी की गयी इस रिपोर्ट में कहां गया है कि विकासशील देशों को

1901 से 2001 तक भारत की जनसंख्या (करोड़ में)
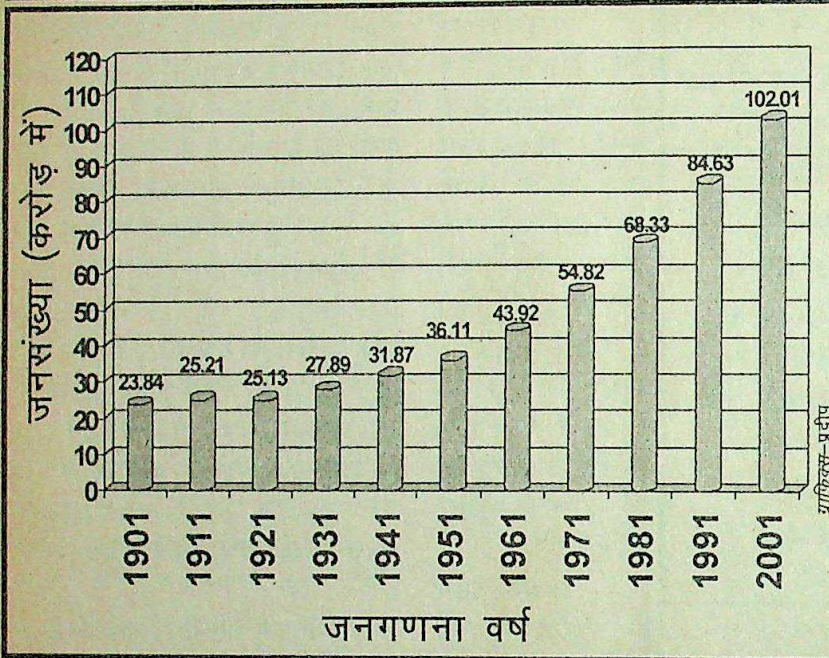
आने वाले दिनों में काफी कठिन दौर से गुजरना पड़ेगा क्योंकि विश्व की कुल आबादी के नब्बे प्रतिशत लोग तथा कथित तीसरी दुनिया के देशों में ही होंगे। आज की स्थिति तें विश्व की अस्सी प्रतिशत आबादी इन देशों में रहती है। रिपोर्ट के अनुसार इस अवधि में यूरोप को छोड़कर विश्व के सभी क्षेत्रों में आबादी बढ़ेगी जिसमे से सिर्फ एशिया में भारत और चीन के अलावा आबादी में 1.6 गुना की वृद्धि होगी।

आबादी की यह वृद्धि दर भी सबसे अधिक अफ्रीका में रहेगी जहां की जनसंख्या मौजूद 78 करोड़ 40 लाख से बढ़कर दो गुनी यानी 1.6 अरब हो जायेगी। अमरीका में यह दर चालीस प्रतिशत बढ़ेगी जबकि जापान और जर्मनी में यह चौदह प्रतिशत गिरेगी। रिपोर्ट में कहा गया है कि सन् 2030 तक विश्व की कुल आबादी का साठ प्रतिशत लोग शहरी क्षेत्रों में रहने लगेंगे यानी अभी की स्थिति से इसमें करीब तेरह प्रतिशत की वृद्धि होगी। रिपोर्ट के अनुसार जनसंख्या में वृद्धि के कारण पर्यावरण को काफी नुकसान होगा और सिर्फ गरीबी में कमी लाकर या मादक पदार्थों की लत दूर करने मात्र से एच आई वी और एड्स पर नियंत्रण नहीं किया जा सकेगा। लेकिन रिपोर्ट में एक बात पर संतोष व्यक्त किया गया है कि आबादी बढ़ने के बावजूद सबके लिए पर्याप्त खाद्यान्न उपलब्ध होगा। अगर समस्या होगी तो उसके उचित वितरण की होगी।

उक्त रिपोर्ट तैयार करने वाले पैनल के अधिकारियो के अनुसार इस अवधि में जीवन प्रत्याशा दर में वृद्धि के चलते वृद्धों की संख्या में भी इजाफ़ा होगा जिससे कुछ समस्या पैदा होगी। इस अवधि में यूरोपीय देशों में हिचकिचाहट के बावजूद ज्यादा से ज्यादा देशों के लोग वहां जाकर बसेंगे और इससे भी उन देशों के लिये समस्या पैदा होगी। उस समय ऐसे घर मिलने की संभावना बढ़ जायेगी जिनमें चार पीढ़ियां एक साथ निवास करती मिलेंगी। ऐसे घरों में शिशुओं की समुचित देखभाल होगी और उनका पूरा ध्यान रखा जा सकेगा।

यहां उल्लेखनीय बात यह भी है कि किसी भी देश का सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, तथा आर्थिक विकास मानवीय संसाधनों पर भी निर्भर करता है। मानवीय संसाधनों को एक विशेश प्रकार की पूजी भी माना जाता है। मानवीय संसाधनों के मामले में भारत सौभाग्यशाली है। यहां प्रचुर मात्रा में श्रमशक्ति उपलब्ध है।

"जनगणना 2000 के अनुसार विश्व की 16.67 प्रतिशत आबादी भारत में निवास करती है। जबकि भारत का क्षेत्रफल विश्व के कुल क्षेत्रफल का 2.42 प्रतिशत है। जनसंख्या के आकार की दृष्टि से भारत का विश्व में "दूसरा स्थान" है। यद्यपि भारत में मानवीय संसाधनो की बहूलता है फिर भी भारत पिछड़ा हुआ है। इसका कारण यह है कि भारत में विद्यमान भानवीय शक्ति की बहुलता ही समस्या पैदा करती है। एक ओर कुशल मानवीय शक्ति की

बहुलता की ओर उपलब्धता से ही किसी भी देश में सामाजिक एवं आर्थिक विकास को नयी दिशा एवं गति मिलती है तो वहीं दूसरी ओर अकुशल मानवीय शक्ति से बेरोजगारी, निर्धनता, आवास, चिकित्सा, शिक्षा तथा खाद्य की समस्याये उत्पन्न होती है, यही स्थिति भारत की भी है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा जारी "मानव विकास रिपोर्ट""2000" के अनुसार 174 देशों की मानव विकास सूची में भारत का 128 वां स्थान है।

ध्यातव्य है कि मानव विकास सूचकांक का सृजन तीन सूचकों जीवन प्रत्याशा, शैक्षणिक उपलब्धि तथा मूल वस्तुओं एवं सेवाओं को क्रय करने की शक्ति पर होता है। जहां मानव विकास की दृष्टि से भारत का स्थान 128 वां है, वहीं जनसंख्या के आकार की दृष्टि से दूसरा है।

भारत में आज जनसंख्या विस्फोट की स्थिति उत्पन्न हो गयी है। भारत में जनसंख्या वृद्धि की समयवधि को 4 भागों में (प्रत्येक 30 वर्षीय अवधि) विभक्त किया जाती है।

(i) 1891-1921 की प्रथम अवधि

(ii) 1921-1951 की द्वितीय अवधि

(iii) 1951-1981 की तृतीय अवधि

(iv) 1981-2011 की चतुर्थ अवधि

(1911) 25.21 — 23.84 (1901) — 102.01 (2001) — (1921) 25.13 — (1931) 27.89 — (1941) 31.87 — (1991) 84.63 — (1951) 36.11 — (1961) 43.92 — 68.33 (1981) — (1971) 54.82

ग्राफिक्स–प्रदीप

भारत की जनगणना में वर्षानुसार हुई वृद्धि

जनसंख्या वृद्धि की प्रत्येक अवधि 30 वर्षों की रही है प्रथम अवधि में जनसंख्या वृद्धि दर काफी न्यून रही है। इसका कारण ऊंची जन्म दर तथा मृत्युदर दोनों का साथ-साथ पाया जाना है। द्वितीय 30 वर्षीय अवधि में जनसंख्या वृद्धि की वार्षिक वृद्धि दर 1.22 प्रतिशत रही है। ध्यातव्य है कि यह अवधि जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत की द्वितीय अवस्था की प्रारंभिक स्थिति का द्योतक है।

तृतीय अवधि (1951.1981) में देश की जनसंख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हुई। 1951 में भारत की जनसंख्या 36.11 करोड़ थी जो 1981 में बढ़कर 68.33 करोड़ हो गयी।

तृतीय अवधि में देश की जनसंख्या में ऐसी अप्रत्याशित वृद्धि का मुख्य कारण देश के विभिन्न भागों में हुए विकास कार्य, खाद्य आपूर्ति में सुधार, तथा स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं के कारण मृत्यु दर में ह्रास है।

भारत में जनसंख्या वृद्धि की चौथी अवस्था जो 1981-2011 मानी गयी है के प्रथम 10 वर्षों में जनसंख्या बढ़कर 84 करोड़ तथा द्वितीय 10 वर्षों में बढ़कर 1 अरब से ऊपर चली जायेगी। 1981-91 के दशक में जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर 23.85 प्रतिशत थी जो 1971-81 के 24.70 प्रतिशत वृद्धि की तुलना में कम है। 1991-2001 के दशक में जनसंख्या वृद्धि दर 21.34 प्रतिशत है। इससे स्पष्ट है कि भारत की जनसंख्या वृद्धि दर में निरंतर गिरावट आ रही है।

एवरेस्ट पर जमा चार टन से अधिक कचरा नष्ट

काठमांडू। विश्व की सबसे ऊंची चोटी एवरेस्ट पर जमा सवा चार टन कचरे को नेपाली शेरपाओं ने ठिकाने लगा दिया है। कचरे का यह अंबार बरसों से उन पर्वतारोहियों की बदौलत जमा हो रहा था, जो एवरेस्ट पर चढ़ाई के बाद कूड़ा करकट वहीं छोड़ देते थे। नेपाल पर्वतारोहण संस्था के एक अधिकारी अंगपुरबा शेरपा ने बताया कि सवा दो टन पेपर बैग, पुराने तंबू, प्लास्टिक और छोड़े गए कपड़ों को जला अथवा दफना दिया गया है। उन्होंने बताया कि शिविरों के खंबे, एल्युमीनियम की सीढ़ियां, आक्सीजन की खाली बोतलें और प्लास्टिक के डिब्बों का दो टन कचरा काठमांडू लाया गया। नेपाल ने 8,850 मीटर ऊंची इस चोटी की सफाई करने का अभियान शुरू किया है।

इस चोटी पर फैली गंदगी के कारण पर्वतारोहियों ने इसे विश्व के सबसे ऊंचे कूड़ादान का नाम दे दिया था। किसी भी चोटी पर अभियान शुरू करने से पहले विदेशियों को कचरे के लिए चार हजार डालर अग्रिम का भुगतान करना पड़ता है। उनके द्वारा अपना कचरा वापस नीचे लाने की स्थिति में यह राशि लौटा दी जाती है।

एवरेस्ट पर जाने वाले विदेशियों का सामान ढोने वाले शेरपाओं को कचरा वापस लाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। अंगपुरबा शेरपा ने बताया कि पर्वत की चोटी से कचरा लाने वाले शेरपाओं को प्रति किलोग्राम सात डालर का भुगतान किया गया है।

पाक के बलूचिस्तान प्रांत में डायनासौर के जीवाश्म मिले

क्वेटा(पाकिस्तान)। पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में १६ ठिकानों से डायनासौर की हड्डियों के १५०० जीवाश्म मिले हैं।

जियोलाजिकल सर्वे आफ पाकिस्तान (जीएसपी) के प्रवक्ता गजरफर अब्बास ने गत दिवस यहां एक संवाददाता सम्मेलन में यह जानकारी देते हुए बताया कि जीएसपी के वरि ठ अनुसंधानकर्ता सादिक कल्कानी ने बरखान जिले से यह जीवाश्म इकट्ठा किए। मल्कानी ने पिछले वर्ष उस इलाके में डायनासौर के पहले जीवाश्म की खोज की थी। जीएसपी ने पिछले वर्ष दिसंबर में घोषणा की थी कि उसे कोह ए सलमान पर्वत श्रृंखला में अध्ययन के क्रम में डायनासौर की १०२ जीवाश्मीकृत हड्डियां मिली हैं।

ये डायनासौर साढ़े छह करोड़ से सात करोड़ बीस लाख पुराने काने जा रहे हैं। अब्बास ने बताया कि डायनासौर की इन खोजों से स्थानीय एवं अंतरराष्ट्रीय भूवैज्ञानिक बेहद उत्साहित हैं। जीवाश्म क्वेटा संग्रहालय में प्रदर्शन के लिए रखे गए हैं।

पैंतीस बार मछली की जान बख्शी

ओस्लो। पशु सेवी यदि किसी जानवर की जान बचाने के लिये कार्य करें तो समझ में आता है लेकिन यदि कसाई दयावान हो जाये तो यह लोगों के लिये आश्चर्यजनक घटना हो जाती है इसी प्रकार की एक घटना यहां पर घटी जहां एक अंधी 'काड' मछली मछुआरे के जाल में ३५ बार फंसी लेकिन हर बार मछुवारे ने उसकी जान बख्श दी।

मछुवारे हेराल्ड हाउसो ने बताया कि वह मछली इतनी दुबली थी कि उसको खाया नहीं जा सकता था, वह बड़ी दयनीय स्थिति में थी। यह अंधी मछली गत वर्ष के मार्च से मछुवारे के जाल में हर सप्ताह में एक बार फंसती थी।

ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन के मामले में भारत सबसे पीछे और अमेरिका आगे

संयुक्त राष्ट्र। विश्व में ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन के मामले में भारत सबसे पीछे जबकि अमेरिका सबसे आगे है।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के कार्यकारी निदेशक क्लोस टूफर ने गत दिवस यहां एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि जहां भारत प्रतिवर्ष प्रतिव्यक्ति एक टन ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन करता है वहीं अमेरिका प्रतिवर्ष प्रतिव्यक्ति बीस टन गैसों का उत्सर्जन करता है जो कि सर्वाधिक है।

इस सूची में यूरोपीय देश मध्य में हैं, जहां प्रतिवर्ष प्रतिव्यक्ति दस टन गैस उत्सर्जन होता है। ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी आने के उद्देश्य से होने वाली अगले दौर की वार्ता को अमेरिका द्वारा फिलहाल टाल दिये जाने के बारे में उन्होंने कहा कि वे राष्ट्रपति जार्ज बुश के इस कदम से निराश नहीं हैं। उन्होंने इसे सकारात्मक संकेत बताया और कहा कि इससे ऐसा लगता है कि नया अमेरिकी प्रशासन इस दिशा में काफी ईमानदारी से विचार कर रहा है। दुनिया का वातावरण गरमाने की समस्या को वास्तविकता बताते हुये श्री टूफर ने आगाह किया कि इसके परिणाम काफी खतरनाक होंगे।

पालीगोनम की चपेट में आने से फूलों की घाटी को खतरा

देहरादून। पृथ्वी पर स्वर्ग की संज्ञा पा चुकी फूलों की घाटी अपने अस्तित्व की लड़ायी लड़ रही है। जब से इस इलाके में चराई पर प्रतिबंध लगाया गया है तभी से अनेक प्रजातियां विलुप्त होती जा रही हैं। अगर इस ओर तात्कालिक कदम न उठाया गया तो विलक्षण फूल हमेशा के लिये गायब हो जाएंगे।

नंदा देवी राष्ट्रीय उद्यान की भिंडर घाटी में स्थित वनस्पति समुदाय का विलक्षण खजाना आजकल खतरे का सामना कर रहा है। अनेक शाकीय पादप जो गर्मियों की वर्षा के दौरान पुष्पित होकर प्राकृतिक सौन्दर्य को पैदा करते हैं वो काफी समय से कम होते जा रहे हैं। जानवरों की चराई पर लगे प्रतिबंध से तेजी से बढ़ने वाली और अधिक लंबी कुछ पादप प्रजातियों की भरमार होनी शुरू हो गई है जिससे कम आक्रमक जातियां दबने लगी हैं। फूलों की घाटी में करीब छह सौ प्रकार के फूलों की प्रजातियां मौजूद हैं।

इसमें २६४ जेनेरा परिवार की और ८२ एंजियोस्पर्म वर्ग की हैं, बाकी तीस प्रजातियों में अठारह फर्न और बारह अन्य वर्ग की हैं। इनमें चालीस प्रजातियां बेहद आकर्षक हैं जो पर्यटकों को बेहद यहां आने को विवश कर देती हैं। वन अनुसंधान संस्थान के वनस्पति विभाग के एच. बी. नैथानी, जे. डी. एस. नेगी, आर. सी. थपलियाल ने इस घाटी पर आ रहे संकटों के बादल का गहराई से परीक्षण कर चेताया है कि चराई पर प्रतिबंध किसी भी तरह से लाभप्रद नहीं है।

शोध में यह बात सामने आयी कि बुग्यालों में घुमंतू गड़ेरिये अपने साथ भेड़ बकरियों को लाते हैं और उन्हें थोड़े समय के लिये चरने के लिये छोड़ देते हैं। यह जानवर उन पौधों के ऊपरी भाग को कुतर लेती हैं जो अनावश्यक रूप से बढ़ जाती हैं। इसके अलावा इन लोगों के कारण भू–संरक्षण का काम भी बखूबी होता है। जानवरों की वजह से ही उन पौधों को तमाम तरह की उर्वरक क्षमता मिल जाती है जो इनके लिये जीवनदायिनी का कार्य करती है। वैज्ञानिकों ने पाया कि चराई पर प्रतिबंध से कुछ प्रजातियों को तो बचाया जा सकता है लेकिन इनसे नुकसान भी हो रहा है। मसलन पोलीगोनम प्रजाति के पौधे तेजी से बढ़ने लगे हैं जो घाटी के पश्चिमी क्षेत्र में स्थित फूलों को खासा नुकसान पहुंचा रहे हैं। इसी तरह पूर्वी क्षेत्र में ओसमुंडा के कारण अन्य प्रजातियां प्रभावित हो रही हैं।

❁ डा० दीपक शर्मा

श्वांस के जरिये नब्बे फीसदी शारीरिक कचरा निकाल सकता है मानव

उदयपुर। मनुष्य के शरीर से श्वांस क्रिया के माध्यम से ९० प्रतिशत कचरा निकलता है लेकिन संतुलित श्वास क्रिया के अभाव में मनुष्य अपने फेफड़ों से मात्र ३० प्रतिशत ही कचरा निकाल पाता है।

व्यक्ति निर्माण संस्था के प्रचारक प्रवीण मेहता ने गत दिवस पत्रकारों से बातचीत में यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि संस्था द्वारा विकसित 'सुदर्शन क्रिया' के माध्यम से व्यक्ति अपने फेफड़ों से ९० प्रतिशत कचरा निकालने में सफलता के साथ ही थाईराइड, मधुमेह, अस्थमा, रक्तचाप, ह्रदयरोग, कैंसर और एड्स आदि अनेक रोगों से मुक्त हो सकता है। उन्होंने बेंगलूर स्थित नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ एण्ड न्यूरो सर्जरी में इस तकनीक पर किये गये अनुसंधान के आधार पर दावा किया कि 'सुदर्शन क्रिया' फेफड़ों की क्षमता विकसित करती है तथा इससे कोर्टिसोल का ब्लड प्लाज्मा स्तर में गिरावट आती है। उन्होंने कहा कि श्वास की यही क्रिया शरीर के अवसाद और तनाव को दूर करती है। व्यक्ति निर्माण संस्था द्वारा आर्ट आफ लिविंग फाउन्डेशन के तहत यह शिक्षा विश्व के ११२ देशों में ३५०० केन्द्रों के माध्यम से दी जाती है इससे अब तक अनेक रोगियों का सफल ईलाज किया गया है।

वन्यजीवों के संरक्षण में स्थानीय लोगों को शामिल करने का सुझाव

नयी दिल्ली। देश की मौजूदा वन्यजीव संरक्षण नीति की समीक्षा पर जोर देते हुए पारिस्थितिकीविदों ने संरक्षण कार्य में स्थानीय लोगों की भागीदारी बढ़ाने का सुझाव दिया है।

वन्यजीव संरक्षण संबंधी मौजूदा कानूनों को ब्रिटिश राज के कानूनों से प्रेरित बताते हुए विशेषज्ञों ने आगाह किया है कि राष्ट्रीय उद्यानों अभ्यारण्यों और अन्य संरक्षित स्थलों से स्थानीय लोगों को दूर रखने के बजाय उन्हें इनके प्रबंधन में शामिल किये जाने की जरूरत है।

औषधीय गुणों से भरी पड़ी हैं घृतकुमारी की पत्तियां

लखनऊ। केन्द्रीय औषधीय एवं सगंध पौधा संस्थान के वैज्ञानिकों ने घृतकुमारी की पत्तियां से बने पाउडर में जीवाणुरोधी, चर्मरोगरोधी व जले कटें उत्तकों को भरने की क्षमता पायी है। इसमें अलावा शरीर की सूजन ठीक करने के गुण,अल्सर रोधी, उदर शुद्धीगुण, पित्तरक्षी व यकृतरक्षी क्षमता भी पायी जाती है। उम्मीद है कि शीघ्र ही इसमें मौजूद औषधीय गुणों के आधार पर इससे बनी दवा विकसित की जाएगी।

अभी तक इसका उपयोग क्रीम, शैम्पू, मास्चराइजर, आदि सौन्दर्य प्रसाधनों में एक आवश्यक तत्व के रूप में किया जाता था। अकरीकी बाजार के ४० प्रतिशत सौन्दर्य प्रसाधनों से यह मौजूद होता है। घृतकुमारी का वानस्पतिक नाम एलोवीरा है, जिसे ग्वारपाठा या घीक्वार के नाम से भी जाना जाता है। यह लिलिएसी कुल का पौधा है। सौन्दर्य प्रसाधनों के निर्माण में उपयुक्त होने के कारण इसकी मांग यूरोपीय बाजारों से बहुत ज्यादा है।

घृतकुमारी प्राकृतिक रूप से महाराष्ट्र, तमिलनाडु, केरल, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, अदि के वनों में उगता है। इसकी बढ़ती माग को देखते हुए तमिलनाडु के सालम क्षेत्र में इसकी खेती शुरू कर दी गयी है। इसकी पत्तियों की वर्ष बाजार में ६००–१००० रूपये प्रति किलो के भाव बिक जाती है।

वैज्ञानिकों ने घृतकुमारी की पत्तियों में एलोइन, बरबेलोइन, ऐलो–इमोडिन ग्लाइकोसाइड एलोइसिन और एलोइसोन नामक रसायन पाये जाते है। इसकी पत्तियों में मौजूद एलोन नामक रसायन का उपयोग सौन्दर्य प्रसाधनों में प्रमुख रूप से किया जाता है। सामान्यतः परीक्षण के दौरान पत्तियों में एलोसन की मात्रा ४०–२५.० प्रतिशत पायी गयी। इसमें मौजूद औषधीय गुण इसमें पाये जाने वाले शेष रसायनों के कारण है।

वन्य जीव सलाहकार बोर्ड का गठन

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा वन्य जीवों के समुचित संरक्षण, परिरक्षण तथा उससे सम्बन्धित मामलों पर सरकार को सलाह देने के उद्देश्य से राज्य वन्य जीव सलाहकार परिषद का गठन किया गया है।

प्रदेश के वन्य मंत्री इस परिषद के अध्यक्ष होगें तथा प्रमुख वन संरक्षक एवं मुख्य वन संरक्षक (वन्य जीव) पदेन सदस्य एवं सदस्य/सचिव होगें, इसके साथ ही छह प्रमुख सचिव,सचिव, महानिदेशक स्तर के वरिष्ठ अधिकारी भी परिषद के सदस्य नामित किये गये हैं। दस गैर सरकारी व्यक्ति तथा दो राज्य विधानमण्डल के सदस्य भी परिषद के सदस्य बनाये गये हैं। यह परिषद वन्य जीव विहारों, राष्ट्रीय उद्यानों तथा वन क्षेत्र घोषित करने में निहित क्षेत्रों का चुनाव करने तथा उनकी व्यवस्था करने के सम्बन्ध में सलाह देगी।

विदेशी कम्पनियां पर्यावरण सुरक्षा तकनीक में सहयोग करेंगी

लखनऊ। ब्रिटिश औद्योगिक कम्पनिंया प्रदेश के उद्यमियों को पर्यावरण सुरक्षा तकनीक अपनाने के लिए वित्तीय सहयोग व प्रशिक्षण देने को तैयार है। इस पर प्रदेश के उद्यमियों ने बहुत से उत्साह दिखाया है और अधिकतर प्रतिभागियों ने पर्यावरण सुरक्षा अपनाने की इच्छा व्यक्त की है।

यह जानकारी गत दिवस ताज होटल में पत्रकारों को सम्बोधित करते हुए संयुक्त पर्यावरण मार्केट यूनिट (जे.ई.एम.यू.) की सुश्री जेनिट जेनिंग्स ने दी। उन्होंने भारत–ब्रिटेन की भागीदारी को अधिक सुदृढ़ करने पर बल देते हुए कहा कि ब्रिटेन भारत के उद्योपतियों के साथ पर्यावरण सुरक्षा के परिप्रेक्ष्य में काम करने को तैयार हैं और उन्हें अपनी तकनीकें हस्तांरित करने के लिए पूरा सहयोग देगा। वार्ता के दौरान ओशन्स इन्वायरोमेन्टल इंजीनियरिंग लिमिटेड के टाम बर्किट ने बताया कि उनका संस्थान उद्योगों से निकले एफीलुयेन्ट को प्रदूषण मुक्त करके, पानी को रिसाइकिल करके खेती में सिंचाई योग्य बनाने की समस्या का भी हल होगा। इस तरह यह तकनीक अपनाना फायदे का सौदा होगा।

सायलटैक आरगेनिक कम्पनी के टैरी स्काट ने पत्रकारों से बात चीत के दौरान बताया कि उनकी कम्पनी लीचेट ट्रीटमेन्ट विधि के द्वारा मृदा प्रदूषण रोकने की तकनीक उद्यमियों को उपलब्ध करायेगी। क्रिस लिटिल एसोसिएट के मालिक क्रिस लिटिल ने बताया कि वे ऊर्जा संरक्षण के क्षेत्र में काम करते हैं।

पूर्वांचल का सबसे बड़ा वन विहार उपेक्षा का शिकार

—सोहन सिंह

बस्ती। दस हेक्टेअर क्षेत्रफल में फैला बस्ती मन्डल का एक मात्र एवं पूर्वांचल का सबसे बड़े वन–विकार विगत् १३ वर्षों से सरकारी उपेक्षाओं के कारण आज दम तोड़ने की स्थिति में है। इसके साथ ही वन–विभाग द्वारा पर्यटकों को आकर्षित करने का "मिनी चिड़ियाघर" को केन्द्रीय जीव–जन्तु प्राधिकरण की अनुमति न मिलने से उसका सपना भी चकनाचूर हो गया है, जब कि यह वन–विहार पर्यावरण एवं पर्यटक दृष्टि से अति महात्वपूर्ण है।

कुआनो नदी के तट पर मुख्यालय से लगभग ३ कि०मी० दूर आसपुर ग्राम में गत् २५ सितम्बर ८८ को १० हेक्टेअर क्षेत्रफल में फैले वन–विहार की आधार शिला प्रदेश के तत्कालीन वन राज्यमंत्री जगदम्बिका पाल ने रखी थी। पर्यावरण एवं पर्यटक की दृष्टि से मन्डल के लिए अति महात्वपूर्ण स्थान का चयन करने के बाद ही इसका आधार शिला रखा गया था। बस्ती मन्डल के एक मात्र वन–विभाग में प्रमुख रूप से जामुन, कंजी, अमलताश, सिहोर एवं गुलमोहर के वृक्ष लगाये गये हैं। इसके आलावा तीन ओर से कुआनों नदी से घिरा होने के नाते इसक्षेत्र में पहले से ही प्राकृतिक वनस्पति विद्यमान है, जो पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

मन्डलं के इकलौते एवं पूर्वान्चल के सबसे बड़े क्षेत्रफल में फैले वन–विहार की स्थापना न उपलब्ध करा पाने के कारण इसका विकास नहीं हो सका और समुचित एवं रखरखाव न हो पाने के कारण सुरम्य नैसर्गिक केन्द्र अपनी अन्तिम सांसे गिन रहा है। सरकारी अपेक्षा के बावजूद भी वन–विभाग बस्ती ने इसे एक "मिनी चिड़ियाघर" की शक्ल देने में प्रयास करता रहा है, और जिसके तहत यहां वर्ष ९०–९१ में "घड़ियाल पौन्ड" का भी निर्माण विभाग ने करा लिया है, साथ ही रंग बिरंगे मनमोहक पक्षियों एवं हिरनों को रखने की व्यवस्था भी करनी शुरू कर दी है, लेकिन विभागीय अधिकारियों की सारी तैयारियों पर संसाधनों के अभाव ने पानी फेर दिया है। केन्द्रीय जीव–जन्तु प्राधिकरण ने वन–विहार में घड़ियाल तथा अन्य पक्षियों एवं जन्तुओं के रखने की अनुमति न देने से वन–विहार के विस्तार की योजना खटाई में पड़ गयी है।

स्थापना काल से ही धनाभाव की मार झेल रहा इस वन–विहार में पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए हर सुविधा एवं साजो सामान से लैश है, लेकिन रखारखाव की उचित व्यवस्था न होने के कारण वन–विहार अपने अस्तित्व को खोता जा रहा हैं। पूर्व में रखरखाव की व्यवस्था जिला योजना के अन्तर्गत जिला ग्राम्य विकास अभिकरण के तहत की जाती थी, लेकिन सन् ९८ से इस मद में भी धन आने से बन्द हो जाने के कारण इसकी व्यवस्था वन–विहार के आय से ही की जाती है।

वन–विभाग ने इस वर्ष एक लाख चालीस हजार रूपये की लागत से आकर्षक मछली घर (अक्वेरियम) का निर्माण कराया है। इस वन–विहार में आकर्षक एवं खूबसूरत बालक्रीड़ा उद्यान वन्य जीव बाड़ा तीन पैडल वोट एवं अन्य आकर्षक सुविधा उपलब्ध है। पर्यावरण के प्रति अति सजग मन्डलायुक्त विनोद शंकर चौबे ने जोर देकर कहा कि पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाले शख्स को बख्शा नहीं जायेगा।

❁❁❁

प्रदूषण

देख कर मुरझाई फूलों की क्यारी
रो रहा था बेचारा माली,
क्योकि इनको भी लग गई थी
प्रदूषण की बीमारी,
वाहनों के धुऐं और ध्वनि प्रदूषण से
हो रही थी परेशानी
क्या पता था कि वायु भी प्रदूषित
हो जायेगी हमारी,
जिन फूलो से खिलने वाली थी
हमारी बगिया की क्यारी
खिलने से पहले ही उनको लग
गई प्रदूषण की बीमारी
जब फूलों का यह हाल हैं–तो क्या
हालत होगी हमारी–तुम्हारी
रो–रो कर कह रहा था माली,
कब दूर होगी प्रदूषण की यह
बीमारी,
कब चहकेंगे बच्चे और कब
महकेगी फूलों की क्यारी
शुद्ध वायु की आशा में बैठा सोच
रहा था माली,
कभी तो दूर होगी, प्रदूषण की यह
बीमारी।

—श्रीमती योगेश चतुर्वेदी
८/४ राम निवास भवन,
द्वरिकापुरी अलीग

सर्वहितकारी एवं परम गुणकारी- सीताफल

– नोतन लाल
रिटायर्ड लेक्चरर, फरीदाबाद, हरियाणा

मर्यादा पुरूषोत्तम श्री रामचन्द्र जी महाराज चौदह वर्ष के वनवास हेतु अयोध्या के वैभवपूर्ण राजभवन से निकलने के बाद अनेकों कष्टों को सहते हुये घने जंगलों में फल की तलाश में भटक रहे थे, तो सीता मैया की दृष्टि इस विचित्र चिप्पियों वाले गोलाकार फल पर पड़ी और उनके आदेशानुसार देवर लक्ष्मण इस फल को तोड़ लायें। इसके अनुपम एवं मधुर स्वाद ने मर्यादा पुरूषोत्तम श्री रामचन्द्र जी को इसका नाम सीताफल रखने को विवश कर दिया।

सीताफल, जिसे शरीफा भी कहा जाता है, धनी–निर्धन सबका प्रिय फल है। वनस्पति –शास्त्री इसे "अन्मेना स्ववामोसा" कहते है। अंग्रेजी में इसे "कस्टर्ड एपिल" कहते है। अमेरिका में इसका नामकरण इसके स्वाद के अनुरूप "शुगर एपिल" कहा गया है। सीताफल नाम से तो यह भारत का लगता है, लेकिन कुछ वनस्पति विज्ञानी इसको दक्षिण अफ्रीका या वेस्टइंडीज से आया हुआ मानते है।

लगभग ३ से ४ मीटर ऊंचा पाया जाने वाला यह फल वनों में किसी देखभाल के बगैर स्वतः उग जाता है। नर्म, लम्बी तथा आगे से गोलाकार पत्तियों वाला यह पेड़ अधिक ठंड और कम वर्षा वाले स्थानों पर कम पाया जाता है इसके लिए दुमट या बलुआ दुमट जमीन अच्छी रहती है। वर्षा ऋतु में इस पेड़ की थोड़ी खाद देते रहना चाहिए इसकी सूखी टहनियां समय–समय पर छांटते रहना चाहिए। जुलाई–अगस्त से इसके फल लगने शुरू हो जाते हैं और दिसम्बर के अंत तक इसके फल बाजार में उपलब्ध रहते हैं। सीताफल (शरीफे) के निम्न गुण उल्लेखनीय हैं :–

- सीताफल का नित्य सेवन करने से शरीर स्वस्थ तथा निरोगी होता है और मनुष्य की पुंसत्व–शक्ति को भी बढ़ाता है।
- इसका सेवन संग्रहणी, पुराने अतिसार तथा भूख की कमी को दूर करने में सहायक माना जाता है।
- यह ह्दय रोग, गठिया, रक्त–पित्त, वमन पित्त तथा कुकुरखांसी में बहुत गुणकारी तथा उपयोगी कार्य करता है।
- यह रक्त–वृद्धि के साथ–साथ स्मरण शक्ति का भी विकास करता है।
- इसके प्रयोग से मांस–पेशियां तो दृढ़ होती ही है, इसके अतिरिक्त बूढ़े बच्चे तथा प्रसूताओं के लिए भी यह लाभकर एवं अति गुणकारी है।
- "सीताफल आसव" क्षयरोग तथा पुराने –रोगों के निमित जीवन रक्षक औषधि का काम करता है।
- गुजरात प्रदेश में दूध गाढ़ा करके बीज निकलने शरीफों के गूदे को उसमें मिलाकर जमा देने के उपरान्त इसका प्रयोग स्वादिष्ठ आइसक्रीम के रूप में किया जाता है।
- सीताफल की पत्तियां को पीसकर बांधने से नारू रोग के उपचार में सहायता मिलती है।
- इसकी पत्तियों को सूंघने से हिस्टीरिया रोग निदान में सहायक मिलती है।
- यह कब्ज को दूर करके मनुष्य को स्फुर्तिदायक बनाता है।
- क्षयरोग, सदी, कफ, प्लूरिसी और उदर विकारों के उपचार में यह अद्भुत कार्य करता है।
- इसकी पत्तियों का सेवन मधु मेह रोगियों के लिए हितकर है।
- सीताफल के बीज पीस कर बालों में लगाने से सर के जूयें मर जाती है। लेकिन बीज का रस आखों में पड़ने की सावधानी बरतनी चाहिए।
- घाव में कीड़े पड़ने की दशा में सीताफल के बीजों को पीस कर पुलटिस के रूप में प्रयोग करने से घाव के कीड़े मर जाते है।

पानी पर घोंसला बनाने वाली मछलिया

क्या आप जानते हैं कि कुछ मछलियां बुलबुलों के घोंसले बनाती हैं। ये घोंसले केवल नर मछली ही बनाती है। मादा नहीं। ये घोंसलें हवा और घोघों से निकलने वाले लिसलिसे पदार्थ के बुलबुलों से बनाये जाते हैं। मछलियां इन बुलबुलों को परस्पर दबाकर झाग का गुब्बारा सा बना लेती हैं। जो पानी की ऊपरी सतह पर तैरता रहता है। इसके बाद मादा उस पर अंडे देती है। और उन्हे घोंसले की भीतरी सतह में घुसा देती है। जिसकी रक्षा नर करती है। यदि घोंसले से कोई अंडा बाहर निकल भी जाता है तो उसे वह घोंसले में ही वापस कर देता है। गूरामिय और लडाका मछली भी पानी की सतह पर घोंसले बनाती हैं।

पर्यावरण की सुरक्षा को लेकर जनजागृति में जुटी "पर्यावरण प्रहरी"

– डा० विजय कुमार
मण्डलीय प्रतिनिधि–सहारनपुर

सहारनपुर। पर्यावरण प्रहरी संस्था के पदाधिकारी और कार्यकर्ताओं ने गत दिवस जिलाधिकारी सहारपुर से यहां के पर्यावरण को सुधारने के लिए आवश्यक कदम उठाये जाने की मांग की है।

प्राप्त समाचार के अनुसार जिलाधिकारी मिलने गए लोगों में पर्यावरण प्रहरी के सदस्यों में श्री शीतल टंडन (मख्य वार्डन, नागरिक सुरक्षा कोर तथा अध्यक्ष व्यापार मण्डल सहारनपुर), संरक्षक, डा. प्रमोद कुमार शर्मा (भूगोल विभाग, जे.वी. जैन कालेज) अध्यक्ष, श्री कमल गुप्ता (वन्य जीव प्रतिपालक) उपाध्यक्ष, श्री ए. सी. पपनेजा सचिव, श्रीमती हर्ष सिंह (समाज सेविका), सह–सचिव, डा. विजय कुमार (मण्डलीय प्रतिनिधि, पर्यावरण चेतना एवं अध्यक्ष प्राणि विज्ञान विभाग, महाराजसिंह कालेज) कोषाध्यक्ष, कैप्टन अवनाश कुमार, श्री राजकुमार सैनी एडवोकेट, डा. उषा अग्रवाल, श्रीमति स्नेह तिवारी, श्री सुशील मित्तल, श्री सुधीर कुमार जोशी (प्राचार्य, सहारनपुर पब्लिक स्कूल) कार्यकारिणी सदस्यों सहित अन्य प्रमुख लोगों ने जिलाधिकारी से शिकायत की कि जनपद प्रशासन पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिए बनाने गए कानूनों को जनपद में लागू करने में पूर्ण रूप से असफल सिद्ध हो रहा है।

'पर्यावरण प्रहरी' के सभी कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों ने जिलाधिकारी से पर्यावरण की सुरक्षा के लिए बनाए गए कानूनों को सख्ती से लागू करने की मांग करते हुए उन्हें एक ज्ञापन भी सौंपा। उक्त ज्ञापन की प्रतियां मण्डलायुक्त, अध्यक्ष नगर पालिका, उपाध्यक्ष सहारनपुर विकास प्राधिकरण, नगर विधायक एवं शिक्षक विधायक (विधान परिषद) को भी आवश्यक कार्यवाही के लिए प्रेषित की गयी हैं।

जायेगी।

[illegible] पृथ्वी को एक प्रदूषण-मुक्त स्वच्छ और स्वस्थ पर्यावरण का भविष्य प्रदान करें।

श्री रामपाल राजवंशी
राज्यमंत्री, पर्यावरण, उत्तर प्रदेश

हर साल बीस सेंटीमीटर नीचे जा रहा है पानी

–शिल्पा श्याम
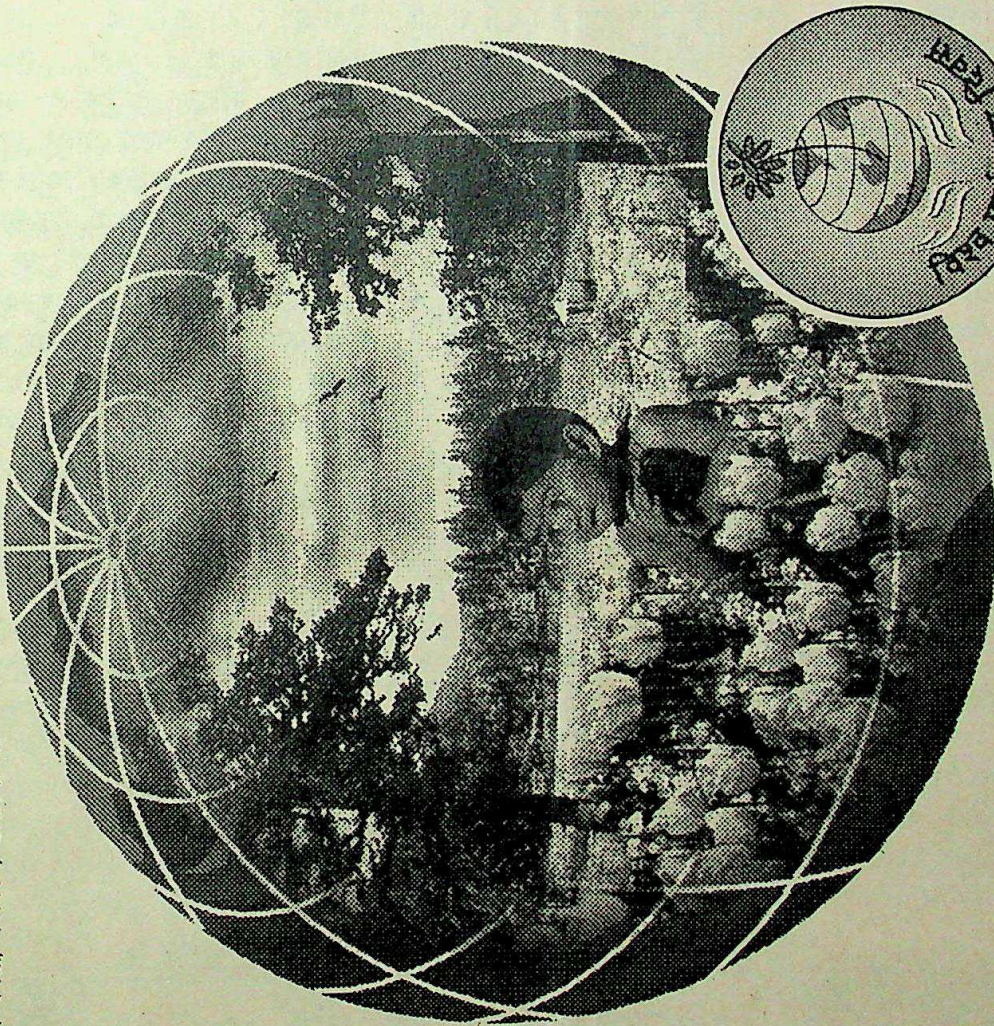
अत्यधिक दोहन की वजह से देश में भूजल का स्तर हर साल औसतन २० सेंटीमीटर नीचे जाता जा रहा है, और सबसे ज्यादा भयावह स्थिति पंजाब की है। उसके बाद राजस्थान हरियाणा और तमिलनाडु का नम्बर आता है। पंजाब की स्थिति सबसे ज्यादा खराब इसलिए कही जा सकती हैं क्योंकि प्रदेश में अगर कुल ११८ ब्लाक मंडल जल संभर हैं तो उनमें से ६२ अति दोहित क्षेत्र में आ चुके हैं यानि कि प्रदेश के कुल ब्लांक जल संभरों में से ५२.५४ फीसदी में भूजल का दोहन अत्याधिक तेजी से हो रहा है।

हरियाणा में १०८ ब्लाक जल संभर है तो उनमें से ४५ यानि कि ४१.६७ इस श्रेणी में शामिल हो गये हैं। इन दोनों राज्यों में स्थिति बाकी राज्यों के मुकाबले कितनी बुरी है इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि देश भर में अगर ४२७१ ब्लांक जल संभर है तो उनमें से २३१ अति दोहित क्षेत्र में आते हैं जबकि इन २३१ में से १०७ पंजाब और हरियाणा में ही हैं। इस क्रम में तीसरे नंबर पर आने वाले राजस्थान में कुल ब्लांक जल संभरों में से अति दोहित जल संभरों का प्रतिशत १८.०७ फीसदी, तमिलनाडु में १४.०६ फीसदी, और गुजरात में ६.५२ फीसदी है। अन्य राज्यों में से यह प्रतिशत इससे भी कम है।

अति दोहित क्षेत्रों (१०० प्रतिशत से अधिक) के अलावा जिन क्षेत्रों को डार्क क्षेत्रों (१०० प्रतिशत से ८५ प्रतिशत) में रखा गया है। ऐसे राज्यों में पंजाब और हरियाणा का नंबर चौथा व पांचवां है। विशेषज्ञयों ने चेतावनी दी है है कि यह क्रम अगर जारी रहा तो पंजाब व हरियाणा जैसे प्रदेशों में भी भूमि बंजर होना शुरू हो जायेगी।

डॉ. डी के चड्ढ़ा द्वारा तैयार रिपोर्ट के अनुसार देश में १३५ के करीब जिले ऐसे हैं जहां मानसून से पहले भूजल का स्तर सामान्य स्तर से चार मीटर तक नीचे चला जाता हैं। इनमें पंजाब का अमृतसर, जालंधर, फिरोजपुर, फरीदकोट, लुधियाना, फतेहगढ़, पटियाला, संगरूर व बठिंडा, तथा हरियाणा के भिवानी, रोहतक, जींद, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, करनाल, कैथल, महेंद्रगण, रिवाड़ी, गुडगांव, फरीदाबाद, व पानीपत, जिले शामिल है। जल संसाधन मंत्रालय की १६११–२००० की रिपोर्ट बताती है कि पंजाब में पट्टी, गांदीविंद, रयावेरका, तरनतारन, खंडूर, साहिब, वलतोहा, तारसिक्का, जंडियाला, नूरमहल, जालंधर(पूर्व), बांगा, भोगपुर, आदमपुर, नकोदर, शाहकोट, नावन, शेहार, फिल्लौर, गोराया, औंर, पखोवाल,जंगराव, मंगट, सुधार, समराला, दोराहा, पटियाला शहर, भुनरेहरी, नाभा, समाना, घनौर, बस्सी, पथाना, राजपुरा, सरहिंद, निहाल सिंह वाला, मोगा–१, बाघा पुराना व मोगा–२, संगरूर, महीकलान, सुनाम, लेहरागागा, धूरी, बरनाला, अहमदगढ़, मालेरकोटला, भवानीगढ़, डेरा बाबा नामक, कालानौर, बटाला, फगवाड़ा, कपूरथला, नाडाला, सुलतानपुर, चमकौर, साहिब, टांडा, फूल(पूर्व) तथा हरगोविंदपुर आदि ब्लांक अति दोहित ब्लांकों में शामिल हो चुके हैं।

इसी तरह हरियाणा में भवाना, दादरी–२, बल्लभगढ़, फरीदाबाद, फरूखनगर, गुडगांव, पटोदी, सोहना, बास, भुना, हिसार–१, हिसार–२, अलेवा, जींद, नरवाणा, गुलहा, कैथल, पुंडरी, समालखा, जाटुसाणा, खोल, नाहर, रेवाड़ी, सलावास, ओधन, राय, जगाधरी, तथा राधौर ऐसे ब्लाक हैं जहां पानी तेजी से नीचे जा रहा हैं।

❁❁❁

अद्भुत जीव चीटियां
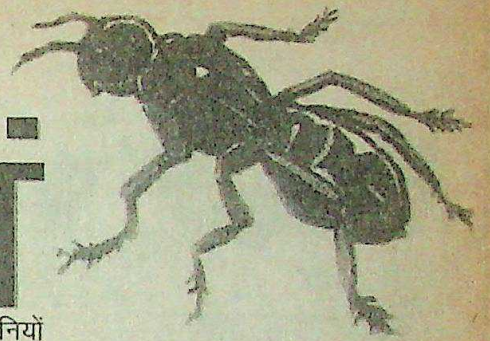
चीटियां इतनी अद्भुत जीव होती है कि उन पर यदि लिखने बैठा जाए, तो 'पन्ने रंग जाएं! लेकिन हम यहां पर आपको चीटियों से सम्बन्धित कुछ तथ्य परक जानकारी दे रहे है।

चीटियां आपको विश्व में हर जगह मिल सकती हैं– रेगिस्तानी रेत में, उत्तरी अमेरिका के घास के मैदानों में, समुद्र के किनारों पर, पर्वत के ढलानों जंगलों आदि में! वे हर प्रकार की जलवायु झेल लेती हैं।

चीटियों की हजारों प्रजातिया होती हैं, लेकिन वे सब मधुमाक्खियों और बर्र के कुल से सम्बन्ध रखती हैं। सभी चीटियां सामाजिक होती हैं। इसका आशय है कि वे सभी कालोनियां (समूहों) में रहती हैं। प्रत्येक समूह में तीन प्रकार की चीटियां होती हैं– नर, मादा, या रानियां और मजदूर चीटियों की अधिकांश प्रजातियों में नर और रानियों के पंख होते है। रानी लड़ाई में अपने पंख खो देती है। चीटियों की कालोनियों आकार में बड़ी होती है। किसी कालोनी मे मात्र कुछ दर्जन चीटियां रहती हैं और दूसरी कालोनी में सैकड़ों और हजारों की तादाद में हो सकती है।

सभी चीटियां दिखने में कमोवेश एक जैसी ही लगती हैं। एक चीटीं के सिर पर एक 'एन्टीना' होता है। जो हमेशा हिलता रहता है। यही 'एन्टीना' हर सम्वेदन को महसूस करता है और ये ही सूंघने वाले अंग के रूप में काम करता है।

सूंघनें के लिए, हालांकि चीटियों के कोई नाक नहीं होती है, फिर भी उनमें सूंघने की शक्ति होती है। 'एन्टीना' से ही एक चीटी दूसरी चींटी से अपनी बात कह पाती है। चीटियों के मुखिया के दिमाग भी होता है। एक कालोनी की मादाएं हवा में ऊंचा उड़ती हैं और नर उनके पीछे–पीछे जाते हैं। इस लड़ाई में नर तुरन्त मर जाते हैं। और प्रत्येक मादा या रानी नीचे उतरकर एक नयी कालोनी का निर्माण शुरू कर देती है।

एक घोंसला खोदती है और कुछ अंडे देती है। यही अंडे छोटे–छोटे टांग रहित लार्वा में बदल जाते हैं, तब रानी ककून बनाती है। जब बच्चे बड़े हो जाते हैं! तब रानी ककून का एक सिरा तोड़ देती है। और बच्चे को कवच से बाहर निकाल लेती है। तुरन्त ही, ये नवजात चींटी अपनी मॉं और शेष कालोनी के प्रति समर्पण भाव से कार्य करना शुरू कर देती है। ❁
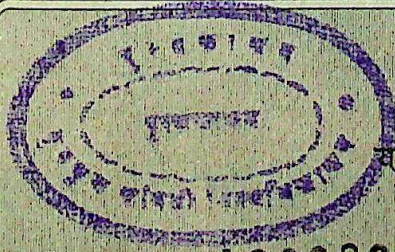
यत ते मध्यं पुथिवि यच्च नभ्यं,
यास्तूर्जस्तन्वः ऊर्जा स्तवन्यः सवंभूवुः,
तासु नो ध्येयभिः न पवस्व,
माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः
पर्जन्यः पिता स उ नः पिपर्तुः ।।
(अथर्ववेद / भूमि सूक्तः १२–१–१२)

हे,

पृथ्वी तुम्हारी कटि, नाभि सम्पूर्ण शरीर से जो शक्ति संजात होती है वह हमारी रक्षा करें तुम्हारे मातृवत-स्नेहिल उच्छवासों से हम अभिसिंचित हों वसुंधरा जननी है, हम सब इसके पुत्र हैं, बादल हम समस्त प्राणियों के लिए पितृवत है।।
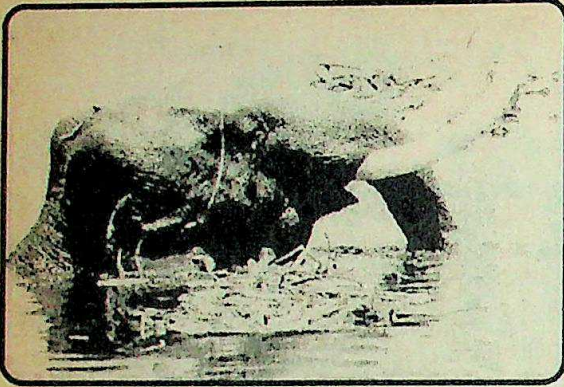
उफ़! अब गर्मी से कुछ राहत है —गर्मी से बचने की कोशिश में दिल्ली स्थित यमुना नदी में नहाता हाथी।
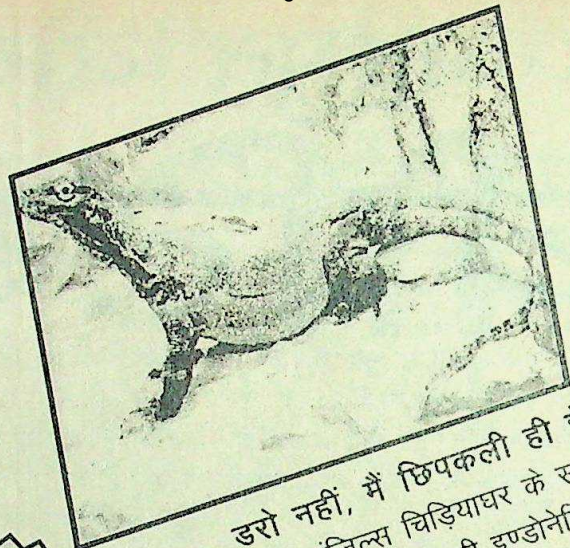
डरो नहीं, मैं छिपकली ही हूँ! —लॉस एंजिल्स चिड़ियाघर के सरीसृप गृह में सात फुट की इण्डोनेशियन छिपकली 'कोमोडोड्रेगन'।

प्यास बुझाना है तो बुद्धि और साहस से काम लेना ही पड़ता है। —नयी दिल्ली स्थित राष्ट्रपति भवन के किंग कोबरा फव्वारे पर बैठकर प्यास बुझाता एक कबूतर।
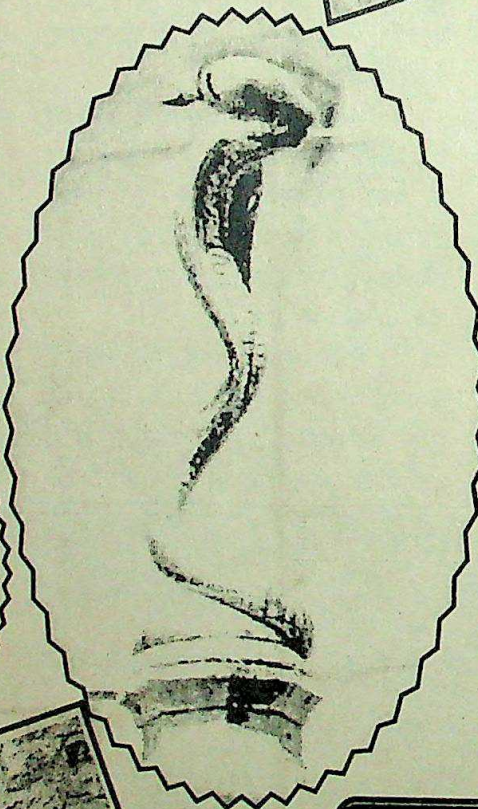
जरा संभल के उठाओ भाई — एडिनबर्ग के एक चिड़ियाघर में दो घंटे के नवजात जेनटू पेंगूइन चूजे को वजन के लिए एहतियात के साथ उठाते हुए।

वाह क्या मौसम है—सेंट पीटर्सबर्ग चिड़ियाघर में अपने बच्चे के साथ गर्म मौसम का लुत्फ उठाती ध्रुवीय मादा भालू।
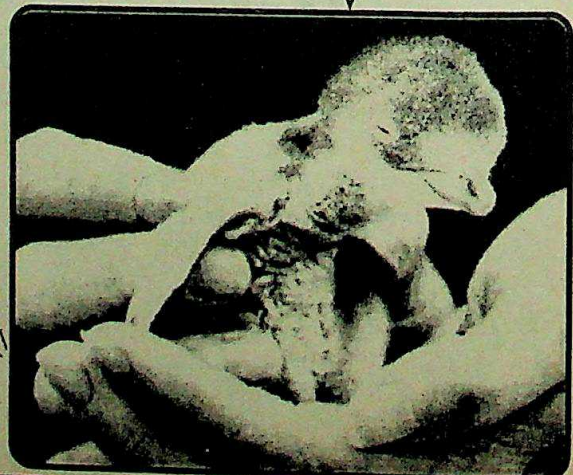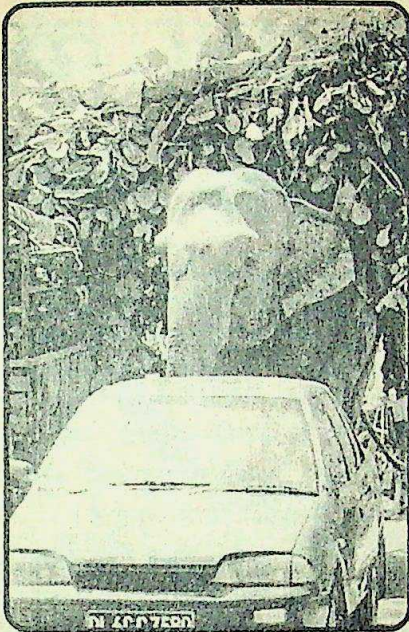
देखा, कितना बोझ उठा लेता हूँ मैं – राजधानी दिल्ली में अपनी पीठ पर पत्तों का भारी बोझ उठाए हाथी।

अच्छी दावत है – थाईलैंड के आयुट्टया कस्बे में 'हाथी दिवस' के अवसर पर आयोजित भोज में लगभग तीस हाथियों ने ताजे फल व सब्जियों की दावत का भरपूर आनंद लिया।
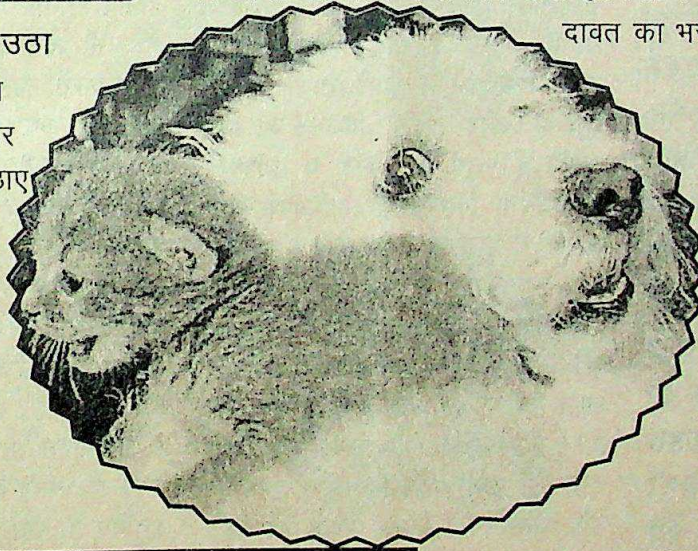
बच्चा क्या अपना क्या पराया – मोरक्को के रबात शहर में इस बेऔलाद गोरी कुतिया का मातृत्व हिलोरे ले उठा और उसने बिल्ली के एक लावारिस बच्चे को अपना लिया व गोद में लेकर मां के प्यार से सराबोर कर दिया।
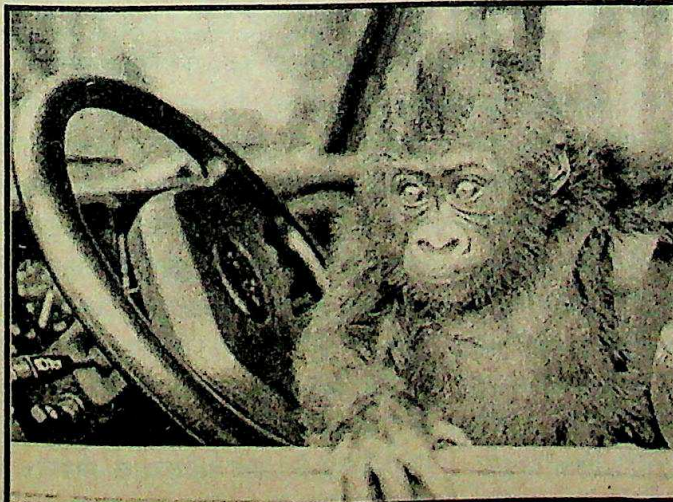
हमें भी अच्छी लगती है कार की सवारी –ब्रिटेन के हाओलेट वाइल्ड एनीमल पार्क में गाड़ी में बैठा छह माह का गोरिल्ला

हां भई, हम जुड़वां ही हैं –बिल्ली की विलुप्त होती प्रजाति में से दस दिन के बच्चों को हाथ में पकड़े गुवाहाटी स्थित चिड़ियाघर का कर्मचारी
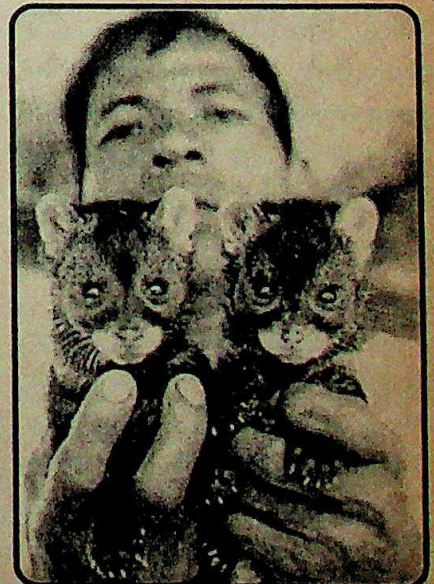
आगामी भयावह विनाश के संकेत हैं ओजोन पर्त के छेद

—डा. ए. के. चतुर्वेदी

वायुमण्डल विभिन्न गैसों एवं जल वाष्प का मिश्रण है। वायुमण्डल पृथ्वी की रक्षा करने वाला रोधी आवरण है। जो पृथ्वी की गुरूत्वाकार्बन शक्ति द्वारा बंधा रहता है। पृथ्वी की सतह से ऊपर जाने पर वायुमण्डल का स्वरूप एवं संघटन बदल जाता है। वायुमण्डल को पांच क्षत्रों में वर्गीकृत किया गया है। पृथ्वी के सबसे निकट का क्षेत्र जो बीस कि०मी० तक व्याप्त है। ट्रोपोस्फीयर या क्षोभ मण्डल कहलाता है। बीस से पचास कि०मी० का क्षेत्र स्ट्रेटोफीयर या समताप मण्डल है। इसका तापमान साठ डिग्री सेल्सियस है। पचास से अस्सी कि०मी० तक के क्षेत्र को मीजास्फीयर या मध्य मण्डल कहते हैं। इसका तापमान सौ डिग्री सेल्सियस है। अस्सी से चार सौ पचास कि०मी० तक का क्षेत्र थर्मोस्फीयर , आयनोस्फीयर, या आयन मण्डल कहते हैं। चार सौ पचास से नौ सौ कि०मी०तक का क्षेत्र एक्नोस्फीयर या वाह्य मण्डल है। यह अंतरिक्ष है। जो विरल तथा ठन्डा है।

इन सब क्षेत्रों में सबसे महत्वपूर्ण समताप मण्डल है। जो पृथ्वी की सतह से बीस से पचास कि०मी० कर दूरी तक स्थित है। इस क्षेत्र की मोटाई बीस कि०मी० है। इसी मण्डल में ओजोन की पर्त पायी जाती हैं ओजोन पर्त कुल वायुमण्डल का दस लाखवां भाग होने पर भी पृथ्वी पर जीवन की दृष्टि से सर्वाधिक उपयोगी है। ओजोन पृथ्वी के चारों और पर्त के रूप में विद्यमान है। और परा बैगनी किरणों से रक्षा करती है। इस कारण ओजोन पर्त सुरक्षा–कवच भी कहलाती है।

ओजोन ऑक्सीजन परिवार का सदस्य है। जो गैस के रूप मे विद्यमान है। ओजोन में आक्सीजन के तीन परमाणु होते है। रासायनिक दृष्टि से ओजोन अत्यन्त सक्रिय यौगिक है। इसकी विशेष गन्ध होती है। समताप मण्डल में उपस्थित ओजोन के सूर्य के प्रकाश के लिए फिल्टर का कार्य करती है। सूर्य के प्रकाश मं उपस्थित परा–बैगनी किरणों का अधिकाश भाग ओजोन के द्वारा अवशोषित होती है। ओजोन स्वयं परा–बैगनी किरणों की सहायता से ऑक्सीजन से उत्पन्न होती है। ओजोन पर्त उष्मा उत्पन्न करने वाली अवरक्त लाल किरणों को पृथ्वी तक पहुंचने देती है। जिससे पृथ्वी का तापमान संतुलित रहता है। पृथ्वी पर जीवन बना रहता है। यदि परा–बैगनी किरणें पृथ्वी पर पहुंच जाएं तो घातक परिणाम होंगे। रोगों का साम्राज्य होगा जिससे जीवन नष्ट हो जायेगा। मानव ने प्रकृति के साथ–साथ छेड़–छाड़ कर अपने विनाश का मार्ग स्वयं प्रशस्त किया है। पर्यावरण का सर्वाधिक विनाश औद्योगिक विकसित राष्ट्र कर रहे हैं। पर्यावरण में होने वाली क्षति व्यापक है। अतः ओजोन पर्त का क्षरण अन्तर्राष्ट्रीय समस्या हो गयी है। ओजोन सतह पर मनुष्य के क्रिया–कलापों का प्रभाव पड़ता है। यदि विस्फोट होता है। तो उसका प्रभाव वायुमण्डल में बीस कि०मी० तक पहुंचता है। जिससे ओजोन पर्त प्रभावित होती है। क्लोरो–फ्लोरो कार्बन गैसो ने भी ओजोन पर्त का सर्वाधिक क्षरण किया है। इन गैसो का उपयोग नोदक, प्रशीतन, वातानुकूलन एयरोसोल, मृदु तथा कठोर फोम के निर्माण में किया जाता है।

क्लोरो–फलोरो कार्बन गैसें निष्क्रिय, विष सहित, गन्धहीन, रंगहीन, अज्वलनशील होती है। ये गैस बिना विकृत हुए वायुमण्डल में बनी रहती है। और ओजोन पर्त का क्षरण करती रहती है। यह क्षरण जीवन के लिए अति कष्टकारी है। अमेरिका, कनाडा, व अनेक यूरोपीय विकसित रान्द्रों में धातु के पुनः चक्रण करने के लिए बड़ी मात्रा में पुराने रेफ्रीजंरेटर्स, एयर कण्डीशनर, वाताकुनूलित कारों को तोड़ा जाता है। परिणाम स्वरूप वायुमण्डल में क्लोरों–फलोरो कार्बन गैसो का उत्सर्जन होता रहता है। चूंकि यह गैस वायुमण्डल में अप्रभावित रहती है। और ओजोन पर्त का क्षरण करती रहती है। जिससे पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। जब क्लोरो–फलोरो कार्बन गैसै ओजोन पर्त पर पहुचती हैं। तो सूर्य से आने वाली परा बैगनी किरणें उत्प्रेरक का कार्य करती है। परा बैगनी किरणें कलोरो–फलोरो कार्बन गैसों से क्लोरीन परमाणु को मुक्त करती है। मुक्त कलोरीन परमाणु ओजोन अणु से क्रिया कर क्लोरो आक्साइड व आक्सीजन देती है। क्लोरो आक्साइड मुक्त क्लोरीन व मुक्त आक्सीजन देता है। मुक्त क्लोरीन ओजोन पर्त को प्रभावित करती है। यह प्रक्रिया चलती रहती है। जिससे ओजोन पर्त का क्षरण होता रहता है। इस प्रक्रिया के निरन्तर चलने से पर्यावरण प्रभावित होता है। जिससे जीवन को संकट उत्पन्न हो जाता है।

मछलियों का अद्भुत शिकारी : मछरंग

मछली मार या मछरंग बाज–कुल का एक विशेष पक्षी होता है, जिसे आस्फ्रे (मत्स्य कुकरी) भी कहा जाता है। इसका जीव–वैज्ञानिक नाम 'पैंडिअन हैलिएटस' (लिनीअस) है। चूंकि इस पक्षी का मुख्य भोजन मछली है, इसलिए इसे 'मछली मार' या मछरंग कहा जाता है। यह पक्षी जाड़ों में भारतीय संघ में सभी जगह पाया जाता है। इसके अतिरिक्त इसे पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका तथा म्यांमार (वर्मा) में भी देखा जा सकता है। इसका आकार 'पराइया चील' के आकार–जैसा होता है। इस पक्षी के बाहरी लक्षणें की पड़ताल करने पर पता चलता है कि यह एक गहरे भूरे रंग का बाज (श्येन) होता है।, जिसका सिर भूरा और निचला भाग सफेद होता है। इसके ऊपरी वक्ष पर एक चौडी– भूरी पट्टी या कण्ठी (नेक्लेश) होती है। यह इस पक्षी का विभेदक लक्षण है और उडते हुए या बैठे हुए दोनों ही स्थितियों में यह दिखाई देता है। इनमें नर मादा में कोई विभेद नहीं है।

मछली मार (मछरंग) 'दाई–काई–काई' की स्पष्ट ध्वनि निकालता है, लेकिन इसके शीतकालीन आवास में यह ध्वनि सुनाई नहीं देती है।

यूरोप में इसका प्रजनन काल अप्रैल से जून तक होता है। हिमालय पर्वत तथा भारतीय सीमा के अन्दर अन्य स्थानों में इसके कथित प्रजनन के विषय में पुष्टि नहीं हो पाई है।

जाड़े के मौसम में इसे भारत की कई बड़ी नदियों, तालाबों तथा झीलो के किनारे देखा जा सकता है। जब भी पानी की सतह के आसपास कोई मछली दिखाई देती है, तो यह उसको पकडने के लिए झपटता है। कभी–कभी यह केस्ट्रेल पक्षी की तरह पानी के इर्द–गिर्द शिकार की खोज करने के लिए मंडराता रहता है। इस समय इसके पैर नीचे लटके रहते है। और शिकार पकडने के लिए तैयार रहते है। उपयुक्त अवसर मिलने पर यह जीव अपने पंख बंदकर, अपने शिकार पर तेजी से झपटता है। ऐसा करते समय यह अपने पंजों से जोर–जोर से छप–छप करता है। कभी–कभी तो शिकार पकड़ने के लिए यह पानी में पूरी डुबकी लगा देता है। इससे लगता है कि यह एक अच्छा गोताखोर भी है। मछली पंजों में आ जाने पर यह पक्षी समीप की किसी झाड़ी में चला जाता है और चीड़–फाड़कर खा जाता है।

अनुसंधानों से ज्ञात हुआ है कि ध्वनि की गति से तेज बीस कि०मी० में उड़ने वाले सुपर सोनिक जेट वायुयान भी ओजोन पर्त का क्षरण कर रहे हैं। इनसे उत्सर्जित तापीय ऊर्जा वायुमण्डल की आक्सीजन व नाइट्रोजन को नाइट्रिक आक्साइड में परिवर्तित कर देता है। नाइट्रिक आक्साइड ओजोन से क्रिया कर आंक्सीजन देता है। जिससे ओजोन की मात्रा में कमी हो जाती है।

सर्वप्रथम उन्नीस सौ सत्तर में ओजोन पर्त में छिद्र होने का पता चला। यह छिद्र जनविहीन दक्षिणी ध्रुव के अण्टार्टिका क्षेत्र मे पाया गया है। उन्नीस सौ चौरासी में ओजोन छिद्र का व्यास चालीस कि०मी० पाया गया। नासा के अनुसार अब छिद्र का व्यास बढ़कर सत्तर लाख वर्ग कि०मी० हो गया है। अनुसंधानों से ज्ञात हुआ है कि उत्तरी गोलार्द्ध की घनी जनसंख्या वाले क्षेत्रों में भी ओजोन छिद्र विद्यमान है। मानव जाति के विनाश के यह भयाव संकेत हैं।

ओजोन पर्त के क्षरण से पृथ्वी पर परा बैगनी किरणों की मात्रा बढ जायेगी जिसके भयंकर दुष्प्रभाव होंगे। अन्त में जीवन का विनाश हो जायेगा। अतः ओजोन पर्त का क्षरण गम्भीर अन्तराष्ट्रीय समस्या है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस समस्या के समाधान की ओर पहली वार उन्नीस सौ पिच्चासी में वियना अधिवेशन मे विचार हुआ और क्षरण के करणों पर प्रकाश डाला गया। उन्नीस सौ सत्तासी में मान्ट्रियल में हेला कार्बन गैसों के उत्पादन एवं उपयोग पर रोक लगाने का प्रस्ताव पास हुआ। उन्नीस सौ बान्नबे मे ब्राजील में हुए पृथ्वी शिखर सम्मेलन में हेलो कार्बन गैसों के उपयोग पर विशेष रूप से रोक लगाने का प्रस्ताव पास हुआ। ओजोन पर्त में जो छिद्र हो गये है। उन्हे कम करने के प्रयास शुरू करने पर जोर दिया गया। ❁

जलवायु परिवर्तन के दुश्चक्र में फंस गया भारत भी

—निरंकार सिंह

एशिया के आठ देशो के सामने जलवायु मे परिवर्तन के कारण संकट पैदा हो गया है। इन देशो की एक चौथाई आबादी विनाश और तबाही के कगार पर है। यह खतरा पर्यावरण के विनाश से पैदा हुआ है। वाशिंगटन के 'क्लाइमेट इंस्टीट्यूट' की रिपोर्ट मे यह चेतावनी दी गयी है। आठ देशो के सरकारी और निजी अनुसंधान संस्थानो के 60 से भी अधिक विशेषज्ञो ने कहा है कि भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, बांग्लादेश, इंडोनेशिया, मलेशिया, वियतनाम और फिलीपीन्स जलवायु परिवर्तन के दुष्चक्र मे फंस गये है।

भारत के उड़ीसा, केरल, आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात के तटवर्ती क्षेत्रो मे समुद्री तूफान आने का सिलसिला तो पहले से ही शुरू हो चुका है। इसमे तेजी से वृद्धि होगी। बांग्लादेश मे हर साल आने वाली बाढ़ एक विकराल समस्या बन गयी है। यह सब हमारे आधुनिक विकास का नतीजा है जिससे हम अनिवार्य रूप से जुड़े हुए है। हमारी सांसो मे घुलता हुआ जो जहर है वह सड़को पर दौड़ती करोड़ो गाड़ियो के चलते है। हमारे कण्ठ के नीचे उतरता पानी अपने साथ ढेर सारे जहरीले रसायन लिए रहता है, जो हमारी नदियो मे हर रोज डाले जाने वाले सैकड़ो टन कबाड़ का ही नतीजा नही है, बल्कि हमारे खेतो मे छिड़के जा रहे कीटनाशको की भी देन है।

हमारी नदियो मे बहता पानी एक प्रकार का जहर ही है और इस जहर की मात्रा हर रोज बढ़ती जा रही है। इस खतरे मे हम उस भयावह प्रक्रिया को पढ़ सकते हैं जिसके तहत विकेन्द्रीकरण के अभाव मे हमारे गांव और कस्बे नष्ट हो रहे है और अतिशय केन्द्रीकरण महानगरो को गैस चैम्बर बना रहा है। यह खतरा इतना व्यापक है कि महानगरो मे रहने वाले चाहकर भी इससे बच नही सकते। यह उनके घरो मे दाखिल होकर उनकी रसोई मे शामिल होकर, उनके जिस्म मे उतर कर उनको नष्ट करने की जगह बना लेगा। चूंकि जंगल और चारागाह गायब होते जा रहे है इसलिए यह संकट और गहराता जा रहा है। धरती पर पेड़ पौधे नही रहेगे तो आक्सीजन नही पैदा होगी और मनुष्य का जीवन खतरे मे पड़ जायेगा।
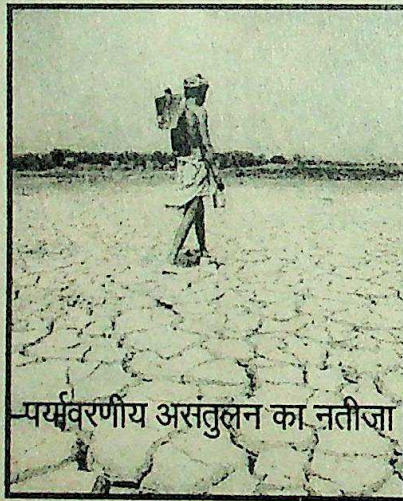
पर्यावरणीय असंतुलन का नतीजा

बेतहाशा वायु प्रदूषण

दिल्ली मे हर साल लगभग 40 लाख लोग वायु प्रदूषण के कारण बीमार होते है, मुम्बई, कोलकाता की स्थिति भी भयावह है। कानपुर, लखनऊ की स्थिति भी चिंताजनक है। हमारे महानगरो की यह दशा औद्योगिक इकाइयो, मोटर गाड़ियो और स्कूटरो के धुएं से हुई है, जो आधुनिक जीवन और प्रगति के वाहन माने जाते है। पूरे देश मे जितने आटोमोबाइल वाहन है उनमे 49 प्रतिशत केवल दिल्ली, मुम्बई और कोलकाता मे हैं। देश मे दस लाख की आबादी वाले 23 नगरो मे गाड़ियो और उद्योगो से निकलने वाला धुआं खतरे की सीमाएँ पार कर चुका है। विश्व बैंक की ताजा रिपोर्ट के अनुसार पूरे देश मे 40 हजार लोगो की वायु प्रदूषण से अकाल मौत हो जाती है। भारत मे विभिन्न प्रकार के प्रदूषणो मे सबसे गंभीर वायु एवं जल प्रदूषण की समस्या है। इसके बाद कुछ बड़े शहरो मे शोर प्रदूषण की भी समस्या है। कोलकाता, मुम्बई, दिल्ली और चेन्नई जैसे कुछ बड़े नगरो मे कोलाहल एक खतरे के रूप मे बढ़ता जा रहा है जिससे मनुष्य को एक प्रकार के तनाव को झेलना पड़ता है। इन शहरो मे मोटर गाड़ियो और कल-कारखानो से निकलने वाला धुआं भी मानव स्वास्थ्य के लिए तरह-तरह के खतरे पैदा कर रहा है। देश के चार महानगरो सहित कुछ बड़े शहरो मे सल्फर डाईआक्साइड और विषाक्त तत्वो का स्तर उस सीमा से अधिक पहुँच गया है जिसका निर्धारण विश्व स्वास्थ्य संगठन ने किया है। इससे लोगो में दमा, कैसर, गल-शोथ, खांसी, श्वांस रुकना, छीक आना और नाक बन्द होना जैसी बीमारियां बढ़ती जा रही है। विशेषज्ञो ने यह भी सिद्ध किया है कि औद्योगिक गैसो का फसल की उत्पादकता पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है।

जहर बनता जल

भारत की गंगा-यमुना जैसी जिन पावन नदियो मे कभी स्वच्छ जल की धारा बहती थी आज उनमे भी दुर्गन्ध और सड़ांध के भभके उठने लगे है। उत्तर मे डल झील से लेकर दक्षिण मे पेरियार आदि नदियो तक, पूर्व मे दामोदर और हुगली से लेकर पश्चिम मे थाणा की संकरी खाड़ियो तक, सब जगह जल प्रदूषण की स्थिति चिन्ता का विषय बनी हुई है। केन्द्रीय

और राज्यों के जल-प्रदूषण निवारक और नियंत्रण बोर्डों द्वारा की गयी जांच-पड़ताल से पता चलता है कि प्राकृतिक जल के, जिसमे समुद्र का तटवर्ती जल भी शामिल है, दूषित होने का मुख्य कारण है- मानव बस्तियो की गन्दगी को पानी मे बहाना। मानव बस्तियो और उद्योगो का गन्दा पानी सीधे जल प्रवाह मे मिल जाता है, जो अधिकांश रूप से उपयोग करने लायक नही रह जाता। केन्द्रीय जल प्रदूषण बोर्ड के अनुसार भारत मे केवल 8 शहर ऐसे है जहाँ जल मल का निष्कासन करने की सुविधाये उपलब्ध है। इन शहरो के नाम है- अहमदाबाद, बंगलौर, बीजापुर, सांभली, नान्देड़, नासिक, थाणे और दुर्गापुर। यमुना मे दिल्ली का गन्दा पानी छोड़े जाने के कारण उसका जल इतना अधिक प्रदूषित हो गया है कि कृषि के कामो के लिए उपयोगी नही रह गया है। इस जल ने कृषि उत्पादन पर विपरीत प्रभाव डाले है और हमारा कृषि उत्पादन प्रभावित हुआ है।

इस बात के प्रमाण है कि सारे देश मे प्रदूषण के प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहे है। इस संबंध मे पानी से उत्पन्न होने वाली छूत की बीमारियां, जैसे हैजा, पीलिया, टायफायड तथा दूषित पानी से मछलियो और कृषि उपज को हो रही हानि का उल्लेख किया जा सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार विकासशील देशो के अस्पतालो मे हर चार रोगी मे एक प्रदूषित जल के कारण बीमार है।

बढ़ती बीमारियां

मानव स्वास्थ्य के लिए दूसरे गंभीर और अधिक घातक परिणाम विकास कार्यों से उत्पन्न होते है। रोगाणुओ के लिए अनुकूल पर्यावरणीय स्थिति होने के कारण मलेरिया, फाइलेरियासिस, डेंगू, जिनिया वर्म, जापानी इनसेफेलाइटिस आदि बीमारियां विशेषकर व्यापक रूप से फैल रही है। इस प्रकार के रोगग्रस्त स्थानो की सृष्टि स्वयं मनुष्य ने तालाबो, गड्ढो और खाइयो के रूप मे की है जहाँ रोग वाहक पलते है। यह सभी जानते है कि कृषि और मानव उपयोग के लिए पानी की व्यवस्था करना एक बहुत बड़ा विकास कार्य है। इसलिए ऐसे विकास कार्यों को कार्यान्वित करते समय इस बात को सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि मनुष्यो और पशुओ की बीमारी उत्पन्न करने वाले रोग वाहको के लिए अनुकूल परिस्थिति का निर्माण न हो। बड़े जलाशयो का निर्माण करने से उसके आसपास की भूमि चिकनी हो जाती है जिसकी वजह से मिट्टी मे क्लोराइड, कैल्शियम और सूक्ष्म धातुओ का स्तर बदल जाता है। इसके फलस्वरूप जो लोग विवश होकर दूषित जल को प्रयोग करते है उनमे फ्लूरोसिस जैसी बीमारियां पैदा हो जाती है। उदाहरण के लिए राष्ट्रीय पोषाहार संस्थान, हैदराबाद इस निष्कर्ष पर पहुँचा है कि नागार्जुन सागर बांध के आसपास वाले क्षेत्रो मे फ्लूयरोसिस की स्थिति काफी गंभीर है।

चर्म रोग, ट्रैकोमा, जिनिया वर्म और चिस्टोसोमिआसिस ऐसी बीमारियां है जो पानी से फैलती है। उदाहरण के लिए भारत मे खनन कार्य करने से जल और वायु प्रदूषण, भूस्खलन और चट्टान के टूटने जैसी गंभीर समस्याये प्रायः उत्पन्न हो जाया करती है। उद्योगो द्वारा अंधाधुंध गन्दगी विसर्जित करने से अनेक प्रकार की प्रदूषण की समस्याये खड़ी हो जाती है। यह समस्या भारतीय धातुओ और अन्य विदेशी रासायनिक पदार्थो से अधिक बढ़ जाती है, जो जीवन के लिए हानिकारक है। कृषि कार्य मे बेतरतीब और अत्यधिक मात्रा मे रासायनिक पदार्थों का प्रयोग करने से भी जल प्रदूषण के मामले बढ़े है और खाद्य उत्पादो मे कीटनाशको के अवशेष रह जाते है।

निष्प्रभावी कानून

पर्यावरण की सुरक्षा के लिए प्रशासनिक और वैधानिक व्यवस्था के अन्तर्गत कई दशको से योजनाये और कार्यक्रम चल रहे है। पर्यावरण की रक्षा के लिए भारत सरकार ने 1972 मे "राष्ट्रीय पर्यावरण योजना एवं समन्वय समिति" का गठन किया था। इस समिति के कहने पर विभिन्न राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रो ने उच्च स्तरीय 'पर्यावरण बोर्डों' का गठन किया है। आज देश मे ऐसे अनेक कानून है, जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पर्यावरणीय संसाधनो के संरक्षण से संबंधित है। अभी हाल ही मे बनाये गये कानूनो मे से कुछ इस प्रकार है- कीटनाशी अधिनियम 1968, वन्य जीवन संरक्षण अधिनियम 1972, जल अधिनियम 1974, जल प्रदूषण उपकर अधिनियम 1978 भारतीय वन अधिनियम जैसे कानून। इनमे कई कानून पुराने पड़ गये है और उनका कार्यान्वयन भी काफी शिथिल है। ऐसे कानूनो से पर्यावरण का प्रदूषण रोका नही जा सकता है। इन्हे लागू करने वाले राज्यो के प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड भ्रष्टाचार के केन्द्र बन चुके है। सामाजिक न्याय के साथ आर्थिक विकास के उद्देश्य से उत्पन्न होने वाली विशेष समस्याओं के निदान के लिए कारगर कानूनो की आवश्यकता है।

जागरूकता की जरूरत

कल कारखानो को उपचार संयंत्र लगाये बिना चलाये जाने के लिए अनुमति नही होनी चाहिए। महानगरो मे आबादी के घनत्व पर भी रोक लगाने की आवश्यकता है। रोजी-रोजगार के साधनो को ऐसे स्थानो पर केन्द्रित किया जाना चाहिए जहाँ आबादी कम हो। वृक्षारोपण कार्यक्रम को एक जन आन्दोलन बनाने की दिशा मे भी सरकार और सामाजिक संस्थाओ को पहल करनी चाहिए। हरे वृक्षो को कटान पर सख्ती से और कारगर रोक लगाने की आवश्यकता है। अब तक हमारा कानून हरे वृक्षो की कटान को नही रोक सका है। सभी प्रकार की विकास योजनाये तैयार करते समय पर्यावरण को भी उनका अंग बनाना होगा तथा उसके लिए आवश्यक कार्यविधि उपलब्ध करनी होगी, ताकि पर्यावरण सम्बन्धो प्रस्तावो को क्रियान्वित किया जा सके। यह मूल्यांकन भी करना होगा कि वे कहाँ तक कारगर सिद्ध हुए है। पर्यावरण के विनाश से होने वाले सामूहिक नरसंहार को रोकने के लिए कानूनो की हमारे पास कमी नही है, लेकिन उन्हे लागू करने वाली एजेसियां और सरकारे किस कदर नकारा और निकम्मी साबित हुई है, इसका सबसे बड़ा उदाहरण दिल्ली की सरकार है। जिसे जगाने के लिए सुप्रीम कोर्ट को कई आदेश जारी करने पड़े है। अब सवाल इस बात का भी उठता है कि जो संस्थाएं या सरकारे सुप्रीम कोर्ट की फटकार तक पी जाती है उन्हे कैसे जगाया जाए? कुल मिलाकर पर्यावरण और मानव पर बड़ी-बड़ी परियोजनाओ के पड़ने वाले परिणामो के लिए निश्चय ही सरकार को जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए, पर पर्यावरणीय सुरक्षा की पूरी जिम्मेदारी केवल सरकार पर ही थोपी नही जा सकती।

(साभार : दै.जा.)

लाल बिहारी की कविताएं

व्यथा : एक पादप का

अतीत की राहों में
सुनसान पड़ा बीजों से
धरती के अन्दर
पाकर स्पर्श – हवा एवं धूप की
मन अंकुरित हुआ तो
रूप लिया पादप का ।

धीरे–धीरे बढ़ने लगा
सपने मन में सजाकर कि
ज्यों–ज्यों बढ़ता जाऊंगा
त्यों–त्यों उपकार करूंगा ।

इस धरती से आकर
इस धरती से तमाम जीवों का
खाने (करने) के लिए दूंगा–भोजन
रहने के लिए दूंगा–आवास तथा
पहनने के लिए दूंगा–वस्त्र ।

तभी एक हवा की झोंका आया
और प्रदूषण मुक्त, धरती से
उखाड़कर, उड़ा ले गया
और मेरा सपना
आकार लेने की जगह
निराकार हो गया !

❁❁❁

21वीं सदी कैसी होगी

राह चलते –चलते
कहीं दुघर्टना न हो जाये
इससे बचने के लिए
सिर पर
शिरस्त्राण (हेल्मेट) होगा ।
प्रदूषणयुक्त, हवा से बचने के लिए
आखों पर
धूम धूलि निरोधक
चश्मा होगा ।
कल कारखानों के
तेज शोर से
बचने के लिए
कानों पर कर्णप्पगस होगा ।
पर्यावरण प्रदूषण से, बचने के लिए
मुंह पर
प्रदूषणरोधी मुखौटा (मास्क) होगा ।
शुद्ध हवा की, जब होगी किल्लत
तब काधों पर
आक्सीजन का, सिलिण्डर होगा ।
मिलेंगे जब नहीं निर्मल जल
पीने के लिए
तो आपस में खूब रगड़ (संघर्ष) होगा ।
भाग–भाग, भौतिकता के पीछे
खनिजों के दोहन से, खानों में कबर(कब्र) होगा।
हो चुका है मानव अंधा
खा रहा है मीठा जहर, और पी रहा है अशुद्ध जल
फिर भी इन बातों से, बे–असर होगा।
अभी भी समय है, मान जाओ लाल बिहारी की बातें,
छोड़ो भोतिकता के पीछे भागना,
वर्ना एक दिन प्राकृति का, अद्भुत कहर होगा ।

❁❁❁

1. प्रकृति विज्ञान की प्रथम पुस्तक कौन सी है?
   (अ) अथर्ववेद (ब) यजुर्वेद
   (स) ऋग्वेद (द) सामवेद

2. पृथ्वी की आयु कितने वर्ष है ?
   (अ) 35 लाख (ब) 60 करोंड
   (स) 185 हजार (द) 1 करोंड

3. शाखामृग किस जानवर को कहते है ?
   (अ) लोमड़ी (ब) कबूतर
   (स) बन्दर (द) भालू

4. विश्व की सर्वाधिक प्रदूषित राजधानी का नाम बताइए ?
   (अ) दिल्ली (ब) टोकियो
   (स) क्वालालम्पुर (द) लन्दन

5. भारत की वे दो नदियां कौन-सी हैं, जो सर्वाधिक प्रदूषित हैं,
   (अ) गंगा-यमुना (ब) कावेरी-सतलुज
   (स) काली-गोमती (द) गोदावरी-नर्मद

6. ध्वनि-तीव्रता मापने की इकाई क्या है ?
   (अ) डेसिबल (ब) वाट
   (स) मीटर^2 (द) जूल

7. मानव-शरीर में जल की कितनी मात्रा है ?
   (अ) 30 प्रतिशत (ब) 80 प्रतिशत
   (स) 15 प्रतिशत (द) 65 प्रतिशत

8. विश्व पर्यावरण दिवस कब मनाया जाता है ?
   (अ) 5 जून (ब) 28 फरवरी
   (स) 5 जनवरी (द) 31 अक्तूबर

9. पर्यावरण को किस रंग से संकेतित करते हैं ?
   (अ) पीले रंग से (ब) हरे रंग से
   (स) लाल रंग से (द) सफेद रंग से

10. टिहरी बांध योजना का विरोध करने वाले पर्यावरणविद् का नाम बताइए ?
    (अ) सुन्दर लाल बहुगुणा (ब) मेघा पाटकर
    (स) जगदीश चन्द्र बसु (द) चण्डी प्रसाद भट्ट

11. संसार में सर्वप्रथम पृथ्वी पर कृषि कहां शुरू हुई थी ?
    (अ) अमेरिका (ब) चीन
    (स) भारत (द) अफ्रीका

12. घर के भीतर प्रदूषण का मुख्य स्रोत क्या है ?
    (अ) वाशिंग मशीन (ब) टी. वी.
    (स) कुकिंग रेन्ज (द) ट्यूब लाइट और बल्ब

13. अखबार में पाए जाने वाला प्रदूषण कारी तत्व कौर-सा हैं?
    (अ) लैड (सीसा) (ब) क्रोमियम
    (स) निकिल (द) जिंक

14. विश्व में कितने प्रतिशत भूमि खेती के योग्य है ?
    (अ) 36 प्रतिशत (ब) 21 प्रतिशत
    (स) 07 प्रतिशत (द) 98 प्रतिशत

15. प्रकृति और मानव के अन्तर्सम्बन्धों का उल्लेख किस पुराण में है ?
    (अ) ब्रहम वैवर्त पुराण (ब) कूर्म पुराण
    (स) मत्स्य पुराण (द) गरद पुराण

16. औद्योगीकरण द्वारा मुख्य रूप से कौन सी गैस पैदा होती है ?
    (अ) सल्फर डाई आक्साइड (ब) मीथेन
    (स) ईथेन (द) ओजोन

17. कनाडा का विश्व प्रसिद्ध वन क्षेत्र कौन-सा है ?
    (अ) राइवर कैडी (ब) कैमेल्स हंप
    (स) नैन्सी वर्नार्ड (द) अबीसीनिया स्क्वायर

18. भूमध्यरेखा पर पृथ्वी की परिधि कितनी है ?
    (अ) 2,50,380 वर्ग किमी (ब) 9,000 किमी
    (स) 24,902 मील (द) 1,236 मीटर

19. भूमिगत जल की मात्रा कितने घन किलोमीटर है ?
    (अ) 80 लाख (ब) 50 लाख
    (स) 90 लाख (द) 30 लाख

20. कोयले व लोहे का भण्डार पृथ्वी पर लगभग कब तक चलेगा?
    (अ) 3,000 वर्ष (ब) 50 वर्ष
    (स) 390 वर्ष (द) 500 वर्ष

21. प्रदूषण कितने प्रकार का होता है ?
    (अ) 8 (ब) 6
    (स) 7 (द) 3

22 प्रवाह काल के अन्त में गंगा किस जगह गिरती है ?
    (अ) गंगा सागर (ब) कैस्पियन सागर
    (स) प्रशान्त महासागर (द) हिन्द महासागर

23. एक आम भारतीय प्रतिदिन कितने मि.ग्राम कीटनाशक खाता है ?
    (अ) 0.27 (ब) 0.39
    (स) 0.62 (द) 0.11

उत्तर

1-(स),	2-(ब),	3-(स),	4-(ब),
5-(अ),	6-(अ),	7-(द),	8-(अ),
9-(ब),	10-(अ)	11-(स),	2-(स),
13-(अ),	14-(अ),	15-(द),	6-(अ),
17(ब),	18(स),	19-(अ),	20-(द),
21(स),	22(अ),	23-(द),	
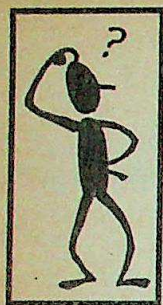
क्या आप जानते हैं?

❁ कुछ मछलियों को बुलबुलों के घोंसले बनाने वाली मछलियाँ कहा जाता है। ये घोंसले केवल नर मछली बनाती है। मादा नही नर मछली हवा और घोघों से निकलने वाले लिसलिसे पदार्थ के बुलबुलों से अपने घोंसले बनाती है। वह इन बुलबुलो को परस्पर दबाकर झाग का गुब्बारा सा बना लेती है। जो पानी की ऊपरी सतह पर तैरता रहता है। इसके बाद मादा उस पर अपने अंडे दे देती है। और उन्हे घोंसले की भीतरी सतह में घुसा देती है। नर मछली उन घोसलों की रक्षा करती है। यदि घोंसले से कोई अंडा बाहर निकल भी जाता है तो उसे वह घोंसले में ही वापस कर देता है। गूरामिय और लडाका मछली ही पानी की सतह पर घोंसले बनाती है।

❁ दातों को देखकर और गिनकर एक घोड़े की उम्र का पता आसानी से चल जाता है। जब घोड़ा दो–तीन साल का होता है तो उसके बीच के केवल चार दांत होते है जो कालान्तर मे वयस्क दातों में परिवर्तित हो जाते हैं। दूसरे चार दांत जो एक दूसरे के नजदीक होते हैं। तीसरे वर्ष के अंत तक आ जाते है। इसके दूसरे साल चार व्यस्क दांत निकल आते हैं। पाच साल बाद दूध के चार दांत गिर जाते हैं और घोड़ा भरे पूरे दांतों वाला हो जाता है। घोड़े की उम्र जब दस वर्ष हो जाती है तो उसके प्रत्येक दांत के कोने में एक गहरा और संकुचित चिह्न उभर आता है जिसके द्वारा घोड़े की उम्र पहचानी जाती है। यह चिह्न बीस वर्ष की उम्र तक का रहता है।

❁ लोमड़ी आश्चर्य जनक रूप से चालाक और समझदार जीव होता है। यदि कुत्ते और शिकारी शिकार करने के लिए उनका पीछा करते है। तो उनको धोखा देने के लिए वह जलधाराओं पर तैरना शुरू कर देती है, ताकि कुत्ते उसकी गंध न सूंघने पाएं अपने पैरो के निशान छिपाने के लिए वह भेड़ की पीठ पर चढ़ जाती है। और कभी कभी खतरे का अहसास होने पर वह मरने का ढोंग भी करती है। है न अद्भुत कलाकार लोमड़ी।

❁ जब किसी स्थान पर डायनासोरों के जीवाश्म पाए जाते हैं तो पुरातत्वकर्मी उनकी नंगी हड्डियों को कडा करने के लिए उन्हें वार्निश से रंगते है। सुरक्षा की दृष्टि से इसके बाद उनको प्लास्टर ऑफ पेरिस से ढंक दिया जाता है। जिस चट्टान में ये अवशेष पाये जाते हैं समूची ही संग्रहालय में भेज दी जाती है जहा सावधानीपूर्वक उस चट्टान से उन हड्डियों को अथवा समूचे कंकाल को ही चिपका दिया जाता है। एक बार पुनः जीवाश्मों को वार्निश से कड़ा करके परस्पर जोड़ दिया जाता है। यदि जीवाश्म का कोई टुकड़ा गायब होता है तो पहले तो उन टुकड़ों के मॉडल बनाये जाते हैं इसके बाद समूचा कंकाल बनाने के लिए उनको परस्पर जोड़ दिया जाता है। इस प्रकार तैयार होते हैं कंकाल फिर उन्हें संग्रहालयों में सुरक्षित रख दिया जाता है।

❁ बहुत ज्यादा बर्फ लोगों के रोजमर्रा के जीवन को अस्त–व्यस्त कर देती है। लेकिन बर्फ फसलों के लिए फायदेमंद हो सकती है। पानी के बिना फसलों की कल्पना करना भी दुष्कर है। नदियों और झरनों में बहने वाला पानी कहां से आता है? ज़मीन के नीचे संचित पानी के विषय में आपका क्या मानना है। अब ये बात सभी जानते हैं कि ये जल वर्षा और बर्फ से प्राप्त होता है? बारिश होने और बर्फ जमने से प्राप्त होने वाला पानी जमीन की सतह पर शोधित होता है और सभी जल स्रोतों में आपूर्त होता है। वातावरण में पानी एक अदृश्य गैस के रूप में मौजूद रहता है, जिसे जल वाष्प कहते हैं। अनुकूल परिस्थिति में यही जल–वाष्प पानी की छोटी–छोटी बूंदों में या बर्फ के क्रिस्टलों में बदल जाती है इनसे ही बाद मे बादल बनते है, और अंत में बारिश होती है या बर्फ जमती है। विश्व के अधिकांश भागों में वर्षा ही जल का प्रमुख स्रोत है। लेकिन ठण्डे इलाकों में बर्फ ही सामान्य रूप से प्राप्त होती है। वास्तव में पर्वतों पर एकत्रित बर्फ शुष्क प्रदेशों में पहुचकर मानव–निर्मित जलाशय से अधिक जल इकट्ठा कर देती है। जब वसन्तु ऋतु में बर्फ पिघलती है, तो ये सिंचाई का अच्छा–खासा स्रोत बन जाता है। कुछ क्षेत्रों में पिघलने वाली ये बर्फ ही सिंचाई का अकेला स्रोत होती है। पश्चिमी सयुक्त राज्य अमरीका में, बर्फ से सम्बन्धित सर्वेक्षण किए जाते हैं, जो ये बताते है कि शुष्क मौसम में कितना पानी फसलों के लिए उपलब्ध रहेगा।

प्रस्तुति–**प्रदीप कुमार**

पर्यावरणीय सूक्तियां

१. हमें वृक्षों के दिल की धड़कन को सुनना होगा क्योंकि वृक्ष भी हमारी तरह जीवधारी हैं।

२. जैसा बोओगे,वैसा काटोगे। यदि तुम कीटनाशक और रसायनों का प्रयोग करोगे, तो विष ही काटोगे। जैविक खादों का प्रयोग करो और खुशहाली लाओ।

३ समस्त प्राकृतिक संसाधनों में आज जल सबसे बहुमूल्य हो गया है। आज के धनलोलुप समाज ने अपने जीवित रहने के सबसे बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधन जल का सर्वाधिक दुरूपयोग किया है। इसके लिए उसे बहुत शीघ्र पछताना पड़ेगा।

४. गॉवों से शहरों की ओर पलायन करती जनता को रोकना पर्यावरण सुरक्षा में एक अहम कदम होगा।

हमारे विचार एवं पर्यावरण

पर्यावरण का तात्पर्य भले ही सभी न जानते हों लेकिन इसका भाव क्या है तथा किस प्रकार से मनुष्य का जीवन प्रभावित हो रहा है, इसकी जानकारी अब दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है तथा जनता का एक बड़ा वर्ग पर्यावरण के भाव को जानने लगा है। पर्यावरणीय अपघटन/प्रदूषण एवं अन्य सभी प्रकार की पर्यावरणीय समस्याओं के कई कारण हैं, लेकिन पर्यावणीय समस्याओं के लिये यदि प्रकृति के किसी एक घटक को सबसे अधिक जिम्मेदार माना जाए तो वह है सबसे बुद्धिमान प्राणी–मनुष्य। इस प्राणी ने जहां अपनी बुद्धिमत्ता का प्रयोग विकास के नये–नये आयाम स्थापित करने के लिए किया वहीं इसके विपरीत विनाश एवं विध्वंश के लिए किया। मनुष्य आज भी ऐसा करने से पीछे नहीं हट रहा और न ही कोई पश्चाताप महसूस कर रहा है वैसे पर्यावरणीय समस्याए उत्पन्न होने के कारण अब विदित ही है लेकिन मूल करणों में निरन्तर बढ़ती जनसंख्या जिससे प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ता बोझ तथा मनुष्य की असीमित आवश्यकताएं एवं महत्वकाक्षायें हैं जिन्हें पूरा करने में प्रकृति अपने को असमर्थ पा रही है।

– डा० एच० एस० यदुवंशी,
संयुक्त निदेशक कम चीफ अप्रेजल
पर्यावरण निदेशालय, उ०प्र०,

यह सर्व विदित है कि मनुष्य, जो प्रकृति का सबसे बुद्धिमान प्राणी/घटक है, उसने ही प्रकृति का सबसे अधिक शोषण ,विनाश एवं विध्वंश आदि किया है। इसलिए शायद प्रकृति ने कभी न कभी यह अवश्य सोचा होगा कि उसने (प्रकृति ने) अपनी रक्षा के लिए मनुष्य जैसे बुद्धिमान प्राणी की उत्पत्ति करके कहीं बड़ी भूल तो नहीं कर दी आज जो पर्यावरणीय समस्याएं हमारे सामने खड़ी होकर सभी जीवों के अस्तित्व को चुनौती दे रही हैं। हमारे द्वारा जाने अनजाने में प्रकृति के विपरीत किये गये कार्यो का प्रतिफल ,है जो प्रकृति के लिये घातक होते जा रहे है। वास्तव में कर्मों की उत्पत्ति विचारों से ही होती है। इसलिए किसी ने बिलकुल सही कहा है। "विचार ही सभी कर्मों के बीज हैं, इसलिए मुझे सिर्फ अच्छे, शुद्ध बीज ही बोने चाहिए, जिनसे श्रेष्ठ फल प्राप्त होंगे "

इसका तात्पर्य यह हुआ कि हम जो भी कर रहे हैं तथा जिनके कारण हमारा पर्यावरण बिगड़ रहा है, उनकी उत्पत्ति मनुष्य के विचारों का ही परिणाम है अर्थात मनुष्यों के विचारों में आये/ आ रहे परिवर्तन, पर्यावरण के लिये खतरे की घंटी ही तो है यहां प्रश्न यह पैदा होता है कि मनुष्य के विचारो में परिवर्तन का कारण क्या है। समय के साथ–साथ परिवर्तन विचारों में आ रहे हैं। परिवर्तन का कारण जहां एक ओर मनुष्यों को अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कड़ी मेहनत एवं संघर्ष करके प्रकृतिक संसाधनों का उपभोग करना है। वहीं दूसरी ओर आर्थिक रूप से समृद्ध व्यक्तियों द्वारा अपनी असीमित आवश्यकताओं एवं महात्वकाक्षाओं की पूर्ति के लिये आवश्यक से कही अधिक प्राकृतिक संसाधनों का उपभोग करना है। नैतिक मूल्यों में आयी गिरावट के कारण अब मनुष्य की श्रेष्ठता का आंकलन. उसके कार्य, योग्यता, बुद्धिमत्ता व्यवहार एवं उसके सामाजिक दायित्व के आधार पर किया जा रहा है। इसी कारण मनुष्य अपनी आर्थिक समृद्धि तथा भौतिकवादिता के सहारे अपने को समाज में उच्च स्थान पर प्रतिष्ठित करने में व्यस्त है जिस कारण से प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ा है, प्रकृति का अपघटन हुआ है। तथापि व्यक्तियों को अपने मूलभूत, आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये प्राकृतिक संसाघनों की वास्तव में आवश्यकता है,उनके लिए यह संसाधन उनकी पहुंच से दूर होते जा रहे है, जिससे पर्यावरणीय समस्यायें उत्पन्न हो रही हैं।

कुछ व्यक्ति अपने घर का कूड़ा–करकट अपने घर के बाहर सड़क/रास्ते पर फेंक देते हैं यह उनके उस विचार का कर्म है कि हमारा घर तो साफ है ही,हमें सड़क/रास्ते में होने वाली गन्दगी से क्या मतलब तथा सड़क–रास्ते की सफाई कराने की जिम्मेदारी तो सरकार की है। आवश्यकता इस बात की है कि अपने विचारों में परिवर्तन लाकर लोग पर्यावरण के प्रति अपने कर्तव्यों एवं दायित्वों को भली भांति समझें केवल अपने व्यक्तिगत लाभ तक ही सीमाबद्ध होकर न रह जाएं।

शुभ अवसरों पर पर्वो समारोह आदि में सर्वजनिक रूप से प्रसन्नता करने हेंतु मनुष्यों द्वारा बहुआ ध्वनि संयंत्रो का प्रयोग कर अत्यधिक ध्वनि उत्पन्न की जाती है। लेकिन वे ये भूल ही जाते हैं कि उत्पन्न ध्वनि प्रदूषण से बीमार व्यक्तियों छात्रों तथा अन्य व्यक्तियों को कितनी कठिनाई होती है। वास्तव में ऐसे व्यक्तियों का विचार मात्र आपनी प्रसन्नता प्रकट करने तक की सीमित है, दूसरों की कठिनाइयों का अहसास नहीं होता है। यदि मनुष्य अपनी प्रसन्नता को, एक सीमित दायरें में शालीनतापूर्वक प्रकट करे तो इससे उन्हे तो सन्तुष्टि होगी ही, ध्वनि प्रदूषण कम होने से दूसरे व्यक्तायों की कठिनाई भी कम होगी। अतः यह गम्भीरता पूर्वक विचार करने के योग्य है कि मात्र अपनी व अपने परिवार की प्रसन्नता हेतु ध्वनि प्रदूषण को बढ़ावा न दें ऐसा करने मे ही आपकी तथा

है। आधुंनिक कृषि प्रणाली में कृषि रासायनों का प्रयोग करना नितान्त आवश्यक हो गया है। शिक्षा की कमी तथा जागरूकता के आभाव के कारण किसान बहुधा फसलों की अधिक उपज लेने या अच्छी किस्म का उत्पाद प्राप्त करने हेतु निर्धारित मात्रा से अधिक मात्रा में कृषि रसायनों का प्रयोग करते हैं। किसानों के विचार से कृषि रसायनों का अधिक प्रयोग करने से वांछित लक्ष्य की प्राप्ति शीघ्र हो जायेगी लेकिन ऐसा होता नहीं है। बल्कि उल्टा पर्यावरण पर कुप्रभाव पड़ता है जिससे फसलों की गुणता एवं उनके उत्पादन में कमी आने लगती है। अतः किसानों में जागरूकता उत्पन्न करके किसानों के उक्त विचार में परिवर्तन लाने तथा वैज्ञानिक ढ़ंग से ही कृषि रासायनों के प्रयोग को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

नगरों मे विशेषकर गर्मी के मौसम मे कुछ क्षेत्रों मे जल की आपूर्ति पर्याप्त न होने से जनता को कठिनाइयां उठानी पड़ती है वहीं कई क्षेत्रों में जल की पर्याप्त उपलब्धता होने के कारण जल का अत्यधिक प्रयोग किया जाता है। तथा काफी मात्रा में जल व्यर्थ होता रहता है। वास्तव में ऐसे व्यक्तियों का विचार यह है कि जब प्रति माह या प्रति वर्ष एक निश्चित/निर्धारित जल मूल्य का भुगतान करना ही होता है तो जितना चाहे जल का इस्तेमाल करें तथा यदि जल व्यर्थ भी हो रहा है तो उससे उन्हें कोई हानि होने वाली नहीं है। लेकिन जल व्यर्थ होने से जल श्रोत्रो की क्षमता मे कमी आती है ऊर्जा की खपत अधिक होती है। जिससे पर्यावरण पर भी क्रुप्रभाव पड़ता है। सोच यह होनी चाहिए कि कम से कम जल का इस्तेमाल करना है, पानी बिलकुल भी व्यर्थ नहीं करना है भले ही निश्चित/निर्धारित जल शुल्क का भुगतान करना हो। ऐसा करने से पर्यावरण पर पड़ने वाले कुप्रभाव मे कमी आयेगी।

सरकारी कार्यालयों में बहुधा अधिकारी/कर्मचारी के कार्यालय में न रहने पर भी लाइट जलती रहती है या पंखे चलते रहते हैं। ऐसा इसलिए होता है कि अधिकारी/कर्मचारी का विचार यह होता है कि यह कार्य तो फर्राश/किसी अन्य कर्मचारी का है,उनका नहीं और इसलिए फर्राश या अन्य सम्बन्धित कर्मचारी द्वारा लाइट बन्द की जाती है या पंखे बन्द किये जाते हैं। इस प्रकार कई–कई घंटों तक विद्युत की क्षति होती है जिससे सरकार की हानि होती है आवश्यकता इस बात की है कि सरकारी कार्मिक पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझते हुये अपना कार्यालय छोड़ते समय या कार्यालय में न रहने की स्थिति में अपने कक्ष/कार्यालय की लाइट व पंखें बन्द करा दिया करें या कर दिया करे इससे जहां सरकार को आर्थिक हानि कम होगी वहीं पर्यावरण पर भी विपरीत प्रभाव कम ही पड़ेगा। सभी उद्यमियों द्वारा अपने–अपने उद्योगो में प्रदूषण नियंत्रण की समुचित व्यवस्था नहीं की जाती है जिससे पर्यावरण का संतुलन बिगडता है। उनके विचार में उद्योगो में प्रदूषण नियंत्रण की व्यवस्था न करने से उन्हें कोई व्यक्तिगत हानि नहीं होने वाली जबकि इस व्यवस्था पर व्यय की जाने वाली धनराशि से उनके लाभ में कमी आयेगी। काश सभी उद्यमी अपने उद्योंगों से लाभ प्राप्त करने को प्राथमिकता तो दें लेकिन साथ ही साथ पर्यावरण संरक्षण एवं समाज की भलाई के प्रति अपने उत्तर दायित्वों को भी समझें। पूजा पाठ,हवन, यज्ञ या अन्य धार्मिक कार्य करने के बाद उसके अवशेषों को किसी सुरक्षित जगह दबाने के बजाये पालीथिन की थैली में भरकर नदी में फेंक कर जल प्रदूषण को बढ़ावा देना, उनके उस विचार की उत्पत्ति है कि नदी मे अवशेष फेंकने से पवित्रंता रहगी और उन्हे अच्छे फल की प्राप्ति होगी,जबकि पर्यावरण पर पड़ने वाले क्रुप्रभाव से उन्हे कभी न कभी तो हानि अवश्य होगी।

अपने किंचित स्वार्थ के लिए गांवों के तालाबों/पोखरों को भर कर समतल करके उन पर खेती करना या मकान बना देना अब ग्रामीणों को महंगा पड़ रहा है क्योंकि गावों में तालाब/पोखर न होने से वर्षा का पानी गांव के आस पास इकठ्ठा नहीं हो पाता है बल्कि बह जाता है जिससे गांवो मे भी भूगर्भ जल स्तर लगातार नीचे जा रहा है शहरों में घरों से निकलने वाले पानी तथा बरसात के पानी को सीवर लाइन से जोड़ दिया गया है, सड़कें पक्की हैं जिससे धरों व बरसात का पानी सीवर से नदियों में चला जाता है अर्थात शहर क्षेत्र के भूगर्भ जल में नहीं मिलता है। दूसरी और जल की आपूर्ति हेतु लगातार भूगर्भ जल का उपयोग किया जा रहा है। परिणामस्वरूप शहरी क्षेत्रों मे भूगर्भ जल का स्तर दिन–प्रतिदिन घटता जा रहा है जिससे पर्यावरण समस्याएं बढ़ती जा रही हैं। आजकल अधिकतर व्यक्तियों की सोच अपने व्यक्तिगत लाभ तक ही निहित है तथा राष्ट्रीय सम्पदा की रक्षा, करने तथा उसका सदुपयोग करने का भाव कम होता जा रहा है। जिससे प्राकृतिक संसाधनों का दोहन बढ़ रहा है अर्थात पर्यावरण का अपघटन हो रहा है। अब समय आ गया हैकि अपनी आने वाली पीढ़ी तथा समाज के हित में मात्र अपने स्वार्थ /लाभ के लिए न सोचकर राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में चिन्ता करें चिन्तन करें, विचार करे एवं अच्छे कार्य करें, इसी में हम सबकी भलाई है।

प्राकृतिक संसाधनों पर सभी का बराबर का अधिकार है। प्रकृति ने इन्हें मनुष्यों में विभाजित नहीं किया है, लेकिन आर्थिक रूप से सम्पन्न व्यक्तियों द्वारा अपनी आवश्यकताओं से कही अधिक प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करना भी पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव डाल रहा है। उदाहरण के लिए, जहां पैदल जाया जा सकता है कारों जैसे वाहनों का प्रयोग,बिना किसी आवश्यकता के धनाढ्य व्यक्तियों द्वारा इसलिए किया जाता है कि कार के अनुरक्षण व पेट्रोल पर होने वाले व्यय से उन्हें बिलकुल फर्क नहीं पड़ता है बल्कि उन्हे प्रसन्नता होती है तथा वे यह सोचते हैं कि समाज के अन्य लोग उन्हें प्रतिष्ठित व्यक्ति समझ रहे हैं लेकिन निश्चित रूप से इसका कुप्रभाव पर्यावरण पर पड़ता है।

यह कहना गलत न होगा कि जब तक मनुष्य में प्रकृति की रक्षा, उसके संरक्षण एवं सुधार के लिए विचार उत्पन्न

नहीं होंगे तब तक पर्यावरण का संतुलन बनाए रखना संभव न हो सकेगा। दूसरे शब्दों में मनुष्य को जब तक "सद्विवेक" प्राप्त नहीं होता है तब तक प्रकृति यानी पर्यावरण की रक्षा करना, उसका संवर्धन करना तथा उसमें सुधार करना संभव नहीं लगता है। सत्य और असत्य, पाप और पुण्य, विधि और निषेध, न्याय और अन्याय, कर्म और विकर्म, धर्म और अधर्म, कर्तव्य और अकर्तव्य, सही और गलत के स्पष्ट, दुविधारित, निश्चयात्मक और स्थायी बोध का नाम ही "सद्विवेक" है।

यदि सद्विवेक न हो तो मनुष्य विकर्म करता रहेगा, पाप का भागी बना रहेगा और सत्य से भटक जायेगा और इसके दुखों की श्रृंखला का अंत नहीं होगा तथा उसके जीवन में अशांति के बीज अंकुरित होते रहेंगे। सद्विवेक के बिना सद्गति असंभव है।कहा जाता है कि जैसे हंस मोती चुगता है और कंकड़ छोड़ देता है या क्षीर और नीर को अलग कर देता है, वैसे ही सद्विवेक व्यक्ति में ऐसी कुशलता होती है। जिसके प्रयोग से वह दोषों को छोड़ देता है और सदगुणों को अपनाता है। विवेक को प्रायः तराजू की उपमा दी जाती है। डंडी वाले तराजू के दोनों पलड़े जब हिलना–डुलना बन्द कर स्थिर होते है और जब डंडी सीधी होकर डांवाडोल से मुक्त होती है, तभी वह तराजू ठीक तौलने के योग्य होता है। इसी प्रकार सद्विवेक एक ऐसे तराजू कि तरह से है जो व्यक्ति, वस्तु, विषय, पारिस्थिति तथा पहलुओं को ठीक तरह से तौल सकते हैं और किसमें कितना वजन हैं।, यह बता सकते हैं। परन्तु यह योग्यता तभी आती है जब मनुष्य का मन ईर्ष्या, द्वेष, दुर्भाव, दुर्व्यसन, घृणा, भय, क्रोध, स्वार्थ तथा इच्छाओं के वेग से रहित हो। वरना इस घटकों के कारण उसके विवेक की डंड़ी हिलती ही रहेगी अथवा तौलने के पलड़े स्थिर नहीं होंगे। इसलिए जरूरी है कि व्यक्ति इन निषेधात्मक दुष्प्रभावों से मुक्त हो। सद्विवेक अपने साथ कई योग्यताएं लिए हुए है। विचार, विश्लेषण, परीक्षण, मूल्याकंन, निर्माण इत्यादि इनमें से कुछ योग्यताएं हैं। ज्ञानवान तो अनेक मनुष्य हो सकते है परन्तु सद्विवेक की प्राप्ति सभी को नहीं हो सकती। ज्ञान सद्विवेक का अग्रगामी है, परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक ज्ञानी सद्विवेक ही हो। इसी आशा के साथ एक बार फिर गंभीरतापूर्वक विचार करेंगे कि प्रकृति की रक्षा के बिना पर्यावरण सुरक्षित नहीं और पर्यावरण के बिना हमारा अस्तित्व सुरक्षित नहीं, इसलिए अब प्रत्येक परिस्थिति में हमें अपने पर्यावरण की रक्षा करनी ही है। अन्त में जगजीत सिंह की यह गजल बिगड़ते पर्यावरण के भाव को परिलक्षित करती है:–

तुमको देखा तो यह ख्याल आया, जिन्दगी घूप तुम घना साया। आज फिर दिल ने एक तमन्ना की, आज फिर दिल को हमने समझाया। तुम चले जाओगे तो हम यह सोचेंगे, हमने क्या खोया हमने क्या पाया। हम जिसे गुनगुना नहीं सकते, वक्त ने ऐसा गीत क्यों गाया। ❁

किसिम-किसिम के पौधे

पौधों के साम्राज्य को बहुत-से भागों में विभिन्न किया जा सकता है। छोटे पौधों को तीन वर्गों में बांटा जा सकता है। -एल्गी, मांसेस और लिवर वर्ट्स व फर्न।

एल्गी ऐसे पौधे होते हैं, जिनके कोई तना, जड़ या पत्तियां नहीं होती हैं। लगभग सभी एल्गी पानी में रहते हैं। एक साधाराण एल्गी मात्र एक कोशिका होती है। जबकि दूसरी सभी एल्गियों में एक दूसरे से जुड़ी हुई बहुत सी कोशिकाएं होती हैं। 'स्विरोगयारा' नामक एल्गी में काशिकाओं की लक्बी श्रृंखला होती है।

हरी सीबीड जिसे समुद्री लेट्यूस कहते हैं, के पास केवल एक पत्ती होती है।, जो कोशिकाओं की समतल पर्तो से बनी होती है। दूसरे सीबीड की अधिक जटिल संरचना होती है। सर्वाधिक सुपरिचित एल्गी 'भूरे रंग के सीवीड होते हैं, जैसे केल्प्स और रैक्स।

मॉसेस और लिवरवर्ट मिलकर एक पौधा वर्ग का निर्माण करते हैं, जिन्हें ब्रायोफाइट्स के नाम से जाना जाता है। वे पत्तीदार होते हैं और उनमें पतला तना होता है। लेकिन उनकी वास्तविक जड़ें नहीं होती हैं। उसके बजाय वे जमीन से या चट्टानों से चिपके रहते हैं, धागों जैसी पतली जड़ों जैसी संरचनाओं से जिन्हें "रिजोइड" कहा जाता है। लिवरवर्ड नमी वाले वातावरण में रहते हैं क्योकि अपनी संरचना के कारण वे आसानी से सूख जाते हैं। इनकी सबसे साधारण प्रजाति समतल और रेंगने वाली होती है। जबकि दूसरी प्रजातियों की पतली झिल्लीदार पत्तियां होती हैं, जो कोमल तने पर टिकी होती हैं।
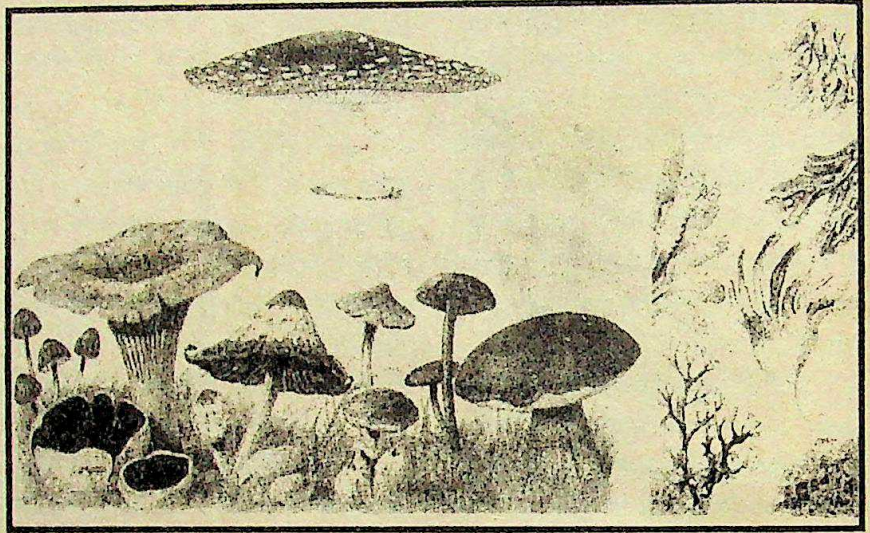
मॉस नामक पौधे के तने में पत्तियां दूर-दूर होती हैं।इनसे चट्टानों, नदी के किनारों, पेड़ों आदि पर चटाई और छोटे तकियों जैसी आकृतियां बनती हैं। लिवखर्ट और मॉस स्पार्क के माध्यम से प्रजनन करते हैं। लम्बे-लम्बे तनों के छोरों पर "कैप्सूल" के रूप मे फलते-फूलते हैं जब प्रत्येक "कैप्सूल" पक जाता है, तो ये टूटकर स्वतः खुल जाता है। और उसमें से हजारों "स्पोट" निकल पड़ते हे"उपयुक्त सीन पर यही "स्पोट" नये पौधों में रूपान्तरित होते हैं।

फर्न में अच्छी तरह विकसित तना और पत्तियां होती है, लेकिन मॉस के विपरीत इनमें जड़ें होती हैं। आमतौर पर ये छोटे होते हैं। पृथ्वी के भीतर फर्न का मुख्य भाग तना होता है, जिसे "रिजोम" कहते है। कुछ फर्नों की पत्तियां बहुत साधारण होती हैं। जैसे कि 'हर्टटंग फर्न' की पेटी जैसी आकृति की पत्ती। जबकि दूसरे फर्न पर पत्तियां ऐसी होती हैं, वे छोटी-छोटी पत्तियों में बंटी होती है। अधिकांश फर्न छोटे पौधे होते हैं, लेकिन कुछ फर्नों के पेड़ों की लम्बाई २ मीटर (६¹/⁴ फीट) तक होती है। पानी के निकट सम्बन्धी "क्लबमॉस" और "हॉर्सटेल" होते हैं। ❁

अति प्राचीन वृक्ष

पेड़ हरे पौधे होते हैं। दूसरे हरे पौधों की तरह उनमें भी जड़ें, तने, पत्तियां और बीज होते हैं। उत्तर पश्चिमी संयुक्त राज्य अमेरिका में सीक्वोइया नामक वृक्ष चार हजार वर्षों से अधिक प्राचीन है। इसका मतलब यह है कि कोलम्बस के अमरीका की खोज से बहुत पहले वे पूर्ण विकसित थे। पेड़ सभी हरे पौधों में सबसे बड़े होते हैं। पृथ्वी पर सबसे लम्बे पेड़, कैलीफोर्निया के विशालकाय रेडवुड पेड हैं। ऐसा माना जाता है कि कैलीफोर्निया के हमबोल्डट् नेशनल फारेस्ट का एक पेड़ संसार में सबसे ऊंचा है। इसे "फाउण्डर्सट्री कहा जाता है। जो ११० मीटर से ऊंचा है।

कुछ विशेषज्ञ मानते है कि बहुत पेड़ आस्ट्रेलिया के यूकेलिप्टस नामक पेड़ "कैलीफोर्निया" के रेडवुडट्री से अधिक लम्बे रहे होगें, लेकिन आजकल उगने वाले यूकेलिप्टस नामक पेड़ रेडवुडट्री से लगभग १५ मीटर छोटे है। रेडवुडट्री के समान ही डगलसफर और सीक्वोइया नामक पेड रेडवुडट्री से मिलते जुलते है। इनमें से कुछ ६१ मीटर तक लम्बे है।

दिल्ली, हिमांचल प्रदेश एवं राजस्थान के शिक्षा विभाग, उ० प्र० शासन के वन विभाग, शिक्षा विभाग, पंचायत राज विभाग, पर्यावरण निदेशालय एवं स्थानीय निकाय द्वारा अनुमोदित पत्रिका

आर०एन०आई० ५८५७३/९४
डाक पंजीकरण सं०- LW/NP-882

पर्यावरण चेतना

पर्यावरण की एकमात्र राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष 8 अगस्त 2001 अंक 4

नहीं रुक पा रही है वन्य जीवों की हत्या

हाल कार्बेट नेशनल पार्क का

- प्रतिवर्ष 18 मीटर पीछे खिसक रहा है गंगोत्री ग्लेशियर।
- हम और हमारे पर्यावरण का भविष्य।
- भारत 'विश्व गुरू' है।
- ओलंपिक में कुत्तों की आफत।

मूल्य 25 रू

पर्यावरण चेतना

पर्यावरण संचेतना की एक मात्र राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष : 8 अगस्त अंक : 4

- सम्पादकीय कार्यालय: सी-5 दिलकुशा कालोनी लखनऊ, फो-482288
- लखनऊ कार्यालय : कीर्ति शिखर अपार्टमेंट, छितवापुर भुईय्यन देवी मार्ग, निकट विकास दीप बिल्डिंग, स्टेशन रोड, लखनऊ, फो–636282
- रजिस्टर्ड कार्यालय : बी-1/12 सेक्टर डी–1, कानपुर रोड योजना, लखनऊ, फोन-436767
- मुद्रक : नीलम प्रिंटर्स, नरही, लखनऊ फोन - 239672

अनुक्रमणिका

पर्यावरण चेतना

हिन्दी मासिक पत्रिका

दिल्ली प्रदेश एवं हिमाचल प्रदेश के शिक्षा विभाग तथा उत्तर प्रदेश शासन के वन विभाग, स्थानीय निकाय, शिक्षा विभाग, ग्राम्य विकास एवं पंचायत राज विभाग द्वारा अनुमोदित

पर्यावरण संचेतना के प्रसार के क्षेत्र में प्रयासरत राष्ट्र भाषा हिन्दी की एकमात्र पत्रिका

विश्व प्रकृति की धरोहर एवं वसुन्धरा के अनुपम वरदानों की रक्षा हेतु
पर्यावरण संरक्षण के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के महायज्ञ में आपकी सहभागिता अपेक्षित है।

"पृथ्वी मां का ऋण लौटायें, विश्व प्रदूषण मुक्त बनायें"

❁ मुख्य कार्यालय : पर्यावरण चेतना परिसर, पिकनिक स्पाट रोड, इंदिरा नगर, लखनऊ, फोन-359897
❁ रजिस्टर्ड कार्यालय : बी-1/12, सेक्टर-डी1, कानपुर रोड योजना, लखनऊ, फोन-436767
❁ सम्पादकीय कार्यालय : सी-5, दिलकुशा कालोनी, लखनऊ, फोन-482288

पत्रिका का प्रकाशन, मई 1994 से निरंतर हो रहा है। पूरे भारतवर्ष में इसका प्रसार है। स्वतंत्र प्रसार के साथ ही दिल्ली एवं हिमाचल प्रदेश के वन विभाग, ग्राम्य विकास विभाग, शिक्षा विभाग, पंचायती राज विभाग, प्रदेश के स्थानीय निकाय एवं अन्य विभागों द्वारा यह नियमित रूप से मंगायी जा रही है। आपसे अनुरोध है कि आप स्वयं/संस्थान/विभाग/पुस्तकालय हेतु "पर्यावरण चेतना" पत्रिका की सदस्यता ग्रहण करने की कृपा करें एवं पर्यावरण संरक्षण के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के इस महायज्ञ में अपना योगदान करें।

पत्रांक : .... दिनांक : ....

सदस्यता पत्रक

सेवा में,
प्रसार व्यवस्थापक
पर्यावरण चेतना हिन्दी मासिक
सी-5, दिलकुशा कालोनी
लखनऊ (उ0प्र0)

महोदय,

कृपया अपने कार्यालय/संस्थान/पुस्तकालय के लिये "पर्यावरण चेतना" हिन्दी मासिक की सदस्यता हेतु चेक/ड्राफ्ट (प्रधान संपादक, पर्यावरण चेतना, लखनऊ के पक्ष में देय हो) आपूर्ति आदेश के साथ संलग्न कर भेजने का कष्ट करें।

पर्यावरण चेतना पत्रिका की शुल्क दरें :-

1.	आजीवन सदस्यता शुल्क	रूपये 5000/-
2.	त्रिवार्षिक सदस्यता शुल्क	रूपये 750/-
3.	द्विवार्षिक सदस्यता शुल्क	रूपये 525/-
4.	वार्षिक सदस्यता शुल्क	रूपये 275/-

नोट : कृपया सदस्यता अवधि अंकित करने का कष्ट करें।

भवदीय

पत्रिका प्रेषण हेतु पता
....
....
....

हस्ताक्षर..............................
नाम व पद..............................
जनपद..............................
कार्यालय..............................

पर्यावरण चेतना एक पत्रिका ही नहीं एक अभियान भी है
आइयें! हम सब मिलकर इसे सफल बनायें।

पीढ़ियां थूकेंगी हमारे नाम पर!

"पर्यावरण चेतना" को अपने रिश्तेदार के यहां देखा। एक ही बैठक में सारी पत्रिका पढ़ गया। प्रस्तुतीकरण अच्छा था और रोचक भी आज जब तक साहित्सक पत्रिकाएं दम तोड़ रही हैं और व्यावसायिक पत्रिकाओ ने "न्यूडिटी" को अपना लिया है, तो ऐसे में पर्यावरण पर पत्रिका निकालना वाकई बड़े जिगरे का काम है। आश्चर्य की बात तो ये है कि पत्रिका लगातार आठ व र्षों से निकल रही है। लोगो में पर्यावरण के प्रति चेतना जाग्रत करना आज समय की आवश्यकता है। लेकिन हम जानते है कि लोग सुधरेगें नहीं अपनी बंद आंखे तब खोलेंगे, जब सब बराबर हो चुका होगा फिर भागेगें अपनी जान बचाने को और कोंसेगे भगवान को ।

मैं अपकी पत्रिका के माध्यम से सभी लोगों से अपील करना चाहता हूं कि वे पर्यावरण को बरबाद होने से बचाएं लें, अब भी समय है। अन्यथा हमारी पीढ़ियां हमारे नाम पर थूकेंगी।

रूभी उसगांवकर, पुणे (महाराष्ट्र)

संकलन योग्य है पर्यावरण चेतना का जुलाई अंक

पर्यावरण चेतना का तांजा अंक संकलन योग्य है। आपने जनसंख्या के विषय में ताजा एवं विस्तृत जानकारी प्रकाशित कर इस अंक को संकलन योग्य बना दिया है।

इसमें सबसे अच्छी बात यह है कि पूरे विश्व एवं देश के साथ ही विशेष रूप से उत्तर प्रदेश एवं उत्तरांचल के विभिन्न जिलों की जनसंख्या के आंकड़े प्रकाशित किए हैं। **—अश्विनी सिंह**, उत्तरांचल

पर्यावरण के विषय का आईना है पर्यावरण चेतना

पर्यावरण विषय पर प्रकाशित हिन्दी की एकमात्र मासिक पत्रिका पर्यावरण चेतना आज पर्यावरण के साथ हो रहे अन्याय के एक दुःखद पहेलू को उजागर करती है। यह एक आईना के समान है। जो हमें हमारे पर्यावरण के बारे में सच्चाई से अवगत कराती है।

—अशोक कुमार, सुल्तानपुर

बढ़ती जनसंख्या को रोकना होगा

पर्यावरण चेतना का जुलाई-2001 अंक मिला। आवरण कथा 'बढ़ता बोझ, कराहती धरती' बहुत अच्छी लगी। वास्तव में बढ़ती जनसंख्या आज बहुत बडी समस्या बन गयी है। जितना भी विकास हो रहा है। वह सब बढ़ती जनसंख्या के आगे कम पड़ जा रहा है। सारी जन-सुविधाएं भी सुधरने के बजाए जनसंख्या के कारण उनकी हालत बदतर होती जा रही है।

नए अंक में अन्य कालम पूर्वांचल का सबसे बड़ा वन विहार उपेक्षा का शिकार, सर्वहितकारी एवं परम गुणकारी सीताफल, अद्भुत जीव चींटियां, विनाश के भयावह संकेत हैं ओजोन पर्त के छेद, पक्षी जगत में मछरंग सहित अन्य कालम बहुत ही अच्छे लगे। आशा है आगे भी ऐसे ही अंक आएंगे। **—आर. के. शाही, गोमती नगर**, लखनऊ

यत् ते मध्यं पृथिवि यच्च नभ्यं,
यास्तूर्जस्तन्वः ऊर्जा स्तवन्यः संबभूवुः,
तासु नो धेयभि: न पवस्व,
माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः
पर्जन्यः पिता स उ नः पिपर्तु ।।

(अथर्ववेद / भूमि सूक्त: १२-१-१२)

हे,
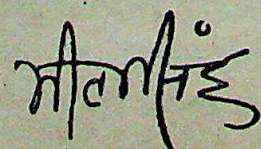
पृथ्वी तुम्हारी कटि, नाभि सम्पूर्ण शरीर से जो शक्ति संजात होती है वह हमारी रक्षा करें तुम्हारे मातृवत-स्नेहिल उच्छवासों से हम अभिसिंचित हों वसुधरा जननी है, हम सब इसके पुत्र हैं, बादल हम समस्त प्राणियों के लिए पितृवत है।।

सम्पादक की कलम से...

पशुओं पर भी हावी साइबर अपराधी

पिछले दिनों एक प्रमुख समाचार पत्र के प्रथम पृष्ठ पर एक खबर प्रकाशित हुयी जो कि पशुओं प्रति दिन ब दिन बढ़ते जा रहे अत्याचारों को उजागर करती है। इस खबर में बताया गया है कि इंटरनेट की एक साइट द्वारा लोगों को बिल्ली के बच्चों को शारीरिक रूप से विकृत कर विभिन्न डिजायनों में ढालने की तरकीबें बताई जा रही हैं। जिसके तहत जिस आकार की बिल्ली चाहिए उसे इच्छानुसार गोल अथवा चौकोर शीशे की बोतल में बिल्ली के छोटे बच्चे को बंद कर दिया जाता है। इस बोतल में केवल सांस लेने भर की जगह ही रखी जाती है। इस प्रकार बिलली का बच्चा बढ़ते-बढ़ते बोतल के आकार में बुरी तरह फंस जाता है और उसका शरीर विकृत होकर बोतल के आकार का हो जाता है। यही नहीं बिल्ली के बच्चे की मल-मूत्र की समस्या से निपटने के उसके उतसर्जन मार्गो तक को सील कर दिया जाता है। इस दौरान उसे बोतल के एक छोटे से छेद द्वारा सांस तथा भोजन के लिए तरल खाघ पदार्थ पाइप द्वारा दिये जाते हैं। खबर के अनुसार साइट में सर्पिलाकार बिल्ली बनाने की तरकीब बताते हुए कहा गया है कि बोतल में बिल्ली के बच्चे को बंद कर दिन-ब-दिन उसे छोटा करते जाएं।

यहां गौरतलब यह है कि इस प्रकार खुलेआम पशुओं पर अत्याचार हो रहा है और दूसरे लोगों को भी इसके लिए उकसाया जा रहा है लेकिन यहां इनसब के लिए सारे कानून व्यर्थ नजर आते हैं। वास्तव में होना यह चाहिए कि ऐसी वेबसाइटों पर पाबंदी लगानी चाहिए। आज जब हम नयी सहस्त्राब्दि में विकास के तमाम दावे करते हुए थकते नहीं हैं ऐसे में इस ओर विकसित तकनीक के जरिए पशुओं पर अत्याचार करने के नए-नए तरीके ढूंढ निकाले हैं। वन्य जन्तुओं और प्रकृति की रक्षा के लिए जितना अधिक प्रयास किये जा रहे हैं और इस दिशा में जो भी कदम उठाए जा रहे हैं उनसे जन्तुओं की जितनी रक्षा हो पा रही है। वहीं उससे ज्यादा आज भी वे असुरक्षित होते जा रहे हैं। वास्तव में यह केवल कुछेक स्वार्थी मनुष्यों की कारगुजारी है जिसके कारण हमारे प्रिय जन्तुओं के अस्तित्व के लिए नये-नये खतरे उतपन्न होते जा रहे हैं। सूचना क्रान्ति इनके हित के साथ ही इन पर अत्याचारों को और भी अधिक विभत्स रूप देने का काम कर रही है।

(प्रधान संपादक)

कार्बेट नेशनल पार्क का हाल

नहीं रुक पा रही है वन्य जीवों की हत्या

रामनगर,(नैनीताल) विगत तीन वर्षो से कार्बेट नेशनल पार्क के अन्तराष्ट्रीय तस्कर गिरोह द्वारा जीव जन्तुओं की हत्या का शेर, गुलदार, बाघ, तेन्दुऐं सहित अनेक जीवों की हत्या करने के बाद दर्जनों नर दॉत वाले हाथियों को भी निशाना बना कर कुन्टलों हाथी दांत ले जाने में सफल हुए तस्करों को पकड़ने में लगी नैनीताल, उधमसिंह नगर जनपदों की पुलिस ने संयुक्त काबिंग में जुटकर रात–दिन कड़ी कोशिशों के बाद दस तस्करों को पचास किलो हाथी दांत और जीवों की हत्या करनें में इस्तेमाल होने वाले उपकरण व तेन्दुएं की खाल सहित गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त कर ली है। गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम को उत्तरांचल प्रदेश के मुख्यमंत्री द्वारा एक लाख रूपये का पुरष्कार देकर सम्मानित किया गया है।

विश्व प्रसिद्ध कार्बेट पार्क में भारी तादात में शेर, गुलदार, बाघ, तेन्दुऐ सहित तमाम जीवों की हत्या कर पूरे उत्तांचल सरकार की कार्य प्रणाली पर प्रश्न चिन्ह लगाने वाले एवं वन्य जीव प्रेमियों के दिलों को भी झकझोर कर रख देने वाले तस्कर गिरोह ने एक दर्जन नर दातों वाले हाथियों को अपना निशाना बनाने वाले अन्तराष्ट्रीय गिरोह असम व कावेर्ट पार्क के आस पास बसे ग्रामों के ही निकले हैं। हाथियों की हत्यारे को व्टार व काशीपुर के दो होटलों में ठहरते थे, उधम सिंह नगर की पुलिस ने इस गिरोह के आठ सदस्यों को गिरफ्तार कर ३५ किलो हाथी के दांत तथा हथियार बरामद किया इनके पास बरामद हाथी
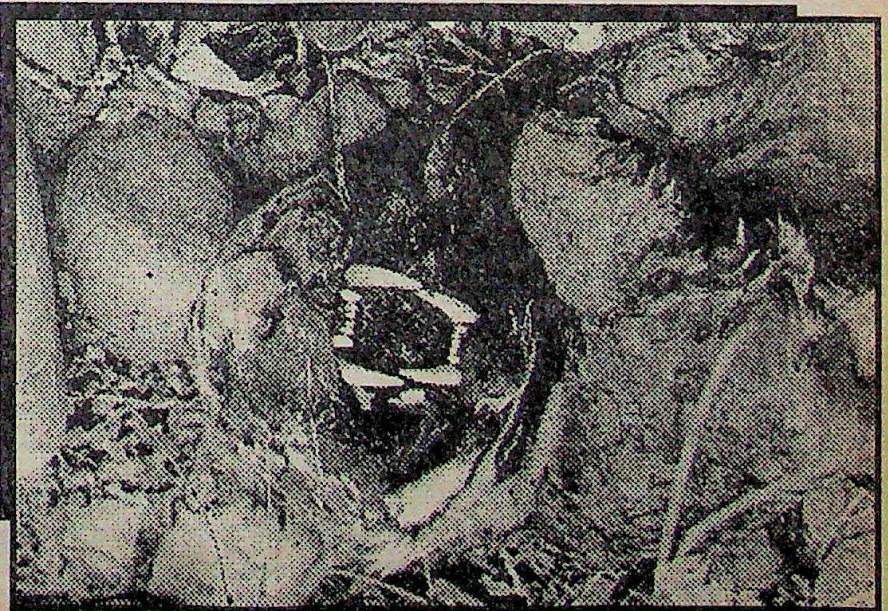
दांत की अन्तराष्ट्रीय बाजार की कीमत ३५ लाख है जिसकी संख्या इस प्रकार है। पंचानन सरकार पुत्र रामलाल निवासी वार्ड नं०-७ शक्ति फार्म, तारीक पुत्र निरंजन, निवासी गोस्वामी शक्ति फार्म, जागन सिंह पुत्र जगनारायण शिवनाथ पुर मालधन चौड़ थाना रामनंगर, दिनेश मण्डल पुत्र काली पद निवासी रतन फार्म नं०-१ शक्ति फार्म, अमलसाना पुत्र काली पद निवासी वार्ड नं०-१ शक्ति फार्म, अनीस व्यापारी निवासी वार्ड नं०-१ शक्ति फार्म एवं छोटू बढ़ई पुत्र मनिक शक्ति फार्म थाना सितारगंज शामिल है।

तारीक वसु के पास से एक लाइंसेन्सी बन्दूक ६ किलो ५०० ग्राम हाथी दांत का टुकडा बरामद हुआ, पंचायत सरकार के पास से ४ किलो २०० ग्राम हाथी दांत तारीक वसु के पास से ३ किलो ५०० ग्राम और एक किलो ५०० ग्राम जागन के पास से साढ़े सात किलोग्राम हाथी दांत, दिनेश मण्डल के साढ़े सात किलो दांत अमलसाना के पास से दो किलो ५०० ग्राम, अनीस व्यापारी के पास से ५ किलो २०० ग्राम, छोटू बढ़ई के पास से तीन किलो हाथी दांत बरामद हुऐ। इस प्रकार कुल ३५ किलो हाथी दांत बरामद हुए हैं। जिनकी कीमत अन्तराष्ट्रीय बाजार में ३५ लाख रूपये है। जबकि पुलिस के अनुसार मौके से भागे ६ जून को राम बहादुर नेपाली व इसका कथित सरगना नरेन मण्डल ने भी १३ जून को रूद्रपुर जिलाधिकारी चन्द्र सिंह के सामने पेश हो गया, इन दोनों को कुल मिलाकर आठ कथित तस्करों को पुलिस ने हिरासत में लेने का दावा किया है। जबकि थानाध्यक्ष रामनगर,नैनीताल रूपसिंह यादव ने भी मनोज पुत्र जागन सिंह निवासी शिबनाथपुर मालधन चौड थाना रामनगर नैनीताल को दो टुकडे हाथी दांत व हाथी दाड़, एक बन्दूक, एक खाली कारतूस, सांत जीवित कारतूस, एक तेन्दुऐं की खाल, हाथी को माने का असम का तीर, असम से लाये गये जहर एक हाथी की सूंड काटने का आरा, सहित जीवों की हत्या करने के बाद चीरा फाड़ी करने के चाकू वगैरह उपकरण एक बोरी में जंगल में छुपाने जा रहें थे जिन्हें गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की है। और इन तस्करों के साथियों की धरपकड अभियान में दोनों जनपदों की पुलिस दबिस दे रही है।

क्योंकि मुख्य सरगना वी.के.सिंह उर्फ युफा, युफी एवं दिलीप सिंह उर्फ निकर्सी निवासी डिबूगढ़, असम की तलाश कर गिरफ्तार करने कुछ पुलिस पार्टियां असम गई हुयी हैं। पुलिस के अनुसार फरार राम बहादुर नेपाली तथा नरेन मण्डल पुत्र निरंजन द्वारा जिलाधिकारी चन्द्र सिंह के समक्ष आत्मसमर्पण किये जाने की घटना ने पुलिस की पोल खोल दी है। सूत्रों के अनुसार पुलिस ने १२-१३ जून २००१ को ही नरेन की पत्नी को हिरासत में ले लिया था, लोगों का मानना है कि इसमें दाल में कुछ काला है आत्म समर्पण करने का कुछ गहरा राज है। एस.पी.राम सिंह मीणा ने दावा किया था कि इस गिरोह का सरगना गोंविद नगर (शक्ति फार्म) निवासी नरेन मण्डल है वो अभी फरार है। जिसे जनपदों की पुलिस लाख कोशिशों के बावजूद भी गिरफ्तार नहीं कर सकी जबकि नरेन मण्डल किसी सूरत से ग्राम प्रधान बैंकुठपुर श्रीमती लक्ष्मी रानी के पास जाकर कहने लगा कि मैं जिलाधिकारी के सामने पेश होना चाहता हूँ, इतना सुनकर लक्ष्मीरानी घबरा गई फिर लक्ष्मी रानी अपने पति सुबल मण्डल व अन्य लोगों के साथ नरेन मण्डल को ले जाकर जिलाधिकारी के कार्यालय में उनके पास खड़ा कर दिया, इतने बड़े अभियुक्त को देखकर चौंक गये डी. एम. ने तुरन्त ही एस. पी. राम सिंह मीणा को बुलाया श्री मीणा फोन सुनते ही अनन-फनन में एस. पी. मोहन सिंह बंग्याल, सी. ओ. विमला गुंजमाल व कोतवाल रालेन्द्र हंयाकी आदि को लेकर डी. एस. के बंगले पर पहुंच गये, तथा सरगना नरेन उर्फ निरंजन मण्डल व रामबहादुर नेपाली को हिरासत में ले लिया, दोनों अभियुक्तों ने पत्रकारों से रूबरूह होकर बताया कि उन्होंने ५ हाथियों की हत्या की है। तथा एक हाथी की हत्या स्नेह पोखरा (गढवाल) में भी की है। और बताया कि करीब ढाई वर्ष डिब्रगढ़ असम निवासी वी. के. सिंह उर्फ बृजकिशोर उर्फ युफा युफी तथा दलीप सिंह उर्फ नौहर सिंह उर्फ लिवर्सी की पूर्व सैनिक रामगिरी गोस्वामी (जेल में है) से भेंट हुई थी। इसी गोस्वामी के निवास पर नरेन की उससे भेंट हुई जहां दोनों ने उन लोगों को हाथी दांत से मोटी कमाई की सलाह दी। वहीं उसका गैंग तैयार हुआ। बातचीत कर दोनों असम चलें गये। नरेन ने बताया कि उसकी वी.के. सिंह उर्फ युफा यूफी से उसके असम स्थित फोन नं० ०३७३-२२७६६ एवं ०३७३-३०२४५ पर कई बार बातचीत हुई। वी.के. सिंह की आयु ५० वर्ष व दिलीप की आयु २८ वर्ष है व दोनों असम से लोहे की तीर, लकडी की नाली, तेज जहर लाते थे जिसे बन्दूक में डालकर हाथी पर फायर करते थे, जिससे हाथी मर जाता था मरने के बाद उसके दांतों को आरी व कुल्हाडी से काटकर टुकडे कर आपस में बांट लिया करते थे। दोनों लोग असम में आकर काशीपुर में संदीप होटल में तथा कोटद्वार में अबर होटल में ठहरते थे। इन लोगों को जिस कार्बेट के जंगलों में रास्ता दिखाने का काम मालघन चौड़ निवासी जागन सिंह चौहान तथा कोटद्वार निवासी रामबहादुर नेपाली करते थे। उनका घर जंगल के निकट है। तथा वह रास्तों से

कार्बेट प्रशासन की चौकसी सख्ती के साथ हो तो कार्बेट पार्क के अन्दर बिना प्रशासन की अनुमति के परिन्दा भी नही घुस सकता है। लेकिन पार्क प्रशासन की लापरवाही के कारण मौजूदा समय के पार्क के अन्दर जो तस्करों के चंगुल से जीव, बचकर भाग जाता है व घायल होकर मर जाता है कई बार पार्क क्षेत्र में जीव मरे पडे रहते हैं कोई भी पार्क का अधिकारी जायजा नहीं लेता।

पूरी तरह वाकिफ है। ये लोग दस दिन का रासन लेकर जंगल में जाते थे, तथा यह खान पान की सामग्री चौहान के घर से लेकर आते थे। उन्होंने ८ से १५ दिसम्बर तथा ५ से १२ फरवरी के बीच हाथियों को मारा था, ये लोग बीती जुलाई २००० में भी जंगल गये थे। पर हाथी नहीं मार पाये थें। हाथी दांतों का बटवारा कर युफा युफी व **लिवर्सी यहां** से सीधे नेपाल जमा करते थे। जहां वे इसे बेचते थे रामू नेपाली ने बताया कि उसे रास्ता दिखाने व घुमाने के ६००० रूपये मिलते थे। इस मौके पर एस. पी. राम सिंह मीणा, ए. एस. पी. मोहन सिंह बंग्याल मौजूद थे। श्री एस.पी. मीणा ने बताया कि पुलिस की एक टीम असम भेज दी है।

उत्तांचल प्रदेश के मुख्यमंत्री नित्यानंद स्वामी द्वारा पुलिस पार्टी को एक लाख रूपये देने की घोषणा की है। इस पुरस्कार के अलावा पुलिस पार्टी को २० हजार रूपये डी. जी .पी. अशोक कांत शरण द्वारा तथा २० हजार रूपये डी. आई. जी. विजय राघव पन्त, तथा ५ हजार रूपये एस. पी. मीणा की ओर से पुलिस पार्टी को इनाम देने की घोषणा की गयी है। उधर रामनगर थानाध्यक्ष रूपसिंह यादव ने भी गशत के दौरान थाना क्षेत्र ग्राम मालधन चौड़ शिवनाथपुर निवासी मुकेश पुत्र जागन सिंह को एक बोरी में हाथी के दांतों के दो टुकड़ें, एक तेंदुए की खाल एक बन्दूक देशी एक बारह बोर खाली खोखा, जीवित कारतूस, एक आरा, एक तीर, जहर, एक चाकू, कुल्हाडी, सहित हाथी मारकर हाथी की सूंड काटने के अन्य उपकरण भी बरामद करने में सफलता प्राप्त की है।

श्री यादव ने बताया है कि जब हम गश्त पर थे तब बाजपुर में पकड़ा गया जागन सिंह का पुत्र मुकेश अपना यहां सामान छापे के डर से तुमडिया डाम बेराज से होता हुआ जंगल की ओर आता हुआ दिखाई दिया मुकेश कि सिर पर एक बोरी थी। हमें देखकर जंगल की ओर जाने लगा जिसे रोककर तलाशी ली तो यह सब सामान बोरी में था। श्री यादव ने बताया कि यहा भी उन्हीं हाथी दांत तस्करों के गिरोह का सदस्य है, इसका बाप पहले ही हाथी दात सहित गिरफ्तार हो चुका है। क्या वह दोनों जो असम में तस्कर है। उनके पकडे जाने के बाद कार्बेट पार्क में जीव जन्तुओं की होने वाली हत्याओं पर प्रतिबन्ध लग जायेगा, जो कार्बेट प्रशासन कुम्भकरन की नींद से जागे है। वे जागे रहेंगें, सवाल हाथी दांत तस्करों का नहीं है। बल्कि उन तस्करों का भी है जो कई गिरोह कई टुकडियों में है। कोई गिरोह शेरों की हत्या कर रहा है। तो कोई गुंलदारों की कोई बाघों तेदुएं की कोई भालू का तस्कर है। अलग–अलग कई किस्म के तस्कर गिरोह हैं। कोर्बेट प्रशासन भली भांति सब को जानता है। जबकि रामनगर थाना पुलिस ने नगर के गावं सावल्दे, गांव छोई के नगर के कंजर बस्ती के दर्जनों व्यक्तियों को शेर, बाध गुलदार तेदुएं, की भारी तादात में खाल, हड्डी, मांस, हिरन के सींग, खालों सहित गिरफ्तार कर जेल भेजा है। यहीं नहीं विगत वर्ष पहले दो व्यक्ति जो रामनगर के ही थे दिल्ली में शेरों की दो खालों सहित दिल्ली पुलिस ने गिरफ्तार किया था, इसके एक माह बाद ही हल्द्वानी पुलिस ने कई दर्जन तेदुएं की खालों सहित पांच लोगों को गिरफ्तार किया था, इसके दो माह बाद ही काशीपुर पुलिस ने दो तेदुएं की खालों सहित दो व्यक्तियों को पकड़ा था, इसी दौरान एक दर्जन शेरों की खालें सिर सहित दिल्ली पुलिस ने चार लोगों को गिरफ्तार किया था, २७ अप्रैल २००१ को लखनऊ में उत्तर प्रदेश स्पेशल टास्क फोर्स ने राज्य में दो अलग–अलग स्थानों पर छापे मारकर बाघ और तेदएं की २५ खालों सहित पांच लोगों को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की है। इसके अलावा सैकडों बार कार्बेट पार्क के आस–पास क्षेत्रों में खाल, हड्डी, हिरन, पाड़ों के मांस सहित अपराधियों को गिरफ्तार किया जा चुका है। यह सब पार्क प्रशासन की कथित चौकसी का नतीजा है कार्बेट प्रशासन की चौकसी सख्ती के साथ हो तो काबेर्ट पार्क के अन्दर बिना प्रशासन की अनुमति के परिन्दा भी नही घुस सकता है। लेकिन पार्क प्रशासन की लापरवाही के कारण मौजूदा समय के पार्क के अन्दर जो तस्करों के चगुल से जीव, बचकर भाग जाता है व घायल होकर मर जाता है कई बार पार्क क्षेत्र में जीव मरे पड़े रहते हैं कोई भी पार्क का अधिकारी जायजा नहीं लेता, पार्क में जाने का नाम ही नहीं लेते। विगत १० अप्रैल २००१ को कार्बेट टाईगर रिजर्व के बिजरानी रेंन्ज के अन्तर्गत गांव सावल्दे के पास ही जंगल कई दिनों से एक शेर व एक पाड़े का बच्चा सड़ता रहा जब उसकी बदबू दूर–दूर तक जाने लगी तो ग्रामीणों ने पार्क के कर्मचारियों को इसकी जानकारी ७ अप्रैल को ही दे दी थी। लेकिन पार्क की मोटी कमाई व फिजूल के खर्चों में धिरे अधिकारियों ने कोई गोर ही नहीं दिया और हमारे प्रतिनिधि मो० हफीज कुरैशी को इसकी भनक अधिकारियों से पहले लग गई जो तुरन्त ही पत्रकारों की टीम को लेकर घटना स्थल पर पहुंच गये जहां दोनों शेर व पाड़ा पड़ा सड़ रहा था, तुरन्त ही अपने कैमरे में कैद करके तब फील्ड निदेशक से इसके बारे में मुलाकात किया तो महोदय को इस घटना का पता नहीं था। १२ अप्रैल को निदेशक महोदय बोले की शेरों की आपसी लडाई की वजह से शेर की मृत्यु हुई है। पाड़े को बोले की किसी जानवर के झपटने से निकल कर भाग गया होगा बाद में मर गया होगा यही नहीं विगत १२ अक्टूबर १९९९ को एक बिजली का तार ग्यारह हजार वोल्ट का आंधी में टूटकर गिरा था। यह घटना सुआरखाल गांव की है यहां भी कई हिरन, एक सुअर, लोमडी मरी दो गिद्ध, सहित कई जीव मौत के घाट उतर गये यहां भी निदेशक २४ घंटे के बाद घटना स्थल पर पहुचे थे। इसी १३ अप्रैल को एक शेर ७ फूट कोसी नदी में मृत पड़ा मिला था। जो तस्करों के जहर का शिकार हो गया था। इसी प्रकार दो दर्जन शेर, बाघ, गुलदार, तेदुएं सडकों के किनारे मृत पड़े मिले थे। जो तस्करों के चंगुलो से बचकर सडकों पर आ कर मर गये थे। फिर भी प्रशासन ने कोई ध्यान नहीं दिया।

कटनी—विजयराघवगढ़ के जंगलों में शेर प्रजाति लुप्त

मौजूदा १२४१ वर्ग किलोमीटर की परिधि वाले व्यापक क्षेत्र वन मंडल कटनी में लुप्त हो रहे दुर्लभ वन्य प्राणियों की रक्षा वन विभाग के लिए सिरदर्द बनी हुई है. एक और वन विभाग इन दुर्लभ प्राणियों की रक्षा का दावा कर रहा है, वहीं दूसरी ओर जिले के वनों में प्राणियों की संख्या में वृद्धि नहीं हो पा रही है.ऐसा नहीं है कि वन विभाग के अधिकारी दुर्लभ वन्य जीवों की रक्षा हेतु कोई कदम नहीं उठा रहे किन्तु विभाग की कोशिशें कारगर साबित नहीं हो रहीं उधर जंगलातों की विनाश लीला जिस कदर पिछले दशक से हो चुकी हैं। उसकी भरपाई न तो वृक्षारोपण अभियान से हो पा रही हैं और न ही अन्य माध्यमों से वनों के संरक्षण के नाम पर यहां कारगर ढंग से सुरक्षा व्यवस्था के अभाव में जंगलों की निरन्तर विनाश लीला जारी है. लकड़ियों का जहां बेरोक टोक परिवहन हो रहा हैं वहीं स्थानीय स्तर पर भी वनों की सुरक्षा के माकूल इंतजार नहीं हैं.

वन्य जीव संरक्षण एवं वनों की सुरक्षा के नाम पर यहां ऊंट के मुंह जीरा जैसा वन कर्मियों का बल उपलब्ध कराया गया है अधिकारिक जानकारी के अनुसार कटनी वन मंडल के अंतर्गत 2 उन-वन मंडल तथा 6 परिक्षेत्र कटनी विजयराघवढ़ बड़वारा ढ़ीमरखेड़ा बहोरीबंद एव रीठा शामिल है. जिसमें 108 बीट है. वन मंडल के संरक्षित क्षेत्रों में सिर्फ बड़वारा व ढ़ीमरखेड़ा में वन्य प्राणियों की अधिकता है जबकि कटनी एवं विजयराघवगढ़ के वनों से शेर प्रजाति लुप्त है. वन विभाग सूत्रों के मुताबिक ढ़ीमरखेडा के जंगलों में 5 शेर जबकि 4 नर तेन्दुआ 3 मादा 1 अज्ञात है।

इसी तरह बडवारा के जंगलों में 3 नर तेन्दुआ 2 मादा व 1 शावक समेत 6 तेन्दुआ बहोरीबंद व रीठी में क्रमशः एक-एक नर शेर 1 मादा तेन्दुआ 2 नर व 1 मादा तथा 1 शावक तेन्दुआ है. इस प्रकार जिले में कुल 10 नर शेर 7 मादा और 1 अज्ञात व 4 शावक मिलाकर कुल 22 शेर है. इसी तरह तेन्दुआ प्रजाति में ढ़ीमरखेड़ा में सर्वाधिक 4 नर तेन्दुआ 3 मादा तेंदुआ है. बडवारा क्षेत्र में 3 नर तेन्दुआ 2 मादा व 1 शावक समेत कुल 6 तेन्दुआ प्रजाति है. वहीं बहोरीबंद के जंगलों में 1 तथा रीठी के जंगल में 3 कुल 4 तेन्दुआ प्रजाति के वन्य प्राणी है. सरकारी आंकडों के मुताबिक यहां बारहसिंगा वायसन (गौर) काला हिरन जंगली भैंसा तथा माऊस डियर नहीं पाए जाते है. जो वन्य प्राणी यहां है. उनमें सर्वाधिक संख्या में जंगली सुअर तथा सबसे कम भेड़िया है. चीतल की संख्या 3731 के करीब है. जबकि नील गाय 587 भेड़ 1025 जंगली सुअर 5219 चौसिंग 105 रीछ 36 लकडबग्घा 30 सेही 42 सोन कुत्ता 16 भेड़िया 5 लोमड़ी 102 लंगूर 4955 तथा 3235 लाल मुंह के बंदर रहने की खबर है. गौरतलब है कि

बाघ बचाओ परियोजनाओं में शेरों की संख्या कितनी है तथा इनके उपलब्ध आंकड़ें कितने सटीक है. यह कह पाना संभव नहीं है क्योंकि अखिल भारतीय बाघ गणना का कार्य में लगे वन कर्मचारी एवं परियोजना कर्मचारी व अधिकारी अपनी नौकरी बचाने के लिए बाघों की वास्तविक संख्या को सामने न रखकर उसे बढ़ा-चढ़ा कर सामने रखने का प्रयास करते है. परिणामस्वरूप शेरों की सख्या चाहे गणना में कम हो उसे बढ़ाकर बताया जाता है।

कटनी वनमंडल शेर की गणना : एक नजर

परिक्षेत्र के नाम	शेर				
	नर	मादा	अज्ञात	शावक	योग
कटनी	–	–	–	–	–
विजयराघवगढ़	–	–	–	–	–
बड़वारा	3	4	-	2	9
ढ़ीमरखेड़ा	5	3	1	2	11
बहोरीबंद	1	-	-	-	1
रोठी	1	-	-	-	1
योग	10	7	1	4	22

प्रदेश में राष्ट्र की बांघ बचाओं परियोजनाओं में करोडों रूपये की राशि खर्च की जा रही है इसके बाद भी शेरों की वास्तविक संख्या का पता ठीक ढंग से नहीं चल पाता है बाघ जंगल का राजा तो है ही साथ ही राष्ट्रीय प्राणी भी है जो आज धीरे-धीरे लुप्त की कगार पर है। वनों का प्राकृतिक स्वरूप बदलता जा रहा है. जल स्त्रोत घटते जा रहे है इस ओर किसी का भी ध्यान नहीं जाता वनों के रखरखाव के लिए हर वर्ष करोड़ों रूपये खर्च किये जाते है. जल स्त्रोतों को बनाये रखने के लिए भी अलग से व्यवस्था की गई इसके बाद भी उक्त करकों मे कमी आ रही है।

बाघ बचाओं परियोजनाओं में शेरों की संख्या कितनी है तथा इनके उपलब्ध आंकड़ें कितने सटीक है। यह कह पाना संभव नहीं है क्योंकि अखिल भारतीय बाघ गणना का कार्य में लगे वन कर्मचारी एवं परियोजना कर्मचारी-अधिकारी अपनी नौकरी बचाने के लिए बाघों की वास्तविक संख्या को सामने न रखकर उसे बढ़ चढ़ कर सामने रखने का प्रयास करते है. परिणामस्वरूप शेरों की सख्या चाहे गणना में कम हो उसे बढ़कर बताया जाता है. बाघों की गणना काम में गैर सरकारी संस्थाओं के वन्य जीव विशेषज्ञों को न रखना या वन्य जीव संरक्षण में कार्यरत किसी स्थानीय संस्था को शामिल न करना क्या स्पष्ट करता है. लिहाजा अब प्रश्न यह उठता है कि बाघों की गणना के समय प्रोजेक्ट टाईगर के कर्मचारियों पर निगरानी किन-किन लोगों द्वारा रखी जाए. जिससे बाघों की सही आबादी के ऑकड़े जनता के सामने आ सके. टाइगर ट्रेसर या पग चिन्ह विधि सर्वाधिक उपयुक्त सटीक एवं सफल बताई जाती है लेकिन इस विधि के द्वारा बाघों की गणना का कार्य करते समय प्रोजेक्ट टाइगर में एक गैर सरकारी निगरानी समिति का होना आवश्यक है.

जिसके सदस्य प्रत्यक्ष रूप से गणना में शामिल रहें और जनता के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करें ऐसा करने से ही बाघ गणना में जनता की भागीदारी को सार्थक बनाया जा सकता है. इसके साथ ही बाघ परियोजनाओं के लिए जो बजट भेजा जाता है और वह किन-किन क्षेत्रों में कितना और उसके परिणाम क्या निकलते है इस बात की जांच किसी सेवानिवृत्त न्यायाधीश से करवाई जाये तो सामान्य तौर पर प्रतिवर्ष बाघों की गणना की जाती हैं और प्राप्त आंकड़ों को असली जामा पहनाने के लिए 4 वर्ष के अंतराल से जो गणना होती है. उसमें कोई खास अंतर समझ में नहीं आता है।

□ □ □

कटनी वनमंडल तेन्दुआ की गणना : एक नजर

परिक्षेत्र के नाम	शेर				
	नर	मादा	अज्ञात	शावक	योग
कटनी	–	–	–	–	–
विजयराघवगढ़	–	–	–	–	–
बड़वारा	3	2	-	1	6
ढ़ीमरखेड़ा	4	3	1	-	8
बहोरीबंद	–	1	-	-	1
रोठी	2	1	-	1	4
योग	9	7	1	2	19

सम्पूर्ण वैदिक वांगमय मानव की मनीषा की सर्वोत्कृष्ट उपलब्धियों का अमूल्य अंश है। प्रकृति के साथ यह अस्तित्व की भावना से युक्त जीवन व्यतीत करने वाले वैदिक ऋषियों ने वसुन्धरा, उषा, सूर्य, वायु, जल एवं अन्यान्य प्राकृतिक शक्तियों की भावपूर्ण अभ्यर्थना की है। **''पर्यावरण चेतना''** द्वारा वैदिक सूक्तों की कतिपय ऋचायें, पर्यावरण संरक्षण की पुरातन चिन्तन धारा वर्तमान संकल्पना से जोड़ने की दृष्टि से प्रकाशित की जा रही है। प्रकृति के अनन्य आराधक मंत्र दृष्टा ऋषियों को विनत प्रणाम करते हुये प्रस्तुत हैं प्रकृति पर **''वैदिक चिन्तन''** के कतिपय अंश-

औदुम्बरेज मणिना पुष्टिकामाय वेधसा।
पशुनां सर्वेषा स्फातिं गोष्ठे में सविता करत्।।

(अथर्ववेद संहिता भाग–2 औदुम्बरमणि सूक्त–1)

(ज्ञानी अथवा विधाता ने औदुम्बरमणि से सभी प्रकार की पुष्टि करने वालों के लिये एक प्रयोग किया था जिससे सवितादेव हमारे गोष्ठ में सभी प्रकार के पशुओं को बढ़ायें।)

प्रस्तुत श्लोक वर्तमान समय में समीचीन प्रतीत होता है। क्योंकि आज विभिन्न प्रकार के पशु एवं जीव जंतुओं के संरक्षण की आवश्यकता है। क्योंकि हमारी कृषि का एक महत्वपूर्ण स्तम्भ पशु ही है। इसके अलावा पशुओं से ही हमें दूंध की प्राप्ति होती है तथा अन्य विशेष कार्य भी पशुओं द्वारा ही संपादित होते हैं। अतः आज पशु धन को बढ़ाने की आवश्यकता है।

करीषिणी फलवती स्वधामिरां च नो गृहे। औदुम्बरस्य तेजसा धाता पुष्टिं दधातु में।।

(अथर्ववेद संहिता भाग–2 औदुम्बरमणि सूक्त–3)

(धातादेव औटुम्बर मणि की तेजस्विता से हमारे अंदर परिपुष्टता को प्रतिष्ठित करें। गोबर की खाद से परिपूर्ण करने वाली गौ संतानों से युक्त होकर हमें अन्न और दूध आदि पर्याप्त मात्रा में प्रदान करें।)

प्रस्तुत श्लोक भी आज के संदर्भ मं महत्वपूर्ण है। क्योंकि इसमें भी गायों के महत्व के बताया गया है। और देवताओं से उनकी वृद्धि की प्रार्थना की गयी है। क्योंकि गायों के गोबर से खाद होती है। जिससे कृषि पैदावार में वृद्धि होती है एवं दूध आदि भी प्राप्त होता है। अतः आज की समस्याओं को देखते हुये गायों एवं अन्य पशुओं के अधिकाधिक संरक्षण की जरूरत है।

❁ पर्यावरण चेतना फीचर्स

मृत सागर का जलस्तर घटा

अम्मान। दुनिया में सबसे नीची जगह स्थित मृत सागर का जलस्तर तेजी से घट रहा है जिससे चिंतित पर्यावरण विशेषज्ञों ने एक नहर परियोजना पर तुरन्त काम करने की सलाह दी है।

गहरी घटी में समुद्र के समान्य स्तर से कहीं नीचे स्थित मृत सागर का पानी इतना खारा है कि उसमें जीवित रहना संभव नहीं है लेकिन वह हमेशा सैलानियों के लिये आकर्षण का केन्द्र रहा है। जार्डन विश्वविद्यालय के भूवैज्ञानिक एलियास समारोह ने बताया कि चालीस वर्ष पहले मृत सागर का जलस्तर समुद्र स्तर सागर 392 मी० नीचे था। आज यह स्तर 412 मी० नीचे पहुंच गया है। अगर यह स्तर इसी तरह गिरता रहा तो अगले दस सालों में मृत सागर अपने क्षेत्र का एक तिहाई भाग खोकर 650 वर्ग कि०मी० भार में रह जायेगा जबकि साठ के दशक की शुरूआत में यह क्षेत्रफल 1000 वर्ग कि०मी० था। पर्यावरणीदों ने इसका एक कारण सीरिया, जार्डन और इजराइल द्वारा जार्डन और यरमुक नदियों से पानी निकाला जा रहा है जिससे उन नदियों का पानी मृत सागरों तक नहीं पहुंच पा रहा। मृत सागरों में दक्षिणी तट पर कोई निकास न होने से उसके पानी के वाष्पीकरण में तेजी आ रही है।

साथ ही जार्डन और इजराइल की कम्पनियां भी पानी से कीमती खनिज नमक निकालने के लिये पानी को वाष्पीकरण है।

अमरीका में धूम्रपान से हर साल ३६ फीसदी महिलाओं की मौत

वाशिगंटन। अमरीका में प्रतिवर्ष ध्रमपान से मरने वालों में 39 प्रतिशत महिलाएं हैं और यह तादात 1965 की तुलना में दो गुनी पहुंच चुकी हैं। सर्जन जनरल डेविड सैटचेर के अनुसार देश में प्रतिवर्ष चार लाख से अधिक लोग धूम्रपान के कारण मर जाते हैं और हर साढ़े तीन मिनट में एक महिला इसका शिकार होती है। इस समय 5 में से एक महिला धूम्रपान करती है। जिनमें 30 प्रतिशत किशोरियां हैं। धूम्रपान से कई तरह के कैंसर, हृदय संबधी बीमारियां और फेफड़े की बीमारियां पुरूषों और महिलाओं में समान रूप से पनपती है लेकिन महिलाओं में अधिक खतरा है। मासिक धर्म और गर्भावस्था पर इसका गम्भीर असर होता है। रिपोर्ट के मुताबिक महिलाओं में फेफड़े के कैंसर से मरने वालों की संख्या इस समय सबसे अधिक है। सैटचेर तम्बाकू उद्योग के विज्ञापनों को भी इस लत का एक कारण मानते है जो धूम्रपान करने वाली महिलाओं को छरहरी और सैक्सी जताने की कोशिश करते है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़े बताते हैं कि तम्बाकू से प्रतिवर्ष होने वाली चालीस लाख मौतो से पांच लाख महिलाएं हैं। इस समय धूम्रपान करने वाले महिलाओं की संख्या 20 करोड़ है जो अगले साल में तीन गुना हो जाने की उम्मीद है। संगठन के सर्वेक्षण के अनुसार विकासशील देशों में पांच स्कूली छात्रों में एक नियमित रूप से धूम्रपान करता है और उनमें से 25 प्रतिशत दस साल से पहले इस लत में पड़ जाते है।

सौर ऊर्जा से धरों को रोशन कर रहे हैं तिब्बत के चरवाहे

पेइचिंग। दुनिया के छत कहे जाने वाले तिब्बत के चरवाहे अब अपने शिविरों में रोशनी के लिए घी के दियों के बजाए सौर ऊर्जा से चलने वाले विशेष लैम्पों का इस्तेमाल करने लगे हैं। रिपोर्ट के अनुसार तिब्बत चरवाहे घी में आने वाली भारी लागत को बचाने के लिए सौर ऊर्जा का इस्तेमाल कर रहे है। तिब्बत का अली नामक प्रांत समुद्र तल से 45 मी० ऊचांई पर है और सौर ऊर्जा संसाधनों से सम्पन्न है। सब्जियां उगाने के लिए यहां सौ से ज्यादा "ग्रीनहाउस" हैं, जो कुल मिला कर दस हजार वर्ग मी० का क्षेत्रफल घेरते है। इस प्रांत में तीस सौर ऊर्जा स्टेशन हैं, जिनकी कुल मिलाकर क्षमता 200 किलोवाट की हैं तथा यहां सौ ज्यादा कुएं हैं, जिनसे सौर ऊर्जा चलित संयत्र से पानी निकाला जाता है और जो स्थानीय 3,000 परिवारों की आवश्यकता को पूरा करता है।

ताइवान में लगी कुत्ते के मांस पर पाबंदी

ताइवान की संसद ने कुत्तों और बिल्लियों के मांस को खाने पर पांबदी लगाने वाला कानून पास कर दिया है। जल्दी ही यह कानून लागू हो जायेगा और फिर इस कानून के मुताबिक ताइवान के कुत्ते और बिल्ली के मांस का भक्षण के साथ इनकी खालों के व्यवसायिक इस्तेमाल करने पर भी पांबदी लग जायगी। इस नये कानून का उल्लंघन करने वाले व्यक्तियों का 270 रूपये के बराबर जुरमाना भरना होगा। इस संदर्भ में सत्तारूढ़ डेमोक्रेटिक फ्रोग्रेसिव पार्टी के नेता वांग सिन-नान का कहना है कि उन कठिन आर्थिक परिस्थितियों मे कुत्ते और बिल्ली के मांस को खाने की बात को समझा जा सकता है लेकिन अब हालात बदल गए है, ताइवान ने आर्थिक उन्नति की है,सो कुत्ते और बिल्ली का मांस खाने पर रोक लगाने में किसी तरह की समस्या नहीं है।

राष्ट्रीय समाचार

२५ फुट ऊंचा वृक्ष बना बैंगन का नन्हा सा पौधा

जबलपुर, मध्य प्रदेश के जबलपुर जनपद के आनन्द नगर, स्नेह नगर, मोहल्ले में एक विशालकाय बैंगन वृक्ष उगा है जो सम्भवतः विश्व का सबसे ऊंचा बैंगन वृक्ष है इसे इस वर्ष लिम्का बुक आफ रिकार्ड में दर्ज किया गया है।

जबलपुर विकास प्रधिकरण के पूर्व अध्यक्ष बृज बिहारी पटेल के आवास पर उगे इस वृक्ष से वर्ष भर बैंगन फलते रहते हैं। यह लगभग 25 फीट ऊंचा है। आम तौर पर बैंगन का पौधा लगभग ढाई फीट तक ऊंचा होता है लेकिन अप्रत्याशित रूप से कम ऊंचाई की प्रजाति वाला यह पौधा एक वृक्ष के रूप में परिणित हो गया है।

स्थानीय जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविधालय में के अधिकारी प्रदीप सिंह भोगल का दावा है कि यह बैंगन वृक्ष देश का ही नहीं वरन विश्व का सर्वाधिक ऊंचाई वाला वृक्ष है।

उन्होंने बताया कि इसकी विशेष बात यह हैं कि वर्ष भर हरा–भरा रहकर फल देता रहता है। उन्होंने बताया कि बैंगन के पौधे की ऊंचाई डेढ़ से ढाई फीट के लगभग होती है और यह प्रायः साल भर ही जीवित रह पाते हैं लेकिन इस पौधे के विकास ने वनस्पति विज्ञानियों के लिए शोध का विषय उपलब्ध कराया है।

श्री बृज बिहारी पटेल ने बताया कि उन्होंने एक लिम्का बुक की प्रति में देखा कि मैसूर स्थित अब्दुल गफ्फार नामक व्यक्ति के घर में 17 फीट का एक बैंगन का वृक्ष लगा है जो विश्व का सबसे ऊंचा बैंगन वृक्ष है तब उनका ध्यान अपने बैंगन वृक्ष के बारे में गया और उन्होंने इस लिम्बा बुक में दर्ज कराने की सोची।

उन्होंने बताया कि गुड़गांव स्थित कोकाकोला कार्यालय से सम्पर्क कर इसके बारे में जानकारी दी और इसे इस वर्ष की लिम्का बुक में प्रकाशित किया गया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि उनके आंगन में फल–फूल रहे इस वृक्ष को अगले वर्ष गिनीज बुक में दर्ज कर लगाया था। इसे रोपने वाले श्री पटेल के पुत्र राहुल ने बताया कि इसे 10 सितम्बर 1997 को सामान्य बैंगन का पौधा समझ कर रोपित किया था लेकिन समय के साथ यह बढ़ता गया और अब हमारे परिवार की शोहरत बढ़ा रहा है। उन्होंने बताया कि इस वर्ष लिम्का बुक की तरफ से नववर्ष पर उन्हें एक पत्र मिला जिसमें जानकारी दी गयी थी कि आपके आंगन में पनपा बैंगन का वृक्ष विश्व का सर्वाधिक ऊंचा वृक्ष है और इसे लिम्का बुक में दर्ज किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि एक बार तो यह एकदम काला पड़ गया और लगा कि यह सूख जाएगा लेकिन अच्छी खाद देकर व उचित देखभाल से इसे बचा लिया गया।

साइबेरियन पक्षी का शिकार करने के आरोप में बंदी

बस्ती। संरक्षित पक्षी साइबेरियन सारस का शिकार करने के जुर्म में आयुक्त के निर्देश पर एक पूर्व सेवानिवृत्त संयुक्त निदेशक के विरूद्ध पुलिस ने मुकदमा कायम किया, फिर उन्हें गिरफ्तार करके जेल भेज दिया।

पर्यावरण एवं वन्य जीव संरक्षण के प्रति अतिगम्भीर बस्ती मण्डल आयुक्त विनोद शंकर चौबे के गत् १५ जुलाई को ब्राह्मण चेतना समिति के राष्ट्रीय संयोजक सुनील कुमार भट्ट द्वारा लिखित शिकायत मिली कि कोतवाली क्षेत्र के महुआपार निवासी डा. अदालत खां ने संरक्षित पक्षी साइबेरियन सारस का शिकार किया है। इस पर आयुक्त महोदय ने तुरंत प्राथमिकी दर्ज कर उन्हें गिरफ्तार कर लिया।

—सोहन सिंह, बस्ती

अब बांझ गाय भी दे सकेंगी दूध

हैदराबाद, बांझ गाय को एक चिकित्सा पद्धति से दूध देने लायक बनाने संबंधी एक अध्ययन से भारत में एक और श्वेत क्रांति की उम्मीद जगी है। अध्ययन के मुताबिक इस समय देश में करीब २५ करोड़ गायों में से तकरीबन चालीस फीसदी दूध देने में अक्षम हैं। नयी पद्धति से वे दूध देने लगेंगी जिसका मतलब ग्रामीण अर्थव्यवस्था में जबर्दस्त उछाल होगा।

सात दिन की यह स्टेरोइड पद्धति सत्तर के दशक अध्ययन ने किसानों पशुचिकित्सकों और डेरी सहकारी संस्थाओं के सहयोग से करीब १२,००० स्वदेशी और वर्णशंकर बांझा गायों में इसे आजमाया। १९८९ से इस पद्धति पर काम हो रहा था। इसके नतीजों को नयी दिल्ली स्थित वी.वी.एस. राणा राष्ट्रीय संक्रमण बीमारी संस्थान ने जारी किया है।

अध्ययन के मुताबिक स्टेरोइड पद्धति से दसवें अथवा ग्यारहवें दिन बाद ही तब तक दूध न देने वाली गायें दूध देने लगती हैं और चालीसवें दिन उसकी अधिकतम क्षमता सामने आती है जो ३०० अथवा उससे अधिक दिन तक बरकरार रहती हैं।

जिन १२,००० गायों पर यह तजुर्बा किया गया उनमें से केवल ७३ असफल रहीं जिसका मतलब पद्धति की ९९ फीसदी सफलता है। अध्ययन में दावा किया गया कि यह दूध पीने के लिहाज से सुरक्षित है। इस तरह पशुपालक के लिये बांझा गायें भार तो नहीं ही होंगी बल्कि वे उनके बेहतर भविष्य का कारण बनेगी और राष्ट्रीय दूध उत्पांदन में इजाफा करेंगी। जिन गायों को स्टेरोइड दिया गया उनमें कुछ को ही कमजोरी थकान और पेचिस जैसी शिकायत हुई जो उपचार लायक थीं।

गोमती का पानी जहरीला तो था ही अब मछलियां भी खाने लायक नहीं

लखनऊ। गोमती का पानी अब इतना जहरीला हो चुका है कि उसमें मौजूद मछलियां भी खाने के काबिल नहीं रह गयी हैं। मगर गोमती को प्रदूषण मुक्त कराने की सभी योजनाएं सरकारी प्रदूषण से उबर नहीं पा रही है, जिसके चलते गोमती का अस्तित्व ही खत्म होने की कगार पर आ गया है। बढ़ती आबादी के साथ बढ़ते सीवेज लोड, बढ़ते कचरे, औद्योगिक अपशिष्ट आदि की वजह से यह प्रदूषण मुक्त होने के बजाय और अधिक प्रदूषित होती जा रही है।

शहरों और तमाम गंदगी अपने में समेटे गिरने वाले नालों के पानी, फेक्ट्रियों से निकला औद्योगिक अपशिष्ट,चीनी मिलों, पेपर मिलों के अपशिष्ट, नगर पालिका का कूड़ा–करकट, अस्पतालों का कचरा, नदी में स्नान, अस्थि विसर्ज, आदि से गोमती का पानी न तो पीने के कांबिल बचा है, न नहाने के न सिचांई करने के। हालत यह हो गयी है कि अब इनमें होने वाली मछलियां व वनस्पतियां भी इतनी जहरीली हो चुकी हैं कि खाने के काबिल नहीं बची।

वन्यजीवों के संरक्षण के लिए राज्य में अवैतनिक अधिकारी नियुक्त

लखनऊ, अपने लम्बे चौड़े सरकारी अमले से वन्यजीवों के शिकार व उनकी खालों की तस्करी को रोक पाने में अक्षम राज्य का वन विभाग अब हर जनपद में अवैतनिक वन्यजीव अधिकारी नियुक्त करके वन्यजीवों की रक्षा करेगा।

राज्य के मुख्य वन्यजीव संरक्षक राम लखन सिंह ने प्रदेश के प्रत्येक जनपद में इन अवैतनिक वन्यजीव अधिकारियों की नियुक्त करते हुए उक्त जानकारी दी।

श्री सिंह ने स्वीकार किया कि लगभग 20 हजार कछुओं को प्रदेश के बाहर स्मगलिंग रोकने किये जाने की उन्हे सूचना है। इनमें से अधिकांश कछुओं को मछलियों के नाम पर रेल व ट्रक से भेजा जाता है।

धीरे–धीरे जहर घोल रहा है शहर में बढ़ता शोर

लखनऊ राजधानी के विभिन्न इलाकों में दिनों दिन शोर का स्तर बढ़ता जा रहा है, जिनमें वाहनों की बढ़ती संख्या, उनमें लगे प्रेशर हार्न, लाउडस्पीकरों से हाने वाला शोर है। यह शोर धीरे-धीरे हमारे कानों में जहर घोल कर हमें बहरा बनाता जा रहा है।

यह तथ्य हाल ही में राजधानी के विभिन्न क्षेत्रों में शोर का स्तर (साउंड लेविल मीटर) 24 घंटे लगातार मापने पर उभरकर सामने आये।

अब वन्य जीवों को मिलेगी एक्स–रे, अल्ट्रासाउण्ड की सुविधा

लखनऊ। एक्स–रे अल्ट्रासउण्ड जैसी महात्वपूर्ण चिकित्सा सुविधा का लाभ अब लखनऊ चिड़ियाघर भी अत्याधुनिक पैथालोजी उपकरणों से सुसज्जित होगा। प्रशासन ने तो दो दर्जन इनडोर वार्ड बनाकर वन्य जीवों का इलाज करने की तैयारी भी पूरी कर ली है। इंतजार है तो बस सेण्ट्रल जू अथारिटी द्वारा उक्त उपकरणों को भेजे जाने का।

उच्चतम न्यायलय के आदेश पर सभी चिड़ियाघरों ने अपनी सुरक्षा व चिकित्सा व्यवस्था पर विशेष ध्यान देना शुरू कर दिया है। सेण्ट्रल जू अथारिटी ने भी चिड़ियाघरों की चिकित्सीय प्रणाली का जायजा लेना शुरू किया है, ताकि वन्य जीवों को कोई तकलीफ न हो। इसी क्रम में कुछ समय पूर्व सेण्ट्रल जू अथारिटी ने लखनऊ चिड़ियाघर चिकित्सालय के वरिष्ठ चिकित्सक उत्कर्ष शुक्ल से आवश्यक उपकरणों की सूची भेजने के लिए कहा गया है ताकि शीघ्र ही उक्त उपकरणों को भेजा जा सके। यहां के चिकित्सालय में पैथालाजी विभाग तो था, परन्तु उसमें रक्त जांच करने के लिए माइक्रोस्कोप सहित अन्य उपकरण नहीं थे और न ही पैथालाजिस्ट था जिससे बाहर से रक्त जांच होती थी। लखनऊ चिड़ियाघर में सिर्फ ट्रकुलाइजेशन के बेहतर उपकरण ही मौजूद हैं। वरिष्ठ चिकित्सक उत्कर्ष शुक्ल ने बताया कि अब तक दिल्ली चिड़ियाघर में ही एक्स–रे जैसी सुविधा उपलब्ध है। इस व्यवस्था से वन्य जीवों को काफी आराम पर ही इलाज किया जाता है, लेकिन एक्स–रे से तुरन्त बेहतर इलाज उपलब्ध हो सकेगा।

हम और हमारे पर्यावरण का भविष्य

पर्यावरण धरती पर जीवन को संभव बनाता है जब हम पर्यावरण के संसाधनों का बिना विचारे अंधाधुंध शेषण करने लगते है तब वहीं पर्यावरण जीवनविरोधी हो जाता है। यही ध्यान में रखकर अब संपोषण या धारणयोग्य (सस्टेनेबल) विकास की बात की जाने लगी है। मतलब यह कि धरती के संसाधनों का उपयोग इस तरह किया जाय कि भविष्य में मनुष्यों तथा अन्य प्राणियों का जीवन संभव ओर सुरक्षित बना रहे। धारणयोग्य विकास वर्तमान की फौरी जरूरतों को पूरा करता है, परन्तु आगे की पीढ़ियों की जरूरतों को पूरा करने की क्षमताओं के साथ बिना किसी तरह का समझौता किए। आज का यक्ष प्रश्न यही है कि क्या भविष्य का संसार हमारी अगली पीढ़ियों और अन्य जीव जंतुओं का आश्रय रह सकेगा? आज पढ़ा-लिखा तबका पर्यावरण के खतारों से कुछ-कुछ परिचित है और जनसंचार माध्यम भी इसकी चेतना को बढ़ाने में लगे है परन्तु इन खतरों की विनाशकारी क्षमता का ठीक-ठीक अंदाज हम में से अधिकांश को नहीं है और न ही यह पता है कि इस स्थिति के लिए मनुष्य ही जिम्मेदार है। इसी कारण नैसर्गिक पर्यावरण पर मनुष्य के नकारात्मक प्रभावों को घटाने की दिशा में अभी तक प्रभावी कोशिश नहीं हो सकी है।

आज पर्यावरण को सर्वाधिक खतरा धरती पर बढ़ती हुई कार्बन डाईआक्साइड गैस से है जो तेल, गैस, लकड़ी और कोयला आदि को जलाने से पैदा होती है और वायुमंण्डल में मिल जाती है। कार्बन डाईआक्साइड धरती से आने वाले इन्फ्रारेड विकिरण (रेडिएशन) को अपने में समा लेती है। इस तरह धरती के ताप की मात्रा घटती है और गर्मी अंतरिक्ष में फैलती है। 'ग्रीन हाउस प्रभाव' के नाम से परिचित यह घटना भूमंडलीय गर्मी में अभूतपूर्व वृद्धि पैदा कर रही है। एक अनुमान के अनुसार सन 2100 तक धरातल पर वायु का तापमान साढ़े तीन डिग्री फारेनहाइट वढ जाएगा। इस अतिरिक्त गर्मी से क्षेत्रीय मौसम बदलेगा ओर साथ ही खेती बाड़ी का स्वरूप भी धुर्वीय क्षेत्र ज्यादा तेजी से गर्म हो रहे है। धुर्वो पर मौजूद हिम के पिघलने का अंदेशा हैं जिसके कारण समुद्र का जल का स्तर बढ़ेगा और उसके तटवर्ती इलाकों से बाढ़ आने की संभवना बनती है।

धरती का 'ओजोन सुरक्षा कवच' भी क्लोरो फ्लोरो कार्बन के निकलने से कमजोर हो रहा है। ओजोन की पर्त को भेदने वाले अल्ट्रा वायलेट विकिरण से कृषि की फसल को हानि होती है और मनुष्यों मे त्वचीय कैंसर की संभावना बढ़ती है। मौसम में व्यापक रूप से संभावित परिवर्तन के कारण धरती के जीव विविधता में भी ह्रास होगा। धारण क्षमता के प्रतिकूल हमारी आदतों से कृषि की उत्पादकता घट रही है। विश्व का प्रति व्यक्ति खाद्यान्न उत्पादकता उन्नीस सौ चौरासी में सबसे ज्यादा था। उसके बाद में इसमें सात-आठ प्रतिशत की कमी आई है। जनसंख्या वृद्धि के कारण खाद्यान्न की मांग बढ़गी परन्तु फसल की असफलता के चलते खाद्यान्न का भाव बढ़ेगा और कुछ देशों में अकाल की संभावना को नही नकारा जा सकता। एसिड की वर्षा से जंगल, खेत, मछली, पौधे सबका जीवन खरते में पड़ रहा है। प्रदूषण के कारण वायु और जल विषैले हो रहे हैं और कूड़ें-करकट का भंडार उसे संभालने की क्षमता से ज्यादा हो रहा है। आनुवंशिक तथा हार्मोन से जुड़ी गुड़बड़ियां बढ़ रही है। डायाक्सिन तथा अन्य विषैले रसायनों की उपस्थिति से कैंसर का खतरा बढ़ रहा है। क्लोरीन युक्त रसायनों के उपयोग से शुक्राणुओं में पचास प्रतिशत की कमी पाई गई है। एक अध्ययन के अनुसार डायक्सिन से जुड़ा खतरनाक कैंसर अमेरिका में बुरी तरह से फैल रहा है।

ऊपर जिन समस्याओं का उल्लेख किया गया वे गंभीर हैं और उनका कारण मात्र तकनीक नही है। भौतिकी और रसायनशास्त्र या इंजीनियरिगं के उपयोग से इनका समाघान नहीं होगा। वे मनुष्य के व्यवहार में सुधार द्वारा ही इनका हल ढूंढ़ा जा सकेगा। इस सन्दर्भ में अन्तराष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण और विकास पर संयुक्त राष्ट्र उन्नीस सौ बानवें में रियो मे चर्चा के उपरान्त एक आयोग गठित किया गया था। यह उपयोग इसका लेखा-जोखा रख रहा है। इस दिशा में कुछ प्रगति हुई है परन्तु अमेरिकी सरकार का रूख बाधक रहा है। गौरतलब है कि उन्नीस सौ सतानबे में क्योटो में पर्यावरणीय मुद्दों पर विशेषतः ग्रीन हाउस प्रभाव को लेकर हुई चर्चा में अमेरिकी सरकार ने न्यूनतम लक्ष्य की वकालत की। इसके चलते कमजोर और दूर के लक्ष्य रखे गये। नियमों को लागू करने की पड़ताल कभी कोई व्यवस्था नहीं हुई। आज पर्यावर्णीय मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ी है परन्तु बड़े व्यापारियों, तेल मालिकों, सिगरेट, उत्पादकों, खानन उद्योग के मालिको, दवा कम्पनियों के निहित स्वार्थ के कारण विशेष उपलब्धि नहीं हो सकती है।

हमारी धरती की पर्यावरणीय समस्याओं के तीन प्रमुख स्रोत हैः बढती हुई जनसंख्या, अत्यधिक मात्रा में उपभाग की प्रवृत्ति तथा संरक्षण के कमजोर प्रयास। इसमें तनिक भी संशय नहीं है कि सभी पर्यावरणीय समस्याओं की जड़ जनसंख्या का अत्यधिक भार है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो लाखों साल तक यह भार बहुत कम था। वर्ष 1800 में हमारी जनसंख्या एक बिलियन थी। फिर 100 साल बाद 1930 में 2 विलियन हुई। फिर तेजी से वृद्धि शुरू हुई। अगले तीस सालों में 1960 में यह 3 बिलियन हो गई। फिर पन्द्रह वर्ष में 1975 में यह चार बिलियन पहुंच गई। बारह वर्ष बाद 1987 में यह पांच बिलियन हुई और बारह साल बाद 1999 में सह 6 बिलियन हो गई। मनुष्यों की जनसंख्या में यह ज्यामितिक वृद्धि बेहद खतरनाक है। ऐसा ज्यादा दिन नहीं चल सकता।

कुपोषण और बीमारी से आज विश्व की आधी जनसंख्या त्रस्त है। यदि हम स्वेच्छया जनसंख्या पर नियंत्रण नहीं करते तो भूख, अकाल, रोग, युद्ध और हत्या जैसे कठोर परिणाम भुगतने पड़ेगें। हमारी धरती ठीक तरह कितने लोगों का भार ढो सकती है? यह एक कठिन प्रश्न है और इसका उत्तर ठीक मालूम नहीं। कुछ पर्यावरणविद यह मानते हैं कि हम इस सीमा को पार कर चुके हैं। शायद तीन बिलियन मनुष्यों के समुचित भरण पोषण के लिए हमारी धरती पर्याप्त है। अगर यह सच है तो हम अपने आगे आने वाली पीढ़ियों के जीवन स्रोतों को उसने छीन रहे है।

पर्यावरण की समस्याओं का दूसरा प्रमुख स्रोत है प्राकृतिक संसाधनों का अत्याधिक दोहन या उपभोग। ऐसा उपभोक्तावाद, धारण क्षमता के खिलाफ जाता है। आज उपभोग की प्राविृत्त का व्यसन (एडिक्शन) सा हो गया है। आज समृद्ध औद्योगिक देश गरीब और विकासशील देशों के प्राकृतिक संसाधनों को खत्म कर रहे है। ऊर्जा और कच्चे माल के अतिशय उपभोग द्वारा यह स्थिति पैदर हो रही ह। स्थिति पैदा हो रही है। अमेरिका इसका ज्वलन्त उदाहरण है। इस धरती की कुल पांच प्रतिशत जनसंख्या वाला यह देश कुल औद्योगिक ऊर्जा के पचीस प्रतिशत पर काबिज है। सभी औद्योगिक देशों में विश्व की केवल बीस प्रतिशत जनसंख्या रहती है पर कागज और मोटर के कुल व्यय में उनकी पचीस प्रतिशत की हिस्सेदारी है। एक अनुमान के अनुसार यदि सारी दुनिया अमेरिका और कनांडा के ही स्तर पर संसाधनों का उपयोग शुरू कर दे तो हमारी धरती तीन धरतियों की जरूरत पड़ेगी।

सच्चाई यह है कि समाज को अपनी आदत बदलनी होगी। कार्बन डाइआक्साइड में पचहत्तर प्रतिशत कमी लानी होगी। वृद्धि में विश्वास करने वालो का तकनीक (टेक्नालीजी) पर भरोसा है। कि वह समस्या का हल ढूढ़ देगी। पर इससे समस्या का पूरी तरह समाधान संभव नहीं होगा। धारणयोग्य समाज पाने के लिए हर आदमी के व्यवहार और मूल्यों में भी परिवर्तन आवश्यक है। हमें प्रकृति पर नियंत्रण स्थापित करने के बदले उसका सहचर बनना होगा।

अत्यधिक उपभोग के कारण अनेक संसाधनों के भंड़ार समाप्त हो रहे है। पेट्रोल को ही लें जिसका उत्पादन पिछले पच्चीस वर्षो में बहुत थोड़ी वृद्धि हुई है। सारे औद्योगिक देशों की धुरी है पेट्रोल। अनुमान है इसका उत्पादन 2010 से घटना शुरू होगा। पेट्रोल ओर उसके बाद उत्पाद आज अत्यंत महत्वपूर्ण है परंन्तु इससे बचने वाले सिंथेटिक पदार्थ जैसे प्लास्टिक स्वास्थ्य ओर पारिस्थितिकी (इकोलांजी) पर नकारात्मक प्रभाव डाल रहे हैं। साथ ही इनका कचरा सैकड़ों साल तक ज्यों का त्यों पड़ा रहता है। अत्यधिक उपभोग के समान्तर प्राकृतिक संसाधनों के सरक्षण की कमी भी पर्यावरण की समस्या का एक प्रमुख कारण है। इस समस्या से निपटने के लिए जहां हमें उपभोग की मात्रा पर काबू पाना होगा वहीं उत्पादों के पुनः प्रयोग और बाद में उनकी जीवनीशक्ति खत्म होने पर पुनर्नवीकरण भी करना चाहिए। अर्थात चीजों का कम उपभोग, बार-बार उपभोग ओर पुनर्नवीकरण प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की दिशा में उपभोगी होगा।

पर्यावरण की उपयुक्त समस्याओं का सामना करने के लिए पर्यावरण के अनुकूल धारणयोग्य जीवनशैली अपनानी होगी। इसका संदेश सब तक कैसे पहुंचाया जाय? यह एक महात्वपूर्ण सवाल है। प्रचलित जीवनशैली में बदलाव लाने का महत्वपूर्ण सवाल है। प्रचलित जीवनशैली में बदलाव लाने का अक्सर विरोध होता है। अतः धारणयोग्य जीवनशैली की बात लोबप्रिय नहीं होगी। कम संसाधनों के उपयोग का अर्थ होगा जीवन के तनाव सुख-साधनों का त्याग। व्यापारीऔर कुछ अर्थशास्त्री भी निरंतर वृद्धि (ग्रोथ) की डगार पर निरंतर आगे बढ़ना ही उन्नति है। पर वास्तविकता इससे परे है। वृद्धि के तर्क से अभिभूत अर्थशास्त्री संसाधन-हानि को भी जीएपी का हिस्सा मानते हैं और उसकी गणना में तेल भंडार के दोहन विषैले कचरे की सफाई और न्यूक्लियर मिसाइल के निर्माण को भी शामिल करते है। ये सब निश्चित रूप से मानव कल्याण के उत्पाद नहीं हैं। इधर कुछ दिनों से धारणयोग्य अर्थिक कल्याण के मापक के उपयोग की बात चल रही है जिसमें एक ओर बिना किसी व्यय के होने वाले ऐच्छिक कार्य (जैसे गृहिणी का कार्य, बच्चों की देख रेख, स्वैच्छिक कार्य) के योगदान को शामिल

किया जाता है तो दूसरी और प्रदूषण नियंत्रण, अपराध नियंत्रण आदि पर व्यय को अनुत्पादी खर्च मान कर घटाया जाता है। सच्चाई यह है कि समाज को अपनी आदत बदलनी होगी। कार्बन डाइआक्साइड में पचहत्तर प्रतिशत कमी लानी होगी। वृद्धि में विश्वास करने वालो का तकनीक (टेक्नालोजी) पर भरोसा है। कि वह समस्या का हल ढूढ़ देगी। पर इससे समस्या का पूरी तरह समाधान संभव नहीं होगा। धारणयोग्य समाज पाने के लिए हर आदमी के व्यवहार और मूल्यों में भी परिवर्तन आवश्यक है। हमें प्रकृति पर नियंत्रण स्थापित करने के बदले उसका सहचर बनना होगा। यह काम आसान नहीं है क्योंकि आज कई देशों की सरकारें और बहुराष्ट्रीय कंपनियां संसाधनों के उपभोग से ही लाभ कमा रही हैं। वे बड़ी शक्तिशाली भी हैं। दूसरी ओर एक व्यक्ति के रूप में आम आदमी में एक अजीब उदासीनता है कि जब तक पानी सिर के ऊपर न जाए वे कुछ नहीं करेंगे। जीवनशैली में बदलाव भी हमारे सुख के बलिदान की मांग करता है। ऐसे में बदलाव के लिए उत्साह और प्रेरणा कहां से लाई जाए? हम पाते है कि बदलाव किसी बड़ी त्रासदी होने पर ही होता है। क्या हमें इसका इंतजार करना होगा? अपने मन से इच्छा का होना जरूरी है। ऐसा भी लगता है। कि पर्यावरणीय समस्याएं इतनी विकराल हैं कि कोई एक आदमी कुछ नहीं कर सकता। इनकी अवधि भी इतनी लंबी होती है कि तात्कालिक समाधान नहीं दिखता। इसीलिए भय की अपील का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता।

सहज और सरल जीवनशैली अपनाने का अर्थ है धरती पर इस तरह जीवन जीना कि प्राकृतिक संसाधनों और तकनीक का न्यूनतम उपभोग हो। पूरे विश्व के परिप्रेक्ष्य में यदि देखें तो धरती के संसाधनों का शांतिपूर्ण, ठीक अनुपात में और प्रभावी ढ़ग से बंटवारा होना चाहिए तकि सबको जीने का हक मिले। सहज जीवन शैली आंतरिक रूप से समृद्ध जीवत तथा सरल अनुभवों से भरी है। संतुलन के साथ जीना जिसमें अपनी जरूरत से ज्यादा न लेना परन्तु अपनी शक्तिभर देना, इस तरह की जीवनशैली का केन्द्र बिन्दु होगा। इसके लिए शिक्षा तथा प्रचार माध्यम, दानों की सहायता से प्रकृति के साथ सामजस्य का मूल्य, पर्यावरण सुरक्षा से दीर्घकालिक लक्ष्य, पर्यावरण के पक्ष में ठोस व्यवहारों को स्थापित करना तथा लोक कार्यो में भागीदारी पर बल देना होगा। पर्यावरण संरक्षण से जुड़े मानकों, कानूनों का प्रावधान और अनुपालन इस दृष्टि से खास महत्वपूर्ण होगा। प्राकृतिक संसाधनों का ठीक और प्रभावी उपयोग करने के लिए उपयुक्त तकनीकों का विकास भी जरूरी होगा। धारणयोग्य दुनिया बनाने के लिए सबकी भागीदारी की जरूरत है ताकि आगे आने वाली पीढी हमे प्रसन्नतापूर्वक याद कर सके।

❁ गिरीश्वर मिश्र
प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रतिवर्ष १८ मीटर पीछे हट रहा है गंगोत्री ग्लेशियर

थो इस (सियाचिन)। सियाचिन ग्लेशियर को पर्यावरणीय विनाश से बचाने के लिए सेना ने विशेष अभियान शुरू किया है। चौदह कोर डिवीजन के जी.ओ.सी. मेजर ज़नरल शारू थपलियाल ने यहां आए मीडिया के दल को बताया कि सैकड़ों वर्ग किलोमीटर में फैला ग्लेशियर एक विशाल कूड़ा घर बनता जा रहा है। दुनिया की सबसे ऊंची रणभूमि के रूप में विख्यात इस ग्लेशियर पर कई दशकों से सेना के कैम्प और चौकियां बनी हुई हैं। जिनसे निकलने वाला कचरा अब एक समस्या बनता जा रहा है। जवाहर लाल नेहरू विश्व विद्यालय के पर्यावरण विभाग के प्रोफेसर सैयद इकबाल हसनैन के अनुसार अगर सियाचिन में भारत पाक संघर्ष जारी रहा तो कुछ वर्षों बाद भारतीय सैनिकों को पिघलते ग्लेशियर में लड़ना पड़ेगा। इसके परिणाम सिर्फ सेना के लिए ही नहीं बल्कि पूरे क्षेत्र के परिस्थितिकी संतुलन के लिए घातक सिद्ध होंगे।

प्रो. हसनैन ने कहा कि जब पूरे हिमालय में ग्लेशियर सिकुड़ रहे हैं तो सियाचिन इसका अपवाद नहीं हो सकता। गंगोत्री ग्लेशियर प्रतिवर्ष 18 मीटर की दर से पीछे हट रहा है। मेजर जनरल थपलियाल ने कहा कि सेना सियाचिन में इस स्थिति को रोकने के लिए कोई कसर नहीं उठा रखेगी।

पिछले तीन दशकों से दोनों देशों के बीच सियाचिन में संघर्ष चलता रहा है। यह दुनिया का अकेला ग्लेशियर है जहां युद्ध होता रहा है। प्रो.हसनैन ने कहा कि ग्लेशियर के ऊपर भारत साजो सामान सहित चलने वाली सैन्य गतिविधि से वहां के संतुलन पर असर जरूर पड़ा होगा। दोनों देशों की सेनाओं ने वहां हेलीपैड भी बनाए हैं और वहां भारी मात्रा में कचरा जलाया जाता है। भारत सरकार असैनिक वैज्ञानिकों द्वारा ग्लेशियर की निगरानी की अनुमति नहीं देती इसलिए

यह पता नहीं चल सका है कि ग्लेशियर का क्षेत्रफल कम हो रहा है या नहीं।

मेजर जनरल थपलियाल ने बताया कि पहले चरण में सेना ने सियाचिन में इकट्ठा होने वाले कचरे को बाहर निकालने का काम तेज किया है। उन्होंने कहा कि ग्लेशियर में जो कुछ भी जाता है वहीं रह जाता है। तेल के जेरीकैन, तमाम किस्म के डिब्बाबंद पदार्थों के टिन, पालीबैग और अन्य कचरा वहां इकट्ठा होता रहता है। उन्होंने बताया कि ग्लेशियर में स्थित चौकियों पर रसद आदि गिराने के लिए इस्तेमाल होने वाले पैराशूट भी पहले वहीं छोड़ दिए जाते थे जिससे सेना को प्रति पैराशूट पांच से दस हजार रूपये का नुकसान होता था।

उन्होंने कहा कि सेना ने पोर्अरों और स्नो स्कूटरों की मदद से ग्लेशियर में फैले कचरे और पैराशूट आदि को बाहर निकालने के लिए विशेष प्रयास शुरू किए हैं। मेजर जनरल थपलियाल ने कहा कि ग्लेशियर में शून्य से 25-30 से लेकर 200 डिग्री नीचे तक के तापमान पर कोई भी चीज नष्ट नहीं होती। जो पदार्थ दूसरे इलाकों में प्राकृतिक रूप से क्षरित हो जाते हैं वे भी ग्लेशियर में नष्ट नहीं होते हैं। इसलिए यहां हर किस्म का कचरा खतरनाक साबित होता है। उन्होंने बताया कि इस स्थिति से निपटने के लिए रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डी.आर.डी.ओ.) की इस क्षेत्र में प्रतापपुर स्थित फील्ड रिसर्च लेबोरेटरी के वैज्ञानिक ऐसे बायो डाइजेस्टर विकसित करने पर काम कर रहे हैं जो ग्लेशियर में छोड़े जाने वाले जैव कचरे को क्षरित कर सकें।

कुदरत से ऐसा नाता है...

भारतीय परंपरा में पूजा के बाद प्रसाद–रूप में पंचामृत या चरणमृत वितरित किया जाता है। पंचामृत बांटते समय एकमंत्र पढ़ा जाता है 'अकाल मृत्यु हरणं, सर्वव्याधि विनाशनम, विष्णोः पादोदकं पीत्वा शिरसाधारयाम्यहं।' इस मंत्र के रचयिता ने आकाल मृत्यु से लोगों को बचाने की कामना की है। मृत्यु एक सत्य है। जो पैदा होता है उसका मरना निश्चित है। लेकिन, अकाल मृत्यु ज्यादा दुखदाई है क्योंकि यह अचानक होती है। बाढ़, तूफान, भूकंप आदि प्राकृतिक आपदाओं के साथ महामारी, भुखमरी और अकाल आदि भी अकाल मृत्यु के कारण बनते है। जिन दिनों ऐसे मंत्रों की रचना हुई उस समय आज जैसे विकसित साधन नहीं थे जिनके लोग अपना बचाव करते। इसलिए प्रकृति से प्रार्थना करते थे कि वह उन पर अपना कोप न दिखाए। हर अवसर पर लोग सामूहिक रूप से प्रार्थना करते थे– ऊं शांतिः, आपः शांतिः, औषधयः शांतिः, वनस्पतयः शांतिः आदि प्राकृति से शांति की प्रार्थना के पीछे यह भय भी था कि यदि उसने कोप दिखा दिया तो भारी नुकसान होगा। पृथ्वी से लेकर आकाश तक, ग्रहों से नक्षत्रों तक, देवताओं से प्राणियों तक, वायु, जल, वनस्पति तथा औषधियों तक से शांति की कामना की जाती थी। इन सबसे यह स्पष्ट होता है, कि भारतीय मनीषियों ने प्रकृति के साथ अपनी निकटता भी स्थापित की थी। हालांकि, प्रकृति के कोप से होने वाले विनाश से वे भयभीत भी थे, लेकिन उसके उदात्त रूप से वह परिचित और आत्मायित भी थे। प्रकृति ने उन्हें सब कुछ दिया। शुद्ध हवा, शुद्ध जल, जड़ी–बूटियां, वनस्पतियां, फल–फूल, मेवे–मसाले, अनाज और बहुत कुछ। इसलिए भारतीय परंपरा में प्रकृति की पूजा का विधान हुआ। पेड़ों तक की पूजा हुई। पूजा और मांगलिक कार्यों में दूब तक की अनिवार्यता बताई गई। आदमी अपनी मेहनत से अन्न, फल, शर्करा आदि जो कुछ पैदा करता था उसका अर्ध्यदान अपने उपास्य देवता के सम्मुख करके अपने को धन्य मानता था। उन दिनों एक आम धारणा बन गई थी कि जब राजा अन्याय या अत्याचार करता है या गलत नीतियों पर चलता है तो प्रकृति का कोप पूरे समाज पर होता है और तभी प्राकृतिक आपदाएं आती है। तभी महामारी फैलती है, भूकम्प आते है और प्राणियों के साथ–साथ वनस्पतियों और औषधियों का भी नाश होता है। पता नहीं, यह धरणा किन्हीं अनुभवों के आधार पर बनी या वैसे ही अंधविश्वासों की तरह फैली, लेकिन एक बात जरूरी है कि उन दिनों के राजाओं ने अपने आप को ईश्वर के प्रतिनिधि के रूप में पेंश भी किया था। एक व्यक्ति राजा होता था जिसके पास सारे अधिकार होते थे और बाकी लोग प्रजा में शामिल थे। इसलिए अन्यायी और अत्याचारी राजा को यदि विनाशकारी आपदाओं का कारण माना गया हो तो उसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं।

लेकिन, आप जब हम उन परंपराओं के संदर्भ में अपने–आप को देखते हैं तो नए ढग से सोचने की जरूरत महसूस होती है। हमारे देश में इधर कुछ देशों से लगातार विनाशकारी प्राकृतिक आपदाएं क्यों आ रही है। पिछले साल उड़ीसा में समुद्री तूफान की विनाशलीला और इस वर्ष *पुरानी परंमपराओं की चर्चा करते समय यह बात भी आयी है कि भारतीय समाज किस तरह प्रकृति की पूजा करता था और पर्यावरण की शुद्धता के प्रति सचेष्ट था। आज के हालात पर विचार करें तो लगेगा कि जिस निर्ममता से पेड़ों की कटाई हो रही है उस प्रक्रिया को यदि नहीं रोका गया तो प्राकृतिक आपदाओं का खतरा बढ़ जाएगा। एक तरफ रहन–सहन की आधुनिक शैली अपना प्रभाव बढ़ा रही है जिसके तहत धुआं उगलने वाले वाहनों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। शहरी इलाकों में तो हाल यह हो रहा है कि जो हवा सांस के साथ अन्दर आती है वही जहरीली होती है। राजधानी दिल्ली में अदालत को इस मामले में हस्तक्षेप करना पड़ा है और वाहनों को पेट्रोल या डीजल की जगह सी.एन.जी. से चलाने का आदेश देना पड़ा है। पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले माध्यमों में सिर्फ वाहन ही नहीं हैं। औद्योगिक इकाइयों का धुआं भी वातावरण को प्रदूषित कर रहा था, उन्हें अन्यत्र ले जाने को कहा गया है। नदियों का पानी प्रदूषित हो रहा है क्योंकि कूड़े–कचरे और रासायनिक अवशिष्ट भी उनमें बहाए जाते है।'

`गुजरात में भयंकर भूकंप जिसमें एक लाख से भी अधिक लोगों के मरने की आशंका है। अगर कोई छोटा–सा देश होता तो गुजरात के भूकम्प की घटना एक प्रलय से कम नहीं थी। पुरानी धारणा के हिसाब से आज कोई एक राजा तो नहीं है जिसे अन्यायी–अत्याचारी कहकर सारा दोष उसके सिर पर थोप दें। आज भारत में लोकतांत्रित व्यवस्था है और जनता

खुद ही राजा हैं। वही अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से अपने ऊपर राज कर रही है।

प्राचीन मान्यताओं और धारणाओं को अवैज्ञानिक और भावनात्मक कहकर टाला जा सकता है, लेकिन इस तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता कि हम आज अपने ऊपर जिस तरह अन्याय और अत्याचार कर रहें हैं वह हमें विनाश की ओर ले जाने के लिए काफी है। वैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर प्राकृतिक आपदाओं के पीछे भी कारण होते है। यह जरूर है कि पहले से उनकी भविष्यवाणी करना बहुत आसान नही है, लेकिन वैज्ञानिक अपनी और से पता लगाने की कोशिश जरूर करते हैं। गुजरात के भूकम्प से यदि आज का भारतीय समाज कोई सीख ले सकता है तो वह यह है कि सिर्फ पैसे की हवस में अपने ही विनाश की तैयारी करना मानवता–विरोधी काम है। गुजरात के जिन इलाकों में भूकंप की विनाशलीला हुई उनमें काफी मकान ऐसे थे जो सही ढ़ग से नहीं बनाए गए थे और वे भकंप का झटका नहीं झेल पाए। भुज तथा आस–पास के इलाकों में जिन बिल्डरों ने मकान बनाए थे वे भाग खड़े हुए। कुछ लोगों की धर–पकड़ हुई भी है और कुछ ने यह स्वीकार किया है कि मकान बनाने में गलत तौर–तरीके अपनाए गए और जिस तरह की सामग्री का इस्तेमाल किया गया वह घटिया था।

पुरानी पंरम्पराओं की चर्चा करते समय यह बात भी आई है कि भारतीय समाज जिस तरह प्रकृति की पूजा करता था और पर्यावरण की शुद्धता के प्रति सचेष्ट था। आज के हालात पर विचार करें तो लगेगा कि जिस निर्ममता से पेड़ों की कटाई हो रही है उस प्रक्रिया को यदि नहीं रोका गया तो प्राकृतिक आपदाओं का खतरा और बढ़ जाएगा। एक तरफ रहन–सहन की आधुनिक शैली अपना प्रभाव बढ़ा रही है जिसके तहत धुआं उगलने वाले वाहनों की संख्यां लगातार बढ़ती जा रही हैं। शहरी इलाकों में तो हाल यह है कि जो हवा सांस के साथ अंदर आती है वही जहरीली होती है राजधानी दिल्ली में अदालत को इस मामले में हस्तक्षेप करना पड़ा है। पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले माध्यमों में सिर्फ वाहन ही नहीं है। औद्योगिक इकाइयों का धुआं भी वातावरण को प्रदूषित कर रहा था, उन्हें अन्यत्र ले जाने को कहा गया है। नदियों का पानी प्रदूषित हो रहा है क्योंकि कूड़े–कचरे और रासायनिक अवशिष्ट भी उनमें बहाए जाते हैं। पर्यावरण को शुद्ध रखने के लिए जंगलों की भी बड़ी भूमिका है। लेकिन, जंगलों की कटाई निर्ममता से हो रही है। और साथ ही नए पेड़ लगाने या पौधों उगाने की प्रवृत्ति खत्म होती जा रही है। यह ठीक है कि लकड़ी की जरूरत को पूरा करने के लिए पेड़ काटने होंगे, लेकिन जितने पेड़ कटें उसमें कई गुना ज्यादा पौधें रोपे जाएं तभी संतुलन बना रह सकता है। इसके लिए जरूरत है कि एक राष्ट्रीय वन नीति बनाई जाए और उस पर दृढ़ता से अमल किया जाए पर्यावरण के रक्षा कि लिए गांव–गांव में अभियान चलाया जाए। जड़ी बूटियां भी नस्ट हो रही है। यहां तक कि जिन जड़ी–बूटियों से उपयोगी औषधियां बनायी जाती थी उनकी भी लूट हो रही है। पैसा कमाने के लालच में उन्हें उखाड़कर बेचने का काम तो हो ही रहा है, लेकिन नए सिरे से उनको उगाने की चिंता किसी को नही है। नदियों का जल तो प्रदूषण के कारण खराब हो रहा है, लेकिन जमींदोज मीठे पानी का भी अभाव होता जा रहा है। जनसंख्या वृद्धि के साथ पेयजल की खपत भी बढ़ रही है। एक दूसरी समस्या यह पैदा हो गयी है कि लोग काम धंधे के तलाश में बड़ी संख्या में गांव छोड़कर शहर की ओर भाग रहे है। इसके कारण जहां शहरों में पेयजल की समस्या पैदा हो रही है वही गांव उजाड़ होते जा रहे है। खान–खदानों में गैरकानूनी ढ़ग से अंधाधुधं खुदाई हो रही है जिससे नयीं समस्यां पैदा हो रही है। जिस गुजरात में लोगों ने भूकंप की विनाशलीला झेली वहां पहले से ही पानी और चारे की समस्यां पैदा हो गई थी। चारे के अभाव में भारी संख्या में पशु धन नष्ट हुआ। पशुओं के लिए चारे की व्यवस्था पड़ोसी राज्यों से की जा सकती थी, लेकिन राज्य सरकार ने उचित समय पर ध्यान नहीं दिया। पहले लोग पानी के लिए कुओं और तालाबों का उपयोंग करते थे जो अपेक्षाकृत ज्यादा आसान भी था और उनमें पानी की उपलब्धता भी ज्यादा होती है। हैंडपंपों का अगर इस्तेमाल किया जाता है तो हो, लेकिन साथ में यदि कुएं और तालाब भी बनाएं जाएं तो उसमें कोई घाटा तो नहीं होगा। जिन राज्यों में पशुओं के लिए चारे की समस्या पैदा होती है। वे पहले से ही उन राज्यों से चारा मंगा सकते है जहां उसकी उपलब्धता अधिक है।

कहने का तात्पर्य यह है कि प्राचीन परंपराओं में प्राकृति के महत्व को लोगों ने समझा था और वे उन तमाम चीजों की रक्षा करते थे जो खुद उनकी रक्षा करता था। पेड़–पौधे, जल–संसाधन, वनस्पतियां और जड़ी–बूटियां सभी उसी श्रेणी में थे। आज जरूरत यह है कि पैसे के लोभ में जो लोग प्रकृति के रक्षाकवच को नष्ट करने पर तुले हैं उन्हें वैसे करने से रोका जाएं। तभी प्राकृतिक आपदाओं और अकाल मृत्यु से बचा जा सकता है। वृक्षरोपण अभियान तेजी से चलाए जाएं और सरकार में बैठे लोग सिर्फ राजनीति करने के बजाएं पर्यावरण की रक्षा के लिए सक्रिय हों। आज जब जनता ही राजा है तो उसे उस सत्कर्मो की ओर ध्यान देना होगा जिनसे प्रकृति के कोप से बचा जा सके, अन्यथा होगा यह कि हम सिर्फ मंत्रों का उच्चारण करते रहेंगे और अपने विनाश की जड़ो को खुद मजबूत करते रहेंगे।

कृष्ण किशोर पाण्डेय

पर्यावरणीय उपेक्षा की आर्थिक लागत

भारत को पर्यावरण ह्रास का मौद्रिक खामियाजा कितना अधिक भुगतना पड़ रहा हैं, गवाही दे रहे हैं कार्टन ब्रेंडन एवं क्रिस्टन हेम्मन्न द्वारा प्रकट आंकड़े। इनके मुताबिक, भारत में शहरी वायु तथा जल प्रदूषण, खतरनाक औद्योगिक कचरे, मिट्टी के ह्रास, जैविक विविधता की क्षति आदि, जैसे कारणों से न्यूनतम अनुमानों के हिसाब से 20419.2 करोड़ रूपए का उच्चतम अनुमानों के हिसाब से 49428. 8 करोड़ रूपए की क्षति होती है, जो कि देश के सकल घरेलू उत्पाद का क्रमशः 2.64 और 6. 41 फीसदी है।

जहां पर्यावरण ह्रास की विशाल आर्थिक क्षति का यह आलम हो वहां पर्यावरण संरक्षण और सुधार के हितैषियों के लिए इससें बढ़कर चिंता और हैरानी की कोई दूसरी बात नहीं हो सकती कि सन सैंतालीस से सन बहत्तर तक देश में पर्यावरणीय क्षति और समस्याओं की सार–संभाल लेने के लिए सरकारी स्तर पर कोई छोटी–छोटी एजेन्सी सा निकाय तक नहीं था। यह सबूत है आजादी के बाद वर्षो तक बल्कि दशकों तक पर्यावरण जैसे गंभीर पर सरकार की अगंभीरता और ठंडी उदासीनता का। जो बेईमान और लालची ठेकेदारों को कुदरत की अमूल्य धरोहर के साथ छेड़छाड़ करने ओर उसे लूटने की खुली छूट देती रही। विश्व पर्यावरण की लगातार बिगड़ती हालत का जायजा लेने के लिए 1972 में जल स्टॉकहोम में प्रथम शिखर सम्मेलन हुआ तो अपनी सरकार भी जैसे सोते से जागी। नतीजतन पहली बार उसी साल देश में मानव पर्यावरण संबंधी एक समिति बनाई गई। उसके पूरे आठ साल बाद 1980 में एक केन्द्रीय पर्यावरण विभाग कायम किया गया। हंलाकि विभिन्न स्तरों पर एक के बाद एक अध्ययनों में देश में प्रकृति और पर्यावरण के हो रहे बंटाधार के चिंताजनक निष्कर्ष सामने आने लगे थे, लेकिन शीर्ष स्तर पर नीति निर्माण और कार्यान्वयन के लिए केन्द्रीय स्तर पर स्वतंत्र पर्यावरण मंत्रालय फिर भी नदारद था। सन चौरासी के भोपाल गैस कांड ने, जिसमें करीब तीन हजार लोग बेमौत मारे गए, पर्यावरण सुरक्षा के प्रति सरकार, उद्योगों और स्थानीय प्रशासन की लापरवाही को ही बेनकाब नहीं किया बल्कि, "विकास के नाम पर विनाश" की उस आशंका तथा डर को भी सही साबित कर दिया जो कई पर्यावरणादी वर्षो से व्यक्त करते आ रहे थे और जिसकी गूंज तब संयुक्त राष्ट्र तक में सुनाई देने लगी थी। बहरहाल, भारी जानी और माली नुकसान के लिए कुख्यात हो चुका भोपाल गैस कांड देश के पर्यावरण की सुरक्षा को गंभीरता से लेने के लिए जैसे एक "टर्निंग प्वाइंट" साबित हुआ और अगले ही वर्ष केंन्द्रीय पर्यावरण विभाग को केंन्द्रीय पर्यावरण मंत्रालय में बदल दिया गया।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग के १९९५ के सर्वेक्षण के मुताबिक, देश में वन क्षेत्र घट कर महज १९.५ फीसदी रह गया है। कारण है व्यावसायिक उद्देश्य के लिए पेड़ों की बेरहम हत्या। और इसका काफी दोष १९५२ की उस राष्ट्रीय वन नीति पर आता है। जिसने उद्योग तथा 'राष्ट्रीय हित' के अन्य उद्देश्यों के लिए जंगलो के दोहन पर काफी बल देते हुए लकड़ी के ठेकेदारों को विकास के नाम पर पेड़ काटने की खुली छूट दी।

आजादी के बाद देश पर्यावरण और पारिस्थिति की (एन्वायरमेन्ट एंड इकॉलाजि) शब्दों तक से अपरिचित था। आज एक आंदोलन, एक अभियान, एक संकल्प, और एक विकल्प 'जीने का, और वह भी एकमात्र या अंतिम' बन चुका है। पर्यावरण। 'विकासवादियों' और व्यावसायिकों के हाथों पिछले 50 सालों में पर्यावरण का जबरदस्त विनाश हुआ है तो उसे बचाने तथा प्रकृति की लूटखसोट के बल पर अपनी तिजोरियां भरने वालों के खिलाफ चट्टान की तरह मजबूती से अड़ने और लड़ने वाले 'चिपको आंदोलन' जैसे संरक्षणवादी व्यक्ति तथा समूह भी विनाशवादियों के खिलाफ लामबंद हुए हैं। पर्यावरण संरक्षण एवं सुधार के लिए एक स्वतंत्र मंत्रालय के अलावा केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड तथा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड वजूद में आए, तो गैर सरकारी स्तर पर इन 50 वर्षों में ग्राम स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक सैकड़ो निजी संगठन 'एन.जी.ओ.' भी हरकत में आए जो प्रभावित क्षेत्रों में पर्यावरण शिक्षा तथा सुधार से लेकर राष्ट्रीय–अंतराष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण नीतियों व कार्यक्रमों के निर्माण और अमल में महत्वपूर्ण देखभाल रखते है। देश के पर्यावरण का यह दुर्भाग्य ही रहा कि आजादी के पूरे 27 साल तक उसके संरक्षण के लिए यहां कोई कानून के डंडे के डर से मुक्त होकर प्रकृति तथा पर्यावरण के साथ मौजमस्ती करने का जैसे खुला लाइसेंस मिल रहा। पर्यावरण रक्षा की दिशा में पहला कानून जल प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण अधिनियम था जो 1974 में बना। उसके बाद 1981 में वायु प्रदूषण निवारण और नियंत्रण

कानून बना और सन छियासी में बना पर्यावरण संरक्षण अधिनियम। खतरनाक पदार्थों से संबंधित कार्य करते समय हुई किसी समय दुर्घटना से हुए नुकसान का दायित्व तय करने के लिए राष्ट्रीय पर्यावरण अधिनियम, 1995 के जरिए राष्ट्रीय पर्यावरण न्यायाधिकरण के गठन से पर्यावरण संरक्षण की कानूनी प्रक्रिया को एक नया आयाम मिला।

करीब आधा दर्जन पर्यावरण कानूनों से लैस होने के बावजूद अनेक पड़े मामलों में पर्यावरण के साथ खिलवाड़ करने वालों के साथ सख्ती से पेश आने की अपनी इस संवैधानिक बाध्यता कि 'राज्य पर्यावरण की सुरक्षा और सुधार करने और देश के वनों तथा वन्य जीवों की सुरक्षा करने और वनों, झीलों, नदियों तथा वन्य जीवों सहित प्राकृतिक पर्यावरण की सुरक्षा तथा सुधार करने का प्रयास करेगा...' के प्रति सरकार की बेरूखी रह रह कर प्रकट होती रही है। नतीजन कहीं हाई कोर्ट को और कहीं सुप्रीम कोर्ट को हस्तक्षेप करना पड़ा। मामला दून घाटी की चूना-पत्थर खदान का रहा हो या आगरा के ताजमहल को ढलाई कारखानों के धुंए से बचाने का, दिल्ली की रिज को हरा-भरा रखने तथा अतिक्रमण से बचाने का मामला हो या फिर राजधानी के बांशिदों की सेहत के लिए खतरा साबित हो चुके हजारों प्रदूषक उद्योगों के अन्यत्र स्थानांतरण का अथवा मामला हो खतरनाक उद्योगो में जान मारते, हड्डियां गलाते मजदूर बच्चों के उद्धार का या बूढ़े वाहनों को रिटायर करने और सीएनजी चालित वाहन शुरू करने का- हरेक मामले में एतिहासिक आदेश देकर देश की सबसे बड़ी अदालत, सुप्रीम कोर्ट ने यह स्पष्ट जाहिर कर दिया है कि पर्यावरण बचाव जैसे नाजुक एवं जीवन से जुड़े मामले पर सरकारी अकर्मण्यता को देश की न्यायपालिका ज्यादा देर तक मूक दृष्टा बने रह कर नहीं देख सकती। बहरहाल, अपने स्तर पर केंद्रीय तथा राज्य प्रदूषण नियंत्रण एवं निवारण बोर्डो द्वारा 1996 के अंत तक पर्यावरण प्रदूषण से संबंधित छह हजार से ज्यादा मामले पकड़े गए।

पारिस्थितिक संतुलन के लिए कम से कम 33 फीसदी क्षेत्र वनों से ढका होना चाहिए। लेकिन भारतीय सर्वेक्षण विभाग के 1995 के सर्वेक्षण के मुताबिक, देश में वन क्षेत्र घट कर महज 19.5 फीसदी रह गया है। कारण है व्यावसायिक उद्देश्य के लिए पेड़ों की बेरहम हत्या। और इसका काफी दोष 1952 की उस राष्ट्रीय वन नीति पर आता है। जिसने उद्योग तथा 'राष्ट्रीय हित' के अन्य उद्देश्यों के लिए जंगलो के दोहन पर काफी बल देते हुए लकड़ी के ठेकेदारों को विकास के नाम पर पेड़ काटने की खुली छूट दी। राष्ट्रीय कृषि आयोग द्वारा 1978 में तैयार दूसरी वन नीति भी लकड़ी के वाणिज्यिक तथा औद्योगिक उद्देश्यों के लिए उत्पादन के पक्ष में ही झुकी रही।

उक्त दो नीतियों में दी गयी छूट के कारण जब वन सम्पदा तेजी से खाली होने लगी तो 1988 में तीसरी वल नीति बनाई गई उसमें पहली बार संरक्षण की खुलकर बात की गई। जैविक संपत्ति का परीक्षण, राष्ट्रीय विरासत का संरक्षण, नदियों के जल ग्रहण क्षेत्रों में वनोन्मूलन पर नियत्रण, मिट्टी का संरक्षण, रेत के टीलों के विस्तार पर नियत्रण, वृक्षारोपण तथा सामाजिक वानिकी के जरिए वन क्षेत्र का विस्तार, ग्रमीण लोंगों के लिए ईंधन और चारे तथा आदिवासी लोगों के लिए उत्पादों का प्रावंधान और वनसंरक्षण में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करना संशोधित राष्ट्रीय वन नीति की कुछ प्रमुख विशेषताएं थी।

वन जीवों को शिकारियों की गिद्ध दृष्टि से बचनेके लिए विभिन्न राज्यों में अभयारण्यों की स्थापना और बांध परियोजनाओं जैसी योजनाओं का कार्यान्वयन, जल स्रोतों में प्रदूषण से ही रही तबाही को रोकने के लिए गंगा एक्शन प्लान का प्रारंभ किया जाना, वायु प्रदूषण को रोकने के लिए सीएनजी की शुरूआत और वाहनों के वास्ते प्रदूषण जांच प्रमाण पत्र प्राप्त करना अनिवार्य बनाया जाना सीसा रहित पेट्रोल की बिक्री, बच्चों को पर्यावरण संरक्षण का महत्व समझाने के लिए स्कूली शिक्षा में पर्यावरण को एक विषय के रूप में शामिल किया जाना दम तोड़ते पर्यावरण को बचाने के प्रति हमारी चिंता के द्योतक है। पर्यावरण संरक्षण के प्रति हमने अपनी संवैधानिक बचनबद्धता भी प्रकट की। यह बात दीगर है कि सरकारी लालफीताशाही, अकर्मण्यता, भ्रष्टाचार तथा बेरूखी से इन प्रयासों को आधी चौथाई सफलता ही मिल पाई। सख्त कानूनी पाबंदी के बावजूद बागों की लगातार हो रही हत्या, शहरों में जहरीले धुएं का बढ़ता-फैलता दानव और छोटे बड़े कारखानों द्वारा नियमों कानूनों को ठेंगा दिखाकर जहरीले रसायन मिले बेकार पानी को बेरोकटोक नदियों व नालों में बहाया जाना इसका खरा सबूत है।

भारत में पर्यावरण और स्थानीय लोक जीवन व संस्कृति की रक्षा के प्रति बढ़ती जन चेतना के नतीजतन अस्सी के दशक में बड़ी विकास परियोजनाओं के समर्थन और विरोध की एक नयी लहर पैदा हुई, आंदोलन और अभियान चले। मामला टिहरी बाधं के निर्माण का हो या सरदार सरोवर का, और या फिर एनरान परियोजना का मामला हो, हर मामले में विकासवादी यानी परियोजना समर्थक और पर्यावरणवादी अपने पिने तर्क और दलीलें लेकर एक दूसरे के सामने खड़े और आड़े दिखाई दिए हैं। इन आंदोलनों और अभियानों को मिले एवं लगातार मिल रहे विशाल जनसमर्थन ने यह साबित कर दिखाया है कि आजादी के बाद बौद्धिक रूप से परिपक्व हो चुके मुल्क के लोग पर्यावरण विनाश की नींव पर "विकास" की इमारत खड़ी करने की खुली छूट नहीं देंगे।

—जगजीत सिंह

कृषि भूमि में पोषक तत्वों की कमी से वैज्ञानिक चिन्तित

लखनऊ। राजधानी की कृषि योग्य भूमि में सूक्ष्म पौषक तत्वों की लगातार हो रही कमी से कृषि वैज्ञानिकों की चिन्ताएं बढ़ने लगी है। जिले में कृषि निवेश में बढ़ोत्तरी के बावजूद फसलोपात्दन के नहीं बढ़ने का कारण कृषि विशेषज्ञ सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी मानते है। विज्ञानिकों के अनुसार इस समस्या का हल अगर जल्द नहीं निकाला गया तो आने वाले समय में कुल उत्पादन पर इसका असर पड़ सकता है।

कृषि विशेषज्ञों को इस बात की चिन्ता सताने लगी है कि कृषि निवेशों की वृद्धि के बावजूद भी राजधानी के कृषि उत्पादन में इजाफा दर्ज नहीं हो पा रहा है। साथ ही भूमि की उर्वरता में आये ठहराव से विशेषज्ञों की चिन्ताएं बढ़ने लगी हैं यही कारण है कि वे इस स्थिति पर अतिशीघ्र कदम उठाये जाने की तरफदारी कर रहे हैं। विशेषज्ञों के अनुसार कृषि क्षेत्रों में तकनीकी सुविधाओं के बढ़ाये जाने के बाद भी अनुपात में उत्पादन में बढ़ोत्तरी दर्ज नहीं हो रही हैं यह इस बात का प्रमाण है कि अब मिट्टी की उर्वरा शक्ति एक सीमा तक बढने के बाद थमने लगी है। कृषि वैज्ञानिकों का मानना हैं कि हरित क्रान्ति के बाद से यहां की कृषि योग्य भूमि का जबरदस्त दोहन किया गया जिससे मृदा में उपलब्ध सूक्ष्म पोषक तत्वों की भारी कमी होने लगी। फलस्वरूप खेतों में बाहर से इन पोषक तत्वों का डालना अपरिहार्य हो गया। एक अध्ययन के अनुसार राजधानी क्षेत्र के खेतों में सूक्ष्म पोषक 4तत्वों की भारी कमी है। विकासखण्डवार किये गये परीक्षणों के आधार पर पांच विकास खण्डों में जिंक की कमी हैं। इनमें बख्शी का तालाब, मोहन लाल गंज, माल, सरोजनीनगर, तथा चिनहट शामिल हैं जबकि मात्र चिनहट क्षेत्र की मिट्टी में लोहे की कमी पाई गयी है। इसी प्रकार से गंधक की कमी सरोजनीनगर में व सभी विकास खण्डों में नाइट्रोजन तथा फास्फोरस की कमी है।

कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार पौधों को पूर्ण विकास के लिए सोलह पोषक तत्वों जरूरत होती है। इनमें कार्बन, हाइड्रोजन तथा आक्सीजन वायुमण्डल से प्राप्त हो जाता है। जबकि शेष तेरह पोषक तत्व मिट्टी से प्राप्त करते है। तत्पश्चात् नाइट्रोजन, फास्फोरस तथा पोटैशियम की बारी आती हैं जिसे प्रारम्भिक पोषक तत्व के नाम से जाना जाता है। इसके बाद कैल्शियम, मैग्नीशियम, तथा सल्फर का नाम लिया जाता हैं जिसकी आवश्यकता तुल्नात्मक दृष्टि से कम होती है। इसलिए इसे गोण पोषक तत्व भी कहां जाता है। इन छह पोषक तत्वों के अतिरिक्त सात तत्व ऐसे हैं जिसकी आवश्यकता बहुत कम होती है। सूक्ष्म पोषक तत्व के नाम से प्रचलित इन पोषक तत्वों में जस्ता, मैग्नीज, कापर, बोरान मालविडेनम तथा क्लोरीन के नाम लिए जाते हैं।

कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार पिछले दो दशकों के मृदा परीक्षण के परिणामों के विश्लेषण से जो परिणाम सामने आये हैं उसके अनुसार यहां की भूमि में जीवांश, कार्बन तथा उपलब्ध फास्फेट की उर्वाता के स्तर में बीस से तीस प्रतिशत का ह्रास दर्ज किया गया है। जीवांश की स्थिति में गिरावट के फलस्वरूप ही यहां की मिट्टी में जैविक, भौतिक तथा रासायनिक स्तरों में परिवर्तन हो रहा है और यही कारण हैं कि रासायनिक उर्वरकों तथा सिंचाई सुविधाओं के बढ़ने के बावजूद निवेशों की तुलना में उत्पादन नहीं हो पा रहा है।

बीमारी फैलने की आशंका में तीस हजार भेड़ों को मार डालेगी फ्रांस सरकार

पेरिस। फ्रांस सरकार बीमारी फैलने की आशंका के कारण एहतियात के तौर पर 30 हजार फ्रांसिसी भेड़ों को मौत की नींद सुलाएगी। यह घोषणा कृषि मंत्री ज्यां ग्लावेनी ने की है। इन जानवरों को ब्रिटेन से आयात की गयी भेड़ों के संपर्क में आने का अंदेशा है जिनमें से 22 में पैरों तथा मुंह का यह रोग पाया गया है। इससे पहले इस सप्ताह के आरंम्भ में कृषि मंत्रालय ने ब्रिटेन से आयातित 20 हजार भेड़ों तथा मेमनों को मौत के घाट उतारने का आदेश दिया था।

भारत 'विश्व गुरू' है

"मेरा भारत महान" हमारा भारत यूं ही नहीं महान बना है। कोई देश या व्यक्ति ऐसे ही महान नहीं वह बन जाता है। वह बनता है अपने कर्मों से, गुणों से, अपनी सभ्यता और संस्कृति से। दुनिया में और भी बड़े देश हैं परन्तु वे क्यों नहीं महान कहलाते हैं जबकि वे भारत से भी बड़े माने जाते हैं। आज बड़े–बड़े देश जो विकसित बने हुये हैं और नयी–नयी खोजों का दावा करते हैं, वास्तव में कितनी खोज उन्होंने स्वयं की है। यदि देखा जाये तो प्रत्येक खोज जो उन्होंने अभी कुछ दशकों में की है, वह सब तो भारत में युगों पहले ही हो चुकी थी। किन–किन के बारे में बताया जाये ? हवाई जहाज, आकाशवाणी, टेलीफोन, सेटेलाइट, संस्कृति, महाग्रन्थ और यदि गणित में देखा जाये तो सबसे महत्वपूर्ण अंक 'शून्य' और 'दशमलव' ये सब तो भारत की ही देन है। आज सिर्फ उसका स्वरूप बदल गया है। जबकि आधार आज भी वही है। क्या 'शून्य' और 'दशमलव' के बिना चांद और सूरज जैसे ग्रहों, उपग्रहों की दूरी का पता लया गया जा सकता है था। और क्या इनके बिना गिनती पूरी हो सकती थी? भारत तो सदा से ही 'विश्व गुरु' रहा है, और अन्य देश इससे शिक्षा लेते रहे हैं। हिन्दी में एक कहावत है 'गुरु, गुरु ही रहे और चेला शक्कर हो गये'। जिसका अर्थ है कि शिक्षा देने वाला सदैव एक सा रहता है और शिक्षा पाने वाला बढ़ता ही चला जाता है। वही भारत के साथ हो रहा है कि भारत से शिक्षा लेने वाले देश विकसित हो गये और 'गुरु' यानि भारत देश अभी तक विकासशील ही है।

आधुनिक विश्व विश्व क्या है ? सब कुछ भारतीय संस्कृति की ही तो देन है –

"संस्कियते मानवः अनया इति संस्कृतिः अर्थात् सदाचारः"

संस्कृति शब्द संस्कृत भाषा में सम् उपसर्ग पूर्वक "कृ" धातु से तिन प्रत्यय लगाने पर निष्पन्न होता है। इसका अक्षारार्थ– निखारना या निखारना। प्रत्येक संस्कृति की आन्तरिक विचार–धारा हो उसकी आधारशिला है उसी पर उसको चिरस्थापिता और क्षण भंगुरता निर्भर करती है।

यदि संसार में ऐसा कोई देश है जिसमें सभ्यता के सूर्य का सर्वप्रथम उदय हुआ तो वह भारत ही है और इसका प्रमाणिक स्वरूप संस्कृत–साहित्य में संग्रहीत है। जब विश्व जंगली था, उसे लेखन का ज्ञान नहीं था लेकिन उसने अपने मनोभावों को अभिव्यक्त करने के लिये लिपि का आविष्कार किया तो उसके पहले संस्कृत भाषा बन चुकी थी, जिसमें वह अपने विचारों को सम्प्रेषित कर सकता था और जो उसे अच्छा लगता था उसे लिपिबद्ध कर लेता था। "भगवती सुत" में कहा गया है कि 'ब्रह्मा' ने अपनी पुत्री को पढ़ाने के लिये संस्कृत की लिपि 'ब्रह्मों' का आविष्कार किया था –

"नमो वम्पिये लिखिये" ग्रन्थ जैन चीनी विश्व कोष–"फा–वान–शू–लिन" में भी उल्लिखित है कि प्राचीनतम तीन लिपियां संसार में प्रचलित थीं। (१) ब्रह्मों, (२) कइअल और (३) तनकूसों।

इसमें सबसे प्राचीन भाषा "ब्राह्मों लिपि" है और आदि भाषा संस्कृत है जिसमें पूरी भारतीय संस्कृति समाहित है तथा सभ्यता का पूरा स्वरूप विहित है। जिसका प्रचार भारत ने विश्व में विचार और चरित्र दोनों से किया है। जैसा कि मनु ने कहा है–

"एतद्देश प्रसूतस्त सकाशाद ग्रज–मनः"
"स्वं स्वं चरित्र शिक्षेरन पृथिव्यां सर्वमानवाः"

विश्व के जितने भी संगीत के अवयव है उसमें माधुर्य भारतीय ही है अतः भारतीय संगीत ही मूल है और इसका आदिग्रन्थ 'सामवेद' है। जिसका विस्तार महाकाव्यों पुराणों नाटकों आदि में मिलता है। दक्षिण पूर्व एशिया के भित्ति चित्रों में भारतीय वाधों का अंकन इसका जीवन्त प्रमाण है। विश्व के सभी देशों में कला पर तीन प्रभाव दीखते है। देश (स्थान), काल (परिस्थिति), धर्म (विश्वास)। पर जो भारतीय कला में है वही विश्व का अनुकरणीय रहा

है। प्रायः हमारे कला प्रतिमान साहित्य पर आधारित है पर उनका रूपायन बेमिसाल भौतिकता को व्यक्त करता है जिसे विश्व के कलाकार सीख समझकर भी कुछ दूरी तक ही पहुंच सके है। अजन्ता की चित्रकला बुद्ध की प्रतिमा, भारतीय देवी-देवताओं का स्वरूप, मन्दिरों का आधार सभी संस्कृत साहित्य के प्रमाणों पर ही आधारित है। पर वे दूसरे देशों के अनुकरणीय होते हुये भी उनसे बहुत आगे है।

'नाटक' की रचना विश्व को संस्कृत की देन है। आठ को ईसा पूर्व के लगभग 'रामायण' की रचना हुई जिसमें बहुत पहले कुश-लव द्वारा मंच पर सभा में संगीत सुनाना और वहां नट-नर्तक का उल्लेख होना-नाटक का आदि रूप है। भारत में "नाट्य-शास्त्र" जैसे ग्रन्थ की विकसित परम्परा ने विश्व को रंगमंच से जोड़ा। शिक्षा के क्षेत्र में अनादिकाल से चली आ रही "गुरूकुल प्रणाली" जिसमें अध्येता गुरू भी होता था का ज्ञान संस्कृत ग्रन्थों में संजोया है। जिसके आधार पर शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थाओं का जन्म हुआ होगा। भारतीय 'धर्म' सनातन है, इसका सूक्ष्म रूप है -'धारयतोति धर्मः। यह सभी धर्मो का केन्द्र बिन्दु है। ईसाई, इस्लाम, जुरबुस्त्र आदि कोई भी ऐसा धर्म देखा जाये तो उसका बीज हमारे सनातम धर्म में ही विद्यमान है।

आज के वैज्ञानिक 'वायुयान को जो नया शोध मान रहे हैं वह रामायण मे पुष्पक विमान के रूप में विद्यमान था। "नारद" को वायु वेग से आना-जाना इससे भी बढ़कर विज्ञान का चमत्कार था।

"जलयान और पत्तन" दोनों ही ईसा पूर्व 3 हजार में भारत में थे। "लोथल की गोदी" उदाहरण है। ईसा से 3 हजार वर्ष पूर्व ही हमारे यहां धातुओं का मिश्रित रूप "कांसा" के रूप में प्रचलित था। इसी प्रकार मुद्रा निर्माण के लिये दूसरी -तीसरी शताब्दी ई०पू० में शीशा धातु का प्रयोग होता था। अशोक के स्तम्भ पर लगाया गया ब्रजलेप, जिसकी चमक शीशे की तरह बनी हुई है तीसरी शताब्दी ई०पू० की देन है। इसका विश्व अनुकरण नहीं सका है। विश्व को "चिकित्सा" की देन भारत की ही है। यहां की जड़ी-बूटियां और वैद्य बाहर जाते रहे हैं। 'पशु चिकित्सा' का प्रारम्भ यहीं से हुआ है। 'अश्व चिकित्सा' के लिये भी संस्कृत में ग्रन्थ लिये गये हैं जो आज भी विश्व के लिये ग्राहय है।

'वनस्पति शास्त्र' की देन विश्व को भारत की ही है। अशोक के समय सबसे पहले वनस्पति शास्त्रीय नियम लागू हुये। उसे प्रदूषण को स्थानगत भिन्नता और निवारण की विधियों का पूर्ण ज्ञान था। जो पर्यावरण प्रदूषण के लिये बहुत अधिक उपयोगी सिद्ध हुआ। पर्यावरण प्रदूषण दूर करने का ज्ञान भी भारत ने विश्व को दिया।

आधुनिक वैज्ञानिक सुविधायें भी हमारे प्राचीन साहित्य में वर्णित है। यथा-दूरदर्शन (संज्जय की दिव्य दूरदृष्टि) आकाशवाणी-हवा से शब्द ग्रहण करने की क्षमता जो आज टेलीफोन कर रहा है लेकिन उस समय की प्रचलित मंत्र-शक्ति जिससे असंभव भी संभव हो जाता था आज का विज्ञान नहीं कर पा रहा है।

विज्ञान का सर्वाधिक उल्लेख वैदिक साहित्य के प्रमुख अंग "अथर्ववेद" में मिलता है। वहां भौतिक रसायन ज्योतिष, गणित, कार्याविज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, मन्त्र आदि विज्ञान के विभिन्न अंग संग्रहीत है जिसे आज भी विश्व के अनेक देशों में अग्रिम शोध के लिये पाठ्यक्रमों में पढ़ाया जा रहा है। पुराणों में "अग्निपुराण" विशेष रूप से वैज्ञानिक तथ्यों से भरा हुआ है। अतः भारत में वैदिक विज्ञान की धारा अनवरत चलती रही। उदाहरण स्वरूप आर्कमिडीज के गुरूत्वाकर्षण की व्याख्या बहुत पहले "भास्कराचार्य" ने कर दी थी। 'दशमलव' प्रणाली जो आज विश्व की गणना का माध्यम बनी है वह सिन्धु घाटी की सभ्यता (भारत) में विद्यमान थी।

"शून्य" का प्रयोग वैदिक है जिसका प्रयोग ब्रह्मांड से जोड़कर अनन्त के लिये किया गया है। "रामायण" विश्व का पहला महाकाव्य है जिसके आधार पर लैटिन में "होमर" और अंग्रेजी में अनेक महाकाव्यों की रचना हुई है। इसी क्रम में महाभारत महाकाव्य का नाम भी लिया जा सकता है।

आज विश्व की राजनीति में "पंचशील" का पहला "शील" अहिंसा है जो भारत का आदर्श रहा है -

"सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित्
दुःखभाग भवेत।।"

यह उपनिषद् वाक्य सम्पूर्ण जीवधारियों को 'अहिंसा' का पाठ पढ़ाता है जिसे भारत ने सिद्धांत में ही नहीं वरन्

व्यवहार में भी उतारा है। जीवन को शुद्ध करने के लिये आज विश्व के राजनीतिक मंच पर "संस्कार" की बात चल रही है जो प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में पहले से ही कही जा चुकी है। यह भारत की ही विशेषता है कि जन्म में पहले "गर्भाधान" से लेकर मृत्यु के बाद "अन्त्येष्टि" तक यह क्रिया निरन्तर चलती रहती है। विश्व का कोई ऐसा समाज नहीं है जहां सपिण्ड, सगोत्र, सप्रवर जैसे संस्थाए रही हों और इसका प्रयोग विवाह व यज्ञ में किया जाता हो। सपिण्ड, सगोत्र, सप्रवर विवाह न करने का वैज्ञानिक कारण है कि इनके दोष न मिले। इसलिये विवाह के समय इनकी मान्यता स्थापित की गयी जो संसार में कहीं नहीं है।

"गणतंत्र" से ही हमारी "ऋग्वैदिक व्यवस्था" प्रारम्भ हुई है यथा– "पंचजनाः"। इसके सदस्य "अथर्ववेद" में राजन्य कहे गये हैं। राजा की स्थिति भी समझौता वादी थी। इनमें प्रजा का धर्म था राजा को धन देना। इसी सामाजिक समझौते पर भारत में शासन व्यवस्था स्थापित थी जिसे आज सारा विश्व मान्यता दे रहा है। "जनकल्याणकारी" राज्य की कल्पना सबसे पहले भारत में ही की गयी थी। एक ही साथ दो प्रकार या बहुप्रकार शासन प्रणालियां भारत में ही व्यक्त हैं जैसे –राजतंत्रीय या गणतंत्रीय। जो राजतंत्रीय थे वे भी गणतंत्र की ओर उन्मुख थे क्योंकि बिना प्रजा की राय से कुछ भी करने में कतराते थे। इसीलिये मंत्रिमंडल की व्यवस्था थी और राजा किसी भी स्तर पर निरकुंश नहीं था। सत्य तो यह है कि शासन धर्म का होता था राजा मात्र उसका संचालन का उत्तरदायी होता था।

"धर्मः शास्ति प्रजा।" "यस्मिन धर्मो विराजेत तं राजानं प्रचक्षते"

जब विश्व के अर्थव्यवस्था पर कोई ग्रन्थ नहीं था उस समय भारत की तीन विधाओं में से वार्ता का सम्बन्ध अर्थव्यवस्था से ही था। वार्ता की व्याख्या की गयी है –

"कृषि पशुपाल्ये वाणिज्या च वार्ता"

जब विश्व में औद्योगिक और व्यापारियों के जो संगठन है उन्हें उस समय 'श्रेणी' कहते थे। एक शिल्प में जीने वालों का संगठन होता था।

"एकेन शिल्पेन ये जीवन्ति तेषां समूहः श्रेणी"

नारी को दबाकर विश्व सभ्यता में रखा गया है वहां कहा गया है कि "औरतें और गुलाम" पीटने की वस्तु है।" वहीं भारत में इन्हें जीवन पथ में पुरूष की सहभागिनी माना गया है।" "कन्याधन" जिसे "स्त्रीधन" कहा जाता है यह भारतीय समजा में स्त्री के आर्थिक अधिकार का विश्व को सामाजिक व्यवस्ता में अकेला प्रतीक है।

हम गर्व से कह सकते हैं कि हमारी भारतीय संस्कृति ने जो कुछ भी अपने अन्दर संजोया–विश्व ने उसी का अनुसरण किया और आज हमारी संस्कृति में कुछ ऐसे गूढ़ तत्व मौजूद हैं जिनसे हम पुनः विश्व को आलोकित एवं प्रकाशित करके "विश्व गुरू" के पद को पुनः विभुषित कर सकते हैं। ❁

पत्ती की शोभा वाले सजावटी पौधों में ट्रेडेस्कैंशिया का प्रमुख स्थान है. यह फैलने या लटकने वाला, एक बहुवर्षीय शाकीय पौधा है जो कामेलिनैसी कुल से संबंधित है. इस की पत्तियां बैंगनी, हरीसफेद धारीदार व अन्य कई प्रकार की होती हैं, इस के पौधे जमीन में, गमलों में लटकाने वाली टोकरियों में और राकरी में भी लगाए जा सकते हैं.

गमलों में लगने पर ट्रेडेस्कैंशिया का पौधा धीरे–धीरे फैलते–फैलते पूरे गमले को भर लेता है. इस की टहनियां चारों ओर इस प्रकार लटक जाती हैं कि गमला दिखाई ही नहीं देता. इन गमलों को बरामदों में, आंगन में, पेड़ों के नीचे, छायाकारों में या खुली धूप में भी रख सकते हैं. 2-3 दिन के लिए इसके गमलों को ड्राइंगरूम में भी किसी ऊंचे स्टूल या तिपाई पर रख सकते हैं. लटकने वाली टोकरियों में तो इसके पौधे विशेष रूप से अच्छे लगते हैं. इस की कुछ किस्में बागबगीचों के रास्तों के किनारे भी लगाई जाती हैं.

ट्रेडेस्कैंशिया के पौधे को अंगरेजी में स्वाइडरवाट, फ्लावर आफ ए डे, मोजेज इन बुल रशेज, डेविल इन दि पल्पिट या वांडरिंग ज्यू कहते हैं. ट्रेडेस्कैंशिया इस पौधे का वंश नाम है, जिस की परप्यूरिया, फ्लूमीनेंसिस, ब्लासफेल्डियाना तथा वर्जिनियाना आदि प्रमुख जातियां हैं. ट्रेडेस्कैंशिया परप्यूरियाः यह बैंगनी रंग की मोटी पत्तियों वाला पौधा है. इसकी पत्तियां सामने और पीछें दोनों ओर गाढ़े बैंगनी रंग की तथा गूदेदार व मोटी होती हैं. सामने की ओर इन में कभी–कभी कुछ हरियाली भी होती है. पत्ती के पीछे की ओर कभी–कभी आधारिक भाग में मामूली उभरी हुई खड़ी बैगनी धारियां भी दिखाई पड़ती हैं. पत्ती लगभग 15 सेमी. लंबी और 4 सेमी. चौड़ी होती है. शिखा व आधार की ओर पत्ती की चौड़ाई कम तथा लगभग बराबर रहती है. इस की अधिकतम चौड़ाई बीच में होती है. पत्ती की शिखा न्यून कोण बनाती है तथा कभी–कभी कुछ गोलाई में मालूम पड़ती है. इस की पत्तियां और डंठल थोड़ा सा झटका लगने या मुड़ने पर तुरन्त टूट जाते हैं.

ट्रेडेस्कैंशिया फ्लीमिनेसिसः यह चोंचनुमा नुकीली शिखा की पत्ती वाली जाति है. इस जाति के पौधे की पत्ती की शिखा चोंच की भांति पतली, लंबी और नुकीली होती है. इस का आधार चौड़ा होता है. इस की चौड़ाई आधार की ओर से ऊपर की ओर पूरी लंबाई के 2/3 भाग तक लगभग एक समान होती है.

पत्ती के सामने का भाग गाढ़ा हरा होता है जिस पर सफेद रंग की आभा लिए चौड़ी–चौड़ी हरी व खड़ी धारियां होती हैं. कभी–कभी धारियां कुछ बैगनी भी होती हैं. मध्य नाड़ी पतली व कुछ धंसी हुई बैगनी या हरे रंग की होती है. पत्ती के पीछे का भाग बैगनी रंग का होता है तथा इस ओर मध्य नाड़ी पतली व बैगनी रंग की तथा कुछ उभरी हुई होती है.

ट्रेडेस्कैंशिया ब्लासफेल्डियानाः यह रोमिल पत्तों वाली किस्म है. इस की पत्ती मध्यम आकार (8.4 से.मी.) की मोटी, चिकनी, मखमली होती है. पत्ती सामने की ओर गाढ़े हरे रंग की और पीछे बैगनी होती है. फिर भी पत्ती के दोनों ओर रूई के रेशे जैसे श्वेत रोंयों से ढकी रहती है.

ट्रेडेस्कैंशिया वर्जिनियानाः यह सफेद, हरी, चितकबरी पत्तियों वाली किस्म है. इस की शोभा निराली है. पत्तियां क्रीम रंग की और हरी, चौड़ी या पतली खड़ी धारियों से भरी रहती हैं. एक ही पौधे में कुछ पत्तियां बिलकुल क्रीम रंग की होती हैं तथा कुछ आधी क्रीम के रंग की और आधी हरी भी रहती हैं. ये विशेषताएं पौधे की सुंदरता में और भी अधिक वृद्धि करती हैं. कभी–कभी पौधे से केवल हरी पत्तियां निकलने लगती हैं. इन्हें निकाल कर अलग करते रहना चाहिए जिस से कि पौधों में केवल चितकबरी पत्तियां ही रहें और पौधे की शोभा बनी रहे.

उपयुक्त किस्मों के अतिरिक्त ट्रेडेस्कैंशिया वंश की डिसकलर, स्पैथेसिया, जेब्रिना, अल्बीफ्लोरा और पेंडूला आदि भी अन्य शोभाकार जातियां हैं.

ट्रेडेस्कैंशिया की टहनियां पर पत्तियां एकांतरिक रूप से छाई रहती हैं. टहनी की चोटी पर 2 छोटी पत्तियां रहती हैं.

टहनी की शिखा पर नाव के आकार की इन पत्तियों के बीच से निकलती हुई 8मि.मी. की पुष्पडंडी पर बैगनी रंग के फूल भी खिलते हैं ये फूल गुलाबी रंग की आभा लिए हुए हलके बैंगनी रंग के आकर्षक, चमकदार व आकार में तिकोने होते हैं. पुष्पड़डी सहित फूल 2 सें.मी. लंबा होता है तथा पंखड़ियों का फैलाव $1^{1/4}$ सें.मी. तक रहता है. पुष्प में 3 पंखडियां रहती हैं जो चौड़ी–चौड़ी होती हैं और आकार में त्रिकोणीय होती हैं. एक पंखड़ी 11 मि.मी.

खजूर, जल रिसाव व लवणीयता से खेती को बचाएगा

जयपुर। राजस्थान में इंदिरा गांधी नहर परियोजना क्षेत्र में जल रिसाव के बर्बाद हो रही खेती और भूमि की लवणीयता की गम्भीर सम्स्यां पर काबू पाने के लिए कृषि वैज्ञानिक यूकेलिप्टस की जगह खजूर के पेड़ों को अधिक उपयोग एवं कारगर मानते है। राजस्थान कृषि विश्वविद्यालयों बीकानेर के कृषि वैज्ञानिकों ने परीक्षणों से यह निष्कर्ष निकाला है कि कुछ विशेष प्रकार के पेड़ पौधे जल रिसाव की समस्या के रोकथाम के लिए उपयोगी हो सकते है। इनमें से खजूर को अधिक कारगर पाया गया है। जिसके दोहरे लाभ है।

यह जानकारी देते हुए कुलपति प्रो० चंद्रिका प्रसाद सिंह यादव ने बताया कि जल रिसाव की समस्या से जुडें विभिन्न पहलुओं पर अनुसंधान कार्य के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद को एक नयी परियोजना भेजी गयी है। इस परियोजना को लागू करने पर करीब एक करोड़ रूपये की लागत आने का अनुमान है।

उन्होंने बताया कि इंदिरा गांधी नहर क्षेत्र में जल रिसाव तथा जमीन की क्षारीयता से जुडी समस्याओं के निदान के तहत कृषि वैज्ञानिको ने यांत्रित निस्तारण (मैकेनिकल ड्रेनेज प्रणाली) के स्थान पर जैव निस्तारण (बायोड्रेनेज प्रणाली) को अधिक उपयोगी माना है।

उल्लेखनीय है कि जल रिसाव से इंदिरा गांधी नहर क्षेत्र में जगह–जगह पानी से भरे खड्डेनुमा तालाब बन गये है। इसके साथ ही इलाको में जमीन भी क्षारीय होती जा रही है। जिससे कृषि उत्पादन पर भी प्रतिकूल असर होने की संभावना वढ़ सकती है। कुलपति प्रो० यादव ने बताया कि कृषि वैज्ञानिक द्वारा विकसित मेकेनिकल ड्रेनेज प्रणाली पर आधारित विभिन्न परीक्षण चल रहे है। इसके साथ ही बायोड्रेनेज प्रणाली के अंतर्गत भी शोध कार्य किये जा रहे है। बायोड्रेनेज प्रणाली के तहत खजूर उत्पादन व मछली पालन की अधिक गुंजाइश है और यह अधिक उपयोगी भी है।

प्रो० यादव ने बताया कि जल रिसाव से दलदली हुए इलाके के बड़े पैमाने पर खजूर उत्पादन के लिए बीच से पेड़ विकसित करने के तकनीक अधिक कारगर मानी गयी है जबकि अन्य तरीकों से अधिक समय लगता है। उन्होंने बताया कि बीज से विकसित पेड़ो का खजूर खाने की दृष्टि से अधिक स्वादिष्ट तथा उपयोगी नहीं होगा लेकिन इस फल के गुड़ बनाया जा सकेगा। इसी तरह खजूर की पत्तियों से झाडू बनाकर खजूर उत्पादक दोहरा लाभ ले सकेंगे। खजूर के पेड़ की जड़े जमीन की लवणीयता को सीखने का काम करेंगी।

वैज्ञानिक ने जल रिसाव के कारण बने तालाबों के पानी में लवणीयता की जांच पड़ताल की है। उन्होंने कुछ ऐसी मछलियों की पहचान की है जो ऐसे लवणयुक्त पानी में आराम से रह सकती है। मुंबई, हावड़ा, और चिन्नई क्षेत्रों में समुद्री पानी में जाने वाली कुछ किस्म की मछलियों को जल रिसाव से विकसित हुए तालाबों में छोड़कर उन पर किया गया परीक्षा सफल रहा है। प्रो० यादव ने बताया कि जल रिसाव से बने तालाबों में "ब्राइन सिम" के उत्पादन की योजना भी बनायी गयी है। सरसों के दानों की तरह दिखने वाले इस जल जीव को लवणीय पानी में रहने वाली मछलियां अपना आहार बनाती है। इससे मछलियों का उत्पादन भी बढ़ेगा। जमीन के अन्दर बिछाये गये इन परफोरेटेड पाइप में एक निश्चित दरी पर छिद्र होते है। इन छिद्रों से होकर लवणीय पानी एक नली से होकर पहले एक कुएं में एकत्रित किया जाता है। इस पानी को दूसरे कुएं में डालकर उसे वहां से अन्यत्र डाल दिया जाता हैं

राज्य में आरम्भ से परीक्षा के तौर पर इस परियोजना को पन्द्रह हेक्टेयर क्षेत्र में लागू किया गया। परीक्षा से यह बात सामने आयी कि लगभग एक वर्ष की अवधि में जमीन लवणीय प्रभाव से मुक्त हो गयी। इसके बाद जमीन पर जौ का उत्पादन क़िया जा रहा है।

❁❁❁

लंबी और उतनी ही चौड़ी होती है. पंखड़ियों के नीचे पुष्प में 3 सफेद रोमिल पतली पंखड़ियां लगी रहती हैं. फूल जुलाई अगस्त से अक्तूबर नवंबर तक खिलते रहते हैं. ये सुबह के समय खिलते हैंऔर सायंकाल तक बंद हो जाते हैं. कुछ किस्में दोपहर में ही बंद हो जाती हैं. बंद होने के बाद भी छोटे–छोटे बैंगनी रंग के तिकोने फूल शोभा देते रहते हैं. फिर दूसरे दिन ये मुरझा जाते हैं. ट्रेडेस्कैंशिया के पौधे जैसे जैसे फैलते जाते हैं वैसे वैसे इन की पर्वसंधियों पर जड़ें फूटती और मिट्टी में घुसती चली जाती हैं. इस प्रकार पौधा घना हो जाता है जिस से वह और भी अधिक सुंदर लगता है. अतः इस का प्रसारण टहनियों की कटिंग द्वारा आसानी के साथ किया जा सकता है. टहनियां यदि भूमि को न भी छू रही हों तो वर्षा ऋतु में हवा में लटकती टहनियों की पर्वसंधियों से जड़ें फूटने लगती हैं. ऐसे में इन्हें जड़ सहित काट कर किसी गमले या जमीन में लगा देने से पौधे तैयार हो जाते हैं. यदि टहनियों में जड़ें न भी निकली हों तो भी इन की कटिंग लगा देने से गांठों से जड़ें फूट जाती हैं।

पहाड़ी बुलबुल
(पिक्नोनोटस जोकोसस)
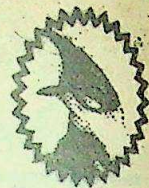
पहाड़ी बुलबुल तो आप सभी ने देखी होगी। इसका आकार रेडवैण्टेड बुलबुल के बराबर होता है। इसे इसके रंग से अच्छी तरह पहचाना जा सकता है यह भूरी, नीचे सफेद, वक्ष में टूटी काली कण्ठी सी बनी होती है। काली, उठी हुई कलगी, किरमिची गलमुच्छ या गुम्फ और दुम के आधार पर नीचे किरमिची धब्बा इसके विशिष्ट लक्षण हैं। इनमें नर और मादा एक जैसे ही होते हैं तथा ये जोड़ो या अस्थाई टोलियों में रहते हैं। ये भारतीय संघ में, केवल उत्तर पश्चिम, राजस्थान आदि से शुष्क प्रदेशों को छोड़कर बंगलादेश; बर्मा। ६००० हजार फुट की ऊंचाई वाली पहाड़ियों पर पायी जाती है। ये बगीचों में भी देखी जा सकती हैं। रंग–भेद के अनुसार इनकी पांच प्रजातियां है। स्वभाव में अन्य बुलबुलों की तरह की होती है। ये प्रायः पालतू और वफादार होती हैं। इनकी बोली बहुत मीठी और सुरीली होती है, जिसे आसानी से पहचाना जा सकता है। ये जोड़े बनाने का समय फरवरी से अगस्त होता है। बुलबुल अन्य पक्षियों की तरह ही घास, टहनियों और छोटी जड़ों से अपना घोंसला बनाती है। ये दो या चार अंडे एक समय में देते है, व दोनों अपने माता–पिता होने का कर्तव्य निभाते हैं।

प्रस्तुति–प्रदीप कुमार

ओलंपिक मेजबानी बनी कुत्तों की आफत

बीजिंग के पार्क में एक पुलिस कार का प्रवेश होता है और इसके साथ ही एक लड़की और उसकी मां अपने श्वेत-श्याम छोटे कुत्ते को प्लास्टिक के शापिंग बैग में छिपाने का प्रयास करती हैं।

'इसे बाहर निकालो और हमारे साथ कुछ सहयोग भी करो', कड़क आवज में रौबदार पुलिस अफसर गरजा। उसकी पेट्रोल कार के पिछले खुले हिस्से में पिंजरों में बंद कई दर्जन कुत्ते बैठे थे। महिलाओं ने उसे बचाने का भरसक प्रयास किया, लेकिन जब अफसर नहीं माना तो बेमन से उसे सौंपकर साइकिल चलाती चली गई।

वैसे चीन में कुत्तों की हमेशा शामत रहती है। उन्हें पीटा जाता है, उन्हें खाया जाता है और कीड़े-मकौड़ों की तरह उनके साथ व्यवहार होता है। लेकिन कुत्ता मालिकों का कहना है कि पुलिस की कड़ी सुरक्षा वाली राजधानी बीजिंग में हालत बदतर है। 2008 ओलंपिक की मेजबानी की चीनी दावेदारी को मजबूत बनाने के लिए शहर में इस तरह के अभियान ने और जोर पकड़ लिया है।

लड़की व उसकी मां का अपराध सिर्फ इतना था कि उनके पास कुत्ता घुमाने का लाइसेंस नहीं था। चूंकि ज्यादातर निवासियों के लिए लाइसेंस हासिल करना काफी खर्चीला सौदा है। ऐसे में कई कुत्ता मालिक अपने प्यारे जानवरों को छोड़ देते हैं और फिर पंजीकरण के शुल्क की अपेक्षा अत्यंत किफायती दामों पर एक और कुत्ता खरीद लेते हैं।

चीन ने दुनिया को पेकिनी और कुत्तों की कई अन्य प्रजातियों से परिचय कराया, लेकिन अब बीजिंग प्रथम दृष्टया कुत्ता मुक्त हो गया है। केवल सुबह और शाम को आठ बजे के बाद ही पंजीकृत कुत्तों को घुमाने की इजाजत है। मालिक इसे "कुत्ते-रोशनी से दूर" की नीति बताते हुए आलोचना करते हैं। अगर आप नियमों का पालन नहीं करते हैं तो गैर पंजीकृत कुत्तों की किसी भी समय पकड़ा जा सकता है।

वैसे चीन में कुत्तों की हमेशा शामत रहती है। उन्हें पीटा जाता है, उन्हें खाया जाता है और कीड़े-मकौड़ों की तरह उनके साथ व्यवहार होता है। लेकिन कुत्ता मालिकों का कहना है कि पुलिस की कड़ी सुरक्षा वाली राजधानी बीजिंग में हालत बदतर है। 2008 ओलंपिक की मेजबानी की चीनी दावेदारी को मजबूत बनाने के लिए शहर में इस तरह के अभियान ने और जोर पकड़ लिया है।

कुत्ता पालन को माओत्से तुंग के साम्यवादी क्रांतिकारी मध्य वर्ग के चोचले मानते थे और 1949 में सत्ता में आने के बाद उन्होंने इस पर अंकुश लगाने का भी प्रयास किया। 1976 में माओ की मृत्यु के बाद कुत्ता मालिकों को कुछ राहत मिली, लेकिन 1990 में बीजिंग के मेयर चेन जीटोंग इस पर कड़ा प्रतिबंध लगा दिया। ऐसा माना जाता था कि बचपन में जीटोंग को किसी कुत्ते ने काट लिया था, इसी के चलते वह कुत्तों से नफरत करते थे। बड़े कुत्तों पर पूरी तरह प्रतिबंध लगा दिया गया हालांकि अधिकारियों ने कभी नहीं बताया कि बड़े की परिभाषा क्या है। छोटे कुत्तों का पंजीकरण शुल्क 5000 युआन (600 डालर) है, जो बीजिंग में औसत वार्षिक वेतन का लगभग आधा है। यही नहीं वरन कुत्ता पालने के लिए प्रत्येक वर्ष 2000 युआन भी खर्चने पड़ते हैं। इसके अलावा अगर आपका कुत्ता अवैध रूप से घूमता पाया गया तो जुर्माना अलग से ।

कुछ चीनियों के लिए कुत्ता पालतू जानवर नहीं रात्रि भोजन है। बीजिंग में अनेक ऐसे रेस्त्रां हैं, जहां कुत्ते का मांस परोसा जाता है और कई साधारण होटलों के मेनू में भी कुत्ते से बने व्यंजन मौजूद रहते है। लेकिन इन सबके बावजूद बीजिंग वासियों में

कुत्ता पालने की प्रवृत्ति बढ़ती ही जा रही है। इसका एक कारण यह है कि विवाहितों को केवल एक बच्च पैदा करने की अनुमति है। ऐसे में दंपतियों का सागर सीमित होकर रह जाता है और जब उनका एक बच्चा घर से बाहर निकल जाता है तो उन्हें वही घर काट खाने को दौड़ता है। इस अकेलेपन की भरपाई के लिए वे कुत्तों को अपना जीवन साथी बना लेते हैं।

करीब एक करोड़ चालीस लाख की आबादी वाले बीजिंग शहर में कुत्तों की तादाद कम से कम एक लाख है और देश के सरकार समाचारपत्र 'चाइना डोली' का कहना है कि मालिक अपने कुत्तों पर हर साल 24 लाख डालर खर्च करते हैं।

इस कुत्ता नियम के एक आलोचक वांग लिक्वन न बताया कि सड़कों पर अवैध रूप फेरी लगाने वाले छोटे पिल्लों को अपनी जैकैट में छिपाए रहते हैं और उन्हें गर्दन से पकड़कर चुपके से पैदल चलने वाले को दिखाकर 100 युवान (12 डालर) तक में बेच देते हैं। इस तरह ज्यादातर मालिक, जिनके कुत्ते पकड़ लिये जाते हैं, उन्हें ऐसे ही छोड़कर नए कुत्ते खरीद लेते हैं।

वांग के पास अपने छह कुत्ते हैं और उसमें दो ही पंजीकृत हैं। वांग ने कहा, 'सरकार ने तो आम आदमी से कुत्ते रखने का अधिकार तक छीन लिया है। ऐसा लगता है कि वह कुत्तों के पूरी तरह खात्मे पर तुली है। बीजिंग में विशेष पुलिस दस्ता कुत्ता परिसट की जांच करता है। ओर 2008 ओलपिंक की मेजबानी के दावे की जांच के लिए इस वर्ष फरवरी में आए ओलंपिक निरीक्षकों को प्रभावित करने के क्रम में पुलिस ने आकस्मिक चेकिंग की चेतावनी भी दी थी। रिहायशी डाकखानों में पुलिस ने नोटिस चस्पा किया था– हमें उम्मीद है कि बिना लाइसेंस के कुत्ते पालने वाले उनसे छुटकारा पा लेंगे या उनका पंजीकरण करा लेंगे। पुलिस का कहना है कि लोगों के स्वास्थ्य व सुरक्षा के अलावा शहरी जनजीवन के सुचारू रूप से चलने के लिए शहर का कुत्ता अधिनियम आवश्यक है।

वांग के पास अपने छह कुत्ते हैं और उसमें दो ही पंजीकृत हैं। वांग ने कहा, 'सरकार ने तो आम आदमी से कुत्ते रखने का अधिकार तक छीन लिया है। ऐसा लगता है कि वह कुत्तों के पूरी तरह खात्मे पर तुली है। बीजिंग में विशेष पुलिस दस्ता कुत्ता परिसट की जांच करता है। ओर २००८ ओलपिंक की मेजबानी के दावे की जांच के लिए इस वर्ष फरवरी में आए ओलंपिक निरीक्षकों को प्रभावित करने के क्रम में पुलिस ने आकस्मिक चेकिंग की चेतावनी भी दी थी। रिहायशी डाकखानों में पुलिस ने नोटिस चस्पा किया था– हमें उम्मीद है कि बिना लाइसेंस के कुत्ते पालने वाले उनसे छुटकारा पा लेंगे या उनका पंजीकरण करा लेंगे।

इतना ही नहीं पूर्णतः सरकारी संरक्षण में चलने वाली मीडिया ने तो यहां तक प्रचार कर दिया है कि यह कुत्ता अधिनियम ही बाकी ओलंपिक दावेदारों के मुकाबले बीजिंग का पलड़ा भारी कर देता हैं पेरिस और टोरंटो जैसे शहरों के होते हुए मानवधिकारों के हनन के लिए दुनिया भर में आलोचना का केन्द्र बना हुआ बीजिंग इस कुत्ता नियम की बदौलत 2008 औलपिंक खेलों की मेजवानी पाने में असफल नहीं हुआ है। यह गत दिवस मास्को में अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति के मतदान के बाद ही पता चल गया है। मार्च में सरकारी समाचारपत्र "लिब्रेशन डेली" में प्रकाशित एक स्तंभ में कहा गया था– आवारा और पागल कुत्तों ने ओलंपिक की मेजबानी के लिए पेरिस की दावेदारी को सीमित कर दिया है। पेरिस की सड़कों पर आवारा ओर पागल कुत्ते दौड़ लगाते नजर आते हैं। खेलों की मेजबानी से पूर्व पेरिस को अपने कुत्तों पर अंकुश लगाना चाहिए।

लेकिन आपको पता है कि चीनी पुलिस के हाथों में पड़ने के बाद कुत्तों की जिंदगी कुत्तों से भी बदतर हो जाती है। एक कुत्ता मालिक लिआंग ने बताया कि कुत्तों को जिस गड्ढ़े में फेंक दिया जाता है, वहां 15 दिनों बाद तक पड़े रहने के बाद उसका कुत्ता लगभग मरणासन्न हो गया था। उसकी एक आंख संक्रमण से खराब हो गयी थी और भोजन न मिलने से हालत बदसे बदतर। अपने कुत्ते को छुड़ाने के लिए लिआंग को 5300 युआन (646 डालर) अदा करने पड़े। यह राशि उनकी और उनके पति की सम्मिलित मासिक पेंशन के लगभग पांच गुना है।

अब कुत्ता मालिक अपने पालतुओं की वापसी के लिए निकटवर्ती पुलिस स्टेशनों के बाहर विरोध प्रदर्शन करते नजर आते हैं। इतना ही नहीं, पिछले वर्ष बीजिंग टेलीविजन स्टेशन के कर्मचारियों ने उस पुलिस अधिकारी के इस्तीफे की भी मांग उठायी थी, जिसने एक गैरपंजीकृत कुत्ते को उसके बूढ़े मालिक की आंखों के सामने मार डाला था। अब मालिकों ने पुलिस की बर्बरता की सूचना के आदान–प्रदान के लिए एक नेटवर्क भी स्थापित किया है और स्थानीय नेताओं से भी कानून में शिथिलता बरतने के लिए पत्र लिखें हैं। लिआंग का कहना था "ऐसा नहीं है कि हम आपने देश से प्यार नहीं करते। लेकिन ऐसा लगना भी चाहिए कि देश आगे की ओर बढ़ रहा है और यह एक ऐसा क्षेत्र है, जहां अभी तक एक कदम भी आगे नहीं बढ़ाया गया है।"

–पर्यावरण चेतना फीचर्स

सामाजिक विसंगतियों की अभिव्यक्ति है –'आत्ममुग्ध'
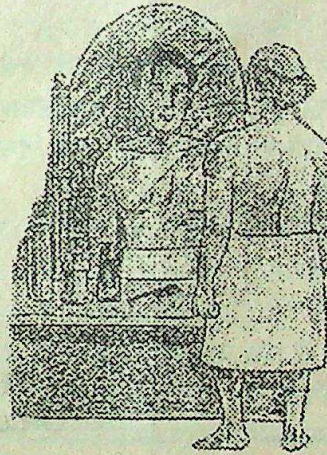
व्यंग्य– इस शब्द से स्वतः ही एक ऐसी तिलमिलाहट का बोध हो जाता है जो जीवन और समाज में व्याप्त विसंगतियों और विद्रुपताओं के कारण मुखर होती है। आधुनिकता की दौड़ में आखों पर पट्टी बांधकर भागता जीवन, गुण्डई के दम पर बनती–बिगड़ती सरकारें कुर्सीदौड़, घोटाले, कमीशन, का पर्याय बनी हुई राजनीति, सरकारी महकमों में आवश्यक रश्म सुविधाशुल्क की तरह चलती रिश्वतखोरी की परम्परा, खेलों में राष्ट्र भावना की जहग फिक्सिंग का बढ़ता प्रचलन, शिक्षण संस्थानों में जड़ें डाल कर पसरती डोनेशन की कंटीली नागफनी, दहेज का ग्राम बनती ग्रहवधूओं की चीत्कारें, दूरदर्शन पर रचाए गए मारकाट व नग्नता से भरपूर चैनलों के चग्रव्यूह में फंसा बचपन, महंगाई, जमाखोरी, हड़तालें, चक्का जाम, आतंकवाद, जनसंख्या, प्रांत विभाजन यह तमाम वो विसंगतियां हैं जिनसे उपजी हुई छटपटाहट अभिव्यक्ति हेतु जिस भाषा में ढलती है वह भाषा व्यंग्य की भाषा बन जाती है। रण विजय सिंह का व्यंग्य संग्रह आत्मुग्ध अद्योपान्त पढ़ने के पश्चात मैं यही करूगां कि यह व्यंग्य संग्रह–व्यंग्य संग्रहों की भीड़ से हट कर अलग–थलग और अनूठा दिखता है। इस

आत्ममुग्ध

रण विजय सिंह

संग्रह की विशेषता है कि रचनाकार ने समाजिक और राजनीतिक घटनाओं का आधार बना कर प्रखर व्यंग्यों की रचनाएं की है। किसी एक खबर पर पूरे व्यंग्य का ताना–बाना बांधना निसंदेह दुरूह कार्य है। परन्तु इस दुरूह कार्य को जिस सरल और सहज भाषा–शिल्प में मूर्तरूप रण विजय सिंह ने आत्मुग्ध में दिया है वह एक नवीन प्रयोग कहलाते हुये मौलिक सोच–सूझ का विश्वास दिला देता है। इसके साथ–साथ

पुस्तक समीक्षा

इस संग्रह में शामिल किये गये इक्कीस व्यंग्यों की रचना के लिए पात्र निर्माण में बरती गयी सजगता इस संग्रह की उपादेयता में अभिवृद्धि करती है। आत्मुग्ध में शामिल इक्कीस व्यंग्यों का हृदय–स्पर्शी तानाबाना चमचों की चापलूसी, बढ़ती महंगाई, धार्मिक सौहार्द्रता, कुत्ते की दुम, सत्ता में स्थापित होते किन्नर, बिहार का चारा घोटाला कांड, विद्यालयों में पठन–पाठन की शिथिलता, मैचों में फिक्सिंग के नाम पर चलता जुआ, कृष्ण जन्म और पुलिस लाइनें, जनसंख्या, प्रातों का बंटवारा आदि विषयों के साथ–साथ अटल जी के घुटनों के दर्द तक को आधार बना कर बांधा गया है। यह व्यंग्य संग्रह हमारे आसपास की ही विद्रुपताओं का संग्रह है अतः इसे पाठकों की प्रियता अवश्य ही मिलेगी।

–जयकुमार "रूसवा"

आत्ममुग्ध
लेखक– रण विजय सिंह
प्रकाशक– साहित्य संगम, इलाहाबाद
मूल्य– १०० / रूपया

ठंडी हवाओं के मंथन से झरती है ओस

आसमान से नन्ही–नन्ही बूंदों की शक्ल में गिरने वाली ओस की कहानी भी अजीब है। यह शीत मौसम में रात के वक्त ही आसमान से धरती पर उतरती है और सुबह मोती जैसी दिखाई देती है।

आखिर यह ओस बनती कैसे है? ओस बनने के लिए कुछ विशेष परिस्थितियों को होना अतिआवश्यक है। जैसे बिल्कुल स्वच्छ आकाश, जिससे दिन में वाष्पीकरण के चलते वायु में नमी की प्रचुरता हो और रात में स्वतंत्र विकिरण के कारण धरातल अधिक ठंडा हो सके। एकदम शांत नमीयुक्त समीर ठंडे धरातल के संपर्क में अधिक देर तक रह पाता है और उसका तापमान नीचे ओसांक तक आ जाता है। तेज हवाओं के थपेड़ों से समीर का मंथन होता है, जिससे इसके अधिक ठंडा होने में रूकावट आती है। वायुमंडल में नमी की मात्रा जितनी होगी, ओस उतनी ही अधिक बनेगी। चूंकि सर्दियों में रातें लंबी–लंबी होती हैं, इस कारण समीर को पूर्ण रूप से ठंडा होने का अधिक अवसर मिल जाता है और ऐसे में ही नन्हीं ओस की बूंदों का जन्म होता है, जो धरती पर गिरकर मोती जैसी दिखाई देती हैं।

विज्ञान के नियमों के अनुसार जिस रात नीलगगन में काले या सफेद मेघ दिखाई देते हैं और तेज हवाओं के झोंके चलते हैं, उस रात ओस औसत से बहुत कम गिरती है। हां, ओस गिरने के लिए वायु का ओसांक शून्य से अधिक होना भी जरूरी है।

ओस गिरने के संदर्भ में एक यूनानी लोककथा भी है। बहुत पहले की बात, एक बार यूनान देश में वर्षा के मौसम में बारिश न हुई। इस कारण पानी के लिए त्राहि–त्राहि मचने लगी। पेड़– पौधे व तमाम पानी के स्रोत सूख चले थे। ऐसे में एक दिन आसमान से परियों की रानी 'ओस' यूनान की धरती पर उतरी। यूनान में पानी की कमी के कारण वहां उदासी छाई थी। जगह–जगह सूखे पेड़–पौधे दिखाई दे रहे थे, तभी परी ने पौधों से पूछा, 'तुम्हें फिर से हंसने–मुस्कुराने के लिए क्या चाहिए?' तमाम पौधों ने एक स्वर में कहा, यहां की धरती पर पानी की सख्त जरूरत है। बस, पानी बरसा दो।

परी ने कहा, पानी तो नहीं बरसा सकती, फिर भी मैं इस धरती की प्यास बुझा दूंगी। इस किस्से के मुताबिक उसी रात आसमान से ओस झरने लगी।

जरा सोचिये !
हम भावी पीढ़ी को
विरासत में क्या दे जायेंगे ?
उजड़े हुये वन-पेड़ और बंजर धरती,
कंकरीट की इमारतें, प्रदूषित वातावरण
बच्चे किताबों में पढ़ेंगे, तोता-सारस या
वनराज थे कभी होते थे, मगर डायनासोर की
तरह ये सभी विलुप्त हो गये सदा के लिये
अथवा
हरियाली-खुशहाली और स्वच्छ
हवा-पानी और मिट्टी
आइये! हम सभी संकल्प लें
"पर्यावरण" को हर प्रकार से सुरक्षित रखें,
पेड लगायें और उनकी देखभाल करें। प्रदूषण की रोकथाम करें।
जनहित में प्रकाशित
पर्यावरण चेतना
सी-5 दिलकुशा कालोनी, लखनऊ, फोन - 482288

स्वत्वधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक भीती सिंह द्वारा नीलम प्रिंटर्स, नरही, लखनऊ फोन - 239672 से मुद्रित एवं बी-1/12 डी-1 कानपुर रोड योजना, लखनऊ से प्रकाशित

पर्यावरण चेतना

पर्यावरण की एकमात्र राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष 8 सितम्बर 2001 अंक 5

पर्यावरण एवं राजनीति विशेषांक

राजनीति पर्यावरण की

- बहुपयोगी पुदीना
- पानी के लिए हाहाकार
- वेद-पुराण का पारिस्थितिकीय संतुलन में महत्व
- दुर्लभ पक्षियों की ७८ प्रजातियां विलुप्त होने की कगार पर

मूल्य 25 रु

पर्यावरण चेतना

पर्यावरण संचेतना की एक मात्र
राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष : 8 सितम्बर अंक : 5

सम्पादकीय कार्यालय : सी-5 दिलकुशा कालोनी लखनऊ, फो-482288

रजिस्टर्ड कार्यालय : बी-1/12 सेक्टर डी–1, कानपुर रोड योजना, लखनऊ, फोन-436767

मुद्रक : नीलम प्रिंटर्स, नरही, लखनऊ फोन - 239672

अनुक्रमणिका

प्रकृति की आराधना का वैदिक उद्गीथ

सम्पूर्ण वैदिक वांगमय मानव की मनीषा की सर्वोत्कृष्ट उपलब्धियों का अमूल्य अंश है। प्रकृति के साथ यह अस्तित्व की भावना से युक्त जीवन व्यतीत करने वाले वैदिक ऋषियों ने वसुन्धरा, ऊषा, सूर्य, वायु, जल एवं अन्यान्य प्राकृतिक शक्तियों की भावपूर्ण अभ्यर्थना की है। **''पर्यावरण चेतना''** द्वारा वैदिक सूक्तों की कतिपय ऋचायें, पर्यावरण संरक्षण की पुरातन चिन्तन धारा वर्तमान संकल्पना से जोड़ने की दृष्टि से प्रकाशित की जा रही है। प्रकृति के अनन्य आराधक मंत्र दृष्टा ऋषियों को विनत प्रणाम करते हुये प्रस्तुत हैं प्रकृति पर **''वैदिक चिन्तन''** के कतिपय अंश-

औदुम्बरेज मणिना पुष्टिकामाय वेधसा। पशुनां सर्वेषा स्फातिं गोष्ठे में सविता करत्।।

(अर्थर्ववेद संहिता भाग–2 औटुम्बरमणि सूक्त–1)

(ज्ञानी अथवा विधाता ने औटुम्बरमणि से सभी प्रकार की पुष्टि करने वालों के लिये एक प्रयोग किया था जिससे सवितादेव हमारे गोष्ठ में सभी प्रकार के पशुओं को बढ़ायें।)

प्रस्तुत श्लोक वर्तमान समय में समीचीन प्रतीत होता है। क्योंकि आज विभिन्न प्रकार के पशु एवं जीव जंतुओं के संरक्षण की आवश्यकता है। क्योंकि हमारी कृषि का एक महत्वपूर्ण स्तम्भ पशु ही है। इसके अलावा पशुओं से ही हमें दूध की प्राप्ति होती है तथा अन्य विशेष कार्य भी पशुओं द्वारा ही संपादित होते हैं। अतः आज पशु धन को बढ़ाने की आवश्यकता है।

करीषिणी फलवती स्वधामिरां च नो गृहे। औदुम्बरस्य तेजसा धाता पुष्टिं दधातु में।।

(अर्थर्ववेद संहिता भाग–2 औटुम्बरमणि सूक्त–3)

(धातादेव औटुम्बर मणि की तेजस्विता से हमारे अंदर परिपुष्टता को प्रतिष्ठित करें। गोबर की खाद से परिपूर्ण करने वाली गौ संतानों से युक्त होकर हमें अन्न और दूध आदि पर्याप्त मात्रा में प्रदान करें।)

प्रस्तुत श्लोक भी आज के संदर्भ मं महत्वपूर्ण है। क्योंकि इसमें भी गायों के महत्व के बताया गया है। और देवताओं से उनकी वृद्धि की प्रार्थना की गयी है। क्योंकि गायों के गोबर से खाद होती है। जिससे कृषि पैदावार में वृद्धि होती है एवं दूध आदि भी प्राप्त होता है। अतः आज की समस्याओं को देखते हुये गायों एवं अन्य पशुओं के अधिकाधिक संरक्षण की जरूरत है।

❁ पर्यावरण चेतना फीचर्स

खेलों के आयोजन में भी पशुओं का ध्यान रखा जाए

पर्यावरण चेतना के अगस्त 2001 में प्रकाशित लेख 'ओलंपिक की मेजबानी बनी कुत्तों की आफत' पढ़कर बहुत दुःख हुआ कि आज हम मनुष्य जहां प्रगति की ओर बढ़ रहे हैं। खेल के क्षेत्र में भी काफी आगे निकले हैं। लेकिन इस ओर ध्यान ही नहीं है कि इन खेलों की आड़ में भी पशुओं पर अत्याचार होता है और पर्यावरण को हानि पहुंचाती है।

पत्रिका के अन्य लेख 'कार्बट नेशनल पार्क का हाल' हम और हमारे पर्यावरण का भविष्य पहाडी बुलबुल आदि बहुत ही ज्ञानवर्द्धक एवं रोचक हैं। आशा है कि आगे भी इसी प्रकार के लेख प्रकाशित करके पर्यावरण संरक्षण के इस अभियान को जारी रखा जाएगा।

—राम सिंह सनेही, हिमांचल प्रदेश

बहुत ही उपयोगी साबित होगी

शान्ति मैत्री मिशन संस्थान, बीकानेर (राजस्थान) के 'पर्यावरण चेतना' प्राप्त हुयी। पश्चिमी राजस्थान के मुरूस्थली क्षेत्र में कार्यरत इस संस्था के लिए यह पत्रिका बहुत ही उपयोगी साबित होगी।

इसमें पर्यावरण, वन्य जीव, औषधि और पानी पर काफी रोचक जानकारी है।

—कपिल गौड़, सचिव,
शान्ति मैत्री मिशन संस्थान, बीकानेर, राजस्थान

पत्रिका का नियमित पाठक बनना चाहता हूँ

यात्राक्रम में 'पर्यावरण चेतना' को अवगम करने का अवसर प्राप्त हुआ। इस पत्रिका का नियमित पाठक बनना चाहता हूँ।

संभव हो तो एक प्रति एवं नियमावली निर्देशित करने की कृपा करें।

—डा० सत्यरत्न प्रसाद सिंह
श्री राम कुटीर, महारानी रोड,
नई गोदाम, गया— ८२३००२

अच्छी बात नहीं....

यह सच है कि कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है। लेकिन यह अच्छी बात नहीं कि थोड़ा सा पाने के लिए बहुत ज्यादा खोना पड़े।

विज्ञान की इस दौड़ में थोड़ी सी महारथता हासिल करने पर प्रकृति पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों ही रूपों में बहुत बुरा असर पड़ता है।

—गोविन्द सिंह
बड़ा चांदगंज, लखनऊ

यत् ते मध्यं पृथिवि यच्च नभ्यं,
यास्तूर्जस्तन्वः ऊर्जा स्तवन्यः सवभूवुः,
तासु नो धेयभिः न पवस्व,
माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः
पर्जन्यः पिता स उ नः पिपर्तुः ।।
(अथर्ववेद / भूमि सूक्त १२—१—१२)

हे,

पृथ्वी तुम्हारी कटि, नाभि सम्पूर्ण शरीर से जो शक्ति संजात होती है वह हमारी रक्षा करें तुम्हारे मातृवत-स्नेहिल उच्छ्वासों से हम अभिसिंचित हों
वसुंधरा जननी है, हम सब इसके पुत्र हैं, बादल हम समस्त प्राणियों के लिए पितृवत है।।
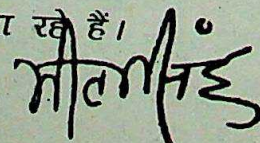
सम्पादक की कलम से...

...नहीं तो वनविहीन पृथ्वी के वासी होंगे हम?

वन और जंगलों के साथ प्राकृतिक एवं रमणीय वातावरण के लिए विश्व पटल पर विशेष स्थान रखने वाले भारत में आज तेजी के साथ वनों का ह्रास होता जा रहा है। विकास के पहिए ने जंगलों का जो खात्मा आजादी के बाद से शुरु किया था वह आज तक अनवरत जारी है। वर्तमान समय में जो पर्यावरण प्रदूषण की गंभीर समस्या उत्पन्न हुयी है वह भी जंगलों के कटने का ही परिणाम है। मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए वनों को काट कर वन्य जीवों से उनका प्राकृतिक आवास भी छीनने में जुटा है। आज हालत यह है कि वनों की समाप्ति के साथ ही जंगलों में रहने वाले विभिन्न प्रकार के पशु-पक्षियों के सामने अस्तित्व का संकट आ खड़ा हुआ है। उनमें से भी गैंडा, हाथी, शेर, बाघ आदि बहुत ही कम संख्या में रह गए हैं।

वैसे आज तक हमारे देश में एक तिहाई भू-भाग को जंगलों से आच्छादित करने का लक्ष्य पूरा नहीं हो सका है। ''नेशनल रिमोट सेन्सिंग एजेन्सी'' के अनुसार हमारे देश में मात्र ग्यारह प्रतिशत भू-भाग ही वनों से आच्छादित हैं। इस प्रकार तेजी से वनों का कटाव हमारे पर्यावरण के लिए गम्भीर चुनौती बन गया है। जंगलों के कटने से उत्पन्न पर्यावरण प्रदूषण जीव-प्राणियों के लिए खतरनाक साबित हो रहा है। आज हम जिस कदर तेजी से वनों का विनाश करने पर तुले हुए हैं उससे ऐसा लगता है कि वह दिन दूर नहीं जब हम वन विहीन पृथ्वी के निवासी होंगे, और यह भी निश्चत है कि यदि वन नहीं रहेंगे तो हमारा अस्तित्व भी खतरे में पड़ जाएगा। मनुष्य की लालची प्रवृत्ति ने ही समस्त पृथ्वी के जीवन को आज खतरे में डाल दिया है। उसने अपने स्वार्थ में जंगलों का इस कदर सफाया किया कि आज भारत की धरती पर बारह फीसदी से भी कम वन शेष बचे हैं, जबकि वैज्ञानिक दृष्टि से कम से कम ३३ फीसदी वनों का होना अनिवार्य है। अर्थात कुल भूमि के एक तिहाई भाग पर वन होने चाहिए किन्तु हमारे देश में कुल भूमि के छठे भाग पर भी वन नहीं हैं।

अगर हम प्रदेश की राजधानी लखनऊ को ही लें तो यहां की विभत्स स्थिति स्वयं ही सामने आ जाती है। एक समय था जब लखनऊ में नवाबों ने सड़कों के किनारे पेड़ लगावाए थे और चारों ओर बागों से परिपूर्ण था यह शहर।, लेकिन आज सिर्फ बागों के नाम ही शेष हैं और बाग तो कब के गायब हो चुके हैं उनकी जगह कंक्रीट की बड़ी-बड़ी इमारतों और पक्के बने मकानों ने ले ली है। तेजी से बढ़ती जनसंख्या और आवास की आवश्यकता ने हरियाली को समेट कर रख दिया है। तेजी से शहर का विस्तार होता जा रहा है खेती और जंगल खत्म होते जा रहे हैं, मकान बनते जा रहे हैं।

(प्रधान संपादक)

राजनीति पर्यावरण की

गांव के लोगों को लगता है कि सबसे बड़ा दुश्मन फॉरेस्ट गार्ड है. आज भी जंगल के इलाकों से बसे अदिवासी लोग सरलता से यही सोचते है कि सरकार, बड़े अधिकारी और राजनेता उनकी भलाई चाहते है परन्तु पटवारी, ग्रामसेवक, डिप्टी रेंजर आदि बदमाशी करते है. निचले स्तर के यह कर्मचारी में से ज्यादातर आजकल गरीब ग्रामीण परिवार से ही होते है फिर भी लोग इनके बजाय अमीर या माध्यम वर्ग्र से आये बड़े अधिकारियों और राजनेताओं पर ज्यादा भरोसा करते है. यानि गांव वालों के समझ में व्यवस्था और उसे चलाने वाले अमीर लोग नहीं बल्कि उनके आदेशों का पालन करने वाले छोटे कर्मचारी ही उनकी तमाम तकलीफों के लिए जिम्मेदार है. इसी गलत समझ के कारण व्यवस्था बनी रहती है क्योंकि लोग सरकार से राहत पाने की उम्मीद में बैठे रहते हैं।

हकीकत कुछ और ही है. आज गांव और उसमें रहने वाले लोग, पूरी दुनिया को कब्जे में की हुई एक व्यवस्था के एक कोने में है. इस व्यवस्था के केंद्र में कुछ अमीर लोग है. यह लोग दुनिया के किसी जगह से कच्चा माल को सस्ते कीमतों पर खरीदते है फिर किसी दूसरी जगह पर इस माल को कारखानों में तैयार करवाते है. इसके बाद दुनियाभर में इस बनाए हुए माल को बेचते है. इस काम को करने के लिए यह लोगों ने कई देशों में कारोबार फैलाया हुआ बड़ी-बड़ी कम्पनियां बनाई है जिन्हें ***बहुराष्ट्रीय कम्पनियों*** के नाम से जाना जाता है. मुनाफा कमाने के लिए सस्ते से सस्ते भाव में माल खरीदकर, कम से कम खर्च पर उसे कारखानों में तैयार कर, ज्यादा से ज्यादा कीमत पर उसे बेचना जरूरी होता है. यह तभी संभव होता है जब इस तरह की लूट को नियंत्रित करने के नियम कानून ताक पर रख दिए जाते है. बहुराष्ट्रीय कम्पनियां इतनी ताकतवर है कि गरीब देशों की सरकारें इनके सामने कुछ लगती ही नहीं है.

इसके अलावा यह कम्पनियां एकजुट होकर विकसित देशों की सरकारों को भी झुका लेते है. इसलिए यह कम्पनियां उनके

खिलाफ बनाए गए नियम कानूनों को तोड़ने का काम आसानी से करते रहे है और भारी मुनाफा कमाते रहे है.

सन् 1970 के दशक से यह कम्परियों ने लूट का रास्ता साफ करने के लिए एक नई नीति अपनाई है. यह कम्पनियां कानूनों को तोड़ने के झंझट से मुक्त होने के लिए लूट को बढ़ावा देने के कानून और लूटना अच्छा काम है ऐसी मानसिकता बनाने के लगी हुई है. क्योंकि यह कम्पनियों को चलाने वाले लोग दिमागी रूप से बहुत तेज होते है इसलिए वह प्रचार यह करते है कि ऐसे करने से सभी गरीब लोग अमीर बन जायेगें. इस साजिश में वह बहुत सफल हुए है. पूरी दुनिया को व्यवस्था को चलाने के लिए बनाई गई कुछ अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के कामकाज को यह कम्पनियां प्रभावित किए है. उनके व्दारा दबाव डलवाकर भारत समेत दुनिया के सभी गरीब देशों को अपने अपने बाजारों को और साधनों को लूट के लिए खुला छोड़ने के लिए मजबूर किए है.
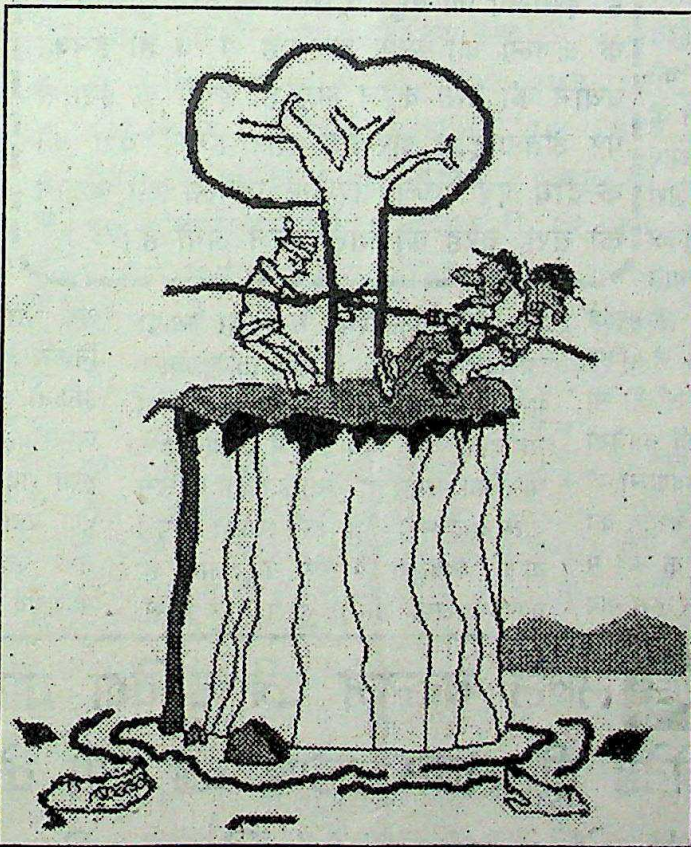
औद्योगिक विकास के शुरु से ही जंगलों पर हमला होते आया है और आज भी पूरी दुनिया में धडल्ले से जंगल कट रहे है. कुछ नई तकनीकों के कारण जंगलों में पाए जाने वाले चीजों से नई चीजें बनाकर बेचने में आजकल सबसे ज्यादा मुनाफा कमाया जाता है. इसलिए जो बहुराष्ट्रीय कम्पनियां दुनियाभर के जंगलों

को साफ कर रहे थे, वे ही इनको बचाने की बात करने लगे है. इन्हीं के इशारों पर अंतराष्ट्रीय संस्थाएं और हमारे देश की केंन्द्रीय एवं राज्य सरकारें जंगलों को बचाने की तरह तरह की बातें करने लगी है. कभी जंगल में रहने वाले लोगों को उठाकर बाहर पटकने की बात चलती है तो कभी उनको विकास के कुछ टुकड़े फेंककर जंगलों को बचाने के लिए प्रेरित करने का सुझाव दिया जाता है।

ऐसी स्थिति में अगर गांववाले सरकार को सही मानकर जंगल से सम्बंधित सरकारी नीतियों को क्रियान्वित करने में लग जाते है तो उनका सफाया ही होने वाला है. दुनिया के स्तर पर चल रही जंगल से सम्बंधित इस राजनीति को समझना जरूरी है. नहीं तो लोग फालतू ही फॉरेस्ट गाड़ों से लड़ते रह जाएगें. यहां पहले आज की अंतराष्ट्रीय व्यवस्था कैसे बनी है और इसको चलाने वाली संस्थाएं कैसी है यह समझाया गया है. जिस पर्यावरण संकट को नाम लेकर वनवासियों को खदेड़ने की बात की जाती है वह क्या चीज है यह इसके बाद विस्तार से बताया गया है. फिर जंगलों को लेकर हमारी सरकार को भी आदेश देने वाला विश्व बैंक की नीतियों को खुलासा किया गया है. गांववालों के साथ मिल जुलकर जंगलों को बचाने का नया ढ़ोग संयुक्त बन प्रबन्धन के बारे में इसके बाद बताया गया है. फिर इस सब के पीछे काम कर रही जंगल की राजनीति को समझाई गई है. अंत में एक वैकल्पिक जीवनधारा बताया गया है।

अंतराष्ट्रीय व्यवस्था

पूंजी लगाकर कारखानों में चीजों को उत्पादन कर बाजारों में उन्हें बेचने पर आधारित ***पूंजीवादी औद्योगिक व्यवस्था*** में उथलपटक बहुत होती है. सभी व्यापारी और उद्योगपति इस कोशिश में रहते है कि अपने माल का ज्यादा उत्पादन कर उसे ज्यादा बेचे ताकि ज्यादा मुनाफा कमाया जा सके. इसका नतीजा यह होता है कि बीच बीच में ही बाजार में मालों का भरमार हो जाता है जिन्हें खरीदने वाले कोई नहीं होते. ऐसी स्थिति में पूरी बाजार व्यवस्था ही ठप्प पड़ जाती है. इसके अलावा इतना सारा माल किसी एक देश में बेचना सम्भव नहीं है इसलिए दूसरे देशों में बाजार ढूंढना लाना पड़ता है।

यूरोप के कुछ देश जैसे इंग्लैंड, फ्रांस, बेलजियम, स्पेन, पूर्तगाल, रूस आदि हॉलैंड एशिया, अमरीका और अफ्रीका के ज्यादातर इलाकों पर इसलिए कब्जा करके बैठे थे कि वहां से कच्चा माल लूटकर लाया जाए और कारखानों में बनाया हुआ माल वहां बेचा जाए. भारत अंग्रेजों का गुलाम था. कुछ जगहों पर यूरोप से जाकर बसे लोगों ने बहुत बड़े इलाकों में स्वतंत्र देश बना लिए थे और औद्योगिक विकास के रास्ते पर बढ़ने लगे थे जैसे संयुक्त राज्य अमरीका, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया. परन्तु जर्मनी के पास खास कोई ऐसे इलाके नहीं होने के कारण वहां के व्यापारियों और उद्योग़पतियों को अपने विकास करने में तकलीफ हो रही थी.

दुनियाभर में व्यापार को फैलाने के लिए लोगों और मालों को लम्बी दूरियों से लाना ले जाना पडता था जिसमें बहुत समय और पैसा लगाता था. खनिज तेल से निकले डीजल और पेट्रोल से चलने वाले इंजिनों के बन जाने से यह लाना ले जाना आसान और सस्ता हो गया. इसलिए इसी सदी की शुरूआत से खनिज तेल एक महात्वपूर्ण कच्चा माल के रूप में उभर कर सामने आया. यह ज्यादातर मध्य पूर्व के अरब देशों में पाया जाता था

औद्योगिक विकास के शुरू से ही जंगलों पर हमला होते आया है और आज भी पूरी दुनिया में धडल्ले से जंगल कट रहे है. कुछ नई तकनीकों के कारण जंगलों में पाए जाने वाले चीजों से नई चीजें बनाकर बेचने में आजकल सबसे ज्यादा मुनाफा कमाया जाता है. इसलिए जो बहुराष्ट्रीय कम्पनियां दुनियाभर के जंगलों को साफ कर रहे थे, वे ही इनको बचाने की बात करने लगे है. इन्हीं के इशारों पर अंतराष्ट्रीय संस्थाएं और हमारे देश की केंन्द्रीय एवं राज्य सरकारें जंगलों को बचाने की तरह तरह की बातें करने लगी है।

जिन पर ओटोमान तुर्क साम्राज्य का और कुछ कुड जगहों पर फ्रांसीसियों और अंग्रेजों का कब्जा था. एशिया और अफ्रीका के ज्यादातर देशों पर भी इन्हीं दो देशों का कब्जा था. इसके कारण पहले से ही चिढ़े हुए जर्मन लोगों को और भी गुस्सा आने लगा. सो इनके बीच में भयानक युद्ध फंस गया जो सन् 1914 से 1919 तक चला जिसमें करोड़ो लोग मारे गए. अमरीकियों की मदद से अंग्रेज और फ्रांसीसी लोग जर्मनों का हराया और उनपर तरह तरह की शर्तें लाद दी।

रूस में इस सदीं की शुरूआत से ही राजाओं के खिलाफ लड़ाईयां हो रही थी जिसमें ***समाजवादी*** लोग सबसे ज्यादा सक्रिय थे. समाजवादियों का मानना है कि गरीब शोषित लोगों को इकट्ठा होकर उनका शासन और शोषण करने के लिए राजाओं और उद्योगपति लोगों व्दारा कायम की गई व्यवस्था को जबर्दस्ती उखाड़ फेंकना चाहिए. इस कार्य को वे ***क्रांति*** कहते है. फिर क्रांति के बाद वे एक ऐसी व्यवस्था बनाने की कोशिश करते है जिसमें सभी लोग आर्थिक रूप से बराबर होते है और सभी को अपने विकास के लिए समान समाजिक, शैक्षणिक और राजनैतिक अधिकार मिलता है. विश्व युद्ध के चार सालों में लड़ाई के भारी खर्चो से रूस की अर्थव्यवस्था कमजोर हो गई थी और राजा का शासन के खिलाफ लोगों में असंतोष बढ़ गया था. इस का फायदा उठाकर समाजवादियों ने राजा का तख्ता पलट दिए और दुनिया में पहली बार किसी देश में गरीबों का राज स्थापित करने में सफल हो गए.

विश्व युद्ध में जहां युरोपीय देश के आम आदमी और भारत जैसे गुलाम देशों के गरीबों को कठिनाई झेलनी पड़ी वही दोनों ही जगहों के पूजीपतियों को बहुत फायदा हुआ. युद्ध के लिए खाना से लेकर हथियार उपलब्ध कराने में यह लोग भरपूर कमाएं. विकसित पूजीवादी व्यवस्था में दूसरे चीजों की तरह पूंजी का भी एक बाजार होता है. पूंजीपति लोग अपने जरूरत के हिसाब से यहां पूंजी बेचते और खरीदते रहते है. कुछ दलाल ऐसे होते है जो केवल पूंजी के भावों के उतार चढाओं पर जुआ खेलते रहते है. युद्ध के बाद उसमें कमाई गई पूंजी को पूंजी बाजार में ऐसी सट्टेबाजी में ज्यादा लगाई गई जिससे कारखानों में उत्पादन कम हुए और लोगों का रोजगार भी कम हुआ. ऐसी स्थिति बनी जहां गरीबों के पास न पैसा था और न काम एवं बाजारों में माल भरा पड़ा था परन्तु खरीदने वाले नहीं थे।

तमाम जीवजन्तुओं, हवा, मिट्टी और पानी को लेकर धरती की जो बनावट है उसे पर्यावरण कहा जाता है. औद्योगिक विकास के कारण पर्यावरण का जो नुक्सान हो रहा था वह साफ देखने को मिल रहा था. इसलिए सन १९७२ में पहली बार स्वीडेन की राजधानी स्टॉकहोम में राष्ट्र संघ नें एक विश्व पर्यावरण सम्मेलन का आयोजन किया था. इसमें पर्यावरण को हो रही हानि पर आंसू जरूर बहाए गए परन्तु जिस कारण से वह हो रहा है उस औद्योगिक विकास को रोकने या कम करने के लिए कोई तैयार नहीं थे।

वास्तव में कोई उत्पादन के बिना ज्यादा दिन पूंजी बाजारों में सट्टेबाजी नहीं चल सकती है. सन् 1929 में अमारीका और यूरोप के सभी पूंजी बाजार ठप्प पड़ गए और पूरी पूंजीवादी अर्थव्यवस्था ही लड़खड़ा गई क्योंकि बाजारों के बिना यह चल ही नहीं सकती थी. सन् 1929 और 1937 के बीच विकसित देश की सरकारों को पूंजीपतियों की मनमानी मुनाफाखोरी पर रोक लगाकर वापस बाजारों को चालु करना पड़ा. बाजारों को बनाए रखन के लिए सरकारी व्यवस्था का उपयोग इसी समय से शुरू हुआ है. समाजवादियों के निर्देशन में रूस में इस समय हर साल उत्पादन में 20 प्रतिशत बढ़ोत्तरी हो रही थी ताकि वहां एक औद्योगिक व्यवस्था कायम हो सके. रूस के आम जनता से जबर्दस्ती काम करवाकर यह किया जा रहा था. नतीजा यह हुआ कि विश्वभर में एक औद्योगिक व्यवस्था कायम हो गई जिसे सम्भव करने के लिए आम गरीब गाववाला को तकलीफ ही झेलनी पड़ी. इसके लिए भारत जैसे गुलाम देशों का विकास रोक दिया गया और उनके साधनों का उपयोग किया गया।

पूंजीवादी देशों की बाजार व्यवस्था सुधरी ही थी कि उनके बीच फिर से झगड़ा शुरू हो गया कच्चा माल के स्रोत और बाजारों को लेकर. जर्मनी और इटली के पूंजी वादियों को अपने व्यापार बढ़ाने में मुश्किल हो रही थी क्योंकि पूरी दुनिया ही अन्य विकसित देशों के कब्जें में थी. इस झगडे में इस बार जापान भी फंस गया क्योंकि अमरीका और यूरोपीय देश उसे व्यापार के क्षेत्र बढ़ाने से रोक रहे थे. पहला विश्व युद्ध के बाद दुनिया के बंटवारे को लेकर झगड़ा को दबा दिया गया था उसका समाधान नहीं हुआ था. सन् 1939 से सन् 1945 तक घमासान लड़ाईयां चली जो पूरे विश्व को ही चपेट में ले लिये. करोड़ों लोगों की मौतें हुई और लाखों हेक्टेयर जंगल बर्बाद हुए. भारत के अनगिनत लोग भूखमरी और गरीबी के कारण मरे क्योंकि अंग्रेजों ने अफ्रीका और एशिया में उनका युद्ध के पूरे खर्चे यही से उठाए. आखिर जापान पर परमाणु बम गिराकर यह युद्ध खत्म किया गया।

औद्योगिक व्यवस्था तो कायम हो गई परन्तु इसके लिए आम आदमी को भयानक कीमत चुकानी पड़ी इन कटु अनुभवों से पूजी पतियों को कुछ खास बातें समझ में आ गई :-

- देश के अंदर बेरोकटोक लूटखसोट करने से और केवल मुनाफा के पीछे

दौड़ने से कुछ ही दिनों में बाजार व्यवस्था ठप्प पड़ जाती है.

● दुनिया के देशों पर सीधे राज कायम करके कब्जा जमाने के प्रयास में पूंजीवादी देश आपस में ही लड़ते और झगड़ते रहते है. इससे भी पूंजीवादी व्यवस्था को खतरा पैदा होता है.

● पूंजीवादी दुनिया में इस उथल पुथल का फायदा उठाकर समाजवादी लोग लगातार अपने पैर पसारे जा रहे थे. दूसरे विश्व युद्ध के बाद आधी यूरोप और एशिया का भी एक बड़ा भाग में समाजवादियों का राज हो गया था और लोग पूरी दुनिया से ही पूंजीवाद को खत्म करने की बात कर रहे थे.

● इन सभी खतरों का मुकाबला करने के लिए पूंजीवादी देशों को एकजुट होकर दुनियाभर में पूंजीवादी व्यवस्था को फैला देना होगा इस व्यवस्था में वापस ऐसी उथल पुथल न हो इसलिए एक अंतर्राष्ट्रीय नियंत्रण बनानी होगी.

यह स्पष्ट हो गया था कि सीधे सीधे दुनिया के देशों पर राज कायम रखने के बजाय उन देशों के अमीर लोगों की मदद से वही के बाजारों और संसाधनों पर हावी होना ही और फायदेमंद है. इसके लिए एक भरोसेमंद विश्व व्यवस्था बनाने की जरूरत थी जो सभी तरह के विवादों को सुलझा सके और विश्व की अर्थव्यवस्था को भी पूंजीवाद के पक्ष में नियंत्रित कर सकें. इसी के चलते सन् 1945 में तीन अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएं बनी :

● दुनिया के देशों के बीच राजनैतिक झगड़ों को सुलझाने और सामाजिक आर्थिक विकास पर सलाह देने के लिए एक **राष्ट्र संघ** बनाया गया, यह दुनिया के सभी देशों की सहमति से बनी एक विश्व सरकार जैसे है।

● आधुनिक औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने के लिए गरीब और युद्ध में ध्वस्त विकसित देशों की अलग अलग विकास परियोजनाओं को अर्थिक मदद देने के लिए **विश्व बैंक** बना।

● आधुनिक आर्थिक व्यवस्था पूरी तरह पैसों के लेन देन पर आधारित है. इसलिए दुनिया के अलग अलग देशों के पैसे या मुद्रा के बीच सतुंलन बनाये रखने और इनकी खरीदी बिक्री पर नियंत्रण रखने के लिए **अंतर्राष्ट्रीय मुद्र कोष** (अ.रा.को.) बना।

विश्व युद्ध के बाद के पचास सालों में यह तीनों संस्थाएं आधुनिक औद्योगिक विकास की जोर शोर से बढ़ावा दिया है. कहने के लिए सभी देशों को समान दर्जा दिया गया है. फिर भी इन संस्थाओं के खर्चे का बड़ा भाग अमरीका और अन्य विकसित देश चुकाते है और इसलिए इनकी और ज्यादा चलती है. जहां युद्ध में ध्वस्त विकसित देशों को अनुदान के रूप में अरबों खरबों रूपयों की मदद दी गई. यह मदद भी ज्यादातर उन्हीं देशों को दी गई जहां समाजवादी क्रांति होने का खतरा दिख रहा था.

विश्व बैंक और अ.रा.को. के नीति निर्णायक पदों पर बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के ही लोग बैठते रहे है. वह यह सुनिश्चित करते रहे है कि इन संस्थाओं से जो उधार दिये जा रहे थे वह ऐसी परियोजनाओं के लिए हो जिसमें उनके व्दारा बनाये गये माल या मशीन या उनकी सेवाओं की ही जरूरत हो. इस दौरान बीच बीच में ही विश्वव्यापी पूंजीवादी व्यवस्था में जो संकट पैदा हुए है उन्हे सम्भालने में यह दोनों संस्थायें बहुत अहम भूमिका निभायी है और आज भी निभा रही है. विशेष कर विश्व बैंक की नीतियों से जंगल और उसके आस पास रहने वाले लोगों पर बहुत असर पड़ा है. इसलिए विश्व बैंक की नीतियों को थोड़ा और बारीकी से समझना होगा. परन्तु पहले जिस पर्यावरण संकट के कारण वनवासियों को जंगलों से बाहर खदेड़ने कर बात हो रहीं है उसे समझना होगा।

पर्यावरण संकट
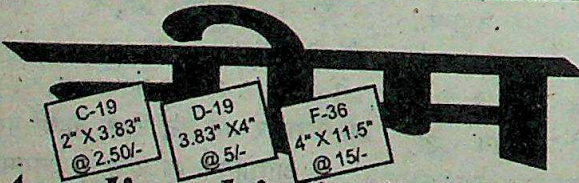
सन 1950 और 1960 के दशक में बहुराष्ट्रीय कम्परियां मुनाफा कमाने के लिए विश्वभर में ऐसी योजनाएं बनाई जिसंमें बड़ें पैमाने पर जंगल नष्ट करके

खनिज निकालने के लिए खदानें खोदी गई,

● सिंचाई का पानी और बिजली के लिए नदियों पर बड़े बड़े बांध बनाये गये,

● रेल लाइन और सड़क बनाये गये,

● चारागाह या केले, काफी आदि बगीचा बनाए गए विकसित देश के लोगों को सस्ते मांस और अन्य भोजन उपलब्ध कराने के लिए,

● इमारती जरूरतें और कागज बनाने

के लिए लकड़ी काटी गई. जैसे कि बस्तर जिले में कुदरती जंगलों को काटकर उसकी जगह पर चीड़ के पेड़ लगाने की योजना. सोच यह थी कि जंगलों में अपने आप जो पेड़ पौधे उगते है उनको साफ करके ऐसे पौधे लगाए जाए जिनकी बाजार में ज्यादा कीमत हो. इसके अलावा सामाजिक वानिकी योजना भी विश्व बैंक की प्रेरणा और अर्थिक मदद से ही लागू की गई थीं. इस योजना के तहत खेतों में औद्योगिक जरूरत के पेड़ उगाने की बात को बढ़ावा दी गई थी. साथ ही गरीब गांववालों के लिए सरकारी पड़त भूमि पर पौधे लगाने की योजना बनाई गई थी. कई बड़े काश्तकार इस योजनाओं का फायदा उठाकर अपने खेतों में पेड़ लगा दिए जिससे उनमें काम करने वाले मजदूरों की रोटी छीनी गई.

तमाम जीवजन्तुओं, हवा, मिट्टी और पानी को लेकर धरती की जो बनावट है उसे **पर्यावरण** कहा जाता है. औद्योगिक विकास के कारण पर्यावरण का जो नुक्सान हो रहा था वह साफ देखने को मिल रहा था. इसलिए सन 1972 में पहली बार स्वीडेन की राजधानी स्टॅाकहोम में राष्ट्र संघ ने एक विश्व पर्यावरण सम्मेलन का आयोजन किया था. इसमें पर्यावरण को हो रही हानि पर आंसू जरूर बहाए गए परन्तु जिस कारण से वह हो रहा है उस औद्योगिक विकास को रोकने या कम करने के लिए कोई तैयार नहीं थे.

सन 1978 में इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता में राष्ट्र संघ व्दारा आयोजित सातवे विश्व वानिकी सम्मेलन में अनेक के जानकर लोगों ने बताया था कि दूसरे विश्व युद्ध के बाद समय में जो विकास हुआ है उससे जंगलों को भारी नुकसान पहुचा है. उन्होंने यह भी बताया था कि जंगल के अंदर या उसके आसपास रह रहे लोगों की गरीबी जब तक नहीं मिटेगी और जब तक उन्हें जंगलों के रखरखाव में भागीदार नही बनाया जाएगा तब तक जंगल बच नहीं सकता है. उस समय इस पर कोई ज्यादा ध्यान नहीं दिया था कि वनवासी ही जंगल काटते है और उन्हें जंगलों से दूर रखने के लिए कड़े कानून बनाने चाहिए.

इसके बाद के एक दशक में परिस्थितियां बहुत बदल गई. मनुष्य व्दारा आकाश में भेजी गई मशीनों से लिए गए फोटो से जंगलों का नष्ट होने का एक डरानेवाला अंदाज मिला. आनेवाले समय में धरती पर मनुष्य सहित किसी भी जीव जन्तुओं का जीवित रहने पर ही सवालिया निशान लग गया है. पेड़ों के कट जाने से कई गम्भीर किस्म की समस्यायें खड़ी हो गई है जिससे धरती के अलग अलग अंगों के बीच संतुलन बिगड़ी है,

● पेड़ पौधे अपने खुराक पत्तों के माध्यम से हवा से कार्बन डाईआक्साइड नाम का गैस को लेकर सूर्य के किरणों से मिली ऊर्जा और धरती से लाया गया पानी और दूसरे चीजों को मिलाकर बना लेते है. इससे हवा में कार्बन डायोक्साइड की मात्रा संतुलित रहती है, पेड़ पौधे कम हो जाने के कारण कार्बन डायोक्साइड का उपयोग कम हो रहा है जिससे हवा में उसकी मात्रा बढ़ रही है. कार्बन डायोक्साइड गैस की एक खासियत यह है कि वा रजाइयों के जैसे गर्मी पकड़ कर रख सकता है. इसलिए धीरे-धीरे जैसे हवा में कार्बन डायोक्साइड बढ़ रहा है वैसे धरती का तापमान बढ़ रहा है. इससे बहुत सारे नुक़सान हो सकते है. धरती के उत्तर और दक्षिण में जमा हुआ बरफ पिघलकर पानी बनकर समुद्र का जलस्तर बढ़ा देने के कारण समुद्री बाढ़ आने की सम्भावना है. इससे काफी सारी जमीन हमेशा के लिए डूब जाएगी।

● पेड़, मिट्टी और पानी का बहुत नाजुक सम्बंध है. पेड़ों के पत्ते और तना सड़कर मई मिट्टी बनती है. पेड़ो की जड़ें मिट्टी को बहने से रोक देते है. मिट्टी पेड़ पौधों से ढंका होने से बारिश का पानी बहकर निकलने के बजाय मिट्टी में रिस जाता है जिससे जमीन के नीचे पानी का भण्डार भरा रहता है. पेड़ों के कट जाने से यह नाजुक सम्बन्ध टूट जाती है और मिट्टी और पानी दोनों की कमी हो जाती है।

● लाखों किस्म के पेड़ पौधों और जन्तुओं से यह धरती बनी हुई है. मनुष्य को अनाज, कपड़े, दवा, आदि के लिए पेड़ पौधों पर ही निर्भर रहना पड़ता है. जंगल खत्म होने के साथ ही यह किस्में कम होती जा रही हैं। जितने ज्यादा किस्में होती है उतने ज्यादा जीव जन्तुओं की जीवित रहने की ताकत होती है।

—सुरेश दीवान

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

डाल्फिन का अवैध मांस बरामद

ताइपे। ताइवान पुलिस ने डाल्फिन का लगभग 1000 किग्रा अवैध मांस जब्त किया है। चाइना टाइम्स एक्सप्रेस में छपी एक रिपोर्ट के अनुसार 1989 में समुद्री जीव संरक्षण कानून लागू होने के बाद से पहली बार इतनी बड़ी मात्रा में मांस जब्त किया गया है। पुलिस ने बताया कि ताइवान के चियायी शहर के मछली बाजार से एक दर्जन डाल्फिन का मांस बरामद किया गया। इस संबंध में दो लोगों को गिरफ्तार किया गया है। ताइवान में व्हेल और डाल्फिन में शिकार पर कानूनी रोक है।

सौरमंडल के बाहर बड़े तारे पर है पानी

वाशिंगटन। वैज्ञानिकों ने सौरमंडल के बाहर एक बड़े तारे पर पानी होने की सम्भावना का पता लगाया है। नासा ने यह जानकारी देते हुए बताया हैं कि संगठन द्वारा 1998 में छोडे गए सब मिलिमीटर वेव एस्ट्रोनोमी सेटेलाइट ने आईआरसी 102016 नामक तारे के आसपास घूमते धूमकेतु से जलवाष्प एकत्र किए है। यह तारा पृथ्वी से 500 प्रकाश वर्ष की दूरी पर स्थित है। कैम्ब्रिज स्थित हर्वर्ड स्मिथसोनिय एस्ट्रोफिजिक्स सेंटर के गेरी मेलनिक ने बताया कि हमने एक तारे के आस पास जलवाष्प कणों का पता लगाया है, जो आमतौर पर ऐसी जंगहों पर नहीं पाए जाते।

खतरे में है प्रकृति

म्बी। (पूल अंतारा) दुनियाभर में आज़ तमाम पशु-पक्षियां पर संकट के बादल छाये हुए हैं। वर्ल्ड वाइल्ड लाइफ फ़ंड इंडोनेशिया के केरिनसी सेबलाट नेशनल पार्क में विभिन्न प्रकार के दुर्लभ पौधों और वनस्पतियों की करीब 4000 प्रजातियों को संरक्षित कर रहा है।

पार्क की देखरेख करने वाले एक पदाधिकारी ने कल यहां बताया कि इन 4000 वनस्पतियों में से करीब 115 चिकित्सकीय उपयोग में काम आने वाली जड़ी बूटियां हैं। उन्होंने बताया कि संरक्षित किये जा रहे पौधों में से अधिकांश ऐसे है जो लुप्तप्राय हो चले हैं। इन्हें बचाने के लिए जनसामान्य को भी आगे आने की जरूरत हैं।

एक लाख वर्ष पहले मांस खाते थे कंगारू

कैनबरा। आस्ट्रेलियाई महाद्वीप में लगभग एक लाख वर्ष पहले कंगारू मांसाहारी थे। महाद्वीप में दरियाई घोड़े के आकार के वोम्बेट और एमू पक्षी की तरह दिखने वाले डेढ़ टन वजन के बतख मजे से घूमते थे।

आस्ट्रेलिया के राष्ट्रीय संग्रहालय में अनुसंधान और विकास विभाग के प्रमुख माइक स्मिथ ने बताया कि ये जीव जंतु डायनासोर के खत्म होने के बाद आस्ट्रेलियाई धरती पर साथ-साथ रहते थे और आज के कंगारुओं और कोलास के पूर्वज थे। उन्होंने कहा कि आस्ट्रेलिया के सबसे चर्चित प्राचीन प्राणी मैगाफोना के संबंध में अभी रहस्य बरकरार है। श्री स्मिथ के अनुसार यह भी पता नहीं चल सका है कि ये प्राणी किस प्रकार पृथ्वी से लुप्त हो गए और किसने इन्हें समाप्त कर दिया। उन्होंने कहा कि नए सबूतों के आधार पर कहा जा सकता है कि इन पर मौसम में परिवर्तन का असर पड़ा होगा।

कामोत्तेजक दवाएं बनाने विदेशों में जा रहा है शेरों का मांस

भोपाल। क्या शेर के मांस व उसके गुप्तांग से बना सूप काम-शक्तिवर्धक होता है? क्या शेर की हड्डी और अन्य अवयवों का चूर्ण कामोत्तेजक दवाइयां बनाने के काम आता है? अभी तक देश के कई हिस्सों में नवजात बच्चों को शेर का मांस का कण घिसकर खिलाने की परम्परा थी ताकि वह साहसी बन सके।

लेकिन, विदेशों में शेर के अंगों व हड्डियों का उपयोग काम शक्तिवर्धक दवाइयां बनाने में किये जाने से शेरों की नस्ल खतरा पैदा हो गया है। इसके सर्वाधिक विपरीत प्रभाव 'टाइगर स्टेट' मध्यप्रदेश पर परिलक्षित हो रहा है, यहां वनराज शेर की संख्या में पिछले वर्षों में लगातार आ रही गिरावट पर नियंत्रण पाने के बावजूद उनकी आबादी का न बढ़ना, वन्य प्राणी संरक्षण में दिलचस्पी लेने वालों को व्यथित किये हुए है।

मध्यप्रदेश को 'टाइगर स्टेट' का दर्जा मिला हुआ हैं। कहना न होगा कि सफेद शेरों की नस्ल यहीं से पूरी दुनिया में पहुंची। राज्य शासन शेरों के संरक्षण व संवर्धन के लिए अनेक उपाय कर रही है। शेरों के शिकार पर सख्ती से रोक लगायी गयी है, लेकिन शेर की खाल, हड्डी और विशेष रूप से गुप्तांग की विदेशी बाजारों में बढ़ी मांग के मद्देनजर इस संभावना को भी नहीं नकारा जा सकता कि धन-लोलुप शिकारी चोरी-छूपे अब भी शेरों का शिकार कर रहे हैं और उन्हें सुनियोजित तरीके से विदेशी बाजारों में पहुंचाया जा रहा है।

अलवर को सूखामुक्त कर दिया है राजेन्द्र की बूंद-बूंद योजना ने

जयपुर। वह लोगों को साक्षर बनाने का सपना लेकर राजस्थान आये थे लेकिन इस रेगिस्तानी राज्य में उन्हें पानी की किल्लत इतनी अखरी कि बूंद-बूंद पानी बचाने का अभियान शुरू कर उन्होंने कई सूखाग्रस्त इलाकों की काया पलट दी।

इस वर्ष के मैगसेसे पुरस्कार के लिए चुने जाने पर राजेन्द्र सिंह के जल संरक्षण के इस कार्य को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिली है। इसी के साथ राजस्थान लगातार दो वर्ष से पुरस्कार प्राप्त करने वाला राज्य हो गया है। पिछले वर्ष सूचना के अधिकार के मुद्दे पर अरूणा राय को इस पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। इससे पहले डा. पी.के.सेठी. को भी 'जयपुर फुट' के लिए मैगसेसे पुरस्कार दिया जा चुका है। उ0.प्र0. के मेरठ जिले के ढोल गांव के निवासी राजेन्द्र सिंह 1981 में साक्षरता योजना 'राष्ट्रकर्मी' के कार्यकर्ता के रूप में राजस्थान आये थे। चार वर्ष साक्षरता का काम करने के बाद जब यह योजना समाप्त हो गयी तो वह अलवर जिलें की थानागाजी तहसील के भीकमपुर गांव आ गये। यहीं से उन्होंने सूखे की गम्भीरता को समझा तथा बूंद-बूंद पानी बचाने के अभियान में जुट गये। श्री सिंह के प्रयासों से जब अलवर जिले की अखरी नदी का प्रादुर्भाव हुआ तो राष्ट्रपति के.आर.नारायणन स्वयं इस चमत्कार को देखने पहुंचे। राष्ट्रपति ने 28 मार्च 2000 को श्री सिंह को 'डाउन टू अर्थ' पुरस्कार से सम्मानित भी किया।

श्री सिंह को जल संरक्षण के काम की ऐसी लगन लगी कि जनभागीदारी से उन्होंने लगभग साढ़े चार हजार छोटे बांध खड़े कर दिये। जल संरक्षण के इस काम से सूखाग्रस्त क्षेत्र के लोग अब खुशहाल नजर आते हैं। श्री सिंह का मानना है कि गाव की योजना के अनुसार जब काम किया जाता है तो लोग स्वयं मदद करने के लिए तत्पर रहते हैं। ऐसा काम स्थायी व लोगों के लिए लाभकारी होता है। श्री सिंह ने ये काम तरूण भारत संघ के तत्वाधान में शुरू किये।

श्री सिंह को इस काम में कभी रूकावट ही नहीं आयी। ऐसा नहीं है। शुरूआत में ही उनको पहाड़ों का दोहन करने वाले लोगों से सामना करना पडा। बड़े कानूनी दांव-पेंच और राजनीति के बीच आखिर जीत तरूणा भारत संघ की हुई। इधर तरूण भारत संघ के संरक्षक सिद्धराज ढड्ढा ने श्री सिंह को मिले मैगसेसे पुरस्कार मिलने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यह सम्मान श्री सिंह को व्यक्तिगत नही बल्कि उनके दस-पन्द्रह वर्ष के काम को दिया गया है। उन्होंने बताया कि पांच-सात सौ गांव ऐसे हैं जो बिल्कुल सूख चुके थे जहां संगठन ने जलसंरक्षण का काम हाथ में लेकर पानी की समस्या हल कर दी।

अब सरसों और नारियल के तेल से चलेंगे वाहन!

कोलकाता। अब वह दिन दूर नही जब रसोई में काम आने वाले सरसों और नारियल के तेल से सड़कों पर गाड़ियां दौड़ेंगी।

कोलकाता की एक टैक्सी यूनियन ने इस ईंधन का परीक्षण किया और पाया कि इससे प्रदूषण तो कम होता ही हैं साथ ही यह व्यावसायिक उपभोग के भी अनूकूल है।

इस हरित ईंधन के अविष्कारक एस.एम.घोष ने को बताया कि प्रदूषण की मार झेल रही दुनिया के लिये यह हरित ईंधन प्रदूषण से मुक्ति दिला सकती है।

पशु प्रेम जगाने का प्रयास

मुम्बई। बच्चों में पशुओं के प्रति प्रेम और दया भाव पैदा करने के लिए विशेष पाठ्यक्रम तैयार किया गया है ताकि उन्हें बेहतर नागरिक बनाया जा सके। मुम्बई के एक संगठन 'द शेयर द वल्ड फाउंडेशन' ने अमेरिकी संगठन 'पीपुल फार द एथिकल ट्रीटमेंट ऑफ एनिमल्स' (पेटा) के साथ मिलकर बच्चों में पशुप्रेम पैदा करने के लिए जल्दी ही एक नए पाठ्यक्रम सनागरिक कम्पैशनेट सिटिजन की शुरूआत करने की घोषण की है।

पेटा द्वारा जारी बयान के अनुसार विश्व के विभिन्न देशों में हज़ारों शिक्षक अपने छात्रों में जानवरों के प्रति व्याव्हारिक समझ पैदा करने के लिए इस पाठ्यक्रम को अपरा रहे है। यह पाठ्यक्रम अंग्रेजी और हिन्दी दोनों भाषाओं में उपलब्ध है। मनोवैज्ञानिक डा.माया कृपलानी का कहना है कि जो बच्चे जानकरों के खिलाफ क्रूर और हिंसात्मक व्यवहार करते है वे वयस्क होकर असामाजिक व्यक्ति बनते हैं। इसके विपरीत जिन बच्चों को जानवरों के प्रति सहानुभूतिपूर्वक व्यवहार करने के लिए प्रेरित किया जाता है वे अपेक्षाकृत ज्यादा जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक बनते हैं।

स्थानीय समाचार

अस्पताली कचरा निस्तारण का आसान तरीका यह भी

लखनऊ। अस्पताली कचरे का ढंग से निस्तारण हो सके इसका एक आसान तरीका खोजा है इलाहाबाद के मोतीलाल नेहरू मेडिकल कालेज के आर्थोपेडिक्स विभाग के संवानिवृत्त शिक्षक प्रो.आर.सी. गुप्ता ने गोबर और विषैले पौधों की मदद से इसका निस्तारण करना शुरू किया है। उनका यह कहना है कि यह विधि काफी सस्ती और टिकाऊ है।

उन्होंने बताया कि अस्पताली कचरे के निस्तारण के लिए एक गड्ढा खोदकर उसमें कचरे को डालकर गोबर और पानी की मिली हुयी 'स्लेरी' को उसमें डाल दिया जाता हैं। इसके बाद फिर अस्पताली कचरे की एक परत उस पर डाल दी जाती है। गोबर-पानी की 'स्लेरी' और अस्पताली कचरे को एक दूसरे के ऊपर तब तक डालते रहते है जब तब कि गड्ढा पूरी तरह भर न जाएं। इसके बाद सबसे ऊपर विषैले वृक्षों को बो दिया जाता है। वह कहते है कि इसमें मदार, धतूरा, वनतुलसी, और रेड़ी के बीज छिड़क दिये जाते हैं।

वह बताते हैं कि इस प्राक्रिया में मिट्टी के भीतर कचरे और मिट्टी के जीवाणुओं के बीच संघर्ष होता है। जिसमें मिट्टी में मौजूद शक्तिशाली जीवाणु कचरे के जीवाणु को मार देते हैं वह कहते हैं कि इस प्रक्रिया को केवल ऊसर भूमि पर ही किया जाना चाहिए। इससे होता यह है कि ऊसर भूमि के भीतर यह अस्पताली कचरा खाद बन जाता है और भूमि उर्वरा हो जात है। वह इसे एक शोध प्रयोग के रूप में इलाहाबाद और झांसी में इस्तेमाल भी कर रहे हैं।

उनका कहना है कि उनके प्रयोग में दिक्कत यह है कि उन्हें कोई भी अस्पताल कचरा तक देने को तैयार नहीं है। इससे उनका प्रयोग ढंग से नहीं हो पा रहा है। डा. गुप्ता कहते है कि हालांकि उनका शोध चल रहा है पर अभी इसे मान्यता नही मिली हैं।

बस हाल ही में भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग ने इसके लिए ग्यारह लाख रूपए खर्च स्वीकृत किये हैं। जिससे उनका शोध आगे बढ़ सके। वह चाहते हैं कि अस्पताल उनके इस शोध को मानें और उसका प्रयोग करें।

'तोते' उड़ गए, मगर बना नहीं पर्यावरण चेतना केन्द्र

चिड़ियाघर परिसर में पर्यावरणं चेतना केन्द्र बनने का मामला अधर में जा पहुंचा है। पर्यावरण विभाग के सुझाव पर चिड़ियाघर ने पांच माह पूर्व ही अपने 45 तोते उड़ा दिए, मगर अभी तक केन्द्र का शिलान्यास तक नहीं हो सका है।

मालूम हो कि पर्यावरण विभाग ने चिड़ियाघर में पर्यावरण चेतना केन्द्र बनाने की मंशा जाहिर की थी जिस पर मुख्य वन्य जीव प्रतिपालक ड़ा.आर.एल. सिंह ने पर्यावरण विभाग के इस प्रस्ताव को अनुमति के लिए शासन भेज दिया जहां से अनुमति मिलने के बाद निर्माण हेतु पर्यावरण विभाग को अनुमति प्रमाण पत्र दे दिया गया। चूंकी पर्यावरण विभाग ने मार्च तक पर्यावरण चेतना केन्द बनाने की बात कही थी।

इसलिए चिड़ियाघर प्रशासन ने उक्त स्थल पर बने कटघरे में रह रहे सभी 45 तोतों को उड़ा दिया। मगर केन्द्र बनना तो दूर यहां बने भवन को ही नहीं तोड़ा जा सका था।

जून के अन्तिम समय से भवन को तोड़ा जाना शुरू हुआ। अब जबकि भवन पूरी तरह से टूट चुका हैं, मगर निर्माण कार्य शुरू नहीं हो सका है।

वन संपदा की क्षतिपूर्ति उप्र के लिए गंभीर चुनौती

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के सामने गम्भीर चुनौती उत्तरांचल बनने के बाद प्रदेश को वन सम्पदा के मामले में हुई क्षति की भरपाई करने की है। इसके लिए एक कार्य योजना अनुमोदित की गई है लेकिन यह किस हद तक सफल होगी यह कह पाना मुशकिल है।

अविभाजित उत्तर प्रदेश में वन क्षेत्र 51647.74 किमी0 और वनावरण 34016 किमी0 था जो क्रमशः 17.54 और 11.54 प्रतिशत था।

उत्तरांचल बनने के बाद यह घटकर क्रमशः 7.05 और 4.46 प्रतिशत रह गया है। प्रदेश में वनों की मौजूदा स्थिति 1988 में घोषित राज्य वन नीति तथा 1998 में घोषित राज्य वन नीति के अनुरूप नहीं है।

बासी भोजन और सड़े-गले फलों के सेवन से हानि

—डा. एस. पी. लोहनी

जीवित रहने के लिए हवा व पानी के बाद सबसे अनिवार्य भोजन है। अच्छे स्वास्थ्य के लिए हमारे भोजन में जितना अनिवार्य पौष्टिक तत्वों का अधिक मात्रा में होना है, उतना ही अनिवार्य यह है कि जिस भोजन का हम सेवन करते हैं, वह साफ, स्वच्छ व सुरक्षित हो। दूषित भोजन के सेवन से लाभ की जगह हानि हो सकती है। भोजन को दूषित करते हैं, कई प्रकार के छोटे-छोटे जीव जोकि हमाने वातावरण में हर समय उपस्थित होते है। ये जीव या कीटाणु हवा में, पानी में, मल में, कीचड़ या फिर सडे-गले फलों और बासी खाद्य पदार्थों में पाए जाते हैं। जीवाणु कई प्रकार के होते हैं। ये जीवाणु दूध से बने पदार्थ, मांस, मछली, अण्डा, फलों, व सब्जियों को सबसे जल्दी प्रभावित करते हैं। खाद्य पदार्थों में प्रवेश करने के बाद ये जीवाणु बहुत तीव्र गति से अपनी संख्या में वृद्धि कर लेते हैं। कई जीवाणु वृद्धि के समय जहरीले तत्व उत्पन्न करते हैं, जोकि इन जीवाणुओं के नष्ट होने के बाद भी खाद्य पदार्थ में रह जाते हैं। इस प्रकार से दूषित भोजन को खाने से नाना प्रकार की बीमारियां हो जाती हैं।

बीमारी पैदा करने के लिए यह आवश्यक है कि ये जीवाणु पहलें खाद्य पदार्थ में प्रवेश करें, फिर उसमें प्रजनन से अपनी संख्या को बढ़ाएं तथा फिर उस खाद्य पदार्थ के जरिए हमारे शरीर में प्रवेश करें, तभी वे हमें बीमार कर सकते हैं। जब हम किसी ताले व स्वच्छ खाद्य पदार्थ को दूषित पानी में धोते हैं, या फि[illegible] उसे खुला छोड़ देते हैं तब ये जीवा[illegible] खाद्य पदार्थों में प्रवेश कर जाते हैं। मक्[illegible] व मच्छर जो पहले कभी मल मूत्र पर [illegible] सड़े-गले, दूषित खाद्य पदार्थ पर औ[illegible] फिर उस खुले खाद्य पदार्थ पर बैठते [illegible] तो उनके पैरों में चिनके मल के कणों [illegible] साथ ये जीवाणु [illegible] खाद्य पदार्थ में प्रवे[illegible] कर जाते हैं। फल [illegible] सब्जियों के ऊपर [illegible] परत उन्हें सुरक्षित रख[illegible] है। मगर जब यह परत फट जाती है त[illegible] जीवाणु अंदर [illegible] पौष्टिक तत्वों पर [illegible] सकते हैं तथा उस फ[illegible] व सब्जी को दूषित क[illegible] सकते हैं।

खाद्य पदार्थों [illegible] प्रवेश पाने के बाद इ[illegible] जीवाणुओं को अपनी वृद्धि के लिए कु[illegible] अनुकूल परिस्थितियों की आवश्यकता हो[illegible]

यदि कोई खाद्य पदार्थ दूषित हो जाता है तो उसका सेवन न करें। सूक्ष्म जीवाणु हमें दिखाई नहीं देते, मगर जब वे किसी खाद्य पदार्थ को दूषित करते हैं तब उसके रंग, स्वाद व कभी–कभी बनावट में परिवर्तन कर देते हैं जिससे कि हमें सूक्ष्म जीवाणुओं की उपस्थित का अंदेशा हो जाता है। फफूंद, से दूषित पदार्थ के ऊपर अधिकतर सफ़ेद, जालीदार, उभार दिखाई देता है। जैसा कि कभी न कभी आपने डबल रोटी के ऊपर देखा होगा। फफूंद गहरे रंग की, धुंए के रंग की, पाउडर जैसी या गीली व लेसदार भी हो सकती है।

है। इनकी सबसे पहली आवश्यकता हल्का गर्म तापमान है। अधिकांश जीवाणु 35 या 40 डिग्री सेल्सियस तापमान पर सबसे जल्दी पनपते हैं। बहुत अधिक तापमान पर अधिकांश जीवाणु मर जाते हैं। तापमान को कम करने से हम जीवाणुओं की वृद्धि को रोक सकते हैं या उनके बढने के गति धीमी कर सकते है। पर कम तापमान पर यह जीवाणु मरते नहीं हैं।

जीवाणुओं के द्वारा उत्पन्न जहरीले पदार्थ पर तापमान का कोई असर नहीं होता। इन जीवाणुओं की दूसरी आवश्यकता नमी होती है। उन खाद्य पदार्थों में इनकी वृद्धि बहुत तीव्र गति से होती है, जिन्में कि जल की मात्रा अधिक होती है। यदि वातावरण में नमी है तब भी ये जीवाणु खाद्य पदार्थों में फल-फूल सकते हैं। आपने देखा होगा कि बरसात के मौसम में हमारे खाद्य पदार्थ बहुत शीघ्रता से दूषित हो जाते हैं। आम तौर पर घरों मं हम जिन खाद्य पदार्थों को धूंप में सुखा लेते हैं, वे काफी दिनों तक दूषित नहीं होते हैं, उसका कारण है कि जल की कमी हो जाने से ये तत्व उन पदार्थों में अपनी वृद्धि नहीं कर पाते हैं।

अम्ल या खटाई के माध्यम से ये जीवाणु अपनी संख्या नहीं बढ़ा पातें। यही कारण है कि सिरके या अचार को ये जीवाणु दूषित नहीं कर पाते। इस सबसे अलावा कुछ जीवाणुओं को हवा की भी आवश्यकता होती है। मगर कई की कमी में ही पनपते है। इन जीवाणुओं के शरीर में अधिक संख्या होने पर बीमारी फ़ैलती है। खाद्य पदार्थों के जरिए या तो ये हमारी आंतों में पहुंचकर अपनी संख्या बढ़ा लेते हैं या फिर ये खाद्य पदार्थों में उनके सेवन से पहले ही अपनी संख्या में वृद्धि कर लेते हैं। क्योंकि खाद्य पदार्थ सबसे पहले हमारी आंतों के संपर्क में आते हैं, इसलिए दूषित भोजन में सबसे पहले पेट व आंतों की बीमारियां होती है, जिसे आत्रंशोध करते हैं। इसमें जी मितलाना, उल्टी आना, पेट में दर्द होना, दस्त व बुखार हो जाता है। बार-बार उल्टी तथा पतली दस्त होने से शरीर में नमक और पानी की कमी हो जाती है और अगर समय पर ऐसे मरीज को नमक और चीनी का घोल न दिया जाए तो मरीज की मृत्यु भी हो सकती है।

जीवाणु कई प्रकार के होते हैं तथा हर जीवाणु से उत्पन्न बीमारी में फर्क हो सकता है। बीमारी की भयावहता जीवाणुओं की संख्या या उससे उत्पन्न जहरीले तत्वों की मात्रा पर निर्भर करती है। कई व्यक्तियों में ये जीवाणुओं प्रवेश तो कर लेते हैं पर बीमारी पैदा नही करतें। ये लोग खुद तो स्वस्थ्य होते हैं पर अपने स्पश, थूक या मल के जरिए बीमारी दूसरों तक पहुंचा सकते हैं।

इस प्रकार से फैलने वाली एक बीमारी है खसरा। जैसा कि आप जानते हैं इस बीमारी में लम्बे समय तक बुखार रहता है और पेट में दर्द, उल्टी व दस्त हो सकते हैं। जीवाणुओं से उत्पन्न जहरीले तत्वों से जो बीमारी होती है वह शीघ्रता से आती है तथा उसके लवण अधिक खतरनाक होते है। ये जहरीले तत्व पेट और आंतों के अलावा दूसरे अंगों को भी प्रभावित करते हैं। सीलबन्द डिब्बों में, हवा की कमी में रखी हुई सब्जियां, फल, मांस, मछली इत्यादि को इसी प्रकार का एक जीवाणु दूषित करता है। उस भोजन के सेवन से खतरनाक बीमारी बोटलिस्म हो जाती है।

इसमें पहले उल्टी और दस्त होते हैं, फिर कमजोरी और अलस्य होता है, चक्कर आते हैं, देखने में धुंधलापन लगता है, गला सूखता है, निगलने में तकलीफ होती है फिर सांस लेने में तकलीफ व अन्त में मौत भी हो सकती है। कई प्रकार की बीमारियां अनाज में व दूसरे खाद पदार्थों में फफूंद लगने से होती हैं। अनाज में लगने वाली फफूंद से कई बार इतना जहरीला तत्व उत्पन्न होता है जो कि हमारे शरीर में कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी की संभावना बढ़ाता है। अब सवाल यह उठता है कि हम अपने खाद्य पदार्थों को दूषित होने से कैसे बचा सकते है। पहला, हम जीवाणुओं को खाद्य पदार्थों में प्रवेश करने से रोक सकते हैं। जीवाणु हमारे खाद्य पदार्थ को खेतों में, कटाई के समय, एक जगह से दूसरी जगह ले जाते समय, बिक्री के समय या फिर हमारी रसोई में दूषित कर सकते हैं। हम इतना तो कर ही सकते हैं कि अपनी रसोई में खाद्य पदार्थों को दूषित होने से बचा लें। इसके लिए भोजन पकाते समय सफाई का पूरा ध्यान रखना चाहिए।

दूसरा, हम जीवाणुओं की वृद्धि को रोक सकते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि खाद्य पदार्थों को ठंडक में रखिए, जैसे कि फ्रिज में, सेवन से पहले भोजन को अच्छी तरह पकाये व पकाने के बाद शाीघ्र ही भोजन को खा लें। उसे बासी न करें। कच्चे फल व सब्जियों को स्वच्छ पानी में अच्छी तरह धोकर खाएं।

तीसरा, यदि कोई खाद्य पदार्थ दूषित हो जाता है तो उसका सेवन न करें। सूक्ष्म जीवाणु हमें दिखाई नहीं देते, मगर जब वे किसी खाद्य पदार्थ को दूषित करते हैं तब उसके रंग, स्वाद व कभी-कभी बनावट में परिवर्तन कर देते हैं जिससे कि हमें सूक्ष्म जीवाणुओं की उपस्थित का अंदेशा हो जाता है। फफूंद, से दूषित पदार्थ के ऊपर अधिकतर सफेद, जालीदार, उभार दिखाई देता है। जैसा कि कभी न कभी आपने डबल रोटी के ऊपर देखा होगा।

फफूंद गहरे रंग की, धुंए के रंग की, पाउडर जैसी या गीली व लेसदार भी हो सकती है। तरल पदार्थों में चिनचिपापन आ जाने से हमें समझ जाना चाहिए कि वह दूषित हो चुका है। इसी प्रकार सब्जी और फलों की सतह गीली व लेसदार हो जाए, वे सड़ने या गलने लगें तो उन्हें फेंक देना चाहिए।

अगर हम अपने भोजन को दूषित होने से बचा सकें, सुरक्षित रख सकें तो हम अनेक प्रकार की बीमारियों से, जो कि जानलेवा भी हो सकती हैं, अपने आप को बचा सकते हैं।
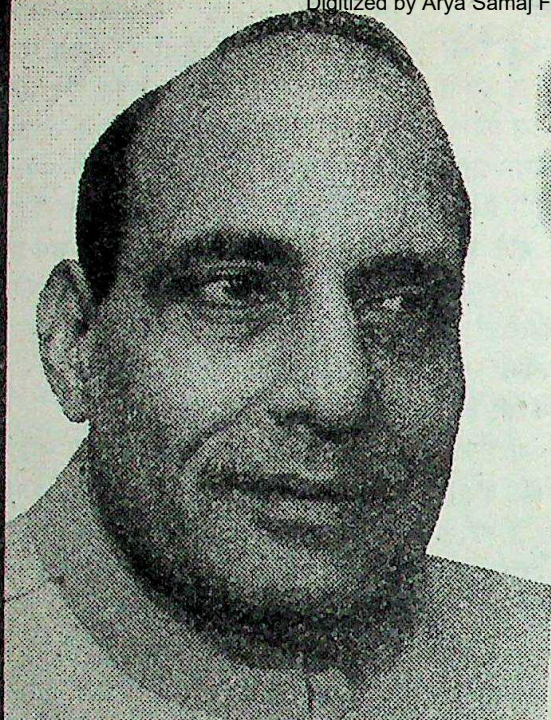
भारत मे

स्वाधीन भारत का जो सपना हमारे अमर शहीदों ने संजोया था, हमें अपनी पूरी कोशिश कर उसे पूरा करना है।

आजादी का सही मतलब है- सामाजिक समरसता, समानता और समृद्धि। आज़ादी की असली रोशनी हमें उन हर प्रदेशवासियों तक पहुँचानी है जो कोशिशों के बावजूद भी पिछड़ गये हैं। हमें सबसे पहले उन तक हाथ बढ़ाना है जो वास्तव में विकास के दौर में पीछे छूट गये हैं। – राजनाथ सिंह,

मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

आइये! संकल्प लें अपनी सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृति...ी का

...ती जय हो ...

हमारे प्रयास:
उत्तर प्रदेश की नयी तस्वीर

❖ *गांव और किसान की समृद्धि पर सर्वाधिक बल*

❖ किसानों को उनकी उपज का सही मूल्य दिलाने के लिये सरकार द्वारा धान, गेहूँ, गन्ना आदि की अभूतपूर्व खरीद। बाजार में उचित मूल्य बनाये रखने हेतु आलू के निर्यात की प्रभावी व्यवस्था।

❖ किसानों के गन्ना मूल्य का रिकार्ड भुगतान। गन्ना मूल्य में वृद्धि।

❖ पंचायतों को व्यापक प्रशासनिक एवं वित्तीय अधिकार प्रदत्त।

❖ प्रदेश के सभी गाँवों को पक्के सम्पर्क मार्गों से जोड़ने की त्वरित कार्यवाई।

❖ ***एक वर्ष में 13लाख से ज्यादा लोगों को स्वतः रोजगार की व्यवस्था।***

❖ गाँवों में पेयजल की समुचित व्यवस्था।

❖ सिंचाई व्यवस्था के लिये पचास प्रतिशत से ज्यादा नहरों की सफाई का कार्य पूरा।

❖ सुनियोजित प्रयासों के परिणाम स्वरूप उत्तर प्रदेश खाद्यान्न, चीनी और दुग्ध उत्पादन में राष्ट्र का अग्रणी प्रदेश।

❖ जनता के सभी वर्गों के साथ सरकार का सीधा संवाद:

❖ किसान व्यापारी, शिक्षक, श्रमिक, आदि वर्गों के साथ पंचायत में रूबरू बैठकर उनकी समस्याओं का त्वरित निस्तारण।

❖ आम आदमी की सुरक्षा अमन–चैन और कानून व्यवस्था का सर्वोच्च प्राथमिकता।

❖ अर्थ व्यवस्था में निरंतर सुधार तथा राजस्व घाटे से उबरने की सुनिश्चित व्यवस्था।

❖ आबकारी सुरक्षा, खनिज, वैकल्पिक ऊर्जा आदि शासकीय नीतियों में जन कल्याणकारी परिवर्तन।

❖ प्रदेश की औसत विकास दर में दो गुनी से ज्यादा वृद्धि। सही निवेश के फलस्वरूप प्रदेश की कृषि विकास दर तथा औद्योगिक विकास दर में भी अभूतपूर्व वृद्धि।

पारदर्शी शासन के नये पैमाने

❖ शासकीय कार्यों में पारदर्शिता सुनिश्चित करने की दिशा में पहल। भ्रष्टाचार मुक्त वातावरण बनाने का व्यापक अभियान।

❖ आम आदमी को शासकीय कार्यों में लगने वाले निर्धारित समय की जानकारी देते हुए उन्हें अपने कार्यों से सम्बन्धित अभिलेख देखने का अधिकार, देने की अभूतपूर्व पहल।

❖ व्यवस्थाओं में सुधार के परिणामस्वरूप प्रदेश के औद्योगिक विकास में अभूतपूर्व प्रगति उत्तर प्रदेश उत्तर भारत का सर्वाधिक निवेश आमंत्रित करने वाला राज्य।

❖ सूचना प्रौद्योगिकी में उत्तर प्रदेश को दो वर्ष में देश का सबसे महत्वपूर्ण प्रदेश बनाने की पहल। प्रदेश में 5 हजार कि०मी० आप्टिकल फाइबर लाइन के द्वारा 10 हजार सेवा केन्द्र स्थापित कर नागरिक सेवा प्रदान करने की योजना।

❖ ***स्कूलों में कम्प्यूटर स्थापित कर हिन्दी भाषा में कम्प्यूटर प्रशिक्षण की व्यवस्था।***

❖ प्रदेश के शैक्षिक वातावरण में सुचारू व्यवस्थायें। कक्षा 5 तक विद्यार्थियों को निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें तथा इण्टरमीडिएट स्तर तक के पाठ्यक्रमों में व्यापक सुधार, शिक्षकों की समस्याओं का निवारण व उन्हें सम्मानजनक वेतन (पंचम वेतन आयोग की सिफारिशों के अनुरूप) की पहल। विद्यालयों में पठन–पाठन के माहौल की वापसी प्रदेश की साक्षरता दर में 16 प्रतिशत दर तक की वृद्धि।

❖ प्रदेश में सामाजिक समरसता की पहल। पिछड़े दलित और वंचित वर्गों की पहचान कर उनके विकास के नये मार्ग प्रशस्त। सामाजिक न्याय और सामाजिक संगठन की नई नीति पर क्रियान्वयन।

❖ ऐतिहासिक रूप से 50 हजार से अधिक सरकारी नौकरियों में भर्ती की व्यवस्था।

❖ बेसहारा, वृद्धावस्था, अनुसूचित जाति आदि की पेंशनों की राशि में वृद्धि।

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रकाशित

...कृति...ी का, सभी वर्गों के मान, सम्मान तथा स्वाभिमान की रक्षा का।

"वेद पुराण का पारिस्थितिकीय संतुलन निर्माण में महत्व"

–शिवेन्द्र कुमार पांडे

लेखक कोल इन्डिया लिमिटेड के सेवानिवृत्त मुख्य महाप्रबंधक (गवेषणा) एक भूवैज्ञानिक हैं।

आज पर्यावरण प्रदूषण की समस्या इतनी विकराल रूप धारण कर चुकी है कि विश्व के किसी देश द्वारा इनको अनदेखा करना संभव नहीं है। यह अकेले देशों की या वहां के नागरिकों की समस्या न हो कर सारे विश्व में सुरक्षित जीवन–यापन की है, क्योंकि प्राकृति के नियम मानव द्वारा स्थापित देशों की सीमाओं तक ही सीमित नहीं है। इसी कारण पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रण एक अंतरराष्ट्रीय समस्या है और इसका समाधान भी इसी स्तर पर संभव है।

विश्व के फैसले असंतुलित पर्यावरण प्रदूषण के प्रभाव का ज्ञान मानव को वर्ष 1960 से होने लगा था। "जंगल बचाओं" और "पेड़ लगाओ" जैसे नारों का प्रचार होने लगा था। आरंभ के दिनों में राष्ट्रीय-उद्यान, सुरक्षित प्राणी जागरूकता वृद्धि के फलस्वरूप इस विषय का गंभीर अध्ययन होने लगा और 1980 के दशक में ध्रुवीय क्षेत्रों में ओजन-परत में छेद प्रगट होने व अन्य विनाशकारी प्रभावों की जानकारी ने खलबली मचा दी और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसकी रोकथाम के लिये विचार विमर्श होने लगा व नियम/कानून बनाये जाने लगे, ताकि परिस्थितिकी असंतुलन वृद्धि को कम कर संतुलित स्तर पर बनाये रखा जा सके।

किन्तु जिस पर्यावरण संरक्षण व संतुलन की बात पर्यावरण-विशेषज्ञों द्वारा आज उठाई जा रही है, वह हमारी भारतीय संस्कृति अनुराग एवं संरक्षण की चिन्तन धारा है। भारतीय ऋषि-मुनियों ने सम्पूर्ण प्राकृतिक उपलब्धियों-सूर्य, वायु, जल, पृथ्वी, वनस्पति, पशु-पक्षियों, को देवता स्वरूप माना है। पारिस्थिति की निर्माण व उसे संतुलित रखने में इन सभी के सहअस्तित्व की आवश्यकता के विधान को समझते हुये, इनके गुण-गान से प्राचीन भारतीय ग्रंथ भरे पड़े हैं। प्रत्येक भारतीय, इनसे किसी न किसी रूप में परिचित अवश्य है और उनका आदर करते हुये पालन भी करता है, भले ही उसके इस ज्ञान ने अशिक्षा के कारण अंधविश्वास का स्वरूप क्यों न ले लिया हो।

भारतीय प्राचीन ग्रंथों के रचनाकार अपनी आत्मचेतना द्वारा समस्त नियमों का दर्शन प्राप्त कर, असाधारण वैज्ञानिक प्रतिमा के धनी व दूरदर्शी व्यक्ति थे। जनकल्याण चेतना से ओत-प्रोत इन महान वैज्ञानिकों ने मानव जीवन को पृथ्वी में चिरकालीन बनाये रखने के उद्देश्य से वेद, पुराण, आदि ग्रंथों की रचना करी थी। अपने के आधार पर वे समझ चुके थे कि समाज में सभी व्यक्ति वैज्ञानिक नहीं बन सकते हैं, लेकिन उनके स्वयं के ज्ञान का लाभ सर्वसाधारण युग-युगान्तर तक उठाने में समर्थ रहे, के प्रयासों को उल्लिखित रचनाओं के माध्यम से अवश्य सफल बनाया जा सकता है। इसलिए उन्होंने धर्म को दैनिक आचरण की क्रिया बनाते हुए, जीवन के लिए, ऐसे सिद्धांत निर्धारित कर दिये थे कि पर्यावरण संरक्षण व प्रदूषण की समस्या उठ खड़े होने का कोई कारण ही शेष न रहे।

में हो जाता है, जिसतें से लगभग 29 प्रतिशत मृदा बह कर समुद्र में चली जाती है और 10 प्रतिशत जलाशयों की तह पर जमा हो जाती है, जिसके फलस्वरूप जलाशयों की भण्डार क्षमता 1-2 प्रतिशत प्रतिवर्ष घटती जा रही है। जलाशयों की गहरायी बनाये रखने में उल्लिखित क्रिया का महात्व समझा जा सकता है। आधुनिक जल-संभर-प्रबंध-कौशल (वाटर शेड मैनिजमेन्ट) के अंतरगत भू-जल भण्डारों के पुनः पूरण के लिये इस क्रिया को एक विधी के रूप में अपनाया गया है।

जहां तक वनस्पतियों के महत्व का प्रश्न है, भारतीय प्राचीन ग्रथ इनकी महिमा व गुणगान से भरे पड़े हैं। वृक्षों के प्रति ऐसा प्रेम शायद ही किसी देश की संस्कृति में हो, जहां वृक्षों को पुत्र से भी ऊंचा स्थान दिया गया है एवं उनकी पूजा की जाती है। श्वेताश्वारोपनिष्द में वृक्षों को साक्षात ब्रह्म के समान मानते हुए कहा गया है कि दस कुंजों के बराबर बावडी है, इस बावड़ियों के बराबर एक तालाब है, दस तालाबों के बराबर एक पुत्र एवं दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष है। "विष्णु धर्म सूत्र" में कहा गया है कि प्रत्येक जन्म में लगाये गये वृक्ष आगले जन्म में संतान के रूप में मिलते हैं। "वाराह पुराण" में उल्लेख मिलता है कि जो व्यक्ति पीपल, नीम या बरगद का एक, अनार या नारंगी के दो आम के पांच एवं लताओं के दस वृक्ष लगाता है, वह कभी नरक में नहीं जाता है। वनस्पतियों को संरक्षण प्रदान करने की अनिवार्यता व वृक्षारोपण के महत्व की अनुमति प्राप्त करने पर ही भारतीय मनीषियों ने सभी वर्ग के लोगों द्वारा इन कार्यक्रम में रूचि लेने व उन्हें प्रेरित करने के लिये इस प्रकार का प्रवद्यान, एक धार्मिक अनुष्ठान के रूप में प्रस्तुत किया था।

इन कार्यक्रमों को अधिक सशक्त बनाने के लिए "श्री स्कंद महापुराण" में कहा गया है कि "व्यर्थ में वृक्षों को काटने वाला मनुष्य असिपत्र (नरक के) वन में जाता है।" पीपल को भगवान विष्णु और वट को अत्यन्त संस्कार व ... कर उनके सरक्षण की स्थाई व्यवस्था को प्रोत्साहन दिया गया है। यह व्यवस्था कितनी सफल सिद्ध हुई है का अन्दाल इसी से लगाया जा सकता है कि भारतीय मानस में अधर्म के भय से इन वृक्षों को आज भी न काटने की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है और बहुत आवश्यक होने पर ही इन वृक्षों को विवश हो कर ही काटने की प्रथा विद्यमान है।

लेकिन इसके पीछे वैज्ञानिक वास्तविकता यह है कि ये वृक्ष दीर्घआयु, बडे छतरीघारी, औषघीय व प्रदूषण नियंत्रक गुणों से युक्त होने के साथ-साथ भारतीय पर्यावरण प्रतिवेश में स्थापित सबसे उपयुक्त वृक्ष हैं, चाहे वह मृदराामृदा-निर्माण / संरक्षण / जैविक उर्वरकता वृद्धि का कार्य हो या पृथ्वी के सभी जीवन स्वरूपों के लिये सही वायु-मिश्रर्ण वृद्धि के साथ उसे स्वच्छ बनाये रखना हो अथवा भूजल संग्रहण में वृद्धि का कार्य क्यों न हो। फिर इनकी छांया मात्र में बैठने से, पशु-पक्षियों समेत हम सभी को जो सकून मिलता है, उसका मूल्यांकन, असंभव है।

स्कंद पुराण, विष्णु घर्मसूत्र, आदि में वृक्ष को काटने को अपराध माना गया है ओर उसके लिये सजा द्वारा दण्ड का विधान बनाया गया है। ठीक इसी रूप के नियम व कानून अब विश्व के कई, देशों में बनाये जा चुके हैं जिनमें भारत भी शामिल है।

भारतीय चिकित्सा पद्धति वनस्पतियों पर आधारित है, जिसके अनुसार विश्व में पायी जाने वाली वनस्पतियों को किसी न किसी प्रकार के औषध के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। वनस्पतियों के इस महात्व को समझने के लिये निम्नलिखित उदाहरण यथेष्ट है-

" एक दफा आयार्य चरक (आयुर्वेद के जनक) ने अपने शिष्यों को एक मास का समय देकर उन वनस्पतियों को उखाड़ लाने का आदेश दिया जो जंगल में बेकार खड़ी लकडियां इकठ्ठी की, तो कोई जहरीले पेड़-पौधे उखाड़ लाया। सिर्फ एक शिष्य ही खाली हाथ लौटा और बताया कि समूचे जंगल में उसे कोई वनस्पति बेकार नहीं दिखी। आचार्य चरक ने उस शिष्य को उत्तीर्ण घोषित करते हुए कहा- सचमुच दुनिया में ऐसी कोई वनस्पति नहीं है जो ओषधि न हो। गुरुजी के उत्तर से शेष सभी शिष्य अपनी मूर्खता पर रो पड़े।"

इसी प्रकार पशु-पक्षियों की सुरक्षा के लिये भी भारतीय प्राचीन ग्रंथों में अनेकों प्रवधान को वर्णन मिलता है और उन्हें भी पूजनीय स्थान पर आसीन कर उनके संरक्षण की व्यवस्था को कारगर बनाया गया है। इसके अंतर्गत गाय, बैल को पूजनीय माना गया है और छोटे-बड़े कई पशु-पक्षियों (चूहा, उल्लू, सांप, कछुआ, हंस, चीता, बांघ, शेर, हाथी, आदि) को देवी-देवताओं के वाहन बनाकर श्रेष्ठता प्रदान की गई है ताकि समाज का प्रत्येक व्यक्ति सम्मान के साथ उनके संरक्षण कार्यक्रामों में हाथ-बटाते रहे।

भारतीय प्राचीन ग्रंथों की चर्चा से यह स्पष्ठ हो जाता है कि इनके रचनाकार पृथ्वी में सुरक्षित जीवन यापन के लिये आवश्यक सूक्ष्म से सूक्ष्म गूण-तत्वों के वैज्ञानिक परिचय की परिकाष्ठा प्राप्त कर चुका थे। अपनी रचनाओं को लिखने के पूर्व उन्होंने प्रकृति से सम्पूण्र कार्यकलापों का अध्ययन कर यह जान लिया था कि "मानव की सम्पत्ति पृथ्वी नहीं है, लेकिन पृथ्वी की सम्पत्ति मानव आवश्य है। जैसे, एक परिवार के सदस्य खून के रिश्ते से आपस में जुड़े रहते हैं, ठीक उसी प्रकार पृथ्वी में प्राप्य सभी जीवन स्वरूप एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

पृथ्वी में, कुछ भी घटित होने का प्रभाव, उसकी सभी संतानों (मानव भी शामिल) को भुगतना पड़ता है। मानव, पृथ्वी के जीवन पुंजों का श्रृष्टि-करता भी नहीं है-मात्र उसकी एक कड़ी है। उसके द्वारा जीवन-पुजों के साथ किसी भी छेड़-छांड़ का सीधा प्रभाव, स्वयं उसके ऊपर भी परिलक्षित होता है।"

दुर्लभ पक्षियों की 78 प्रजातियां विलुप्त होने के कगार पर

अलीगढ। संरक्षण के अभाव और शिकारियों की गोलियों का निशाना बनने के कारण वन्य जीवों की दुर्लभ प्रजातियां लुप्त हो रही है। मौजूदा वक्त में पक्षियों की 78 प्रजातियां विलुप्त होने के कगार पर है, जिसमें से लगभग सात प्रजातियां तो बिलकुल विलुप्त प्राय सी हो गयी है।

हर चार में से एक चिड़िया को खत्म किये जाने का क्रम जारी है। निकट के पटना पक्षी बिहार और शेखा झील सरीखे रमणीक स्थलों पर भी अब क्रेन, साइबेरियन क्रेन, और 'खड़ मोर' सरीखे पक्षी नहीं आते। इन सबकी दौड़ सिर्फ घना पक्षी बिहार, भरतपुर तक सीमित होकर रह गयी है। ठण्ड के दिनों में साइबोरिया और सेंट्रल एरिया से आने वाली कमी के कारण वन्य जीव संरक्षण से जुड़े लोग चिंतित है, लेकिन जिला पुलिस प्रशासन व वन विभाग के अधिकारी अभी तक इस प्रकार की चिंता से मुक्त है।

इन पक्षियों और उनके संरक्षण से सम्बंधित अध्ययन का काम बोम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी नाम एन.जी.ओ. द्वारा वर्ल्ड लाइफ इंटरनेशनल के साथ मिलकर किया जा रहा है। ये संस्थाएं देश भर के वन्य जीवो पर आधारित बहुत सारे प्रोजेक्टों को चला रही है। इन संस्थाओं द्वारा इस वक्त संयुक्त रूप से 'इन्पोर्टटेंट वर्ल्ड एरियास प्रोग्राम' के तहत इस प्रकार के अध्ययन को किया जा रहा है। इस प्रोग्राम से जुडें इन्पोर्टटेंट वर्ल्ड एरिया आफीसर जफर-उल-इस्लाम का कहना है कि भारत में इस वक्त करीब 78 पक्षी ऐसे है, जिन्हें संरक्षण नहीं दिया गया तो आने वाले पांच से पचास सालों के बीच लुप्त हो जायेंगी।

उनके अनुसार करीब एक साल पहले शुरू किये गये इस अध्ययन के तहत देश में करीब एक हजार ऐसी साइडें चिनहित की गयी है, जहां इस प्रकार के पक्षी आते है तो है, लेकिन संरक्षण के अभाव में लुप्त हो रहे है। इन साइडों में यहां की शेखा झील,पटना और बिहार के और आंवल खंडा भी शामिल है। इस संबंध में भारत में 'इण्यिान कन्जर्वेशन नेटवर्क' भी तैयार किया गया है। इस नेंटवर्क के तहत तीन सौ चार सौ सदस्य पक्षियों के संरक्षण प भारत में काम कर रहे है।

वैसे इस अध्ययन में यह बात साफ हो गयी है कि इस देश में 'पिंक डेडिट डग' यानी 'गुलाबी' सिर वाली बतख' गायब हो चुकी है। यह बतख पिछले सौ साल से इस देश के तराई क्षेत्रों में पायी जाती रही, लेकिन अब यह दिखायी नहीं देती। इस प्रकार 'हिमालय या माउंट कोपल' भी अब लुप्त हो चुकी है, जबकि इसे पिछले चालीस-पचास सालों में भी ज्यादा वक्त से हिमालय क्षेत्र में देखा जाता था। इसी क्रम में 'जंगली उल्लू' तो काफी पहले ही खत्म हो चुका है, लेकिन इसे सन् 1997 में महाराष्ट्र में देखा गया। इसी प्रकार काफी समय में विलुप्त 'डबल बेंडेड कोरसर' को इसी सोसायटी ने सन् 1986 में आंध्र प्रदेश में खोज निकाला था। हालांकि इस सोसायटी ने खत्म होने वाले पक्षियों का ब्यौरा देने के लिए 'थ्रिटिन वर्ड आफ एशिया' नामक पुस्तक का प्रकाशन भी किया है।

अब इस प्रकार के पक्षियों को बचाने के लिए उन्हें हर स्तर से संरक्षण दिया जाना आवश्यक है। क्योंकि इसी संरक्षण के अभाव में उत्तर प्रदेश के खेतों में पाये जाने वाली 'सारस' अब खत्म होती जा रही है।

वैज्ञानिकों के अनुसार शार्क की ३७० प्रजातियों में सबसे खतरनाक और डरावनी प्रजाति 'व्हाइट शार्क' है। इस फोटो में व्हाइट शार्क पानी की सतह पर सांस ले रहा है जिससे उसके नुकीले दांत दीख रहे हैं।
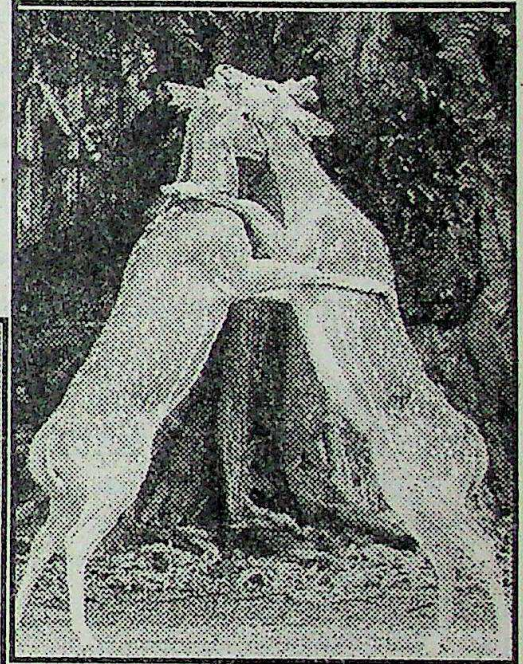
आपस में झगड़ते हिरन

बर्फ के टुकड़े खाता ध्रुवीय भालू
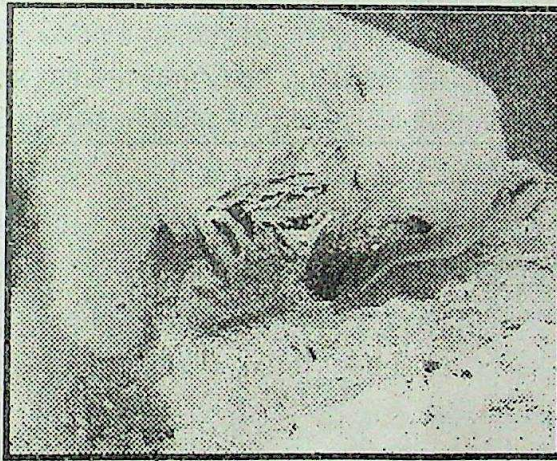
गर्मी से बचने के लिए पानी में छलांग लगाते जंगली बंदर
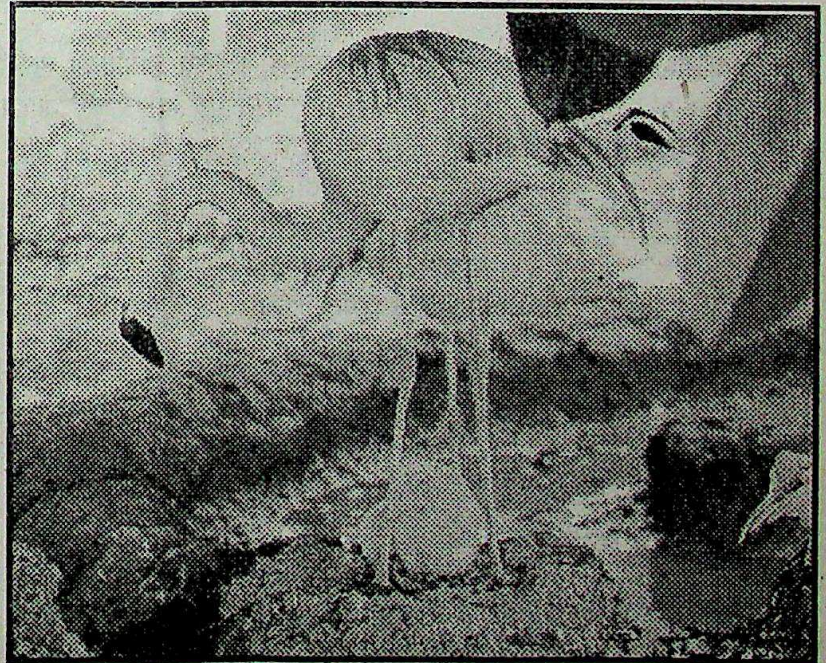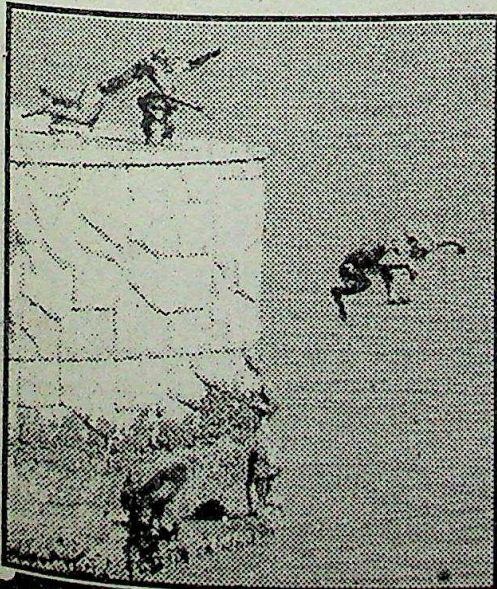
फ्लेमिंगों का बच्चा अपनी मां के साथ

पर्यावरण चेतना

हिन्दी मासिक पत्रिका

दिल्ली प्रदेश एवं हिमाचल प्रदेश के शिक्षा विभाग तथा उत्तर प्रदेश शासन के वन विभाग, स्थानीय निकाय, शिक्षा विभाग, ग्राम्य विकास एवं पंचायत राज विभाग द्वारा अनुमोदित

पर्यावरण संचेतना के प्रसार के क्षेत्र में प्रयासरत राष्ट्र भाषा हिन्दी की एकमात्र पत्रिका

विश्व प्रकृति की धरोहर एवं वसुन्धरा के अनुपम वरदानों की रक्षा हेतु
पर्यावरण संरक्षण के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के महायज्ञ में आपकी सहभागिता अपेक्षित है।

"पृथ्वी मां का ऋण लौटायें, विश्व प्रदूषण मुक्त बनायें"

❁ मुख्य कार्यालय : पर्यावरण चेतना परिसर, पिकनिक स्पाट रोड, इंदिरा नगर, लखनऊ, फोन-359897
❁ रजिस्टर्ड कार्यालय : बी-1/12, सेक्टर-डी1, कानपुर रोड योजना, लखनऊ, फोन-436767
❁ सम्पादकीय कार्यालय : सी-5, दिलकुशा कालोनी, लखनऊ, फोन-482288

पत्रिका का प्रकाशन, मई 1994 से निरंतर हो रहा है। पूरे भारतवर्ष में इसका प्रसार है। स्वतंत्र प्रसार के साथ ही दिल्ली एवं हिमाचल प्रदेश के वन विभाग, ग्राम्य विकास विभाग, शिक्षा विभाग, पंचायती राज विभाग, प्रदेश के स्थानीय निकाय एवं अन्य विभागों द्वारा यह नियमित रूप से मंगायी जा रही है। आपसे अनुरोध है कि आप स्वयं/संस्थान/विभाग/पुस्तकालय हेतु "पर्यावरण चेतना" पत्रिका की सदस्यता ग्रहण करने की कृपा करें एवं पर्यावरण संरक्षण के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के इस महायज्ञ में अपना योगदान करें।

पत्रांक : .... दिनांक : ....

सदस्यता पत्रक

सेवा में,
प्रसार व्यवस्थापक
पर्यावरण चेतना हिन्दी मासिक
सी-5, दिलकुशा कालोनी
लखनऊ (उ0प्र0)

महोदय,

कृपया अपने कार्यालय/संस्थान/पुस्तकालय के लिये "पर्यावरण चेतना" हिन्दी मासिक की सदस्यता हेतु चेक/ड्राफ्ट (प्रधान संपादक, पर्यावरण चेतना, लखनऊ के पक्ष में देय हो) आपूर्ति आदेश के साथ संलग्न कर भेजने का कष्ट करें।

पर्यावरण चेतना पत्रिका की शुल्क दरें :-

1.	आजीवन सदस्यता शुल्क	रूपये 5000/-
2.	त्रिवार्षिक सदस्यता शुल्क	रूपये 750/-
3.	द्विवार्षिक सदस्यता शुल्क	रूपये 525/-
4.	वार्षिक सदस्यता शुल्क	रूपये 275/-

नोट : कृपया सदस्यता अवधि अंकित करने का कष्ट करें।

भवदीय

पत्रिका प्रेषण हेतु पता
....
....
....

हस्ताक्षर..............................
नाम व पद..............................
जनपद..............................
कार्यालय..............................

पर्यावरण चेतना एक पत्रिका ही नहीं एक अभियान भी है
आइये! हम सब मिलकर इसे सफल बनायें।

पानी के लिए हाहाकार

आज देश को पानी की भीषण समस्या का सामना करना पड रहा है। इसकी सबसे बड़ी वजह है कि देश में जल प्रबंधन पर ईमानदारी से ध्यान नहीं दिया गया। प्राकृतिक तरीके से देश में होने वाले जल प्रबंधन पर जब आधुनिक विकास ने आघात पहुंचाया तब विषय सिथितिया उत्पन्न हो गयीं कि पानी के लिए देशभर में हाहाकार मचने लगा। चारों तरफ पानी के सौ से भी अधिक तालाबों में घिरे होने के कारण जिस शहर का नाम जलगांव रखा गया था, आज उसके तालाबों की संख्या मात्र 7 रह गयी है जिसमें से 3 तालाब तो गंदे पानी का तालाब बन चुके हैं और शेष 4 तालाबों की सतह इतनी ऊंची हो गयी है कि इनका पानी मार्च-अप्रैल से ही सूख जाता है लिहाजा पिछले 6-7 सालों से इस तालाब में अप्रैल से जून तक कूड़ा-करकट डाला जाने लगा है और हालात यहां तक पहुंच गये हैं कि आज जलगांव में 20 किलोमीटर के दायरे में वास्तविक तालाब नाम की कोई चीज ही नहीं है। इसी प्रकार देश के लगभग 300 शहरों पर किये गये एक सर्वेक्षण में यह बात खुलकर सामने आयी थी कि देश में तालाबों की कमी से इन शहरों में जहां पेयजल को मुहैया कराना मुश्किल है वहीं इन शहरों में भूमिगत जलश्रोत भी तेजी से सूखते जा रहे हैं।

जल संरक्षण के लिए जन-जागरूकता गोष्ठयों-सेमिनारों का उपयोग, नदियों को आपस में जोड़ा जाना और जनसंख्या के नियन्त्रण उपाय है, अन्यथा 2025 तक पानी का पानी भी नहीं मिलेगा। देश की वर्षा से 4000 अरब घनमीटर पानी मिलता है जिसका 75 प्रतिशत पानी बेकार चला जाता है। जलबोर्ड 215 अरब घनमीटर वर्षाजल को कृत्रिम तरीके से संरक्षित करने में सक्षम है। पानी का किफायती उपयोग तो जरूरी है मगर ज्यादा जरूरी है बड़े-बड़े बांधों के जरिये जल जमाव की व्यवस्था को लागू किया जाना हम बहते हुए 178 अरब घनमीटर का इस्तेमाल कर सकते हैं मगर मात्र 67 अरब घनमीटर का ही प्रयोग कर रहे हैं जमीन के नीचे का 60 अरब घनमीटर पानी भी उपयोग में लाया जाना चाहिए। जलशयों के अभाव का सर्वाधिक असर बिहार में है। यदि नेपाल सरकार से तालमेल बैठाकर चला जाए तो जलाशयों के लिए नेपाल सर्वाधिक उपयुक्त है।

प्राचीनकाल में सभ्यता का विकास सदैव नदियों के किनारों ही होता रहा है और इसके पीछे का मूल कारण पानी रहा है। हर नदी आज से 25-30 वर्ष पूर्व तक अपने उभय तटबंधो से अपने प्रवाह मार्ग में हजारों छोटे-छोटे तालाबों-बरसाती नालों से जुड़ी रही हैं और प्रायः इनकी गहरायी आम गहरायी की अपेक्षा संगम स्थल पर कम होती थी जिससे देशभर की करीब 200 छोट-बड़ी नदियों से कम से कम 27 लाख बरसाती नाले और इससे कई गुना बरसाती तालाब जुड़े होते थे।

फलस्वरूप इन नदियों का जलस्तर गिरने पर भी वर्षा का संचित जल उससें जुडे तालाबों और नहरों में एकत्र रहता था जिससे भूगर्भीय जल श्रोतों के हमेशा रिचार्ज होने की संभावना बनी रहती थी। शहरों के बढ़ने के साथ-साथ इन तालाबों-नदियों-नहरो और नालों का अस्तित्व संकट में आ गया है। पिछले 25 वर्षों में लगभग 3/4 तालाब और 2/3 नाले और बरसाती नदियों की लम्बाई घटी, गहरायी घाटी जिसके फलस्वरूप भूगर्भीय जल श्रोतों की रिचार्जिंग की सम्भावनाएं भी घटीं। आज देश की वर्षा का 75 से 85प्रतिशत पानी बह जाता जबकि पहले वर्षा का 65प्रतिशत ही बन पाता था। आबादी बढ़ने के साथ वर्षा का 65प्रतिशत से अधिक जल रोकने की व्यवस्था होना जरूरी हो गया है जबकि मात्र 15-20प्रतिशत जल बह जाता है उसी के कारण जरा सी भी विपरीत परिस्थिति के आते ही उस भू भाग को पेयजल की भीषण समस्या का सामान करना पड़ता है।

नदियों का प्रदूषण बढ़ने से और पेयजल के लिए पूरी तरह नदियों की अश्रितता घटने से भूगर्भ-जल श्रोतों का दोहन बढ़कर शोषण की स्थिति तक पहुंच गया है जिसे भूगर्भीय जल के तीसरे स्तर के जल का अवशोषण होने लगा है। फलस्वरूप आम आदमी को पीने का पानी भी नहीं मिल पा रहा है। प्राकृतिक स्वराज्य पर अर्थिक सम्पन्नता और नीतियों तथा प्रबंधन की विपन्नता के परिणामस्वरूप पानी की समस्या की विकराल रूप हमारे सामने प्रकट हो रहा है।

शहरों के विस्तारीकरण के दौर में पिछले 50 वर्षों से ही देश में लगभग 40 लाख बड़े और एक करोड़ उन्नीस लाख छोटे-छोटे तालाब पाट दिये गये। इस कारण शहरों में जलजमाव और वर्षाकाल में बाढ़ की समस्या होती है। इसी प्रकार इन पट गये तालाबों से

प्रतिवर्ष होने वाली भूगर्भीय जल के कृत्रिम रिचार्जिंग का कार्य ठप हो गया है। भूगर्भ जल के गिरते स्तर के लिए उसका अंधाधुंध दोहन और वर्षा के जल का बह जाना जिम्मेदार है। नदियों का स्तर 5से 12 फीट ऊंचा होने से 70प्रतिशत नदियां मार्च-अप्रैल के महीनों में ही सूख जाती है। बरसाती नदियों को खोदकर उनकी गहरायी बढायी जानी चाहिए। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक लगभग 7 हजार किलोमीटर लम्बी नदियों को इस सूखे का सामना करना पड़ा है। यदि इन नदियों की गहरायी 12 फीट तक बढ़ायी जाएगी तो कम से कम इसमें इतना पानी एकत्र होगा कि देश की एक वर्ष की जल आवश्यकता को संचित किया जा सके और इससे 84 हजार वर्ग किलोमीटर जमीन में भूगर्भ जल के स्तर में आगामी 5 वर्षों में बढ़ोत्तरी होगी। इसी प्रकार अन्य नदियों को गहरा किया जाए और हर 5-10 किलोमीटर पर नदियों में वर्षाजल को भण्डारित किये जाने के छोटे-छोटे बांध बनाकर उपाय किये जाए तो वृषा का जल अधिकाधिक उपयोग में लाया जा सकता है। शोध के अनुसार पानी को यथासंभव प्राकृतिक रूप से ही संचित किया जाना चाहिए। जिन स्थानों पर जलाशय का निर्माण किया जाना अपेक्षित है उन स्थानों में खुदाई में पैसा खर्च करने के बजाय उन स्थानों का पट्टा ईंट निर्माताओं को दिया जाए। ईंट निर्माताओं, को यदि 2 वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र ईंट बनाने हेतु दिया जाए तो 2 से 5 वर्षों के भीतर 3 ईंटों का भट्ठों से किसी भी बरसाती नदी को 15 से 20 फीट गहरा और नदी के किनारों को 3 से 6 फीट चौड़ा और ऊंची कटान का बनाया जा सकता है। जिससे कि भू-क्षरण भी रूकेगा और भूगर्भ जल स्तर के साथ-साथ बाढ़ के खतरों को भी रोका जा सकेगा।

नदियों का प्रदूषण बढ़ने से और पेयजल के लिए पूरी तरह नदियों की अश्रितता घटने से भूगर्भ–जल श्रोतों का दोहन बढ़कर शोषण की स्थिति तक पहुंच गया है जिसे भूगर्भीय जल के तीसरे स्तर के जल का अवशोषण होने लगा है। फलस्वरूप आम आदमी को पीने का पानी भी नहीं मिल पा रहा है। प्राकृतिक स्वराज्य पर अर्थिक सम्पन्नता और नीतियों तथा प्रबंधन की विपन्नता के परिणामस्वरूप पानी की समस्या की विकराल रूप हमारे सामने प्रकट हो रहा है।

यदि नदियों को 10-15 फीट गहरा तथा किनारों को 3-6 फुट तक कटावदार उठा हुआ बनाया जाए तो बाढ़ की समस्या का 50-60प्रतिशत तक समाधान निकाला जा सकता है इसी प्रकार यदि औसतन 5 किलोमीटर के अन्तराल पर सामान्य जल स्तर से 5-15 फीट ऊंचाई की बंधी बनायी जाए तो गर्मी के मौसम में स्थान-स्थान पर नदियों में तालाबनुमा जल संग्रहण संभव हो सकेगा और साथ-साथ भूगर्भीय जलस्तर को ऊंचा उठाने के कृत्रिम उपायों के रूप में भी यह कारगर हो सकेगा।

देश में जल प्रबंधन की सुदीर्ध चिंतन से जनित दीर्घकालिक योजनाओं को यथार्थ में लाने का प्रयास नहीं किया गया तो आने वाले 10 वर्षों में भारत को लगातार सूखा और बाढ़ के खतरों का सामना करने के लिए विवश होना पड़ेगा और इसके विपरीत यदि बरसाती नदियों का उचित प्रबंधन और बंधियों के निर्माण की दिशा में प्रवेश किये गये तो यही आने वाले 10 वर्ष भारत को सूखा और बाढ़ से बचने में मार्गदर्शन-सहायता सिद्ध होगें।

बस आवश्यकता इस बात की है कि उपलब्ध स्थानीय संसाधनों के बल पर आधुनिकता की दौड़ से हटकर देश की ऐतिहासिक वास्तविकताओं को स्वीकार करते हुए भविष्य के लिए भारत को तैयार किया जाए जिससे वह आत्मनिर्भर, सक्षम और सशक्त बन सके।

वनस्पतियों का अद्भुत संसार

बहु उपयोगी पुदीना

–नोतन लाल
रिटायर्ड लेक्चरर,
डी–१२०६, डबुआ कालोनी,
फरीदाबाद (हरियाणा)

पुदीना या पोदीना जिसे अंग्रजी में "मिन्ट" कहा जाता है। बहुत ही स्वादिष्ट, सुपाच्य, पुष्टिदायक एवं त्रिदोषनाशक होता है। आयुर्वेदानुसार यह रूचिकर, वीर्यवर्द्धक, वायु-कफ नाशक, तृप्ति दायक, मलमूत्र की रोकथाम करने वाला तथा भूख में वृद्धि करने वाला है। खाँसी, अजारग, तृष्णा, दाह अपच, अतिसार, संग्रहणी, हैजा, जीर्ण ज्वर में भी यह रामबाण औषधी का कार्य करता है। यह कृमिनाशक तथा अग्नि प्रदपिक होता है। प्राचीन यूनानी चिकित्सकों ने भी इसका प्रयोग करके इसको अत्यन्त लाभकारी एवं उपयोगी बताया है। घर में चटनी बनाने में इसका प्रयोग बहुतायत से होता है। इसे दाल, सब्जी, दही, रायता, तथा आलू के पराठों में डाला जाता है जिससे इसके स्वाद में बढोत्तरी हो जाती है। इसके उपलब्ध न होने की स्थिति में इसकों सुखा कर रख लेने पर भी इसका प्रयोग बखूबी से किया जा सकता है।

औषधीय गुण व उपयोग

* पोदीने के रस में चीनी मिलाकर पीने से हिचकियों में आराम मिलता है।

* पुदीने की ताली पत्तियां चबाकर खाने से तथा पुदीने के पत्तों का रस पानी में मिलाकर कुल्ला करने से मुंह की दुर्गन्ध समाप्त हो जाती है।

* पोदीने का रस क्षुदावर्धक होता है। पुदीने की ताजी पत्तियों का रस चम्मच भर नीबू के रस और शहद के साथ दिन में दो तीन बार देने से बदहजमी, पितदोष, पेट के वायु विकार में रामबाण औषधी का काम करती है।

* भाषकर्ताओं, गायको और बहसकर्ताओं को चाहिए कि वे पोदीने का काढा बनाकर नमक डालकर गरारे करे ताकि उनके गले साफ रह सके।

* पोदीने के सेवन से पेशाब खुलकर आता है तथा महिलाओं के मासिक धर्म की अनियमितता दूर करने में सहायक होता है।

* पोदीना सौंदर्यवर्द्धक भी है। मुंह पर ताजे पोदीने का रस लगाने से मुहांसे दूर हो जाते है।

* जहरीले कीडे, मच्छर, बिच्छू, ततैया काटने पर प्राथमिक उपचार के रूप में पोदीने के पत्तों को पीसकर उसका लेप लगाने से आराम मिलता है।

* पुदीने के प्रयोग से टांसिल्स में भी लाभ पहुंचाता है और गले में खराबी आने में सहायक सिद्ध होता है।

तुलसी पर भी बहुराष्ट्रीय कंपनियों की नजर

जबलपुर। तुलसी में विद्यमान औषधीय गुण के कारण विभिन्न प्रकार की दवाइयां बनाने में उपयोग किया जाता ही है, परन्तु अब बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा अपने उत्पादों के निमार्ण में उपयोग करने के कारण इसकी मांग काफी बढ़ गयी है। ऐसे में थोड़ा सा धन लगाकर इसकी खेती से काफी धन अर्जित किया जा सकता है।

स्थानीय जवाहर लाल कृषि विश्वविद्यालय के औषधीय विभाग के विभागाध्यक्ष डा. जे पी तिवारी ने बताया कि प्रत्येक तुलसी में पये जाने वाले अवसव एवं रसायनिक तत्व अलग-अलग प्रकृति के होते है। इसलिए उनका उपयोग भिन्न-भिन्न उत्पादों के निर्माण में होता है। उन्होंने बताया कि आज तुलसी का उपयोग बड़ी-बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपरियां अपने यहां तुलसी का उपयोग टूथ पेस्ट, माउथवाश, तथा डेटल क्रीम आदि जैसे उत्पादों के निर्माण में कर रही है। यहां तक कि तुलसी के तेल को खाद्य पदार्थो को सुवासित करने में भी प्रयुक्त किया जाता है। तुलसी का औषधियों के निर्माण में अत्याधिक उपयोग होने के करण प्राकृतिक रूप से उतनी उपलब्ध नहीं हो पाती जितनी मात्रा में औषधि निर्माता कंपनियों की आवश्यकता है।

डा. तिवारी ने बताया कि तुलसी की विभिन्न किस्मों में से श्यामा तुलसी किस्म की विशेषता अर्थववेद में बतायी गयी है कि यह मानव के स्वरूप को बनाती है। इसमें वह गुण निहित होता है जो शरीर के ऊपर के सफेद दाग तथा अन्य प्रकार के त्वचा संबंधी रोगो को नष्ट वाली अत्युत्तम औषधि है। उन्होंने बताया कि सिर का भारीपन होना, माथे का दर्द, खांसी स्वांस, मिरगी जैसे रोग तुलसी से ठीक किया जा सकता है।

जन आकांक्षाओं के अनुरूप परिवर्तन की पहल

भौगोलिक सामाजिक परिस्थितियों तथा कुछ अन्य कारणों से देवीपाटन मण्डल के इस इलाके में आजादी के 54 वर्षों बाद भी विकास की जिस गति की अपेक्षा थी वह हासिल नहीं हो सकी। शासकीय स्तर से शुरू किये गये तमाम प्रयास या तो यहां के लोगों को जोड़ नहीं पाये या फिर अधूरे रह गये। मुख्यमंत्री राजनाथ सिंह द्वारा प्रदेश की बागडोर सम्भालने के बाद उनके द्वारा शुरू की गयी जन सम्वाद श्रृंखला ने इस पिछड़े क्षेत्र में भी हलचल पैदा की। इसका सबसे अधिक असर हुआ सरकारी मशीनरी के दृष्टिकोण पर।

बात बहुत छोटी है। वाक्या है आयुक्त देवीपाटन के कार्यालय के परिसर के परिवर्तन का श्री सुधाकर सिंह ने गोण्डा में आयुक्त का पद भार ग्रहण करने के बाद महसूस किया कि आयुक्त का कार्यालय उपयुक्त स्थान पर नहीं है। सुदूर अंचलों से आने वाली गरीब जनता को कार्यालय ढूंढ़ने में ही बीस पच्चीस रूपये खर्च करने पड़ते हैं। उन्होंने निर्णया लिया कि जनता की सुविधाओं को देखते हुए इसे कहीं उपयुक्त स्थान पर ले जाया जाये। अन्ततः इसे गोण्डा-लखनऊ मुख्य मार्ग पर स्थानान्तरित किया गया। आयुक्त कार्यालय कहीं भी हो, अधिकारी पर कोई खास फर्क नहीं पड़ता, किन्तु यह परिवर्तन जनमानस में यह विश्वास जगा गया कि कोई उसकी सुविधा के बारे में चिन्तित है। यों तो आयुक्त सुधाकर सिंह की कार्यशैली ने शुरू से ही जनता में आत्मविश्वास जागृत कर दिया था, जब उन्होंने कार्यभार ग्रहण करने के तुरन्त बाद से मण्डल के चारों जिलों का लगातार दौरा कर बाढ़ तैयारियों का मौके पर जायजा लिया था। चारों जिलों में सरकारी मशीनरी को शासन की मंशा के मुताबिक जनसमस्याओं के प्रति संवेदनशीलता व उत्तरदायी बनाने के लिए पहल शुरू की। इसके परिणामस्वरूप जिलों में कामकाज के तौर तरीकों में बदलाव परिलक्षित हुआ।

मण्डल के गोण्डा जिले में यह परिवर्तन विशेष रूप से उल्लेखनीय रहे। इसका श्रेय यहां के ऊर्जावान जिलाधिकारी सी. एन. दुबे को जाता है। शासन के संकल्पों को मूर्तरूप देने के लिए इन्होंने सबसे पहले सरकारी मशीनरी पूरी क्षमता भर कार्य करने के लिए प्रेरित और उद्वेलित किया। सरकारी दफ्तरों, अस्पतालों और स्कूलों में काम करने वाले लोगों की समय से उपस्थिति पर विशेष बल दिया गया। सरकारी मीटिंगों में क्या बातें होती है, जनता को इससे कोई मतलब नहीं है। वह चाहती है कि दफ्तरों में उसकी समस्याओं की सुनवायी हो। एक लम्बे अरसे के बाद श्री दुबे की प्रेरणा से दफ्तरों में ऐसा माहौल बना तो तहसील दिवसों में भीड़ उमड़ पड़ी। जनता ने महसूस किया कि उसकी सुनवायी करने वाला उसका हमदर्द कोई अफसर आ गया है। अशिक्षा को इलाके के विकास में सबसे बड़ी बाधा के रूप में चिन्हित किया गया। स्कूलों में शिक्षा का माहौल सुधारने के लिए अभियान छेड़ा गया। स्कूल न जाने वाले, अपनी जगह पर एवजी अध्यापकों के जरिए काम चलाने वाले तथा हाजिरी लगाकर गायब रहने वाले अध्यापकों पर लगाम कसी गयी। एक पखवारे में चार दर्जन से अधिक से अधिक अध्यापकों के विरूद्ध कार्यवाही हुई। सरकारी दफ्तरों और स्कूलों में भी समयशीलता पर ज़ोर दिया गया। नतीजा यह हुआ कि गाड़ी पटरी पर आ गयी।

जिलाधिकारी सी.एन. दुबे ने विकास कार्यों में गड़बड़ी करने करने वालों की खैर खबर लेनी शुरू की। एक गांव में चौपाल के दौरान इन्दिरा आवास में कमीशन खोरी की शिकायतें मिलीं। प्रधान और बहुउद्देशीय कर्मी तलब किये गये। स्कूल निर्माण में गड़बड़ी पाये जाने पर प्रधान के विरूद्ध कार्यवाही हुई। इनका असर वातावरण पर पड़ा कार्य संस्कृति में बदलाव अब साफ नजर आने लगे हैं। यह आम आदमी में प्रशासन के क्रियाकलापों के प्रति उत्साह से प्रतिबंधित हो रहा है।

गोण्डा में विकास के मोर्चे पर भी पहल शुरू हुई है। इसका श्रेय जिलाधिकारी के कुशल मार्ग निर्देशन के साथ ही यहां के कर्मठ मुख्य विकास अधिकारी श्री एच.एल. पासी को जाता है। यह उनके कठिन परिश्रम का ही फल है कि विकास की विभिन्न निधियों से लिए गये कार्य समय से पूरे किये गये हैं। बीस सूत्रीय कार्यक्रम के सभी महत्वपूर्ण मदों में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की गयी है। यह कहने में संकोच नहीं किया जाना चाहिए कि कृषि विविधीकरण परियोजना, स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना तथा विकास के निर्माण के सभी कार्यक्रमों में चुनौतियों के बावजूद, पीछा कर लक्ष्य पूरा करना श्री पासी की जिजीविषा के बस की ही बात है। प्रतिदिन सबेरे साढ़े नौ बजे से रात दस बजे तक कार्यालय में बैठकर कर्मचारियों, अफसरों तथा हर आम-खास की समस्याएं धैर्यपूर्वक सुनने इन्हें निपटाने की उनकी क्षमता के कायल यहां उनके सहकर्मी ही नहीं, लोकप्रिय जनप्रतिनिधि भी हैं।

देव प्रभाकर त्रिपाठी
अपर जिला सूचना अधिकारी
गोण्डा

ऊदविलाव व ककेर की रक्षा के लिए शोध होगा

वन विभाग ने वन्यजीवों के लिए गलियारा (कारीडोर) बनाने की योजना को बन्द करने का निर्णय लिया है। इसके साथ ही वन्य जीवों की खालों के होने वाले अवैध व्यापार पर अंकुश लगाने की कार्य योजना बनेगी। यही नहीं अब विभाग जंगलो में पर्यटन को बढ़ान पर भी जोर नहीं देगा और ऊदविलाव व ककेर जैसे वन्यजीवों की रक्षा के लिए शोध कराएगा।

वन्य विभाग के कार्यालय में हुई एक बैठक विश्व बैंक के धन से चलायी जा रही योजना में वन्यजीवों की रक्षा के लिए किये जा रहे प्रयासों की समीक्षा के लिए बुलायी गयी थी। बैठक में विभाग के प्रमुख वन संरक्षक के एन सिंह सहित विभाग के तमाम वरिष्ठ अधिकारी तथा वन्यजीव संरक्षण का कार्य करने वाले कई वन्यजीव विशेषज्ञों ने भी हिस्सा लिया। इन सभी की मौजूदगी में जब राज्य के मुख्य वन्यजीव प्रतिपालक ने राज्य में वन्यजीवों के संरक्षण के लिए चलायी जा रही व चलायी जाने वाली योजनाओं के बारे में बताया तो कई वनधिकारियों ने साफ तौर पर कहा कि कुछ योजनांए अनावश्यक रूप से चलायी जा रही हैं और इन योजनाओं को बन्द करना ही बेहतर होगा।

इसीक्रम में वन्यजीवों के आने-जाने के लिए गलियारा बनाये जाने की योजना शुरू करने पर वन्यजीव विशेषज्ञों तथा विभाग के आला अधिकारियों ने इस योजना को बन्द करने का सुझाव दिया। इन लोगों का कहना था कि जब राज्य के जंगलों में रह रहे लोगों को अभी तक विभाग के लोग बाहर नहीं बसा सके हैं तो फिर वन्यजीवों के लिए गलियारा बनाने के बीच में पड़ने वाले गांवों को कैसे हटाएगें। इन लोगों का कहना था कि गलियारा के बीच में पड़ने वाले गांवों को हटाना विभाग के बस में नहीं हैं, इसलिए इस योजना को यही पर बन्द कर देना चाहिए।

इस बात पर सहमति बनने के बाद बैठक में वन क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा देने की योजना पर विचार किया गया तो इस योजना का भी बैठक में उपस्थित लोगों ने विरोध किया। बैठक में आम सहमति से कहा गया कि जंगलों में पर्यटन को बढ़ावा देने से वहां के वन्यजीवों का जीवन प्रभावित होगा। इसलिए वन क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा दिये जाने की कोई जरूरत नहीं है और जिस तरह से विभाग जंगलों में इको डेवलपमेंट के तहत पर्यटन को बढ़ावा देने का कार्य कर रहा है उसी तरह से आगे भी करता रहे। इसके बाद राज्य में वन्यजीवों की खालों के बढ़ते अवैध व्यापार पर चिन्ता व्यक्त करते हुए बैठक में उपस्थित सभी लोगों ने कहा कि अब इस पर अंकुश के लिए एक कार्ययोजना तैयार की जाये।

बैठक में उपस्थित लोगों का कहना था कि प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी भी इस मामले पर राज्य सरकार में चिन्ता जता चुके है, इसलिए जरूरी है कि यह योजना अतिशीध्र ही तैयार की जाये। इन दोनों मसलों पर सहमति हो जाने के बाद एक वन्यजीव विशेषज्ञ ने वन्यजीवों के संरक्षण के लिए कार्य कर रही स्वयंसेवी संस्थाओं को विभाग की ओर से बहुत ज्यादा कार्य दिये जाने पर आपत्ति की तो बैठक में हंगामा हो गया। एक वरिष्ठ वनाधिकारी इस आपत्ति पर अच्छे खासे नाराज हुए लेकिन उनका साथ बैठक में उपस्थित अन्य वनाधिकारियों ने नहीं दिया। इस पर तय हुआ कि अब आगे से किसी निजी क्षेत्र की संस्था को वन्यजीव संरक्षण में बहुत ज्यादा जिम्मेदारी न सौंपी जाये।

इसके बाद राज्य के जंगलों में अवैध शिकार के चलते होने वाली घटनाओं पर चिन्ता व्यक्त करते हुए विभाग की लापरवाही की आलोचना भी की गयी। यही नहीं बैठक में उपस्थित वनाधिकारियों व वन्यजीव विशेषज्ञों ने मुख्य वन्यजीव प्रतिपालक से जानना चाहा कि राज्य में चल रही वन्यजीव संरक्षण की योजनाओं क्या प्रगति है और मिर्ज़ापुर में गिद्धों की पायी गयी नयी कालोनी के संरक्षण के लिए विभाग क्या कर रहा है। इस पूछताछ के बाद राज्य में ऊदविलाव व ककेर की लगातार कम हो रही संख्या पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा गया कि राज्य में इन वन्यजीवों का शिकार बढ़ा है। इस पर बैठक में तंय किया गया कि इन वन्यजीवों को बचाने के लिए विभाग शोध करवाये ताकि इनको शिकारियों से बचाने का प्रयास किया जा सके।

सर्प संहारक

"सैक्रेटरी पक्षी"

सर्प संहारक पक्षी "सैक्रेटरी पक्षी" दक्षिणी सहारा और इसके निकटवर्ती घास बाहुल्य क्षेत्रों में पाया जाता है। यह पक्षी बड़े आकार का होता है और इसकी लम्बाई लगभग 1.5 मीटर होती है तथा ऊंचाई 1.3 मीटर होती है।

"सैक्रेटरी पक्षी" को सर्प-संहारक पक्षी के रूप में जाना जाता है क्योंकि यह पक्षी कोबरा सहित अनेक विषैले सापों को मारने की अद्भुत एवं असाधारण क्षमता रखता है। यह सापों को पकड़कर अपनी टांगों के द्वारा किक मार-मारकर घातक आक्रमण करके उन्हें अपने मजबूत पंखों में दबोच लेता है और उन्हें अपने बचाव का कोई रास्ता नहीं देता. यदि इस पक्षी को यह विश्वास हो जाएं कि उसका शिकार अभी जीवित है तो सांप को ऊपर आकाश में फेंककर नीचे जमीन पर गिराता है।

इसका अधिकतर भोजन कीड़े-मकोड़े, टिडडे, रोडन्ट (कृन्तक) आदि होते है लेकिन यह रेंगने वाले सरीसर्प (यानि रैप्टाईल्ज) अण्डो, एम्फीबियन्ज आदि पृथ्वी पर घौंसले में रहने वाले कुछ पक्षियों को भी अपना ग्रास बना सकता है। यह चिड़िया एक समूचा मुर्गी का अण्डा बिना छिलका तोड़े निगल सकती है।

"सैक्रेटिरी मादा पक्षी" अपना घोसला पेड़ के ऊपर बनाती है। इसका घोसला प्लेटफार्म की तरह होता है जहां यह अपने प्रजनन काल में 3 अण्डा देती है। इसके द्वारा बनाया गया घोसला घास तिनकों से बना होता है।

वस्तुतः यह पक्षी सर्प-संहारक के रूप में विश्व विख्यात है।

—नोतन लाल
रिटायर्ड लेक्चरर
फरीदाबाद (हरियाणा)

पृथ्वी की कहानी

कैसे बने महाद्वीप?

एशिया, यूरोप, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका तथा अंटार्कटिका सहित आज संसार में सात महाद्वीप हैं। इसी प्रकार प्रशान्त महासागर, अटलांटिक महासागर, हिन्द महासागर, उत्तरी हिम महासागर तथा दक्षिणी हिम महासागर सहित पांच महासागर, भी हैं। ये महादेश एक दूसरे से काफी दूरी पर स्थिर हैं। लेकिन ये महादेश तथा महासागर बने कैसे? क्या प्रारम्भ से ही इनकी भौगोलिक स्थिति इसी प्रकार रही या इनकी स्थिति में कोई परिवर्तन आया? आज भी यह प्रश्न बारम्बार उठते हैं। इन प्रश्नों का सन्तोषजनक उत्तर देने का प्रयास बहुत से भू-वैज्ञानिकों ने किया है। कुछ का अनुमान है कि पृथ्वी जब गैसीय अवस्था से द्रवावस्था तथा फिर द्रवावस्था से ठोसावस्था में परिणित हुई तो इसके संकुचन से आचतन कम हुआ जिसके फलस्वरूप पृथ्वी की सतह पर झुर्रियां पड़ गयी। इन झुर्रियों से जो गहरे स्थान थे, वे वर्षा का जल भर जाने से समुद्र बन गये तथा ऊंचे स्थान स्थल बन गये।

सोलस के मतानुसार पृथ्वी पर महाद्वीपों की उत्पत्ति का कारण यह था कि पृथ्वी जब द्रव अवस्था में थी तो विभिन्न स्थानों पर वायुमंडल का असमान दाब पड़ा। इस कारण कुछ स्थान दब कर गड्ढों बदल गये तथा कालान्तर में समुद्रों में परिणित हो गये साथ ही ऊंचे स्थान महाद्वीप बन गये।

चैम्बरलिन के मतानुसार पृथ्वी का निर्माण जब ग्रहाणुओं के संगठन से होने लगा तो इसकी सतह कहीं ऊंची तथा कहीं नीची बन गयी। इनसे क्रमशः महाद्वीप एवं महासागर बने।

लेपबर्थ के मतानुसार कई कारणों से पृथ्वी की सतह मुड़ गयी। इन वलित क्षेत्रों के अपनीत (ऐंटीक्लाइन) स्थान पर महाद्वीप बने तथा अभिनीज (सिंक्लाइन) स्थान पर सागर एवं महासागर।

आस्मॉड फिशर के मतानुसार प्रशान्त महासागर का निर्माण उस गर्त से हुआ जो चन्द्रमा के पृथ्वी से छिटककर निकलने के कारण बना।

अधिकतर वैज्ञानिकों की धारण है कि किसी समय सभी भूखण्ड इकट्ठे थे जो बाद में अलग-अलग हो गये। सन् 1620 ई0. में फ्रैंसिस बेकन ने अटलांटिक महासागर के सम्मुख तटों की समानता तथा समरूपता देखकर अनुमान लगाया कि ये भाग किसी काल में एक दूसरे से सटे रहे होंगे। सन् 1668 ई0. में प्लेसेट ने भी इसी प्रकार का विचार प्रगट किया। ऐंटोरियो सिंडर ने उत्तरी अमेरिका तथा यूरोप के कार्बनिक स्तरों की समानता देखकर चह माना कि प्राचीन काल में ये भूभाग एक दूसरे से जुड़ें हुए थे। सुएज तथा कोहेन ने भी उपयुक्त मतों का समर्थन किया।

टेलर ने सन् 1910 ई0. में अपनी नयी परिकल्पना दी। इसके अनुसार पर तथां प्रारम्भ में दो विशाल महाद्वीप थे- उत्तरी ध्रुव पर लौरेशिया तथा दक्षिण ध्रुव पर गौंडवाना लैंड। इन दोनों महाद्वीपों के बीच एक संकरा तथा लम्बा महासागर था- टेथिंस। दोनों महाद्वीप अखण्ड सियाली परत से आच्छादित थे। इन दोनों महाद्वीपों के विघटन तथा विघटित भूभागों के विस्थापन से अटलांटिक तथा हिन्द महासागर की उत्पत्ति हुई। कोई दो महाद्वीप जब आपस में टकराते थे तो टकराने वाले किनारों पर पर्वतो का निर्माण होता था। महाद्वीपों की विषुवतीय गति से पर्वतों का निर्माण हुआ था।

आज से लगभग 13 करोड़ वर्ष पहले पृथ्वी से चन्द्रमा की उत्पत्ति हुई। चन्द्रमा के बनने से पृथ्वी के कुछ भाग टूट कर अलग होने से जो विशाल गर्त्त बना वही प्रशान्त महासागर से परिणित हुआ। पृथ्वी एवं चन्द्रमा के बीच आकर्षण से उत्पन्न ज्वारीय बलों के कारण महाद्वीपों को विस्थापन प्रारंभ हुआ।

महाद्वीपीय विस्थापन के संबंध में अल्फ्रड वेजेनर ने सन् 1915 में क्रांतिकारी विचार धारा दी। उसने अटलांटिक महासागर के सम्मुख तटों की कुछ अद्भुत समरूपताओं पर गौर

किया। उसने पाया कि अटलांटिक महासागर के सम्मुख तटों की रूपरेखा में बहुत अधिक समानता है। ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे दोनों तट पहले जुड़े रहे हों तथा बाद में अलग हो गये हों। उसे कई सथल ऐसे दिखायी पड़े जहां पर समरूपता स्पष्ट दिखायी देती थी। ब्राजील का उभरा भाग गिन्नी की खाड़ी में तथा अफ्रीका का उभरा भाग कैरेगियन सागर में ठीक तरह से फिट बैठते हैं। इन सम्मुख तटों का स्तर विन्यास भी एक जैसा हैं। ग्रीन लैंड तथा स्पिट्सबर्ग द्वीपों के प्राक कैम्ब्रियन स्तर एक समान हैं। अटलांटिक सागर के दोनों तटों पर रहने वाले जीव जन्तु प्रायः एक ह जाति के हैं। दोनों तटों के जन्तु तथा वनस्पति-जीवाश्म एक जैसे हैं साथ ही साथ उनके शैलों के खनिज संघटन में भी अद्भुत समानता है। दानों तटों की पर्वत-क्षृंखलाओं का निर्माण काल भी एक ही सिद्ध हुआ है। इनके नति एवं नतिलम्बं समान हैं, जैसे अर्जेंटाइना के सियरा तथा अफ्रीका के केप पर्वत। उपर्युक्त समानताओं की व्याख्या तभी हो सकती है जब यह माना जाये कि दोनों स्थान पहले एक साथ जुड़े हुए थे।

वेजेनर की परिकल्पना के अनुसार पृथ्वी पर जल एवं थल का पारस्परिक अनुपात आदि काल से लगभग स्थिर रहा हैं। पुराजीवी महाकल्प (पैलिओजोइक इरा) के आरम्भ में पृथ्वी की सतह एक अटूट पतली सियाली परत से आच्छादित थी। धीरे-धीरे यह सियाली परत दक्षिण ध्रुव के आस-पास एकत्रित होकर विशाल महाद्वीप में परिवर्तित हो गयी जिसका नाम पैंजिया था। पैंजिया के चारों ओर एक अविच्छिन्न महासागर फैला हुआ था जिसका नाम था पैंथालसा। आज से लगभग 42 करोड़ वर्ष पहले पैंजिया महाद्वीप में एक विस्तृत दरार पड़ गयी जिसके फलस्वरूप पैंजिया दो भागों में विभक्त हो गया- उत्तर में लौरेशिया तथा दक्षिण में गौंडवाना लैंड। इन दो महाद्वीपों के बीच में पड़ी दरार चौड़ी होती गयी जिससे कालान्तर में टेथी महासागर का उदय हुआ। आजकल भूमध्य सागर को टेथी का अवशेष माना जाता है। शनैः शनैः लौरेशिया तथा गौंडवाना, कई खंडों में विभक्त होते गये जिससे आज के सभी महाद्वीप बने।

वेजेनर के मतानुसार खिसकते हुए महाद्वीपों की दो प्रकार की गतियां थीं। विषुवतीय तथा पश्चिमवर्ती गति। विषुवतीय गति का कारण विषुवतीय तथा पश्चिमवर्ती गति। विषुवतीय गति का कारण विषुवतीय उभार का गुरुत्वाकर्षण बल था तथा पश्चिमवर्ती गति का कारण पृथ्वी पर सूर्च एवं चन्द्रमा के अकर्षण बल में अन्तर के कारण उत्पन्न ज्वारीय बल था। इन सभी गतियों का आरम्भ ध्रुवों से हुआ था। पैंजिया महाद्वीप में दरार पड़नी आज से लगभग 42 करोड़ वर्ष पहले आरम्भ हुई विघटित खंडो के अलग होने में पर्याप्त समय लगा। आज जो अफ्रीका महाद्वीप है, वह भूखण्ड लगभग अपनी जगह पर स्थिर रहा जबकि अन्य खण्ड इससे दूर खिसकते चले गये।

ऐसा समझा जाता है कि ऑस्ट्रेलिया तथा अंटार्कटिका का अलगांव आज से लगभग 16 करोड़ वर्ष पहले आरम्भ हुआ होगा। ऑस्ट्रेलिया तथा मैडागास्टर अफ्रीका से दक्षिण पूर्व की ओर खिसकते गये। अमेरिका (उत्तरी तथा दक्षिणी) महाद्वीप का पश्चिम की ओर खिसकना आज से लगभग 13 करोड़ वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ। भारत, मैडागास्टर से लगभग 5 करोड़ वर्ष पूर्व अलग हुआ। उत्तरी अमेरिका तथा यूरोप का अलगाव लगभग 10 लाख वर्ष पहले प्रारम्भ हुआ तथा अभी भी दोनों महाद्वीप एक दूसरे से दूर खिसकते जा रहे हैं। अंटार्कटिका अपने मूल स्थान पर बना रहा। प्रशान्त महासागर आदिकाल से है तथा महाद्वीपीय विस्थापन में भी यह दृढ तथा निष्क्रिय बना रहा। अमेरिका तथा अफ्रीका के अलगाव से अटलांटिक महासागर का जन्म हुआ। हिन्द महासागर की उत्पत्ति एक ओर अंटाकटिका तथा आस्ट्रेलिया एवं दूसरी ओर भारत और अफ्रीका के अलगाव से हुई।

हैप्पी सारस :–
लखनऊ चिड़ियाघर की एक बेटी की कहानी

लखनऊ चिड़ियाघर में 10 अगस्त 2000 को एक नन्ही सारस का जन्म हुआ था। यह सारस कन्या सयानी होकर अपना स्वयंवर रचाने गोण्डा जिले के पार्वती-अरगंी पक्षी विहार जा रही है। धरती के कोने कोने में फैले इसके मित्रों को इसके सुखद भविष्य के लिये शुभकामनायें मिल रही हैं। आइये इसके विषय में कुछ अधिक जानें-समझें।

भारतीय सारस पक्षी धरती पर उड़ने वाली पक्षी जातियों में सबसे लम्बी चिड़िया होने के कारण दुनियां भर के पक्षी प्रेमियों द्वारा पहचानी जाती है। यह पंजों से चोंच तक लगभग 6 फीट लम्बी होती है। धरती पर इसकी संख्या दिनोंदिन कम होती हा रही है, इसलिए राष्ट्र संघीय संस्था आई.यू.सी.एन. (इंटरनेशनल यूनियन फार कन्जरवेशन ऑफ नेचर एण्ड नेचुरल रिसोर्सेज) द्वारा इसे संकटापन्न पशु-पक्षियों की सूची 'रेड डाटा लिस्ट' में सम्मिलित किया गया है।

वर्ष 1999 में संपादित सारस गणना के अनुसार धरती पर सारस पक्षी के लगभग 8 हजार सदस्य जीवित होने का अनुमान लगाया गया है। इनमें 200 पक्षी नेपाल, में 4 पाकिस्तान में तथा बंगला देश में देखे गये 2 सारस पक्षियों के अतिरिक्त शेष सभी भारतवर्ष में रहते हैं। कुल सारस आबादी के आधे से अधिक लगभग पांच हजार सारस पक्षी अकेले उत्तर प्रदेश में, स्वछन्द रूप से ताल-तलैयों के किनारे तथा धान के खेतों में निवास करते हैं। इसीलिये सारस को उत्तर प्रदेश के राज्य पक्षी का दर्जा दिया गया है।
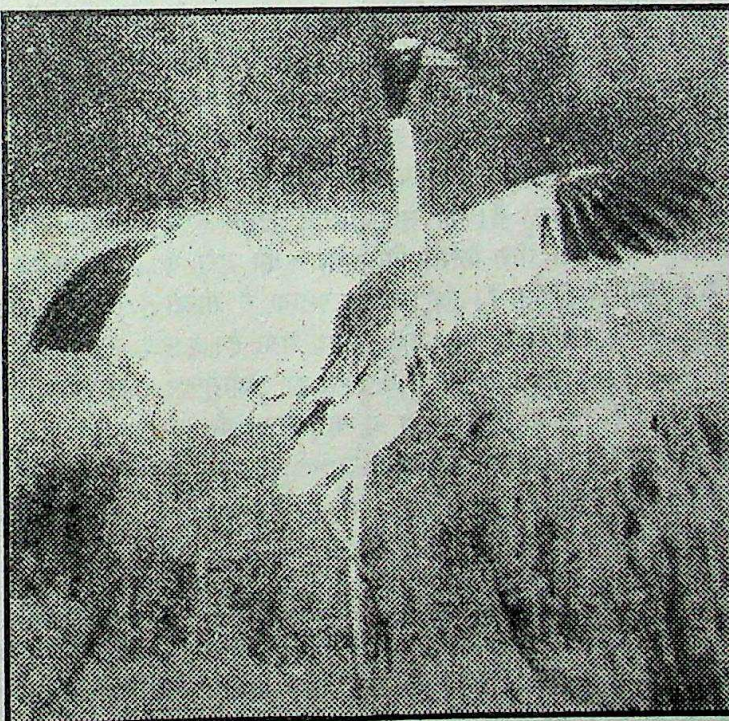
इससे पहले, वर्ष 1989 में की गयी सारस गणना के अनुसार धरती पर लगभग 12 हजार सारस पक्षी जीवित होने का अनुमान लगाया गया था। सारस पक्षी की संख्या में दस वर्षे के भीतर आयी यह कमी चिन्ता का विषय है।

इस पृष्ठभूमि में जब लखनऊ चिड़ियाघर में लगभग सत्ताइस वर्षे से रह रहे नल-दमयन्ती नामक एक सारस दम्पत्ति को जुलाई 2000 में अंडा देकर लगभग एक महीने तक उसे बारी-बारी से रात-दिन सेते हुए देखा गया तब चिड़ियाघर के लाखों दर्शकों के मन में आशा जागी थी कि सारस पक्षी के परिवार में नया सदस्य आयेगा।

अन्ततः जब 10 अगस्त 2000 को नल-दमयन्ती के अंडे से एक नन्ही सारस बाहर आयी तो सभी ने खुशियां मनायी थीं।

लगभग चार माह बाद जब इस नन्हीं सारस ने पंख फैलाकर फुदकना शुरू किया तब हमें यह चिन्ता सताने लगी थी कि कहीं फुदकने के दौरान यह सारस शिशु अपने माँ-बाप के घर से बाहर निकलकर लखनऊ शहर की सड़कों पर न जा गिरे। ऐसा होने पर उसके दुर्घनाग्रस्त होने की संभावना थी। इस समस्या का हल खोजने के लिये चिड़ियाघर के अनुभवी कर्मचारियों से विचार विमर्श किया गया। उस समय एक विचार यह सुझाया गया था कि नल-दमयन्ती की भांति उनकी बेटी को भी 'पक्षान्त' (पिनऑन) तकनीकी से चिड़ियाघर में ही बनाये रखा जाय।

'पिनऑन' तकनीक में पक्षी उड़ने में सहायता पंखों की एक ओर दिया जाता है ऐसा करने से वह टहलते हुए घर में

रह सकता है किन्तु वह उड़कर बाहर नहीं जा पाता। दूसरा विचार यह आया था कि जब तक नन्हीं सारस लम्बी उड़ान भरने योग्य नहीं हो जाये तब तक उसे किसी बन्द पक्षीघर में रखा जाये जिसकी दीवालें और छत बन्द हों। ऐसा करने से उसके फुदक कर शहर की सड़कों पर जा गिरने का खतरा नहीं रहता।

नल-दमयन्ती की बेटी के भविष्य के बारे में फैसला करने से पहले हमने तय किया कि चिड़ियाघर के कर्मचारियों के साथ ही दर्शकों से भी परामर्श कर लिया जाये। जैसे ही समाचार पत्रों के माध्यम से हमने यह सन्देश प्रसारित कराया कि इस नन्हीं सारस के लिये नाम और भविष्य हेतु मत आमंत्रित हैं, हमें पत्रों, तार, ई-मेल, और टेलीफोन से देश-विदेश के सारस प्रेमियों के सुझाव मिलने लगे। कुल 13 राष्ट्रों और 20 भारतीय नगरों से प्राप्त 753 लिखित मत पत्रों की जब जांच की गयी तब स्पष्ट हुआ कि 683 मतदाताओं ने इस नन्हीं सारस को उड़कर कहीं भी जाकर अपना जीवन स्वतंत्र रूप से जीने के लिये छोड़ देने के पक्ष में लिखा था। केवल 70 मतपत्रों में यह सुझाव था कि इसके जीवन को बाहरी दुनियां में संभावित खतरों को देखते हुए चिड़ियाघर में ही बनाये रखा जाये।

हमने बहुमत का सम्मान करते हुए यह निर्णय लिया था कि इस सारस को इसके मॉ-बाप की तरह 'पिनअॅन' करके चिड़ियाघर में बनाये रख कर अपना जीवन प्राकृतिक ढंग से जीने का अवसर दिया जायेगा। मतपत्रों में इस नन्हीं सारस के लिये नाम भी सुझाये गये थे। इन नामों में हैप्पी, जॉली, मुक्ता, और सरस्वती प्रमुख थे। सर्वाधिक मत पहले नाम के पक्ष में थे, इसलिये लखनऊ चिड़ियाघर की इस नन्हीं सारस को "हैप्पी" नाम दिया गया।

यह तय हो जाने के बाद कि "हैप्पी" को उड़ जाने के लिये स्वतंत्र छोड़ दिया जाना है, परामर्श किया था। गोपी सुन्दर इटावा जिले में भारतीय वन्यजीव संस्थान के पक्षी वैज्ञानिक बी.सी. चौधरी की देखरेख में स्थापित 'सारस शोध केन्द्र' का संचालन कर रहे हैं।

इटावा में प्राकृतिक रूप से पर्याप्त संख्या में सारस पक्षी रहते हैं। वहां के सरसईनावर तथा कोदइया नामक तालाबों के किनारे सात सौ से अधिक सारस देखे जा सकते है। इन्हीं तालाबों के निकट मैनपुरी जिले के सोज, अम्बरपुर, और समन तालाबों में लगभग एक हजार सारस रहते हैं। इस प्रकार आस-पास स्थित इन पांच तालाबों में धरती पर सबसे अधिक संख्या में सारस परिवार के सदस्य निवास करते हैं। यह सभी तालाब इटावा नगर से तीस-पैंतीस किलोमीटर की दूरी में स्थित हैं। इसी कारण इटावा में सारस शोध केन्द्र स्थापित किया गया है। इस शोध केन्द्र पर कार्य करते हुए गोपीसुन्दर ने भारतीय सारस के रहन-सहन के बारे में पर्याप्त अधिकृत जानकारी एकत्रित किया है।

गोपीसुन्दर ने हमें बताया कि सारस पक्षी चार-पांच महीने की उम्र में उड़ने की क्षमता तो प्राप्त कर लेते हैं, लेकिन वह कुछ दूर तक ही उड़कर वापस मॉ-बाप के पास खाने रहने लौट आते है। क्योंकि इस उम्र में उनके पंख लम्बी उड़ान भरने योग्य विकसित नहीं रहते। इसके साथ ही वह अपना भोजन जुटाना भी नहीं जानते हैं।

लगभग दस-ग्यारह महीने तक मॉ-बाप द्वारा एकत्रित किया गया भोजन खाकर यह अपने पंखों को मजबूत बनाने का अभ्यास करते रहते हैं। उसके बाद मॉ-बाप इन्हें दूर जाकर अपनी उम्र के किशोर-किशोरियों के साथ रहने को उकसाते हैं। जो बच्चे एक साल की उम्र के बाद भी मॉ-बाप के साथ रहने की जिद करते हैं, उन्हें मॉ-बाप चोंच से मार कर दूर भागते हैं। इसलिये एक वर्ष की उम्र तक हमने हैप्पी को उसके मॉ-बाप के साथ रखने का निर्णय लिया था।

इस एक वर्ष की उम्र में हैप्पी को उसके मॉ-बाप के साथ, उसके पुराने घर से हटाकर ऐसे पक्षी घर में रखा गया जिसकी दीवालें चारों ओर से तार की जाली से बन्द थीं। इस घर में छोटी उड़ानें भरते हुए हैप्पी अन्ततः उस मोड़ पर आ पहुंची जब उसके मॉ-बाप से दूर कोने में रहने लगी थी। यही नहीं, सारस दम्पत्ति नव-दम्पती को फिर से साथ-साथ नाचने लगे थे।

—डॉ. आर. एल. सिंह
मुख्य वन्यजीव प्रतिपालक, उ.प्र.

समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित योजनाओं का संक्षिप्त विवरण

माननीय मुख्यमंत्री, उ.प्र.
श्री राजनाथ सिंह

माननीय प्रधानमंत्री, भारत सरकार
श्री अटल बिहारी वाजपेयी

माननीय मंत्री समाज कल्याण
श्रीमती प्रेमलता कटियार

● राष्ट्रीय वृद्धावस्था/किसान पेन्शन : गरीबी की रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले एक हजार रू. से कम मासिक आमदनी वाले ६५ वर्ष से ऊपर के समस्त वृद्धों को १२५/–रू. प्रतिमाह की दर से पेन्शन दिये जाने का प्राविधान है। इस मद में जनपद का २३११२ पेन्शनर्स का लक्ष्य स्वीकृत है।

● राष्ट्रीय पारिवारिक लाभ योजना : इस योजना के अन्तर्गत (१० वर्ष के ऊपर तथा ६४ वर्ष तक) के गरीबी की रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले परिवार के मुखिया (कमाऊ व्यक्ति) की मृत्यु पर १०,०००/– एक मुश्त आर्थिक सहायता दिये जाने का प्राविधान है।

● राष्ट्रीय मातृत्व लाभ योजना :– गरीबी की रेखा के नीचे यापन करने वाली गर्भवती महिलाओं को प्रसव के ८ सप्ताह पूर्व दो बच्चा तक को भरण पोषण हेतु रू. ५००/– एक मुश्त आर्थिक सहायता दिये जाने का प्राविधान है।

● अत्याचार से उत्पीड़ित व्यक्तियों को आर्थिक सहायता :– अनु.जा. के व्यक्तियों का गैर अनु.जा. के व्यक्तियों द्वारा उत्पीड़न किये जाने पर आर्थिक सहायता दिये जाने का प्राविधान है।

● अनुसूचित जाति के छात्रों को छात्रवृत्ति :– कक्षा १ से दशमोत्तर में अध्ययनरत अनु.जा./जन जाति के छात्रों को अनिवार्य/पात्र छात्रवृत्ति दियें जाने का प्राविधान हैं। कक्षा १ से ८ तक के छात्रों को छात्रवृत्ति ग्राम सभा स्तर पर गठित समिति के माध्यम से वितरित किया जा रहा है। कक्षा ६ एवं उसके ऊपर की कक्षाओं के छात्रों को विद्यालय स्तर पर गठित समिति के माध्यम से वितरित कियें जाने का प्राविधान है।

● अनु.जा. के व्यक्तियों को शादी/बीमारी के इलाज हेतु अनुदान :– अनु.जा. के व्यक्तियों को जिकी मासिक आमदनी १०००/–रू. से कम हो उनकी पुत्रियों की शादी हेतु रू. १०,०००/– तथा बीमारी के इलाज हेतु २,०००/–रू. एकमुश्त आर्थिक सहायता दिये जाने का प्राविधान है।

समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित योजनाओं के अन्तर्गत यदि किसी व्यक्ति को किसी प्रकार की अनियमितता/शिकायत हो तो निम्नलिखित में से किसी अधिकारी को फैक्स/पत्र/दूरभाष से शिकायत कर सकता है। ताकि दोषी व्यक्ति के विरुद्ध दण्डात्मक कार्यवाही की जा सके।

क्रमांक	नाम अधिकारी	दूरभाष सं.
१.	जिलाधिकारी	२२४००, २२६००
२.	जि.स.क. अधिकारी	२६५६२
३.	निदेशक, स.क.उ.प्र.,लखनऊ	२०६२५६/२०६२७५/२०६२८४

अमरजीत सिंह
जिला समाज कल्याण अधिकारी
गोण्डा

एच.एल. पासी
मुख्य विकास अधिकारी
गोण्डा

सी.एन. दूबे
आई.ए.एस.
जिलाधिकारी, गोण्डा

कानून व्यवस्था

आपराधिक गतिविधियों पर

अपराधियों के विरुद्ध छेड़े गये सघन अभियान के कारण असामाजिक तत्वों के हौसले पस्त हुए हैं और प्रदेश में भयमुक्त समाज की परिकल्पना साकार होते दिख रही है। 14 करोड़ आबादी के भौतिक विस्तार एवं बीहड़ तथा नदी घाटियों के राज्य में अपराधियों पर लगाम एवं बेहतर कानून व्यवस्था की स्थिति कायम करने के लिए छह सात माह का वक्त कुछ भी नहीं होता। किन्तु यदि नीति एवं नीयत ठीक हो, समाज से सीधा संवाद, सहानुभूति एवं सम्वेदना हो, दृढ़ इच्छा शक्ति एवं अटल संकल्प हो तो कोई भी काम असंभव नहीं होता है।

मुख्यमंत्री राजनाथ सिंह ने 28 अक्टूबर 2000 को सत्ता संभालने के साथ प्रदेश में कानून व्यवस्था को प्राथमिकता देने की घोषणा की थी। उक्त घोषणा के अनुरूप 28 अक्टूबर 2000 से 16 नवम्बर 2000 तक अपराधियों के विरुद्ध एक पखवाड़े का सघन अभियान छेड़ा गया। इस विशेष अभियान के तहत 227 राष्ट्र विरोधी तत्वों, 397 माफियाओं, फिरौती के लिए अपहरण करने वाले 68 बदमाशों, हाइवे पर लूटपाट और राहजनी करने वाले 113 अपराधियों, जबरन वसूली करने वाले 297 अपराधियों, 24349 वांछित यानी वांछित अपराधियों तथा 12586 सक्रिय अपराधियों के विरुद्ध कार्यवाही कर उन्हें सीखचों के पीछे डाल दिया गया।

इस अवधि में राष्ट्रीय सुरक्षा कानून (रासुका) के तहत 204, गैंगस्टर एक्ट के तहत 1672 और गुण्डा एक्ट के तहत 5587 बदमाशों को पकड़ा गया। मात्र इस अभियान विशेष के दौरान पुलिस ने प्रदेश में जगह जगह छापा मारकर अवैध असलहे बनाने वाले 285 कारखानों को पकड़ा तथा इस अवैध धंधे में लिप्त 370 अपराधियों को गिरफ्तार कर उन्हें जेल की हवा खिलायी। इस दौरान सघन जांच-पड़ताल के जरिये आर. डी. एक्स. जैसे विस्फोटकों की बरामदगी में भी सफलता मिली है। ऐसे धंधों में लिप्त 322 अपराधी पकड़े गये। उनसे 195 देशी बम, 325 किलोग्राम बारूद, हथगोले तथा भारी मात्रा में अन्य विस्फोटक भी बरामद किये गये। अपराधियों के विरुद्ध जब-जब शिकंजा कसा जाता था वे संगठित होकर सुनियोजित तरीके से आपराधिक गतिविधियों में लिप्त होकर कानून व्यवस्था के समक्ष कड़ी चुनौती पेश कर देते थे, किंतु वे इस बार ऐसा नहीं कर सके। आपराधिक एवं असामाजिक तत्वों की सांठ गांठ से कानपुर, मुरादाबाद, आजमगढ़ एवं आगरा में अशांति तथा उपद्रव का प्रयास किया गया किंतु पुलिस चौकसी एवं प्रशासन की सतर्कता के चलते अपराधी तत्वों के मंसूबे पूरे नहीं होने पाये, उन्हें एक-एक कर दबोच लिया गया। साजिशों का पर्दाफाश हुआ, विस्फोटक सामग्री, धारदार हथियार, असलहे और बम आदि जो दंगा कराने की नीयत से जगह-जगह छिपाये गये थे पुलिस ने उन्हें नष्ट कर दिया।

खूंखार अपराधियों, आतंकवादियों, देशद्रोहियों एवं अन्तर जनपदीय, अन्तर्राज्यीय और अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय अपराधियों पर अंकुश लगाने की नीयत से प्रदेश में पहले से गठित स्पेशल टास्क फोर्स (एस.टी.एफ.) की कार्यकुशलता, अपराध नियंत्रण में उसकी सक्रियता एवं सफलता को देखते हुए मुख्यमंत्री ने एस. टी. एफ. को पुनर्गठित करके उसे स्थाई स्वरूप प्रदान करने की पहल की है। इसी प्रकार प्रदेश की नेपाल सीमा पर सक्रिय पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आई.एस.आई., सिमी और जैश ए मोहम्मद जैसे राष्ट्र विरोधी तत्वों के षड्यंत्रों को नाकाम करने के लिए सरकार ने "नेपाल सीमा पुलिस" को भी स्थाई रूप प्रदान करने का निर्णय किया है।

पाकिस्तानी एवं अफगान आतंकवादियों का जो विध्वंसक जाल प्रदेश में आकार ले रहा था उसे एस.टी.एफ. ने समय रहते ध्वस्त कर दिया। यह आतंकवादी अयोध्या में विध्वंस एवं उन्माद भड़काने की नीयत से लखनऊ से अयोध्या कूच ही करने वाले थे कि एस.टी.एफ. ने उन्हें लखनऊ के गोमती नगर इलाके में मार गिराया। मारे गये इस रैकेट के पास आई.एस.आई. वाले दस्तावेज और घातक शस्त्रास्त्र बरामद हुए। यही नहीं, पुराने अपराधियों पर शिकंजा कसने की गरज से विशेष अभिलेखीकरण प्रकोष्ठ के गठन का निर्णय लिया गया है। साथ ही मानवाधिकारों की रक्षा के लिए यह भी व्यवस्था कर दी गई है कि अभिलेखों में दर्ज किये बगैर किसी भी व्यक्ति को थाने में न रोका जाए। महाकुंभ का शांतिपूर्ण आयोजन कानून व्यवस्था की सफलता का परिचायक है। राष्ट्र विरोधी तत्वों द्वारा बाराबंकी के दरियाबाद साबरमती एक्सप्रेस में बम विस्फोट, गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर सहकारिता भवन लखनऊ, आगरा एवं कानपुर में किये गये बम विस्फोटों का पर्दाफाश कर पुलिस ने अपराधियों को सलाखों के पीछे पहुँचा दिया।

कमाल की बात तो यह रही कि प्रदेश में पहली बार आपराधिक गतिविधियों

में संलिप्त पुलिस अधिकारियों व कर्मचारियों को भी दण्डित किया गया। अपराधियों से सांठ-गांठ रखने वाले एक उपनिरीक्षक, 26 आरक्षियों व एक फायरमैन को जहां पदच्युत किया गया वहीं ड्यूटी में लगातार लापरवाही बरतने वाले 16 आरक्षियों व 5 मुख्य आरक्षियों को जबरन रिटायर कर दिया गया। इन कार्यवाहियों से आम आदमी का विश्वास सरकार एवं पुलिस प्रशासन के प्रति और भी पुख्ता हुआ है।

सरकार ने ढीले-ढाले एवं गलत पुलिसकर्मियों को यदि दण्डित किया है तो एक होमगार्ड की मौत के बाद उसकी अनाथ हुई बेटी गोल्डी को ढाढ़स बंधाने प्रदेश सरकार का मुखिया स्वयं पहुँच जाता है। यही नहीं लूटे गये पेट्रोल पम्प जैसे अपराध स्थलों पर चूंकि मुख्यमंत्री स्वयं पहुँच जाते हैं इस वजह से आम जनता के प्रति प्रदेश के आला अफसरों और पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों की संवेदनशीलता बढ़ी है।

होमगार्डों को कर्तव्यनिष्ठा के प्रति प्रेरित करने के लिए जहां 100 रुपए प्रतिमाह पौष्टिक भत्ता स्वीकार किया गया है वहीं ड्यूटी के समय शहीद या घायल होने वाले पुलिस कर्मियों को अब त्वरित उदारतापूर्वक सहायता मिलने के कारण पुलिस महकमे के लोगों की कर्तव्यनिष्ठा और भी पुष्ट हुई है।

आम आदमी की सुरक्षा की चिन्ता

...। के मुखिया राजनाथ सिंह का मानना है कि पूंजीपति हो या आम आदमी; व्यापारी हो या सरकारी कर्मचारी-अधिकारी, सबके लिए सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित होनी चाहिए। उनका मानना है कि आला अफसरों और नेताओं के लिए दिखावे की सुरक्षा व्यवस्था अनावश्यक है। इसीलिए वीआईपी सुरक्षा व्यवस्था में उन्होंने कटौती कर इस काम में लगे 9000 पुलिसकर्मियों की संख्या 7000 तक सीमित करने का फैसला किया है। इस व्यवस्था से जो 2000 पुलिस कर्मी अतिरिक्त होंगे उन्हें अब आम आदमी की सुरक्षा में लगाया जायेगा। इस व्यवस्था से सालाना 110 करोड़ रुपए की बचत भी होगी जो आम आदमी के सुरक्षा कार्यक्रमों में लगायी जायगी। यही नहीं मंत्रियों की फ्लीट में चलने वाली गाड़ियों पर लाल-नीली बत्ती लगाकर आम आदमी पर जलवा जमाने वाले नेताशाहों व अफसरों पर अंकुश लगाने के लिए सरकार ने इस सिलसिले में नया शासनादेश एवं दिशा-निर्देश जारी कर दिया है जिससे बाकी नीली बत्तियां लगी गाड़ियों की संख्या 60-70 फीसदी तक कम हो जायेगी। सड़कों पर हूटर बजाती दौड़ती गाड़ियों के शोर एवं जनसामान्य में मचने वाली अफरातफरी से आम आदमी को निजात मिलेगी।

थानों में निर्दोषों को बंद कर सताने की शिकायतें, उन्हें यातना देने के आरोप या फिर थाने ले जाये गये व्यक्ति के लापता होने अथवा हिरासत में मौत की घटनाओं पर अंकुश लगाने की गरज से जहां थाने लाये गये व्यक्ति का अभिलेखीकरण अनिवार्य कर दिया गया है, वहीं मानवाधिकार आयोग के निर्देशों का अनुपालन अनिवार्य करके सरकार ने आम आदमी में यह विश्वास जगाया है कि सरकार को बड़ों की ही सुरक्षा व्यवस्था नहीं अपितु आम आदमी की सुरक्षा व्यवस्था की भी चिंता है।

● शिवराम पाण्डेय

खूंखार आतंकवादी तत्वों से निपटने में पुलिस बलों के पास आधुनिकतम शस्त्रास्त्रों की कमी व अन्य समस्याओं से अपने को जोड़ते हुए मुख्यमंत्री ने भारत सरकार से विशेष प्रयास कर 124 करोड़ रुपये की व्यवस्था कर आधुनिकीकरण की व्यवस्था की है।

पुलिस कर्मियों की अपने प्रति सरकार की बढ़ती संवेदनशीलता को देखते हुए अपनी ड्यूटी के प्रति समर्पण की भावना जगी है। अभी अप्रैल माह में पुलिस के स्पेशल टास्क फोर्स ने लखनऊ व कानपुर में छापा मारकर बाघ व चीतों की खाल की तस्करी करने वाले अन्तर्राष्ट्रीय गिरोह का पर्दाफाश किया। इस सिलसिले में गिरफ्तार किये गये पाँच लोगों से एक करोड़ मूल्य की बाघ व चीतों की 25 खालें बरामद की गयीं।

12 मई को मेरठ में एस.टी.एफ. ने इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा में पेपर आउट कराने व नकल कराने वाले गिरोह के 16 सदस्यों को गिरफ्तार किया तो पता चला कि इस रैकेट का जाल तो बहुत दूर तक फैला है। इसके सरगना प्रदेश की राजधानी लखनऊ में रहकर यह अवैध कारोबार चला रहे हैं। पुलिस ने इस मामले में तत्परता दिखाते हुए इस धंधे के दो शिक्षा माफियाओं, जो कि कई स्कूल और कोचिंग चला रहे थे को गिरफ्तार कर उनके पास से लाखों रुपए बरामद किया तथा उन सबको जेल पहुँचा दिया। इस प्रकार प्रदेश के बचे-खुचे माफिया धड़ाधड़ पुलिस के जाल में फँसते जा रहे हैं। पुलिस और कानून के कसते शिकंजे के समक्ष अब अपराधियों के हाथ बौने पड़ गये हैं।

अब जेलों में अपराधियों पर कड़ी नजर

बड़े-बड़े माफिया कानून के कसते शिकंजे के कारण जब जेल में पहुँच गये तो उन्हें वहां बड़ी बेचैनी महसूस हुई और ... सुविधा शुल्क का चारा फेंक कर जेलों में अपना साम्राज्य कायम करने का प्रयास किया। जेलों में ऐश की जिन्दगी जी रहे इन अपराधियों ने वहीं से गैंग संचालन का धंधा शुरू कर दिया तो सरकार ने पहला काम तो यह किया कि इन गिरोह वालों को अलग-अलग और दूर की जेलों में भेज दिया। इसके अलावा कुछ चुनिन्दा जेलों में सेल फोन जैमर की व्यवस्था और सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किये गये।

चालू वित्तीय वर्ष में सरकार ने जेलों में पुख्ता सुरक्षा व्यवस्था की गरज से कारागार भवनों के निर्माण के लिए 5 करोड़ रुपए की व्यवस्था की है। इसमें से तीन करोड़ रुपया तो कारागारों की सुरक्षा व्यवस्था के सुदृढ़ीकरण पर व्यय किया जायेगा जबकि दो करोड़ रुपए नई बैरकों के निर्माण पर खर्च किये जायेंगे। इसके अलावा कारागारों में चिकित्सा व्यय, सुरक्षा व्यवस्था तथा कैदियों के प्रशिक्षण आदि के 11वें वित्त आयोग की संस्तुतियों के परिप्रेक्ष्य में 2.8255 करोड़ का जमा रखा गया है। यानी अब जेलें अपराधियों की ऐशगाह की बजाय जेल ही नजर आयेंगी।

मा. राजनाथ सिंह
मुख्यमंत्री, उ.प्र.

माननीय मुख्यमंत्री
राजनाथ सिंह
के गोण्डा आगमन पर

मा. रमापति शास्त्री
स्वास्थ्यमंत्री, उ.प्र.

स्वास्थ्य विभाग गोण्डा **हार्दिक अभिनन्दन** करता है

जनपद–गोण्डा, श्री देवीपाटन मण्डल में स्थित है। इस जनपद के उत्तर में बलरामपुर, दक्षिण में बाराबंकी व फैजाबाद, पूरब में बस्ती तथा पश्चिम में बहराइच स्थित है। दक्षिण में घाघरा नदी बहती है। यह जनपद आर्थिक दृष्टि से प्रदेश के पिछड़े जनपदों में से एक है यहां के लोगों की जीविका का प्रमुख साधन कृषि है। जनपद की जन्म दर 38.5 प्रति हजार है। सन् 2016 तक सत्र के लिए स्वास्थ्य के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु जन्म दर को घटाकर 21 प्रतिहजार लाने हेतु निम्क कार्यक्रम विभिन्न स्तरों पर संपादित किया जाता है।

1. निःशुल्क चिकित्सा सुविधा – जनपद के जिला चिकित्सालय, जिला महिला चिकित्सालय, 4 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों, 16 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों तथा एक जिला क्षय रोग नियंत्रण क्लीनिक द्वारा जनता को निःशुल्क चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराया जाता है।

2. राष्ट्रीय कार्यक्रम –

(अ) प्रजनन एवं स्वास्थ्य कार्यक्रम – जनपद के 16 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों एवं महिला चिकित्सालय द्वारा प्रजनन एवं स्वास्थ्य कार्यक्रमों से सम्बन्धित सेवायें प्रदान की जाती हैं।

(ब) राष्ट्रीय परिवार कल्याण कार्यक्रम – जिला चिकित्सालय, महिला चिकित्सालय तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों द्वारा परिवार कल्याण सेवायें प्रदान की जाती है। माह के एक निश्चित तिथि पर प्रत्येक स्वास्थ्य केन्द्र पर पुरूष एवं महिला नसबंदी की सुविधा भी प्रदान की जाती है। इस वर्ष 241 दम्पतियों की नसबंदी आपरेशन किया गया है।

(स) राष्ट्रीय प्रतिरक्षीकरण कार्यक्रम – जिला महिला चिकित्सालय में प्रतिदिन तथा 302 उपकेन्द्रों पर प्रत्येक बुधवार को टीकाकरण कार्य किया जाता है। लक्ष्य - 103948 के अनुपात 29000 गर्भवती माताओं को टिटनेस से बचाव हेतु टीका लगाया गया। एक वर्ष से.कम आयु के 97761 लक्ष्य के अनुपात 34259 बच्चो को जुलाई माह तक टीका लगाया गया।

(द) एड्स नियंत्रण कार्यक्रम – समस्त क्षेत्रीय पर्यवेक्षकों एवं कार्यकताओं द्वारा एड्स से सम्बन्धित प्रचार-प्रसार का कार्य किया जाता है। इस हेतु 16 अप्रैल से 30 अप्रैल 2001 तक परिवार स्वास्थ्य जागरूकता अभियान द्वारा वृहद प्रचार-प्रसार किया गया।

(य) राष्ट्रीय क्षय रोग नियंत्रण कार्यक्रम – जिला टी.बी. क्लीनिक एवं समस्त सामुदायिक एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों द्वारा टी.बी. के मरीजों को निःशुल्क दवायें वितरित की जाती हैं।

(र) राष्ट्रीय दृष्टिहीनता नियंत्रण कार्यक्रम – मोतियाबिन्द आपरेशन के 13262 लक्ष्य के विपरीत जुलाई माह तक 315 आपरेशन सम्पन्न हो सके है। इसके अतिरिक्त जाच कर 9824 रोगियों का उपचार किया गया है।

(ज) राष्ट्रीय कुष्ठ नियंत्रण कार्यक्रम – जिला चिकित्सालय पर तथा सामुदायिक/प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र क्षेत्र में कुष्ठ नियंत्रण कार्यक्रम को सम्पादित करने हेतु एन. एम. ए. की नियुक्ति की गयी है, जो क्षेत्र में भ्रमण कर कुष्ठ रोगियों का उपचार करते हैं।

(ब) राष्ट्रीय मलेरिया/फाइलेरिया नियंत्रण कार्यक्रम – मलेरिया की बीमारी पर नियंत्रण हेतु बुखार के केसों की नियमित खून की जाच व क्लोरोक्वीन की दवा का वितरण सामुदायिक/प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों द्वारा किया जाता है।
फाइलेरिया यूनिट जनपद स्तर पर ही कार्यरत है, फाइलेरिया केसों की जांच इसी यून्टि द्वारा किया जाता है।

(स) संक्रामक रोग नियंत्रण कार्य – जनपद स्तर पर संक्रामक रोग नियंत्रण कक्ष का गठन किया गया है। संक्रामक रोग की सूचना प्राप्त होने पर तुरन्त चिकित्सकीय दल द्वारा निरोधात्मक कार्यवाही सम्पन्न कर रोग पर नियंत्रण किया जाता है।

डा. ए.बी. शुक्ला
मुख्य चिकित्साधिकारी
गोण्डा

एच.एल. पासी
मुख्य विकास अधिकारी
गोण्डा

सी.एन. दुबे
(आई.ए.एस.)
जिलाधिकारी, गोण्डा

जरा सोचिये !
हम भावी पीढ़ी को
विरासत में क्या दे जायेंगे ?
उजड़े हुये वन-पेड़ और बंजर धरती,
कंकरीट की इमारतें, प्रदूषित वातावरण
बच्चे किताबों में पढ़ेंगे, तोता-सारस या
वनराज थे कभी होते थे, मगर डायनासोर की
तरह ये सभी विलुप्त हो गये सदा के लिये
अथवा
हरियाली-खुशहाली और स्वच्छ
हवा-पानी और मिट्टी
आइये! हम सभी संकल्प लें
''पर्यावरण'' को हर प्रकार से सुरक्षित रखें,
पेड लगायें और उनकी देखभाल करें। प्रदूषण की रोकथाम करें।
जनहित में प्रकाशित
पर्यावरण चेतना
सी-5 दिलकुशा कालोनी, लखनऊ, फोन - 482288

दिल्ली, हिमाचल प्रदेश एवं राजस्थान के शिक्षा विभाग, उ० प्र० शासन के वन विभाग, शिक्षा विभाग, पंचायत राज विभाग, पर्यावरण निदेशालय एवं स्थानीय निकाय द्वारा अनुमोदित पत्रिका

आर०एन०आई० 58573/94
डाक पंजीकरण सं०- LW/NP-

स्वत्वधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक मीता सिंह द्वारा नीलम प्रिंटर्स, नरही, लखनऊ फोन - 239672 से मुद्रित

पर्यावरण चेतना
पर्यावरण की राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका
वर्ष 8
अक्टूबर 2001
अंक 6
वन एवं पर्यावरण विशेषांक
कैसे बर्बाद हुए हमारे जंगल?
उपजाऊ माटी संरक्षण
मिर्चे से भी सजाएं बगिया
प्रकृति में 'वास्तु-शास्त्र' का महत्व
वृक्षारोपण की जिम्मेदारी सभी विभागों की है : वनमंत्री
मूल्य 25 रू

☎ : 359897

In the New Millennium

NEW MILLENNIUM SCHOOL

Introducing
New Millennium Education System

Best Combination of Formal & Non-Formal Education
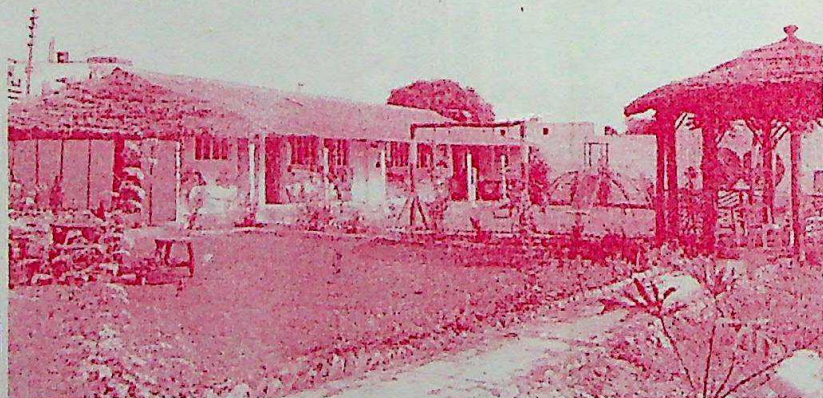
Best Educational Address in Town

For Better & Safe Future Adopt New Millennium Education System today

Picnic Spot Road, Faridi Nagar,
Indira Nagar,
Lucknow

पर्यावरण चेतना

पर्यावरण संचेतना की राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष : 8 अक्टूबर अंक : 6

- सम्पादकीय कार्यालय : सी-5 दिलकुशा कालोनी लखनऊ, फो-482288
- संपर्क :– नगर कार्यालय, कीर्तिशिखर अपार्टमेंट्स, निकट विकास दीप, ऑफ स्टेशन रोड, लखनऊ, फोन :– 636282
- रजिस्टर्ड कार्यालय : बी-1/12 सेक्टर डी–1, कानपुर रोड योजना, लखनऊ, फोन-436767
- मुद्रक : नीलम प्रिंटर्स, नरही, लखनऊ फोन - 239672

अनुक्रमणिका

*सम्पूर्ण वैदिक वांगमय मानव की मनीषा की सर्वोत्कृष्ट उपलब्धियों का अमूल्य अंश है। प्रकृति के साथ यह अस्तित्व की भावना से युक्त जीवन व्यतीत करने वाले वैदिक ऋषियों ने वसुन्धरा, ऊषा, सूर्य, वायु, जल एवं अन्यान्य प्राकृतिक शक्तियों की भावपूर्ण अभ्यर्थना की है। **''पर्यावरण चेतना''** द्वारा वैदिक सूक्तों की कतिपय ऋचायें, पर्यावरण संरक्षण की पुरातन चिन्तन धारा वर्तमान संकल्पना से जोड़ने की दृष्टि से प्रकाशित की जा रही है। प्रकृति के अनन्य आराधक मंत्र दृष्टा ऋषियों को विनत प्रणाम करते हुये प्रस्तुत हैं प्रकृति पर **''वैदिक चिन्तन''** के कतिपय अंश-*

औदुम्बरेज मणिना पुष्टिकामाय वेधसा। पशुनां सर्वेषा स्फातिं गोष्ठे में सविता करत्।।

(अर्थर्ववेद संहिता भाग–2 औदुम्बरमणि सूक्त–1)

(ज्ञानी अथवा विधाता ने औदुम्बरमणि से सभी प्रकार की पुष्टि करने वालों के लिये एक प्रयोग किया था जिससे सवितादेव हमारे गोष्ठ में सभी प्रकार के पशुओं को बढ़ायें।)

प्रस्तुत श्लोक वर्तमान समय में समीचीन प्रतीत होता है। क्योंकि आज विभिन्न प्रकार के पशु एवं जीव जंतुओं के संरक्षण की आवश्यकता है। क्योंकि हमारी कृषि का एक महत्वपूर्ण स्तम्भ पशु ही है। इसके अलावा पशुओं से ही हमें दूध की प्राप्ति होती है तथा अन्य विशेष कार्य भी पशुओं द्वारा ही संपादित होते हैं। अतः आज पशु धन को बढ़ाने की आवश्यकता है।

करीषिणी फलवती स्वधामिरां च नो गृहे। औदुम्बरस्य तेजसा धाता पुष्टिं दधातु में।।

(अर्थर्ववेद संहिता भाग–2 औदुम्बरमणि सूक्त–3)

(धातादेव औदुम्बर मणि की तेजस्विता से हमारे अंदर परिपुष्टता को प्रतिष्ठित करें। गोबर की खाद से परिपूर्ण करने वाली गौ संतानों से युक्त होकर हमें अन्न और दूध आदि पर्याप्त मात्रा में प्रदान करें।)

प्रस्तुत श्लोक भी आज के संदर्भ मं महत्वपूर्ण है। क्योंकि इसमें भी गायों के महत्व के बताया गया है। और देवताओं से उनकी वृद्धि की प्रार्थना की गयी है। क्योंकि गायों के गोबर से खाद होती है। जिससे कृषि पैदावार में वृद्धि होती है एवं दूध आदि भी प्राप्त होता है। अतः आज की समस्याओं को देखते हुये गायों एवं अन्य पशुओं के अधिकाधिक संरक्षण की जरूरत है।

❁ पर्यावरण चेतना फीचर्स

शीप का मोती

मैं 'पर्यावरण चेतना' छह साल से नियमित पाठक हूँ। यह पत्रिका मुझे अत्यंत प्रिय है। पर्यावरण चेतना मुझे कोर्स से संबंधित भी छपता रहता है। यह इतनी अच्छी पत्रिका है कि लाख छुपाने पर भी इसकी उपयोगिता छुपाई नहीं जा सकती है। इसकी उपयोगिता को देखते हुए अगर इसे शीप का मोती कहा जाए तो अतिश्योक्ति न होगी।

–मो० ताहिर अली, बिन्दकी, फतेहपुर

समुद्र मंथन से निकला अमृत

मैं 'पर्यावरण चेतना' का नया पाठक हूँ। और बहुत सी आवश्यक जानकारियों को पढ़कर विशेष आकर्षित हूं। आज के समय में इस जैसी अच्छी पत्रिका का मिलना आश्चर्य ही है।

इसको देखकर ऐसा लगता है, समुद्र मंथन से निकले रत्नों के समान है। तथा पढ़ने के पश्चात अनुभव होता है कि जिस अमृत को पाने के लिए देव और दानवों में युद्ध छिड़ गया था, उसे हम सहज ही प्राप्त कर रहे हैं। अतः यह पत्रिका समुद्र मंथन से निकले अमृत के समान है। आखिर हो भी क्यों न, इसे आप जैसे लोगों की दृढ़संकल्पशक्ति जो प्राप्त हो रही है।

–अमितांशु कुमार 'सुमन' पिथौरागढ़, उत्तरांचल

पूरे परिवार की प्रिय पत्रिका है

सितम्बर का अंक हाथ में आते ही चेहरा खिल उठा। उसमें 'वेद पुराण का पारिस्थितिकीय संतुलन में महत्व' एवं 'हैप्पी सारस'- लखनऊ चिड़ियाघर की एक बेटी की कहानी बेहद रूचिकर लगी। अन्य लेख भी प्रशंसनीय हैं। मैं विगत चार वर्ष से पर्यावरण चेतना का पाठक हूँ।

यह मेरे पूरे परिवार की प्रिय पत्रिका हैं। इस पत्रिका को पढ़कर ऐसा लगता है कि हिन्दी में पर्यावरण की यही एकमात्र ऐसी पत्रिका है जो सरल भाषा के कारण सभी के लिए उपयोगी है। पहले की अपेक्षा हालांकि इस पत्रिका में काफी सुधार हुए हैं। लेकिन इसकी कीमत अधिक है। अच्छा हो कि यदि इसके मूल्य में थोड़ी कमी कर दी जाए।

–देवेन्द्र वाजपेयी, इटावा, उ0प्र0

लेख प्रभावशाली हैं

पर्यावरण चेतना के सितम्बर अंक के लेख बहुत ही प्रभावशाली हैं। इसमें विशेष कालम के अन्तर्गत दिया गया लेख राजनीति पर्यावरण की जानकारी से भरपूर लगा। इसके साथ ही इस अंक में प्रकाशित अन्य लेख बासी भोजन और सड़े-गले फलों के सेवन से हानि, 'वेद पुराण का पारिस्थितिकीय संतुलन निर्माण में महत्व, 'बहुपयोगी पुदीना, कैसे बने महाद्वीप आदि जानकारीप्रद हैं।

–रघुबीर सिंह, रामनगर, (नैनीताल)

यत् ते मध्यं पृथिवि यच्च नभ्यं,
यास्तूर्जस्तन्वः ऊर्जा स्तवन्यः सबंभूवुः,
तासु नो ध्येयभिः न पवस्व,
माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः
पर्जन्यः पिता स उ नः पिपर्तुः ।।

(अथर्ववेद / भूमि सूक्त- १२-१-१२)

हे,

पृथ्वी तुम्हारी कटि, नाभि सम्पूर्ण शरीर से जो शक्ति संजात होती है वह हमारी रक्षा करें तुम्हारे मातृवत-स्नेहिल उच्छवासों से हम अभिसिंचित हो वसुंधरा जननी है, हम सब इसके पुत्र हैं, बादल हम समस्त प्राणियों के लिए पितृवत है।।

सम्पादक की कलम से...

युद्ध में नुकसान तो पर्यावरण का भी होगा

अमेरिका में वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर पिछले दिनों हुए हमले के बाद आज विश्वपटल पर जो युद्ध की स्थितियां उभरी हैं उससे ऐसा लगता है कि एक बार फिर से पर्यावरण को भारी क्षति उठानी पड़ेगी। क्योंकि किसी भी युद्ध में जानमाल की क्षति तो होती है साथ ही पर्यावरण भी प्रभावित होता है। जिसका कुप्रभाव सभी पर पड़ता है। चाहे किसी की हार हो या जीत। इससे वे लोग भी प्रभावित होते हैं जिनका युद्ध से कोई लेना-देना ही नहीं रहता है। जापान के हिरोशिमा और नागासाकी पर युद्ध के दौरान गिराए गए परमाणु बमों के परिणामों की जानकारी सभी को है। आज भी लोग उसके कुप्रभावों को झेल रहे हैं। लेकिन यहां प्रमुख बात यह है कि आज का युद्ध उससे कई गुना अधिक विध्वंसकारी होगा। क्योंकि पहले की अपेक्षा विज्ञान ने काफी तेजी से तरक्की की है। पहले से ज्यादा क्षमता के हथियार विकसित हो गए हैं। जो पलक झपकते ही किसी क्षेत्र या देश तो क्या दुनिया को भी तबाह कर सकते हैं।

यह बात भी सही है कि जिस तरह से आतंकवाद बढ़ता जा रहा है उससे जानमाल की भारी क्षति हो रही है। लेकिन आतंकवाद के खात्मे के लिए जो रणनीति अपनायी जा रही है उसको अमेरिका चाहे जितना भी सही ठहराये, कहीं न कहीं बदले की भावना और पूर्वाग्रह से ग्रसित होने की बू आती है। अमेरिका के दबाव में आकर या उससे अच्छे संबंध बनाकर उज्जवल भविष्य की कल्पना की उड़ान भरने वाले देश शायद यह भूल गए हैं कि खाड़ी युद्ध के दौरान पर्यावरण का कितना नुक्सान हुआ। समुद्र में तेल फैल जाने से असंख्य जीव-जन्तु काल के ग्रास बन गए। तेल के जलने से काली बारिश तक हो गयी लेकिन इस ओर आज भी कोई नहीं सोच रहा है। किसी ने भी इस बात की पहल नहीं की कि आतंकवाद से लड़ने के लिए युद्ध के अलावा अन्य विकल्पों पर विचार किया जाना चाहिए। एक मजबूत और विकसित राष्ट्र द्वारा आवेश एवं उत्तेजना में उठाया गया कदम सारी प्रकृति-पर्यावरण और मानव जाति को प्रभावित कर सकता है।

फिलहाल वर्तमान में जो हालात चल रहे हैं उससे ऐसा नहीं लगता है कि हम पर्यावरण को होने वाली क्षति से रोक पाएंगे। क्योंकि आतंकवाद से निपटने के चक्कर में पर्यावरण के पूरी तरह से अनदेखा कर दिया गया है। लेकिन इन स्थितियो के बीच कहीं न कहीं उम्मीद की किरण तो अवश्य है कि शायद कोई शांतिपूर्ण तरीका निकले और पर्यावरण को और नुकसान न उठाना पड़े।

(प्रधान संपादक)

अंग्रेजो के शासक भी यूरोप विकास के और अमेरि बनाकर व जुटाये थे. ही देश के ध्यान नहीं पर बांध के विकास या तो जंग नही तो ल वनवासियों ही नहीं उ इसलि कानून औ रखा गया. शासन वाले का इलाका के अनुसार रही थी. लागू करके के दशक गया. इस पर ही वन सन् 1 की देखरेख नीति बनाई दोहन ओर विरोधामासी इस नीति पहा अक्टूब

कैसे बर्बाद हुए हमारे जंगल?

अंग्रेजों के जाने के बाद आजाद भारत के शासकों ने तय किया कि भारत को भी यूरोप और अमरीका जैसे औद्योगिक विकास के रास्ते पर चलना होगा. यूरोप और अमेरिका दुनियाभर के देशों को गुलाम बनाकर वहा से अपने विकास के साधन जुटाये थे. लेकिन भारत के पास अपने ही देश के साधनों के अलावा और कोई ध्यान नहीं था. रेल लाइनें, खदानें, नदियों पर बांध परियोजनाएं, कारखाने, शहरों के विकास और बिजली उत्पादन के लिए या तो जंगल की जमीन चाहिए थी और नही तो लकड़ी. ऐसे में जंगलों पर नियंत्रण वनवासियों को वापस कर देने का सवाल ही नहीं उठाता था.

इसलिए अंग्रेजों के द्वारा बनाया गया कानून और वन विभाग को ही बरकरार रखा गया. अंग्रेजों के समय राजाओं के शासन वाले रियासतों का एक बड़ा जंगल का इलाका की देखरेख पुराने रीति रिवाज के अनुसार ही वनवासियों व्दारा की जा रही थी. आजादी के बाद वन कानून लागू करके इन इलाकों को भी सन् 1950 के दशक में वन विभाग को सौप दिया गया. इस तरह से पूरे भारत के जंगलों पर ही वनविभाग का कब्जा हो गया.

सन् 1952 में भारत सरकार ने वनों की देखरेख के लिए एक नई राष्ट्रीय वन नीति बनाई थी. इस नीति में वनों का दोहन ओर अनका संरक्षण दोनों ही विरोधाभासी बातें शामिल की गई थी. इस नीति के मुख्य बिंदु निम्न प्रकार है :

- पहाड़ी इलाकों में वन विनाश को रोककर बरसात का पानी को जमीन में रिसने की व्यवस्था करनी होगी ताकि नदियों में पानी का बहाव कम न हो.

- नदियों के किनारों पर वन विनाश को रोककर मिट्टी का कटाव को रोकना होगा.
- लोगों की सामूहिम भला के लिए नए नए इलाकों को पेड़ों से हरा भरा करना होगा.
- चारागाह, जलाऊ लकड़ी और अन्य छोटे मोटे काम के लिए लकड़ी का विकास होगा ताकि जंगलों पर इन चीजों के लिए दबाव कम हो.
- माल और मनुष्यों की यातायात, उद्योग और फौजी जरूरतों के लिए लकड़ी उपलब्ध कराना होगा.
- जंगलों से अधिक से अधिक मुनाफा कमाना होगा.

सन् 1960 के बाद जोर शोर से जंगल लगाने की बात की गई. परन्तु केवल यूकैलिप्टस, सागवान और चीड जैसी प्रजातियों की ही रोपणियां लगाई गई जिससे औद्योगिक जरूरतों की पूर्ति हो सकती थी और व्यापारिक लाभ भी कमाया जा सकता था. साथ साथ विश्व बैंक और कुछ अन्य विदेशी दानदाता संस्थाओं के कहने पर एक **सामाजिक वानिकी** कार्यक्रम भी शुरू किया गया था. इसके तहत एक तरफ किसानों को मुनाफा के लिए यूकैलिप्टस जैसे पौधे लगाने को कहा गया था और दूसरी तरफ सरकारी पड़त और बंजर भूमि पर आम गरीब जनता के उपयोग के लिए जलाऊ और अन्य जरूरत की लकडी लगाने की बात कही गई थी.
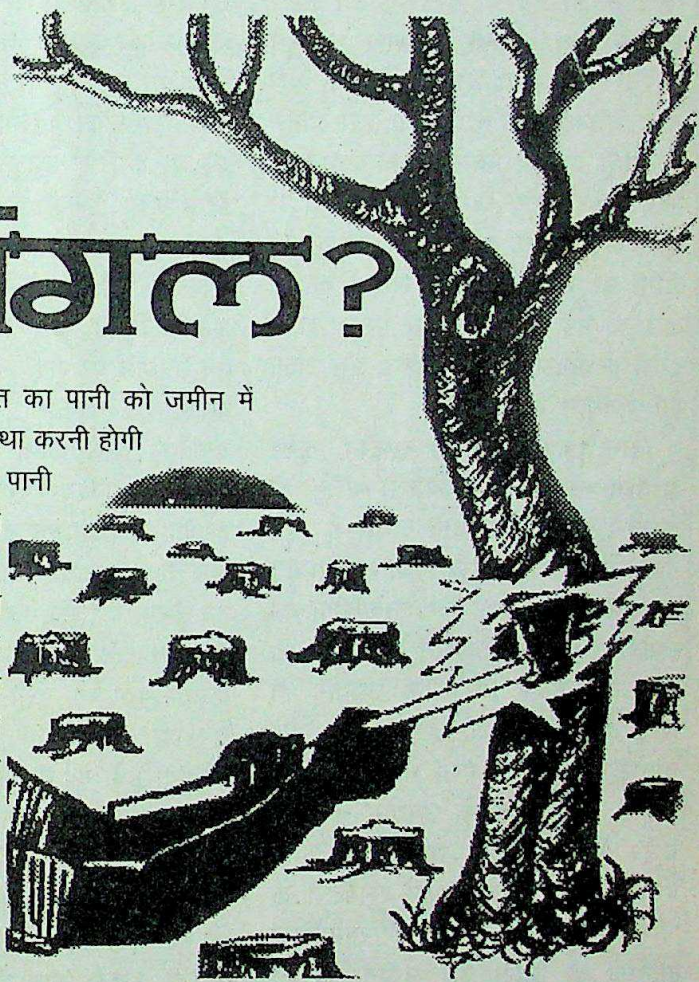
अंग्रेजों और राजाओं के जमाना से

चला आ रहा शिकार खेलने की शौकिया आदत अमीरों ने आजादी के बाद और मस्ती के साथ पूरी करते गए थे. इसके कारण जंगली जानवरों की संख्या में भयानक कमी आ गई थी. कई प्रजातियां तो खत्म ही चुके थे. इसलिए सन् 1972 में एक **वन्य प्राणी संरक्षण कानून** पारित किया गया और शिकार पर पूरी तरह प्रतिबंध लगा दिया गया. इस कानून के तहत जंगली जानवरों को बचाने के लिए कुछ विशेष जगहों को मनुष्यों से मुक्त कर देने या उन जगहों पर रह रहे लोगों पर सख्त पाबंदियां लगाने की भी बात की गई. वन्य जीवों पर हमला करने वालों के खिलाफ सख्त दण्ड और सजा का प्रावधान किया गया.

सन् 1976 में गठित **राष्ट्रीय कृषि आयोग** ने वनों की बिगड़ती हालत को देखकर इसका पूरा दोष जंगल में रहने वाले लोगों के मत्थे मढ़ दिया था. आयोग ने सिफारिश की थी कि वनवासियों को सख्ती से जंगलों में घुसने से रोका जाए. वनों का केवल व्यापारिक उपयोग हो और वन कानून को इसके लिए और कठोर बनाए जाए ऐसा भी आयोग का कहना था जनता के उपयोग के लिए बंजर भूमि, ग्रामीण सार्वजनिक भूमि, पंचायती भूमि, सड़क और रेलपटरी के किनारे और नहरों के तट पर सामाजिक वानिकी के व्दारा पेड़ लगाने का भी सुझाव आयोग ने दिया. सन् 1980 में एक नया वन कानून का मसौदा भी संसद में पेश किया गया था इन्हीं सिफारिशों को लागू करने के लिए परन्तु व्यापक विरोध होने के कारण यह वापस ले लिया गया था.

देश के शासन चलाने के लिए जो कानून बना है, जिसे **संविधान** कहा जाता है, उसमें जंगलों पर कानून बनाने और उनकी देखरेख करने की जिम्मेदारी राज्य सरकारों को दी हुई थी. सन् 1976 में संविधान को बदलकर केन्द्र सरकार को भी वनों पर कानून बनाने का हक दिया गया. इसके बाद सन् 1980 में केन्द्र सरकार ने **वन संरक्षण अधिनियम** पारित की थी. इसमें वनों के विकास के अलावा किसी दूसरे काम के लिए वनों का उपयोग पर रोक लगा दिया गया है. केवल केंद्र सरकार की अनुमति से ही वनों को दसरे कामों के लिए देने का नियम बना दिया गया. सन् 1988 में इसको संशोधित कर इसके प्रावधानों को और कठोर बनाया गया. सन् 1980 में ही वन विभाग को कृषि मंत्रालय से निकालकर एक नया पर्यावरण और वन मंत्रालय बनाया गया था. इसी मंत्रालय को वन संरक्षण कानून के क्रियान्वयन की जिम्मेदारी दी गई है. किसी भी परियोजना के लिए मंजूरी अब इस मंत्रालय से लेनी पड़ती है.

सन् 1988 में एक नई वन नीति तैयार की गई जिसमें वनों का व्यापारिक उपयोग को ही उसके नाश के लिए जिम्मेदार ठहराया गया. इस नीति में प्रकृति और मनुष्यों के बीच तालमेल बनाकर जंगलों को बचाने और बढ़ाने की बात की गई. वनवासियों की जरूरतों और वनों पर उनका पुराने जमाने से चला आ रहा हक को ध्यान में रखकर उन्हें जंगलों का रखरखाव में भागीदार बनाने की बात भी इस नीति में की गई. इसके बाद ही सन् 1990 मे केन्द्रीय सरकार ने एक आदेश जारी कर आरक्षित वनों को बचाने के लिए वन विभाग और जनता की साझेदारी वाली वन संरक्षण समितियों का गठन को मंजूरी दे दी. इस **संयुक्त वन प्रबंधन** कार्यक्रम के तहत वनवासियों को संरक्षित वनों से होनवाले उत्पादन का एक हिस्से का हकदार बनाया गया है. वन भूमि पर बहुत सारे लोग लम्बे समय से खेती करते आ रहे है. हालांकि यह गैर कानूनी है फिर भी राज्य सरकारें समय पर ऐसे **अतिक्रमण** की खेती करने वाले लोगों को पट्टा देते रहे है. केंद्रीय सरकार को भी इस परम्परा को बरकरार रखकर सन् 1980 के 10 अक्टूबर तक के सभी वनभूमि के कृषकों को पट्टा देने का आदेश जारी करना पड़ा है.

सन् 1994 में केन्द्र सरकार फिरसे एक नया वन कानून का मसौदा तैयार किया था. जिसमें मौजूदा वन कानून के प्रावधानों को और सख्त बना दिया गया है. परन्तु अभी तक इसको संसद में पेश नही किया गया है.

आजादी के बाद की सरकारी नीतियों में से कुछ विरोधाभासी है तो कुछ जनता के पक्ष में है परन्तु कानून सभी जनविरोधी है. इन नीतियों और कानूनों का सही मूल्याकंन करने के लिए पहले गत पचास
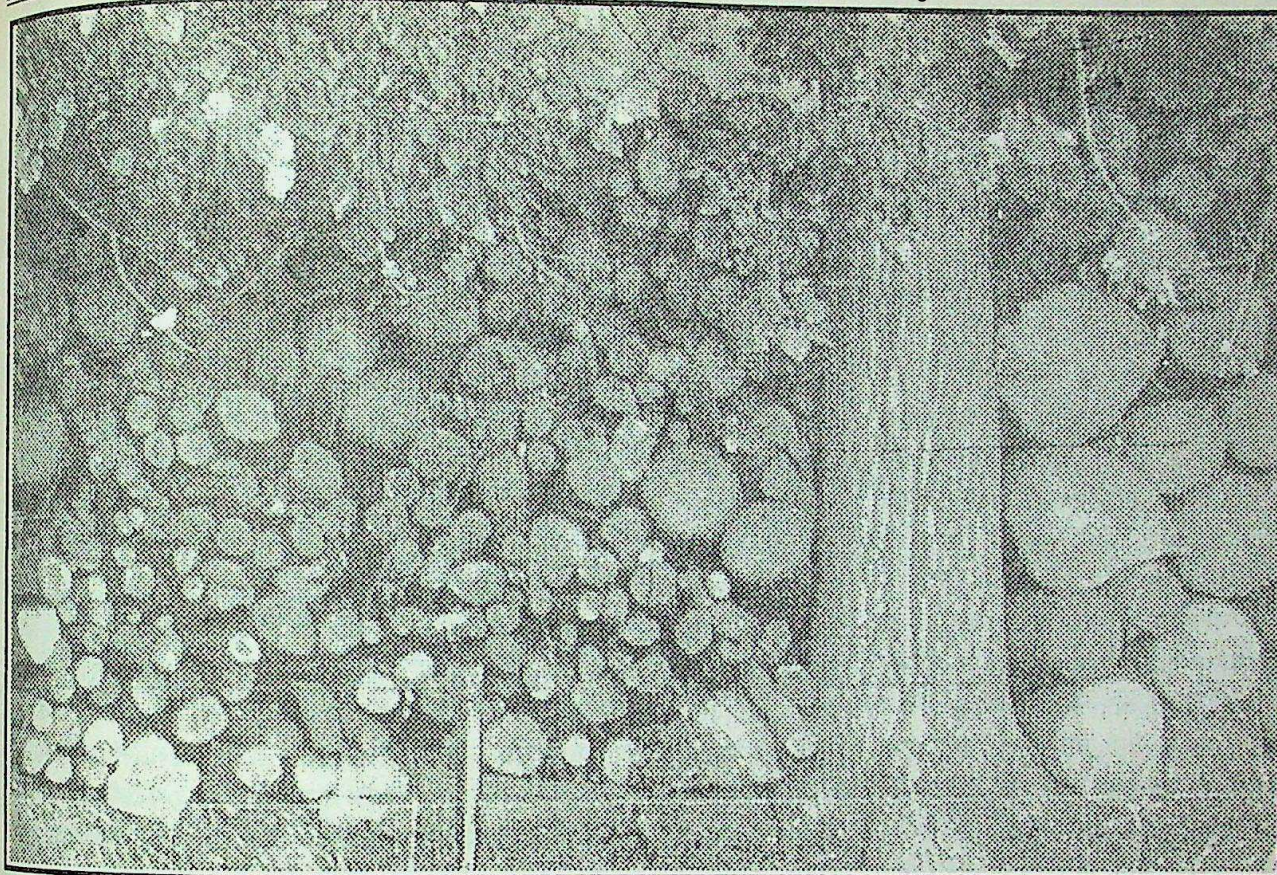
साल के दौरान जंगलों की स्थिति में क्या बदलाव आया है यह मालूम हरना होगा. वन विभाग की भूमिका क्या रही है यह भी देखना होगा. इसके बाद ही हम जंगलों के नष्ट हो जाने के सही कारणों का पता लगा सकेंगे।

मध्य प्रदेश का झाबुआ जिला का अलीराजपुर तहसील भील आदिवासियों का इलाका है. भील लोग पाकिस्तान के सिंध से लेकर राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, और महाराष्ट्र में फैले हुए है. काफी समय तक यह लोग स्थायी खेती पर आधारित तथाकथित सभ्यता के घेरे के बाहर ही रहे. इस्वी चौथी सदी तक भी यह लोग उस समय का ताकतवर गुप्त राजाओं के प्रभाव को अपने जंगली इलाके में चलने नहीं दिए. इसका मुख्य कारण यह था कि यह लोग तीर चलाने में बहुत उस्ताद थे और अपने इलाकों को बाहरी लोगों से बचाने के लिए जी जान देकर लड़ते थे. परन्तु मुसलमानों के आने के बाद से यह सब बदल गया क्योंकि पहली बार लड़ाईयां बन्दूकों से होने लगी जिनके सामने तीर कमान कमजोर पड़ गये. मुसलमान लोग राजपूतों को राजस्थान से खदेड़ा तो वह लोग भीलों को खदेड़कर उनकी जगहों पर आ बसे. बाद में दिल्ली के सुलतानों के शासन के जमाने में मुसलमान लोग भी मालवा के उपजाऊ इलाकों से भीलों को खदेड़ने का काम किया.

फिर भी काफी समय तक पहाड़ों में और जंगलों में भील लोग आजाद जीवन जीते रहे. शिकार के अलावा झूम खेती भी करते थे. अठारहवी सदी से राजपूत लोग इन पहाड़ी इलाकों में घुसकर सामंती राज कायम करने लगे. इसी समय झाबुआ जिला पर यह लोग कब्जा कर लिए. अंग्रेजो के आने के बाद पश्चिमी मध्यप्रदेश का निमाड़ का कुछ इलाका उनके कब्जे में गया परन्तु ज्यादातर इलाका अंग्रेजों की अनुमति से राजपूत राजाओं के कब्जे में ही रहा. इस पूरे समय में भीलों ने राजपूतों और अंग्रेजों के खिलाफ जबर्दस्त लड़ाईयां लड़ी परन्तु धोखधड़ी से और बन्दूकों की मदद से उन्हें हरा दिया गया. इस दौर के दो **शहीद छाज्या** नायक और **टंटीया भील** की दिलेरी आज भी लोगों द्वारा याद की जाती है.

आजादी से पहले अलीराजपुर में एक राजपूत राजा का राज था. इस तहसील के कट्ठीवाडा, मथवाड़ और सोण्डवा इलाकों में छोटे छोटे ठाकरों का शासक था. राजपूतों ने भील राजाओं से राज छीनकर भीलों पर सामंती शासन लाद दिए थे. भीलों से बेगार करवाकर और उनसे लगान वसूलकर यह राजपूत लोग अपना राज चलाते थे. इनकी बातें नहीं मानने पर भीलों पर तरह तरह की शारीरिक अत्याचार किया जाता था. इसलिए कई लोग इन राजाओं की ज्यादातियों से बचने के लिए अन्दर के इलाकों में भागकर रहते थे. कभी-कभी भील लोग इन राजपूतों की सामंती

ज्यादातियों के खिलाफ लड़ाई भी छेड़ देते थे. सन 1889 में एक भयानक अकाल पड़ा था और लोगों के पास खाने को कुछ नहीं था. उस समय सोरवा का पटेल **छीतू किराड़** के नेतृत्व में लोगों ने बाजारों को और गोदामों को लूटना शुरू किया था. तब अलीराजपुर की रानी ने अंग्रेजों से मदद लेकर इस बगावत को दबार्यी थी.

यह इलाका विंध्य पहाड़ियों के आखरी छोर होने के कारण काफी ऊबड़ खाबड़ है और एक समय यह घने जंगलों से ढंका हुआ था. तहसील की दक्षिण सीमा से नर्मदा नदी बहाकर निकलती है. अंग्रेजों के सीधे शासन के नीचे न आने के कारण यह पूरा इलाका में जंगल आजादी से पहले व्यापक दोहन से बचा हुआ था. सन 1956 में मध्य प्रदेश राज्य का गठन के बाद एक झटके से बदलाव आए. पूरे इलाके में सन 1927 का वन कानून लागू हो गया. इसके बाद जंगलों को आरक्षित घोषित कर दिया गया. कानून के अंर्तगत हकों के लिए दावा करने का जो प्रावधान है उसके बारे में अपपढ़ भीलों को कुछ मालूम ही नहीं था. इसलिए उनके व्दारा की जा रही झूम खेती को बन्द कर थोड़े-थोड़े जमीनों पर आदिवासियों को बसाकर उनकी ज्यादातर जमीनों को वन विभाग के हवाले कर दिया गया. गुजरात के बड़ोदा और अहमदाबाद में नए नए उद्योग लग रहे थे और उन शहरों में मकानों का भी निर्माण हो रहा था जिसके लिउ लकडी चाहिए थी. इसलिए लकड़ी की अंधाधुंध कटाई शुरू हो गई. वन कर्मचारी और ठेकेदारों ने सभी नियम ताक पर रखकर पैसा कमाने के चक्कर में जंगलों को साफ किए.

नतीजा यह हुआ कि जिस जंगल से भीलों की खेती, जानवन पालने और दूसरे कामों के लिए चीजें मिलती थी, वह नष्ट हो गया. साथ ही वन कानून के अनुसार आराक्षित वन में उनका कोई भी अधिकार न होने के कारण वे वन विभाग के कर्मचारियों की मनमानी का शिकार हुए. आधुनिक विकास से शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्रामीण विकास आदि का जो फायदा मिल सकते थे वह भी सरकारी कर्मचारियों के भ्रष्टाचार के कारण ज्यादातर लोगों को नहीं मिल पाया. बल्कि सड़कों का विस्तार का फायदा उठाकर बनिये इस इलाके में घुस आये और दुकानदारी और सूदखोरी व्दारा भीलों का शोषण करने लगे. सरकारी कर्मचारी और बनिये गांव के मुखियाओं को लालच देकर उनसे बाकी गांववालों को ठगने का काम करवाने लगे. जल्दी लोग भयंकर गरीबी का शिकार हो गए. एक लडाकू और आजाद कौम को कुछ ही सालों में बुरी तरह से दबा दिया गया.

सन 1983 में मथवाड़ इलाके के लोगों ने कुछ सामाजिक कार्यकर्ताओं की बातें सुनकर अपनी खराब स्थिति के बारे में सोचना शुरू कर दिए. उन लोगों ने पाया कि जंगलों पर से उनका हक खत्म हो जाने के कारण ही उनकी हालत इतनी बुरी हो गई थी. सबसे बड़ी समस्या वन विभाग की जमीन पर खेती करने को लेकर थी. जीविका के और कोई साधन न होने के कारण लोगों को लकड़ी कटाई के बाद साफ पड़ी जमीन पर खेती करनी पड़ती थी. वन कर्मचारी पैसा, घी, मुर्गी, आदि लेकर यह गैर कानूनी काम को होने देते थे. लोगों को मार भी खानी पड़ती थी. उस समय मध्य प्रदेश में सन 1976 तक के सभी ऐसी खेती, जिसे **अतिक्रमण** कहा जाता है, के लिए स्थायी पट्टा दिए जाने का प्रावधान था. परन्तु मथवाड़ के लोग अतिक्रमण की खेती कर रहें हैं यह बात वन विभाग के कागजों में कहीं भी लिखा हुआ नहीं था इसलिए उन्हें पट्टर नहीं दिया गया था. गरीबी और दमन की दोहरी मार से लोगों का कमर टूटा हुआ था और निराश और आतंक फैली हुई थी. लगातार मीटिंगों में सोच विचार कर यह समझ बनी कि-

- वन विभाग के स्थानीय कर्मचारी ही सब कुछ नहीं है बल्कि इनके ऊपर और बहुत सारे लोग है जो तसल्ली से लोगों की समस्याओं को सुन सकते है और उनका समाधान भी कर सकते है.
- देश का बुनियादी कानून संविधान में सभी नागरिकों को जीने का अधिकार दिया गया है जो किसी भी अन्य

कानून से छीना नहीं जा सकता है.

● इन अधिकारों को प्राप्त करने के लिए आन्दोलन करने का बुनियादी अधिकार भी संविधान में दिया हुआ है.

● इन सभी बातों को फायदा लेने के लिए एकजुट होना पड़ेगा यानी संगठन बनाना पड़ेगा.

फिर भी लोगों में डर बना हुआ था कि अगर वह विरोध का रास्ता अपनाएंगें तो खेती बन्द कर दी जाएगी और उनके साथ मारपीट भी होगी, गांव-गांव में आदिवासियों में ही सरकारी कर्मचारियों के दलाल भी थे जो लोगों को धमकी देते थे कि वह विरोध का रास्ता न अपनाए. वन कर्मचारियों ने देखा कि सामाजिक कार्यकर्ताओं के कारण ही आदिवासी लोग धीरे-धीरे हिम्मत जुटा रहे थे. इसलिए यह लोगों ने एक कार्यकर्ता को अपनी चौकी पर बातचीत के लिए बुलाकर उसे बुरी तरह पीट दिए.

कार्यकर्ताओं ने तुरन्त अपने सम्पकों का इस्तेमाल कर इस बात का बहुत प्रचार किए. देश भर के ऊँचे स्तर के अधिकारी, राजनेता और अखबारों के माध्यम से वनकर्मियों की यह ज्यादती और उनके व्दारा लोगों पर किया जा रहा अत्याचार की बात को फैला दिया गया.

इसके कारण स्थानीय प्रशासन पर दबाव बना और दोषी कर्मचारियों के खिलाफ पुलिस को मामले दर्ज करने पड़े. इस सबसे वन कर्मचारी भी थोड़ा डर गए और लोगों के भी हौंसले बुलन्द हुए. वे कभी सोच ही नहीं सकते थे. कि सरकारी कर्मचारियों पर भी केस लग सकते है. आखिर में कुछ लोग ने अपने हकों के लिए लड़ने का फैसला कर लिया।

फलस्वरूप सन 1984 में पहली बार इन्दौर के कॉनसर्वेटर से मथवाड़ की लोगों की आमने सामने बात हुई. बातचीत से खेती का कोई हल नहीं निकला. कॉनसर्वेटर यही करते रहे कि वन विभाग के कागजों में खेती के बारे में कुछ लिखा नहीं है इसलिए खेती को बन्द करनी पड़ेगी. उस समय लोग सभा के लिए चुनाव चल रहा था तो मौके का फायदा उठाकर लोगों ने एक साथ जाकर सांसद दिलीप सिंह भूरिया को कुछ करने के लिए कहा. एक और मीटिंग हुई जिसमें फिर से कॉनसर्वेटर आए और सांसद की उपस्थिति में यही तय हुआ कि खेती होगी परन्तु कुछ शर्तों पर.।

यह तय हुआ कि लोग व्दारा की जा रही अतिक्रमण की खेती का एक चौथाई हिस्सा में बांस के पौधे लगायेंगें और इसके लिए उन्हें लगाने और देखरेख करने की मजदूरी दी जायेगी एवं बाकी जमीन पर वे खेती कर पाएंगें. हर साल ऐसे ही एक चौथाई हिस्सा में और बांस लगानी पड़ेगी और चार सालों में उनके पास बांस का बगीचा होगा जिससे आगे वे बांस बेचकर ही जी सकेंगें. लोगों ने इस योजना को हास्यास्पद माना परन्तु यह देखते हुए कि पूरा विरोध करने की ताकत संगठन में नहीं थी इस समझौते के लिए वे राजी हो गए. इस योजना, जिसे हितग्राही योजना के नाम से जाना जाता था, के प्रति स्थानीय वनकर्मचारियों में भी कोई उत्साह नहीं था क्योंकि वह देख रहे थे कि धीरे धीरे आदिवासी लोग अपनी स्थिति मजबूत कर रहे थे.

इसलिए यह कर्मचारी कभी ठीक से योजना को लागू ही नहीं किए और वह इससे पैसे खा पी गए. फिर भी लोगों ने बांस लगाए और आज करीब बारह साल बाद भी उन बांसों से केवल घर के काम हो इतना उत्पादन होता है. लोग कहते है कि बांस बेचकर जीने का सलाह देने वाले उस कॉनसर्वेटर को खुदकी अपनी नौकरी छोड़कर बांस का बगीचा बनाकर जीना चाहिए।

सन 1989 तक वन विभाग ओर लोगों के बीच लगातार झगड़े होते रहे. सन 1987 में एक बार दूसरे जगहों से वन कर्मचारियों को लाकर मारपीट कर जबर्दस्ती खेती बन्द करने की कोशिश की गई थी. **लोगों ने पहले गांवों में इस गुण्डागर्दी का विरोध किया ओर फिर करीब साठ किमी पैदल जुलूस निकालकर अलीराजपुर में एक लम्बी धरना देकर प्रशासन को मजबूत किया इन ज्यादातियों को रोकने के लिए.**

आन्दोलन को दबाने का एक आसान तरीका होता है आन्दोलनकारियों पर झूठें मुकदमों लगा देना. कार्यकर्ताओं और लोगों पर सैंकड़ों की संख्या में केंस लगाए गए. संगठन की ओर से भी जवाबी केस लगाए गए. **पुलिसवाले आमतौर पर संगठन के लोगों की शिकायत पर केस नहीं लगाते है इसलिए कचहरी में जाकर वकील के व्दारा जज के पास अर्जी कर निजी केस लगाया गया.** धरना आदि के माध्यम से दबाव बनाकर कई कार झूठे केसों को वापस भी करवायी गयी.

झगड़ा केवल अतिक्रमण की खेती को लेकर ही नहीं था. वन विभाग मनमानी ढंग से गांव के आसपास के जंगलों में पौधे लगाने का भी कार्यक्रम चलाता था. ऐसे करने के लिए लम्बी खंतियां खोदकर पूरे जंगल को धेर लिया जाता था ताकि उसमें जानवर न घुस सकें. जाहिर है कि इससे गांववालों को बहुत परेशानी होती थी. **वन विभाग को पौधों से कोई मतलब नहीं था सिर्फ इनकों लगाने के लिए खर्च किए जाने वाले पैसों में उनकी दिलचस्पी थी.** सन 1984 से अलीराजपुर तहसील में बनों की कटाई बन्द कर दी गई थी. जिसकी वजह से वन कर्मचारियों की ऊपरी कमाई का एक प्रधान जरिया गायब हो गया था. इसलिए पौधे लगाने में इतनी रूचि दिखाई जाने लगी. कई बार तो ट्रैक्टर भर भर कर पौधे लाकर ऐसे ही लगाए बिना फेंक दिया जाता था. गाव के निस्तार की जमीनों को रोकर पौधा लगाने का वन विभाग का यह कार्यक्रम को लेकर भी घमासान लड़ाईयां हुई है.

इन सभी लड़ाईयों में महिलाएं बहुत सक्रिय रही है.

झुण्ड के झुण्ड जाकर काम की जगह पर लेट जाना और मजदूरों को गैंती चलाने न देना, अधिकारियों का घेराव करना और एक मौके पर जब उनके खिलाफ पुलिसवालों ने झूठें मुकदमा कायम किए थे तक पुजिस थाना को ही घेर लेना, यह सभी वे कर चुके है. इसके अलावा तेंदू पत्ता की मजबूती नहीं मिलने पर और जंगल से घरेलू उपयोग के लिए लकड़ी लाने पर रोक लगाने के विरोध में भी महिलाएं ही सक्रिय रही है. महिलाओं की इस सक्रियता सम्भव करने के लिए उनके साथ अलग से मीटिगें की गई है. **मीटिंगों में केवल जंगल के ही सवाल नहीं बल्कि महिलाओं की खुद की समस्यायों को लेकर और समाज में पुरूषों की तुलना में उनकी दोयम दर्जा पर भी चर्चाएं होती रही है.**

सन 1989 में वन विभाग एक आखरी कोशिश की थी जंगलों पर वापस अपना कब्जा कायम करने के लिए परन्तु अलीराजपुर में हजारों महिलाओं और पुरूष के व्दारा 12 दिन तक धरना, जिसमें 7 दिनों तक भूख हड़ताल भी शामिल था, के बाद पक्के तौर पर जंगलों पर लोगों का हक कायम हो गया है. लोग अपने गांवों के जंगलों की देखरेख खुद करते है और उसका उपयोग भी वह खुद तय करते है. यहां तक कि बाहर के लोगों को भी लकड़ी काटने नहीं दिया जाता है. इसके लिए लोग झगड़ें भी किए है. कई बार वन विभाग के लोग बाहरी लोगों से पैसा लेकर संगठन के व्दारा बचाए गए जंगलों में ही भेज देते है लकड़ी काटने के लिए. ऐसे में कई बार मारपीट तक की भी नौबत आई है. फिर भी लोगों ने हिम्मत नहीं हारी है और आज हजारों हेक्टेयर जंगल लोगों के प्रयासों से फिर से हरे भरे दिखने लगे है।

—पर्यावरण चेतना डेस्क

बूढ़े हो चुके टोटो को जाना होगा

फ्रैंकफर्ट। भरे पूरे परिवार के इस प्रमुख को केवल इसलिये बेघर किया जा रहा है क्योंकि अब वह बूढ़ा, लाचार और असहाय हो गया है। टोटो नाम के इस 45 वर्षीय चिम्पाजी को जर्मनी में फ्रैंकफर्ट चिड़ियाघर के निदेशक क्रिश्चियन आर.शिमट इसलिये अफ्रीका भेजने का विचार कर रहे हैं क्योंकि अब वह बूढ़ा और बीमार हो चला है।

12 बच्चों और बीसियों नाती पोतों वाले टोटो को अफ्रीका से उस समय लाया गया था जब वह केवल दस वर्ष का था। तब से वह जर्मनी में ही रह रहा है। बिल्ड समाचार पत्र में उदास आंखों से अपने पिजडे से दुनिया को ताकते टोटो की तस्वीर और उसकी कहानी छापी। साथ ही यह भी बताया कि बूढ़े चिम्पांजी ज्यादातर आक्रमण हिंसक और खतरनाक हो जाते हैं। टोटो से निपटने का एक अन्य सुझाव आया कि उसे मारकर उसका मांस शेरों को खिला दिया जाए। हालांकि पशु प्रेमियों ने इसका कड़ा विरोध करते हुए टोटो को बचाओ अभियान छेड़ दिया है।

टोटो के रखवाले होर्स क्लोस ने कहा कि टोटो बहुत स्नेही है और अगर उसे फिर से अफ्रीका के जंगलों में ले जाकर छोड़ दिया गया तो उसका दिल टूट जाएगा।

ग्लोबल वार्मिंग पर आस्ट्रेलिया को चेतावनी

सिडनी। अमरीका के पूर्व प्रधानमंत्री बिल क्लिंटन ने आस्ट्रेलिया को चेतावनी दी है कि ग्लोबल वार्मिंग के नियंत्रित न होने पर उसे अपने शरणाथियों की बाढ़ को झेलना पड़ सकता है। बच्चों के अस्पताल के लिये धनराशि एकत्र करने को आयोजित किये गये एक कार्यक्रम में क्लिंटन ने राष्ट्रपति पद पर अपने कार्यकाल के दौरान इस्राइल और पाकिस्तान के बीच शांति समझौता न करा पाने पर खेद व्यक्त किया।

पंचमुखी बछिया का जन्म

परामैरिबो (सूरीनाम)। यहां एक हिन्दू परिवार ने पांच मुंह वाली एक बछिया को दया के आधार पर मार डालने की बजाय उसका पालन–पोषण करने का फैसला किया है। बछिया का एक मुंह आगे, दो मुंह गर्दन के अगल–बगल और दो मुंह गर्दन के नीचे हैं लेकिन इनमें से कोई भी मुंह काम करने के लायक नहीं है।

जर्मनी में चमगादड़ उत्सव

बर्लिन। क्या नजारा होगा....... जब दस हजार चमगादड़ और उन्हें देखने को उतावले होंगे उनके 15 हजार दर्शक। जर्मनी में बाकायदा और बदस्तूर चमगादड़ उत्सव मनाया जाता है।

दो दिवसीय पांचवे वार्षिक यूरोपीय चमगादड़ उत्सव में बर्लिन का स्पैनदू किला और उसमें रहने वाले हजारों चमगादड़ आकर्षण का केन्द्र रहे। शाम होते ही रोजाना लगभग दस हजार चमगादड़ पूरी निष्ठा से अपने इस प्रिय रैन बसेरे में लौटने लगते हैं। इनमें कई दुर्लभ प्रजाति के चमगादड़ होते है।

रोज दो सेब खाएं और धमनियां सख्त होने से बचाएं

टोक्यो। 'एक सेब खाओ डॉक्टर भगाओ' की कहावत कितनी सही है यह शोध का विषय हो सकता है लेकिन जापानी चिकित्सा विशेषज्ञों का कहना है कि रोजाना दो सेब खाने से खून में मौजूद उस बसा की मात्रा कम होती है जो धमनियों को सख्त बना देती है। जापान के नेशनल इंस्टीच्यूट ऑफ फ्रूट ट्री साइंसेज के शोधकर्ता कीहची तनाका ने कहा रोजाना 400 ग्राम सेब खाने से वसा की मात्रा कम हो जाती है। तनाका के शोध दल ने 30 से 57 साल की उम्र के 14 वयस्क; व्यक्तियों से तीन हफ्ते तक डेढ़ से दो सेब खाने को कहा। शोध दल ने पाया कि इनके खून में वसा की मात्रा 21 प्रतिशत तक कम हो गयी है। धमनियों के सख्त हो जाने से उच्च रक्तचान और ह्रदयाघात तक हो जाता है।

कुकुरमुत्ते का पौधा नहीं है वेदों का 'सोम'

नयी दिल्ली। भारतीय वैज्ञानिकों के एक दल ने अमेरिकी वैज्ञानिकों की इस खोज को चुनौती दी है कि 'अमानिता मस्कैटिया' नामक कुकुरमुत्ते का पौधा ही वेदों में उल्लिखित 'सोम' है।

वैदिक साहित्य के अनुसार, सोम पौधे के रस से एक दैविक पेय बनता था जिसके अभूतपूर्व चिकित्सकीय गुण होते थे। यह पेय मनुष्य के प्राकृतिक स्वास्थ्य को बनाए रखता था। उड़ीसा गवर्नमेंट साइंस कालेज के पौध विज्ञान विभाग के डा. एस. एन. पाढ़ी ने गत दिवस यहां एक संगोष्ठी में ये विचार व्यक्ति किए।

असली 'सोम' पौधे की खोज कर रही भारतीय टीम का नेतृत्व कर रहे पाढ़ी ने कहा कि यह पौधा न तो नशीली और न ही भ्रमित करने वाले पदार्थ का उत्पादन करता है। यह पौधा, उपयोग करने वालों को चुस्त और चौकन्ना बनाए रखने में मदद करता है।

अमेरिकी वैज्ञानिकों आर. ई. स्कूल्टस एवं ए. हॉफमैन ने १९७६ में अपनी किताब 'प्लांट ऑफ गॉड्स' में 'अमानिता मस्कैरिया' की सोम पौधे के रूप में पहचान की है। इस खोज को 'एथनोबोटानिकल सोसायटी' ने भी स्वीकृति दी है।

श्री पाढ़ी का कहना है कि यह मशरूम सोम पौधे से बिल्कुल भिन्न है क्योंकि इस पौधे का रस नशीला और भ्रमित करने वाला होता है। जबकि असली 'सोमरस' में ऐसा कोई नशीला प्रभाव नहीं होता है। उन्होंने यह भी कहा कि मशरूम का आकृति विज्ञान वेदों में वर्णित 'सोम पौधे' से अलग है। इसके अलावा हिन्दू धर्म में भगवान को मशरूम चढ़ाना भी वर्जित है।

अब कम्प्यूटर से हो सकेगी सही ढंग से खेतों की सिंचाई

नई दिल्ली। अब कम्प्यूटरों और इलेक्ट्रेनिकी की मदद से खेतों की सिंचाई भी होने लगी है।

कम्प्यूटर से की गयी फसल तथा मिट्टी सम्बन्धी विस्तारपूर्ण सूचनाओं को खेतों की सिंचाई के सही ढंग से करने में उपयोगी पाया गया है। इसके फलस्वरूप सिंचाई की परंपरागत विधियां अब मिट्ती जा रही हैं। और श्रम, पानी, ऊर्जा, धन तथा समय की भी काफी बचत हो रही हैं।

नयी प्रणाली में कम्प्यूटर है। 1.5 मिनट के बाद केन्द्रीय फब्वारों के बारे में छानबीन करता रहता है। कि वे चल रहे हैं या बन्द पड़े हैं, या उनमें कोई खराबी तो नहीं आ गयी है। यह कम्प्यूटर खेत में मौसम केन्द्र की भूमिका भी अदा करता है। हवा, गति, तापमान, आर्दता तथा सौर विकिरण भी मापता रहता है। अन्त में वह यह जान लेता है कि खेत में कितना पानी दिया जा चुका है, मिट्टी कैसी है, क्या उग रहा है।

बिजली घर से पहला संकेत मिलते ही कम्प्यूटर सिंचाई पम्पों को बन्द करने का आदेश दे देता है। जिन्हें सिंचाई की आवश्यकता नही होती है, दूसरा तथा तीसरा संकेत मिलते ही यह अन्य खेतों की सिंचाई बन्द कर देता है। इस प्रणाली से ऊर्जा, धन तथा समय की काफी बचत हो रही है और फसलों का उत्पादन भी बढ़ रहा है।

मृत जानवरों को निष्पादित करने वाले केन्द्र का विरोध

लखनऊ। मृत पशुओं के शव को निस्तारित करने व उनसे उपयोगी वस्तुएं बनाने के लिए नगर द्वारा प्रस्तावित कैटकस युटिलाइजेशन प्लान्ट अभी शक्ल अख्तियार भी न कर पाया और उसके स्थल चयन को लेकर विरोध के स्वर फूटने लगे। गौरतलब है कि नगर निगम ने शहर के मोतीझील और चिक मण्डी मौलवीगंज की वधशालाओं को न्यू हैदरगंज वार्ड के गांव शाहपर ममरौली स्थानान्तरित करने का निर्णय लिया है। शहर में मरने वाले पशुओं के शवों को साफ सुथरे ढंग से निष्पादित करने और उनके अंगों से आवश्यक वस्तुएं तैयार करने के लिए यहां एक कैटकस युटिलाइजेशन प्लान्ट लगाना भी प्रस्तावित है। इस आशय के प्रस्ताव को नगर निगम सदन की मंजूरी भी मिल चुकी है। लेकिन अभी प्लान्ट लगाना तो दूर रहा उल्टा उसका विरोध शुरू हो गया हैं।

वन्य जीव तस्करों को काबू नहीं कर सका वन विभाग

लखनऊ। पहले चन्दौली, फिर बहराइच और अब कार्बेट नेशनल पार्क, इन स्थानों में वनकर्मियों पर हुए हमले और उनकी हत्या इस बात का प्रमाण है कि बावजूद सारी कोशिशों के वन्य जीव तस्करों पर अंकुश न उत्तर प्रदेश में लग रहा है और न उत्तराचंल में

इस मामले में वन विभाग के लिए जो सर्वाधिक चिंताजनक बात है वह यह कि पहली बार इस बात के प्रमाण मिले हैं कि उत्तर प्रदेश और उत्तरांचल में उत्तर पूर्व राज्यों के हाथी दांत तस्करों का प्रवेश हो चुका है। राजधानी नेशनल पार्क में मारे गये पांच हाथियों में कुछ शवों से कीलें मिली थीं। वन विभाग के अधिकारियों का मानना था कि ये कीलें जहरीले तीरों के हैं। बाद में जब पुलिस ने भी इसकी पुष्टि की तो कार्बेट राष्ट्रीय पार्क के उपनिदेशक समीर सिन्हा को असम और अरूणाचल प्रदेश और तथ्य जुटाने भेजा गया। पार्क के निदेशक दिग्विजय सिंह खाती ने आज माना कि उक्त दोनों प्रदेशों से ऐसे भरपूर प्रमाल मिले जो बताते थे कि वहां के कुछ कबीलों के सदस्य जो वन्य जीव तस्करी करते हैं राजधानी राष्ट्रीय पार्क पहुंचे थे। श्री खाती के अनुसार यह जानकारी मिलने के बाद केन्द्र सरकार ने पार्क की सुरक्षा के लिए जीपें, वायरलेस सेट और 70 लाख रूपये दिये। इसी के बाद केवल हाथियों की रक्षार्थ ' आपरेशन लॉर्ड चलाया गया और आजकल वहां के सभी वन्य प्रणियों के लिए आपरेशन मानसून चलाया जा रहा है।

लेकिन तस्करों पर इन सुरक्षा उपायों का विशेष प्रभाव पड़ा नहीं दिखता। बीती 28 अगस्त को कार्बेट पार्क के रिंगौड़ा में आधा दर्जन से अधिक बदमाशों को जब कुछ वन कर्मियों ने पकड़ा तो उन्होंने गोलियां चला दीं। इस मामले में जहां एक डिप्टी रेंजर विपिन चन्द्र पाण्डेय मारे गये वहीं तीन गार्ड घायल हुए।

भू-आवंला की कई दुर्लभ प्रजातियां अब सिमैप के जीन बैंक में

लखनऊ। यकृत रक्षी (हिपेटोप्रोटेक्टिव) औषधीय गुणों से भरपूर पारम्परिक पौधे भू-आवंना (फाइलेन्थम) की विभिन्न क्षेत्रों से एकत्र की गई कई प्रजातियों को सिमैप ने अपने जीन बैंक में जोड लिया है। भू-आंवला की यह प्रजातियां कांची, हजरीबाग, पटना व राजगिर से लायी गयी हैं। जीन बैंक में जहां इन प्रजातियों के पौधे उगाये गये हैं, वहीं इसके बीज व डी.एन.ए. को भी संरक्षित किया गया है।

इसी कड़ी में कई दुर्लभ प्रजातियां भी संस्थान के जीन बैंक में शामिल की गई हैं। भू-आंवला की किस्मों को जीन बैंक में शामिल करने का मकसद यह है कि भारत के विभिनन प्रान्तों में उगने वाली इस की उच्च कोटि की प्रजातिया को तलाशा जा सके, जिससे कि भू-आंवला की व्यवसायिक खेती व रसायन 'फाइलेन्थिन' बड़े पैमाने पर संभव हो सके।

उल्लेखनीय है कि भू-आंवला में मौजूद फाइलोन्थिन रसायन में घातक हिपेटाइटिस वायरास को नष्ट करने की क्षमता है। सिमैप का जीन बैंक तिरूअनन्तपुरम स्थित ट्रापिकल बाटनिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट व नयी दिल्ली स्थित नेशनल ब्यूरों आफ प्लाण्ट जेनेटिक रिसोर्सेज सहित देश के उन तीन जीन बैंकों में से एक है जहां, बहुउपयोगी है कि इन जीन बैंकों को 15 विकासशील देशों के समूह ग्रुप-15 के निर्णय के तहत स्थापित किया गया है।

राजधानी में नहीं रूक पा रहा है ध्वनि प्रदूषण

लखनऊ। 'शोर' पर अंकुश लगाने के लिए बीते बारह वर्षो से लगातार आदेश व दिशा निर्देश जारी हो रहे हैं इसके नियंत्रण के लिए अधिनियम तक बना दिया गया, यहां तक कि इलाहाबाद हाइकोर्ट की लखनऊ खण्डपीठ ने ध्वनि प्रदूषण फैलाने वाले यंत्रों के प्रयोग पर ही पूरी तरह से पाबन्दी लगा दी है। कुछ महीनों पहले ही राज्य सरकार द्वारा इस प्रदूषण को रोकने की जिम्मेदारी भी डी. एम. व एस.एस.पी. को सौंपी जा चुकी है लेकिन तकरीबन एक दशक से की जा रही इस तमाम कोशिशें के बावजूद राजधानी में ध्वनि प्रदूषण कम होने के बजाय बढ़ता ही जा रहा है।

वास्तविकता यह है कि ये सारे आदेश सिर्फ कागजों तक ही सिमट कर रह गये। हार्न बजाते वाहन, लाउडीस्पीकर, जेनरेटर, बैण्ड बाजे खुलेआम शहर में शोर फैला रहे हैं।

'पर्यावरण और स्वास्थ्य'

शताब्दियों से प्रकृति, जीव जन्तु, पेड़-पौधों का सम्बन्ध रहा है। प्रकृति में जब जीव-जन्तु पेड़-पौधों में संतुलन रहा। तब पर्यावरण स्वच्छ रहा। पर्यावरण के स्वच्छ रहने पर मनुष्य का स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है। परन्तु मौतिकता के प्रभाव बढ़ने से संतुलन बिगड़ रहा है। जिससे पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। विकास के नाम पर पर्यावरण का बिलकुल ध्यान नही रखा जाता है। पर्यावरण के प्रदूषित होने पर स्वास्थ्य प्रभावित होता है। अतः यह गम्भीर समस्या है।

आज पर्यावरण की रक्षा करना अन्तर्राष्ट्रीय समस्या बन गई है। पर्यावरण की रक्षा करना किसी वर्ग विशेष के सहयोग से सम्भव भी नही है। इस पुनीत कार्य में सभी राष्ट्रो की भागी दारी आवश्यक है। इस ओर प्रयास किए जा रहे है, और परिणाम भी दृष्टिगोचर हो रहे है। यद्यपि ये प्रयास विकास की तुलना में बहुत ही कम हे। फिर प्रयास लाभप्रद है। शुद्ध पर्यावरण ही हितकर है। वायुमण्डल में विभिन्न गैसें पायी जाती है। विभिन्न गैसों में संतुलन बना रहता है। तब ही पर्यावरण ठीक रहता है। गैसों के संतुलित मिश्रण को ही पर्यावरण कहते है। आज प्रत्येक मनुष्य को इस बात का एहसास हो गया है कि शुद्ध पर्यावरण के कारण ही हम जीवित है। आज उन्नति के नाम पर प्रकृति में अन्धाधुन्ध छेड़छाड़ की जा रही है। जिससे पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। पर्यावरण के प्रदूषित होने पर स्वास्थ्य प्रभावित होता है। स्वास्थ्य के प्रभावित होने पर जीवन ही खतरे से घिर जाता है। अतः जीवन मे पर्यावरण का विशेष महात्व है।

विकासशील राष्ट्रो में आज जनसंख्या में अपार वृद्धि पर्यावरण को प्रदूषित करने में योगदान दे रही है। जनसंख्या वृद्धि पर नियुगत करने के प्रयास किये जा रहे है। परन्तु परिणाम संतोष जनक नहीं है। अधिक प्रयास की आवश्यकता है। पर्यावरण की रक्षा के लिए वनों की सुरक्षा, जीव-जन्तुओं का संरक्षण कल-कारखानों की गन्दगी को फैलने से रोकना परमाणु परीक्षण बंद करना वृक्षारोपण करना, जल संचय, करना अति आवश्यक है।

भारतीय संस्कृति में वृक्ष को भी देवता माना जाता है। वृक्षों को उगाना, उनकी देखभाल करना आवश्यक माना गया है। वृक्षों के होने से पर्यावरण प्रदूषित नही होता क्योकि विभिन्न गैसों में संतुलन बना रहता है। किन्तु आज विकास के नाम पर वनों की अंधाधुंध कटाई की जा रही है। पर्यावरण के प्रदूषित होने पर स्वास्थ्य को प्रभावित होता है। अतः वृक्षारोपण पर विशेष ध्यान की आवश्यकता है। इसी प्रकार कुछ नदियां का विशेष महत्व है। पवित्र, महानदी आदि का जल प्रदूषित हो रहा है। यह प्रदूषण जल मे कल-कारखानों को गन्दगी तथा नदियों के किनारे बसे नगरों को गन्दगी को मिलाने से हो रही है। इस नदियों का पानी पीने योग्य नही रहा है। यह जल स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है।

किसान एवं प्रौद्योगिकी के विकास ने प्रकृति पर आधिपत्य जमाने की कोशिश की है। इसका परिणाम यह हुआ कि प्रकृति में संतुलन बिगड़ गया, जिससे पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। स्वास्थ्य के प्रभावित होने पर मानव का आस्तित्व ही खतरे में पड़ जाता है। सब विकास सुविधा व्यर्थ हो जाती है। सावधानी की आवश्यकता है कि ऐसे प्रयास करने चाहिए जिससे पर्यावरण प्रदूषित न हो। मनुष्य और प्रकृति के सम्बन्ध बने रहे।

—डा. ए. के. चतुर्वेदी

वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों की योजनाएं क्यों नहीं जुड़ पा रही हैं लोगों से?

बीते दिनों बिजली का संकट जिस तरह से गहराया, यहां तक कि राजधानी भी इसके संकट से अछूती नहीं रही, उससे यह बात तो साफ हो गई कि अगर ऊर्जा के 'वैकल्पिक स्रोतों' खासकर 'सौर ऊर्जा' का इस्तेमाल रोजमर्रा की विद्युत मांग को पूरा करने में शुरू नहीं किया गया तो दिनों दिन गहराती समस्या से उबर पाना नामुकिन होगा। वैज्ञानिक रपटें तो यही बताती हैं कि सूर्य की रोशनी में ऊर्जा के साथ-साथ अन्य अपारम्परिक स्रोतों से बिजली संकट चौतरफा गहराने के बाद भी आखिर करोड़ों की लागत से विकसित यह योजनाएं लोगों से जुड़ क्यों नहीं पा रही हैं और क्यों नहीं इनको वृहत स्तर पर अपनाने की कोशिशें की जाती हैं?

बिजली संकट को काफी हद तक दूर करने की क्षमता रखने वाली इन योजनाओं को लोकप्रिय बनाने व जनता के बीच पहुंचाने में आखिर क्या अड़चने हैं? चूंकि बिजली की समस्या तो साल दर साल बढ़ना लगभग तय हैं, ऐसे में इन प्रश्नों को उत्तर ढूंढना तात्कालिक जरूरत है, जिससे विद्युत संकट के दूरगामी समाधान के नये रास्ते निकल सकें लेकिन इसके लिए वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों का व्यापक दोहन व प्रयोग तभी संभव हो सकेगा, जब जिम्मेदारी महकमे इन वैकल्पिक स्रोतों के विकास के लिए अपने दायित्वों को ईमानदारी से निभाये।

चाहे शहरी जीवन हो या ग्रामीण क्षेत्र, इधर बिजली पर निर्भरता में कई गुना इजाफा हुआ है और आबादी के अनुपात में इसकी बेहिसाब बढ़ती मांग को पूरा कर पाना मौजूदा संसाधनों में तकरीबन नामुकिन है। एयरकण्डीशनर, वाशिंग मशीन, ओवन, माइक्रोवेव से लेकर रसोई के उपकरणों के बढ़ते प्रचलन ने बिजली की इस मांग में आग में घी जैसा काम किया है।

सरकार दावे जितने भी कर ले, लेकिन वास्तविकता यही है कि बिजली की समस्या से आम जनता को राहत दिला पाना फिलहाल सरकार के बूते के बाहर ही है।

ऐसे में रास्ता एक ही बचता है कि चाहे सौर ऊर्जा हो या कूडा कचरा, बायोगैस हो या मीथेन गैस, बिजली उत्पादन के इन अपारम्परिक स्रोतों को बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाये। नेडा की रपटों में यह दावा किया गया है कि घर की बिजली आवश्यकताओं जैसे बल्ब, ट्यूब लाइट, टेलीविजन, आदि को चलाने के लिए सौर ऊर्जा का प्रयोग सफलता पूर्वक किया जा सकता है। सोलर लालटेन, सोलर कुकर, सोलर रेफ्रीजरेटर, सोलर टी.वी., सोलर वाटर हीटर, सोलन पम्प, सोलर स्ट्रीट लाइटें, सौर ऊर्जा आधारित तमाम ऐसे उपकरण विकसित किये जा चुके हैं, जिनका वृहत प्रयोग रोजमर्रा की बिजली की खपत को कम कर सकता है जिससे सीधे तौर पर बिजली का संरक्षण किया जा सकता है।

सोलर फोटो वोल्टाइक पावर प्लान्ट की तकनीक तो समुदायिक स्तर पर, खासकर सरकारी भवनों व प्रतिष्ठानों की बिजली आपूर्ति को काफी हद तक पूरा कर सकती है, लेकिन यह आश्चर्यजनक ही है कि ऐसी तकनीकों को अपनाने में सरकारी तंत्र ही रूची नहीं दिखाता है। जबकि सरकारी दफ्तर ही बिजली का सबसे ज्यादा उपभोग करते हैं। वहीं नेडा भी ऐसी तकनीकों को लोकप्रिय कर पाने में नाकाम सिद्ध हुआ है।

सोलर फोटोवोल्टाइक तकनीक को नेडा जब गोमतीनगर स्थित अपने भवन में प्रयोग कर बिजली उत्पादित कर सकता है (नेडा के दावे के अनुसार), तो आखिर इन तकनीकों को अन्य भवनों पर लागू क्यों नहीं किया जाता है? दरअसल, सरकार की ही नियत साफ नहीं है, अन्यथा ऐसे वैकल्पिक स्रोतों व तकनीकों को मूर्त रूप दिलाना मुश्किल न होता। अगर ऐसी तकनीकें अव्यवहारिक समझी जाती हैं, तो करोड़ों खर्च करके चलाये जा रहे ऐसे विभागों को बन्द क्यों नहीं कर दिया जाता? बहरहाल ये सारे सवाल सरकारी इच्छा शक्ति की कमी को ही इंगित करते हैं।

• • •

प्रदेश का रसूलपुर गाँव गाजियाबाद जनपद का वह अनुसूचित जाति बहुल ग्राम है, जहाँ राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली की सीधी रोशनी पहुंचती है, परंतु आजादी की अर्धशताब्दी बीतने के बाद भी उसकी तस्वीर अभी वैसी ही है जैसी कि अंग्रेजों की गुलामी के दिनों में भारत के किसी अन्य गाँव की हुआ करती

ही योजना भवन में प्रदेश के आला अफसरों की बैठक बुलाई, अपनी प्राथमिकताएं, अपनी नीति और नीयत की जानकारी दी जिसमें माहौल में परिवर्तन हेतु कानून व्यवस्था ठीक करने, लोगों का अपनापा जीतने के लिए जनसंवाद को उन्होंने प्राथमिकता दी थी। सरकार से लोगों की हताशा उसके

जन संवाद की दिशा में - दरवाजे पर सरकार

थी। गरीबी, बदहाली, गंदगी भरे फूस के टूटे झोपड़ों में हताशा और कुंठा लिए जीवन के कठोर अनुभवों के बीच बुझते चिराग से गरीब लोग। न शिक्षा, न प्रोत्साहन, न रोजगार। गाँव की जमीन में मजदूरी की क्षीण आय और उसे पाने के लिए शोषक मनोवृत्ति के दबंगों के प्रति पूर्ण समर्पण।

ऐसे गाँव में आजादी व विकास की बातें लोगों को नहीं समझ में आतीं जैसा कि कैलाशो ने 29 मई को कहा; बाबू हम का जाने! कुछ लोग कभी-कभी आते हैं, कुछ बात बताकर चले जाते हैं और फिर हम ऐसे ही रह जाते हैं।

ऐसे ही रह जाने वाले इन गरीब दलितों का गाँव उस दिन ऐसे ही नहीं रह गया था। सूबे के मुख्यमंत्री श्री राजनाथ सिंह इस गाँव की कच्ची सड़कों पर ट्रैक्टर चलाकर पहुंचे थे। उन्होंने अपनी बुलेट प्रूफ एम्बेस्डर व सुरक्षा काफिला छोड़ कर गाँव वालों के बीच किसान के रूप में आने का निर्णय लिया, क्योंकि किसानों से तारतम्य उनके अपने माहौल में उन्हीं के रूप में हो सकता था। मुख्यमंत्री इस गाँव में रात्रि निवास के लिए पहुंचे थे।

महाभारत में वेद व्यास ने कहा है कि बड़ा (महान) व्यक्ति जो-जो आचरण करता है लोक (जनता, अधीनस्थ राज कर्मचारी) उसका अनुसरण करते हैं। राजनाथ सिंह ने इसी रोशनी में राज्य के मुखिया के रूप में अपने सचिवों, प्रदेश के सभी विभागाध्यक्षों, मंडलायुक्तों जिलाधिकारियों व पुलिस के उच्चाधिकारियों के लिए अपनी 'नीति एवं नीयत' का उदाहरण रसूलपुर रात्रिनिवास के दौरान प्रस्तुत किया। उन्होंने यह मानकर कि "Action speakes better than words", अपने दिशा-निर्देशों को दुहराने के बजाय, यह उदाहरण ही प्रस्तुत

किये कराये पर पानी फेर देती है। सरकार अपनी गति से चलती रहे, जनता को विश्वास में लिये बगैर जिससे जनता सरकार से कटी-कटी रहे और उसमें हताशा का भाव पैदा हो जाता है। इसकी पुनरावृत्ति न होने देना राजनाथ सिंह के लिए सबसे बड़ी चुनौती थी और वे संभवतः इसके लिए पूरी तरह कमर कस कर आये थे। मुख्यमंत्री के निकटवर्ती लोगों के अनुसार "तीन दशकों के राजनैतिक जीवन में मुख्यमंत्री की दिनचर्या इतनी व्यस्त कभी नहीं रही। दिनचर्या में योगासनों, आराधना-पूजा और विश्राम के लिए निश्चित समय बाद ही वे अन्य कार्य करते रहे हैं। परन्तु इस बार उत्तर प्रदेश में आने के बाद उनकी इस दिनचर्या में भी प्रभाव पड़ा है। सुबह से लेकर रात्रि दो बजे तक लगातार लोगों से मिलना, सरकारी बैठकों के लिए अध्ययन करना, राजनैतिक कार्मों की व्यस्तता, फाइलों का कार्य, सामाजिक व्यस्तता का अटूट क्रम। छुट्टियों का दिन और अधि

व्यक्ति के लिए 'न' कहना मूल्यवान वस्तु फेंकने जैसा है। लोगों से मिलते-मिलते, कानों में फुसफुसाकर अपनी बात करने वाले अपरिचित आत्मीयजनों, मुँह पर चढ़कर अपनी बात रखने वाले कार्यकर्ताओं व पुराने परिचितों को देखकर यही आभास होता है कि 'मिलनसारिता एक कठिन धर्म है, जिसका निर्वाह अत्यंत धैर्यवान लोग ही कर सकते हैं।' बहरहाल राजनाथ सिंह ने अहंकार रहित होकर कार्य करने और जनता से निकट संपर्क हेतु गाँव में रात्रि विश्राम के अपने संदेश को अधिकारियों में बहुत असरकारी नहीं होते देखा तब जैसा कि सम्राट अशोक के विवरण से पता चलता है कि वह अपने निर्देशों का पालन पहले स्वयं

पर भ्रमण कर उनके कष्टों की जानकारी ले अस्पताल, धर्मशाला, कुएं, बावड़ी आदि का निर्माण कराता था, मुख्यमंत्री श्री राजनाथ सिंह ने भी इतिहास के सफल लोगों के उदाहरण के अनुसार कार्य करना शुरू किया।

रात्रि निवास, जनसमस्याओं का निराकरण, जनसंवाद संबंधी सरकारी निर्देश पिछले कई वर्षों से समय-समय पर जारी होते आये हैं। अधिकारियों में इन निर्देशों का उतना ही असर होता है जितना कि निर्देश देने वाले की इन कार्यों के प्रति गंभीरता। इस लेखक को आज तक ऐसा नहीं देखने के मिला जब मुख्यमंत्री ने रात्रि निवास पर जनसंवाद जैसे निर्देशों के अनुपालन का अनुश्रवण शासन में होते देखा हो। दरअसल इस तरह के निर्देशों को इधर के वर्षों में अधिकारियों के बीच कास्मेटिक निर्देश या राजनैतिक सट्टेबाजी या लोकतंत्र की मजबूरी माना जाता रहा। धारणा यह बनी कि मुख्यमंत्री कोई भी हो, इसके राजनीतिक चोले में लोकतांत्रिक मनुष्य की बजाय सामंत निवास करता है। हो सकता है कुछ मायनों में यह धारणा सही भी हो।

जैसा कि उनके राज-काज के चौथे महीने ही 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में सुनीता ऐरण ने लिखा 'दिस सी. एम. इज डिफरेंट', (यह मुख्यमंत्री अलग किस्म का है)। राजनाथ सिंह ने भी अपनी नीतियों, निर्देशों का पालन कराकर दिखाया। इसके लिए उन्होंने कभी प्रेरणा तो कभी उदाहरण से काम किया। राजकाज चलाने के लिए उन्होंने अभी तक डण्डे (भय) का सहारा नहीं लिया है। उन्होंने न तो बड़े पैमाने पर स्थानांतरण किया है, न रोज-रोज अधिकारियों की स्थानांतरण सूची जारी होने दी, और व्यक्तिगत पसंदगी, नापसंदगी के आधार पर किसी को डिस्टर्ब किया। इससे ब्यूरोक्रेसी में एक नया आत्मविश्वास पैदा हुआ। वर्षों बाद अधिकारियों को लगा कि यह वक्त काम का है, ऊपर वाले को ठीक रखने के लिए लखनऊ दौड़ने का नहीं। अधिकारियों में पैदा हुई इस सकारात्मक सोच को पुन: एक रचनात्मक दिशा देने के लिए ही अपने शासन के सातवें महीने में वह रसूलपुर गये जहाँ से उन्होंने एक संदेश दिया है - एकदम साफ और बिल्कुल स्पष्ट।

संदेश है कि जनता को प्रभावित करने वाले सभी अधिकारी दफ्तरों से बाहर निकलें, किसी ऐसे गाँव में विश्राम करें, रात भर जहाँ अभी तक विकास की रोशनी नहीं पहुंची, अध्ययन से वहाँ के वातावरण की और पुन: दफ्तर पहुंचकर ऐसे गाँवों और गाँव वालों की भलाई के लिए यथासंभव जो हो सके वह करें। उन्होंने अफसरों से कहा कि वे अहंकार शून्य हो कार्य करें। शासकीय सेवा की जितनी भी उपयोगिता हो, उसमें एक बड़ी खामी यह है कि वह सेवकों में एक साम्राज्यवादी दर्प का सृजन करती है। यह दर्प, अहंकार उन्हें उस जनता से काट देता है जिसकी नौकरी करने के लिए उनका चयन किया जाता है। इस दर्प की कैद से बाहर लाने का एक उपाय है अहंकार शून्य हो कार्य करने का मुख्यमंत्री का उपदेश। रसूलपुर जाने का निर्णय, टैक्ट्रर चलाने, कैलाशो के घर पानी पीने, एक ग्रामीण के ट्यूबवेल पर जाकर उसे चलाने और उसका मीठा पानी पीने के उदाहरणों का लक्ष्य प्रदेश की ब्यूरोक्रेसी है जिसे वह पहले ही दिन से अहंकार शून्य हो कार्य करने की शिक्षा देते आये हैं।
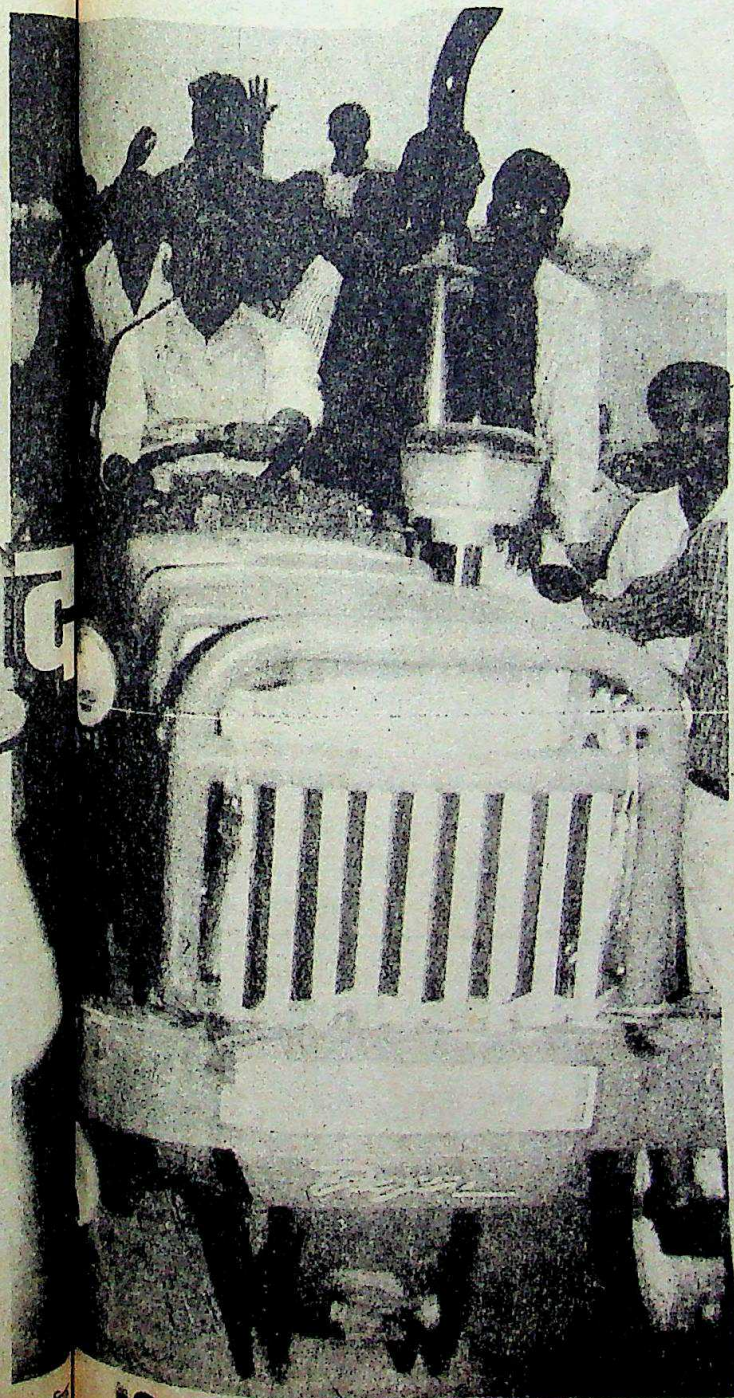
"पृथ्वी में मानव सुरक्षा का आधार स्तंभ– उपजाऊ माटी संरक्षण"

–शिवेन्द्र कुमार पांडे
लेखक कोल इन्डिया लिमिटेड के सेवानिवृत्त मुख्य महाप्रबंधक (गवेषणा) एक भूवैज्ञानिक हैं।

पृथ्वी में पाए जाने वाले सभी जीवन–स्वरूपों को, उनमें प्रकृति द्वारा निर्धारित क्रियाकलापों के अनुसार तीन मुख्य वर्गों में बॉटा जा सकता है– शिकार, शिकारी व सफाई कार्य करनें वाले। प्रकृति ने, इनके मध्य संतुलन बनाए रखने के लिए एक ऐसी खाद्य–श्रृंखला स्थापित की है, जिसकें अंतर्गत स्वयं शिकारी भी, किसी न किसी का शिकार बनते हैं– चाहे वह किसी जीव के रूप में हो या प्राकृति कारणों से हो, जैसे बुढ़ापा / रोग और अन्य संकट (बाढ़, भूकम्प, भूस्खलन, ज्वालामुखी विस्फोट, उल्कापात, वज्रपात, युद्ध.–तबाही, आणुविक विस्फोट, पर्यावरण प्रदूषण, दुर्घटनाएं, आदि)। फिर शिकार जीवों में शिकार क्षमता का स्तर भी एक नियंत्रित सीमा तक ही होता है और वे केवल भूख लगने पर ही शिकार करते हैं, मानव के समान जमाखोरी नहीं।

इसके अलावा शिकार होने वाले जीवों को बचाव व सुरक्षा के लिए भिन्न–भिन्न प्रकार की क्षमता प्रकृति ने प्रदान की हैं, जैसे तेज दौड़ना, पैरों की बनावट, छिपना, संगठित दलों में रहना, बृहत् स्वरूप, जहर, चरकीले रंग, खाने की पसंद, उड़ना, भाव–भंगिमा द्वारा भयभीत करना आदि।

फिर इनमें ऐसे कई मुर्दाखोर जीव हैं जो अपना भोजन प्राप्त करने के प्रयास में मृत पदार्थों की सफाई में निरंतर जुटे रहते हैं। लेकिन इस खाद्य–क्षंखला को गतिमान रखने के लिए प्रकृति ने सूक्ष्म जीवाणुओं की रचना की है जो करोड़–अरबों की संख्या में सर्वत्र व सभी जीवान्त स्वरूपों में विद्यमान हैं (मनुष्य के शरीर में १००,००० विलियन) व जिनमें विकास व उपचार क्षमता लायक, दोनों गुण विद्यमान हैं। पृथ्वी में जीवित रहने के लिए हवा, पानी व भोजन का उनयोग करना सबकी नियति है और इस क्रिया में ये सूक्ष्म जीवाणु एक उत्प्रेरक (प्रमुख सहायक) की भूमिका निभाते हुए सभी जीवों को विकास का अवसर प्रदान करते हैं तो दूसरी और पर्यावरण में विनाशकारी गुणों वाले सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या में अनआवश्यक वृद्धि होने से कई प्रकार की बीमारियां फैल कर सभी जीवों के विकास को प्रभावित करने लगती हैं। इस प्रकास सुरक्षा आक्रमण और एक दूसरे पर निर्भरता के मध्य, पृथ्वी में प्राकृतिक संतुलन स्वयं स्थापित रहता हैं।

एक दूसरे–पर, इस प्रकार की निर्भरता से खाद्य–पुंजों का निर्माण हुआ हैं, लेकिन इस एकीकरण में सबसे महात्वपूर्ण भूमिका 'जेनेटिक कोड' निभाते है जो सभी जीवनों में विद्यमान हैं। इन्हीं की उपस्थिति के कारण सभी जीवन स्वरूपों की संतानों में उनके वंश (जाति) की विशेषताएं जन्मजात रूप में स्थापित होती हैं। लेकिन इस क्रम में उस

जाति की सभी विशेषताएं उनकी नई पीढ़ी में स्थापित नहीं होती हैं और उनमें सभी वंशानुगत गुण स्थापित न हो पाने के कारण थोड़ी बहुत भिन्नता रहती हैं। इसी कारण एक ही स्रोत में जन्मे जीव कुछ पीढ़ियों पश्चात एक नया स्वरूप धारण कर लेते हैं। यही जेनेटिक विविधिता का आधार है।

इस प्रकास पीढ़ी दर पीढ़ी आनुवंशिक गुणों का प्रवाह और इन सब विशेषताओं का संपादन कई वर्गों में करने का कार्य 'सामयिक पर्यावरण' करता है, जिसका मूलसिद्धांत है– योग्यता की उत्तरजीविता और उनका शमूल नाश, जो अपने चारों और फैले साधनों का उपयोग नहीं कर पाते।

पृथ्वी के प्राकृतिक तंत्र में जीवन विकास का क्रम उल्लिखित ढ़ग से अबाध रूप में गतिमान है। लेकिन इसमें थोड़ा–सा भी अप्राकृतिक धटने पर यही कड़ी बीच में ही टूट जाती है, जिनका सीधा प्रभाव जीवनों के विकास पर पड़ता है और कई जीवन तो लुप्त ही हो जाते हैं।

पृथ्वी में प्राणी, वनस्पति व पर्यावरण, आपस में मिलकर विकास के पहिए को गतिमान रखे हुए हैं। लेकिन इसमें सबसे महात्वपूर्ण भूमिका जलवायु की होती है, जो सामयिक पर्यावरण का निर्माण करती रहती हैं। फिर पृथ्वी का इतिहास दर्शाता है कि उसके उदभव के पश्चात से ही समय–समय पर जलवायु एक क्रमिक रूप में बदलती रही है। शीत, शुष्क व गरम। इस जलवायु परिवर्तन के अंतर्गत जीवन स्वरूप भी प्रभावित होते रहे हैं जिसके प्रति वे बहुत संवेदनशील होते हैं और उसमें छोटे से छोटा अंतर भी उन्हें प्रभावित किए बिना नहीं रहता है।

मानव तो बदलती जलवायु और स्थानीय परिस्थितिक विणमता के साथ अपने को ढ़ाल कर जीवित रह सकता है क्योंकि उसके विकास के साथ–साथ प्राकृतिक ऊर्जा के चार आयाम चलना/दौड़ना/तैरना/चढ़ना/ उसमें अंगि भूत हो चुके हैं और उसके बुद्धिबल का भी विकास निरंतर प्रगति कर रहा है। इसके विपरीत पारिस्थितिकीय परिवर्तन होने पर अन्य जीवों के जीवित रहने के विकल्प कम हो जाते हैं। जानवरों को नए व बेहतर चरागाहों की और जाना पड़ता है और यदि ये दूसरे चरागाह भी मानव द्वारा दखल किए जा चुके हैं तो वे भूख से मरने लगते हैं या मनुष्य अपनी फसल व मवेशियों की रक्षा करने के लिए उन्हें मार देते हैं। लेकिन वनस्पतियां तो अपनी रक्षा ही नहीं कर पाती हैं और लुप्त होने लगती हैं क्योंकि उनमें प्रकृति द्वारा स्थापित स्थानान्तरण क्षमता, नहीं के बराबर होती है– ४से २०० किलामीटर प्रति शताब्दी।

एक जाति की वनस्पति लुप्त होने का असर, उस पर आश्रित १०से३० जातिशें के कीड़े–मकौड़े व जानवरों पर भी पड़ता है और वे भी इस संसार से विदा लेने लगते हैं। पृथ्वी में जीवन आरंम्भ होने के समय से ही, यह लुप्त होने की क्रिया जारी है जिसके भीतर नए रूपों के लिए पुराने रूप स्थान खाली करते रहे हैं। प्राकृतिक कारणों से लुप्त होना भी एक बड़ी भारी हानि होती है लेकिन जब यह मानव द्वारा निर्मित अप्राकृतिक कारणों (औद्योगिकरण विकास) से होता है, तो उसकी भरपाई नहीं हो पाती है। यह सब कुछ इतनी शीघ्रता से होता है कि नए जीवों को अचानक बदल गए विपरीत पर्यावरण के साथ ताल–मेल बैठाने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाता है, इसलिए वे विनाश की और अग्रसर होने लगते हैं। पर एक बात अवश्य है कि साधारणतः लुप्त होने के पूर्व, वह जाति कुछ काल के लिए एक संकट भरी स्थिति में जीवित रहती है और यदि समय रहते उसे मानव संरक्षण मिल जाए तब उसे बचाया जा सकता है। यही संरक्षण का महात्व है।

पृथ्वी में जीवन विकास प्रक्रिया के आयाम बड़े विचित्र हैं। अस विकास क्रिया के अंतर्गत कई जीवन

ऐसे कई मुर्दाखोर जीव हैं जो अपना भोजन प्राप्त करने के प्रयास में मृत पदार्थों की सफाई में निरंतर जुटे रहते हैं। लेकिन इस खाद्य–क्षंखला को गतिमान रखने के लिए प्रकृति ने सूक्ष्म जीवाणुओं की रचना की है जो करोड़–अरबों की संख्या में सर्वत्र व सभी जीवान्त स्वरूपों में विद्यमान हैं (मनुष्य के शरीर में १००,००० विलियन) व जिनमें विकास व उपचार क्षमता लायक, दोनों गुण विद्यमान हैं। पृथ्वी में जीवित रहने के लिए हवा, पानी व भोजन का उनयोग करना सबकी नियति है और इस क्रिया में ये सूक्ष्म जीवाणु एक उत्प्रेरक (प्रमुख सहायक) की भूमिका निभाते हुए सभी जीवों को विकास का अवसर प्रदान करते हैं तो दूसरी और पर्यावरण में विनाशकारी गुणों वाले सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या में अनआवश्यक वृद्धि होने से कई प्रकार की बीमारियां फैल कर सभी जीवों के विकास को प्रभावित करने लगती हैं।

सतय के अंतराल में प्रकट हुए, विकास की सीढ़ियां चढ़े और संसार से विदा हो गये (डायनासोर–एक बहुचर्चित उदाहरण), जिनमें विषय में हमें उनके मृत अवशेषों से जानकारी मिलती है। इसके विपरीत कई जीव (हार्सशू क्रैब, काकरोच, कछुआ, शार्क आदि) इस संसार में पिछले २०–६० करोड़ वर्षों से सफल जीवन जी रहे हैं, पर विकास की दृष्टि से इनमें कोई विशेष परिवर्तन देखने में नहीं आया है। दूसरी ओर, मानव का जन्म १०–१५ लाख वर्ष पूर्व ही पृथ्वी में हुआ है, लेकिन इस थोड़े समय के भीतर ही विकास की छलांग भरते हुए, उसने अपने बुद्धिबल के आधार पर पृथ्वी में अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया है।

इस वुद्धि विकास के साथ–साथ मानव में स्वार्थ (अपने लाभ) की भावना भी तीव्रता से बढ़ती रही है जिसके फलस्वरूप मेरा–परिवार, घर, गांव, शहर, प्रान्त, देश आदि की नींव पड़नी आरंभ हुई और देशकाल की परिस्थितियों के अनुरूप अलग–अलग समाजों व सभ्यताओं का उदभव हाने लगा, लेकिन प्रकृति के साधारण नियमों का पालन नहीं करने व उनकी अनदेखी के कारण कई उन्नत सभ्यताएं भी लुप्त हो इतिहास बन चुकी हैं। प्राचीन मिस्र, मय व यूनान सभ्याएं, वहां की मट्टी की उपरी उपजाऊ सतह/परत के बह कर नाश हो जाने के कारण इतिहास का एक पन्ना मात्र बन कर रह गई हैं। मृदा परत नाश के प्रभाव का एक ज्वलंत भारतीय उदाहरण है "थार के रेगिस्तान" जिसका फैलाव बढ़ता जा रहा है जिसके फलस्वरूप भारत की प्रसिद्ध धार्मिक नही "सरस्वती" लुप्त हो चुकि है, जिसे एक धार्मिक मान्यता ही ने जीवित रखा हुआ है। लेकिन वास्तविकता

एक जाति की वनस्पति लुप्त होने का असर, उस पर आश्रित १०से३० जातिशें के कीड़े–मकौड़े व जानवरों पर भी पड़ता है और वे भी इस संसार से विदा लेने लगते हैं। पृथ्वी में जीवन आरंम्भ होने के समय से ही, यह लुप्त होने की क्रिया जारी है जिसके भीतर नए रुपों के लिए पुराने रूप स्थान खाली करते रहे हैं।

यह है कि कुछ दूर अतीत में सरस्वती नदी भौतिक रूप में विद्यमान थी वच गुजरात और राजस्थान जंगलों से भरे प्रदेश थे जहां से यह नदी गुजरती थी। इधर कुछ वर्षो से भारतीय वैज्ञानिक, सरस्वती नदी के पुराने प्रवाह स्थल की वास्तविक भूमिगत पहचान स्थापित करने का कार्य कर रहे है, क्योंकि लुप्त हुई यह पुरानी पट्टी भविष्य में भूजल भंडार का विशाल स्रोत बन सकती है। इस प्रकार के एतिहासिक अनुभव के आधार पर किसी दर्शनिक ने ठीक ही कहा है "सभ्यताएं हमेश जंगलों का अनुसरण करती हैं, लेकिन अपने पीछे रेगिस्तान छोड़ जाती है"। हमें इससे सबक लेना चाहिए– कहीं ऐसा न हो कि औद्योगिक प्रगति के प्रयास में "हम स्वयं इतिहास न बन जाएं"

इस प्रकास की भयावह स्थिति पैदा ने हो, को रोकने के लिए उपजाऊ मट्टी सुरक्षा व भूजल भंडारों के भरण उपाय काम में जाने होंगे। भारत में यह कार्य गोधन आधारित कृषि, प्राकृतिक औषध उपयोग और स्थानीय मूल की वनस्पतियों का रोपड़ बृहत् स्तर पर अपना कर सफलता पूर्वक किया जा सकता है। फिर इन कार्यों के संपादन के लिए कई सरल व्यावहार योग्य प्राचीन कालीन विधियां भारत में उपलब्ध हैं जिनका उपयोग कर कई स्वंय संवी संस्थाएं सफल आर्थिक प्रदर्शन भी कुछ वर्गो से कर रही हैं। आवश्यकता है इनके प्रचार की, ताकि भारतीय किसान गांव–गांव में एक जुट हो इन्हें अपना कर लाभ प्राप्त करें क्योंकि यह कार्य वे अपने सीमित साधनों के अंतर्गत भी कर सकते है, केवल संधटित हो कार्य करने की आवश्यकता है। ऐसा करने पर सरकारी मदद भी उन्हें मिलने में आसानी होगी।

मिर्चें से भी सजाएं बगिया

विदेशी नस्ल की ये गोलगोल मिर्चें किसी भी बगिया की शान बढ़ाने में समर्थ हैं।

मिर्च का मतलब आमतौर पर लाल मिर्च ही होता है. लाल मिर्च पहले हरी रहती है और पकने पर आकर्षक लाल हो जाती है. मिर्च एक उपयोगी मसाला और सब्जी है. गृह उद्यानों में इस के पौधे घरेलू इस्तेमाल के लिए लगाए जाते हैं. मिर्च का स्वाद तीखा होता है. इसी तीखेपन के कारण भोज्य पदार्थों को चटपटा व स्वादिष्ट बनाने के लिए विशेष रूप से मिर्च का प्रयोग किया जाता है. मिर्च का तीखापन इस में उपलब्ध रसायन 'केपसेसिन' के कारण होता है.

ताजी मिर्च को भोजन के साथ अलग से या सलाद में भी खाते हैं. इस का प्रयोग चटनी, अचार, सब्जी, आदि बनाने में भी किया जाता है. दाल, सब्जी या अन्य पकवानों में छौंकबघार लगाने में भी मिर्च का प्रयोग किया जाता है. इस के अतिरिक्त लाल मिर्च का सब से अधिक उपयोग मसाले के रूप में किया जाता है. इस के लिए पकी लाल मिर्च को सुखा कर या इस का पाउडर बना कर भी रख लेते हैं. मिर्च में औषधियां बनाई जाती हैं। अपने घर की बगिया में इस उपयोगी पौधे को लगा कर उपरोक्त लाभ तो उठाएं ही, साथ ही पौधों पर लगी हुई लाल सुर्ख मिर्चों की सुंदरता का भी आनंद लें. यदि पौधों पर अधिकांश मिर्चों को पकने दें तो देखेंगे कि इन पर लटकती हुई ये लाललाल मिर्चें बहुत अच्छी लगेंगी. इच्छा या होगी कि इन्हें तोडें ही नहीं और इन की सुंदरता देखते रहें तथा अपनी बगिया सजी रहे.

इसी क्रम में कल्पना करें कि पौधों पर लगी हुई ये लाल मिर्चें यदि नीचे लटकने की बजाय ऊपर आकाश की ओर उठी रहें तो ये कितनी आकर्षक लगेंगी. इसी प्रकार की मिर्चों की कुछ किस्में विकसित की गई हैं, जो अपनी चोंचे ऊपर की ओर किए हुए खड़ी रहती है. इन मिर्चों की नुकीली शिखाएं ऐसी लगती हैं जैसे भालों की नोकें निकली हुई हों, तथा ये भाले पहरा देने के लिए खड़े किए गए हों.

खड़ी हुई ये सुर्ख व खूबसूरत चमकदार मिर्चें पौधों की हरीहरी पत्तियों और हरी मिर्चों तथा छोटेछोटे श्वेत पुष्पों के बीच और भी अधिक लुभावनी लगती है. इन में किसी किस्म की मिर्चें लंबी, किसी की छोटी तो किसी की पतली व किसी की मोटी होती है. चंचल, कल्याणपुर मोहनी, पंत सी-1 तथा पूसा सदाबहार आदि मिर्चों की कुछ मुख्य किस्में हैं.

'चंचल' किस्म की मिर्चें छोटी और कुछ मोटाईयुक्त, चमकदार लाल रंग की तथा बड़ी तीखी होती हैं. इस की फलत खूब होती है, फिर भी 'चंचल' एक बहुवर्षीय किस्म है. इस बार इस का पौधा लगा देने पर 3-4 वर्ष तक बराबर फूलताफलता रहता है.

'कल्याणपुर मोहनी' किस्म की मिर्चें कम लंबी और अधिक मोटी होती हैं जो पीलापन लिए हरी होती हैं. पकने पर ये चमकदार लाल रंग की हो जाती हैं. इन में तीखापन मध्यम स्तर का होता है. इस किस्म की विशेषता यह है कि मिर्चों को तोड़ने पर इन के डंठल पौधे पर ही लगे रह जाते हैं. इस कारण पाउडर बनाने के लिए मिर्चों को पिसाने में अधिक सुविधा होती है, तथा डंठलों को अलग से तोड़ने की आवश्यकता नहीं होती.

उपरोक्त दोनों किस्में (चंचल व कल्याणपुर मोहिनी) सब्जी अनुसंधान केंद्र,

गमले में लगा मोटी लाल मिर्च का पौधा : उपयोगिता में किसी से कम नहीं

पर्यावरण चेतना

हिन्दी मासिक पत्रिका

दिल्ली प्रदेश एवं हिमाचल प्रदेश के शिक्षा विभाग तथा उत्तर प्रदेश शासन के वन विभाग, स्थानीय निकाय, शिक्षा विभाग, ग्राम्य विकास एवं पंचायत राज विभाग द्वारा अनुमोदित

पर्यावरण संचेतना के प्रसार के क्षेत्र में प्रयासरत राष्ट्र भाषा हिन्दी की एकमात्र पत्रिका

विश्व प्रकृति की धरोहर एवं वसुन्धरा के अनुपम वरदानों की रक्षा हेतु
पर्यावरण संरक्षण के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के महायज्ञ में आपकी सहभागिता अपेक्षित है।

"पृथ्वी माँ का ऋण लौटायें, विश्व प्रदूषण मुक्त बनायें"

❁ मुख्य कार्यालय : पर्यावरण चेतना परिसर, पिकनिक स्पाट रोड, इंदिरा नगर, लखनऊ, फोन-359897
❁ रजिस्टर्ड कार्यालय : बी-1/12, सेक्टर-डी1, कानपुर रोड योजना, लखनऊ, फोन-436767
❁ सम्पादकीय कार्यालय : सी-5, दिलकुशा कालोनी, लखनऊ, फोन-482288

पत्रिका का प्रकाशन, मई 1994 से निरंतर हो रहा है। पूरे भारतवर्ष में इसका प्रसार है। स्वतंत्र प्रसार के साथ ही दिल्ली एवं हिमाचल प्रदेश के वन विभाग, ग्राम्य विकास विभाग, शिक्षा विभाग, पंचायती राज विभाग, प्रदेश के स्थानीय निकाय एवं अन्य विभागों द्वारा यह नियमित रूप से मंगायी जा रही है। आपसे अनुरोध है कि आप स्वयं/संस्थान/विभाग/पुस्तकालय हेतु "पर्यावरण चेतना" पत्रिका की सदस्यता ग्रहण करने की कृपा करें एवं पर्यावरण संरक्षण के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के इस महायज्ञ में अपना योगदान करें।

पत्रांक : ....   दिनांक : ....

सदस्यता पत्रक

सेवा में,

प्रसार व्यवस्थापक
पर्यावरण चेतना हिन्दी मासिक
सी-5, दिलकुशा कालोनी
लखनऊ (उ0प्र0)

महोदय,

कृपया अपने कार्यालय/संस्थान/पुस्तकालय के लिये "पर्यावरण चेतना" हिन्दी मासिक की सदस्यता हेतु चेक/ड्राफ्ट (प्रधान संपादक, पर्यावरण चेतना, लखनऊ के पक्ष में देय हो) आपूर्ति आदेश के साथ संलग्न कर भेजने का कष्ट करें।

पर्यावरण चेतना पत्रिका की शुल्क दरें :-

1.	आजीवन सदस्यता शुल्क	रूपये 5000/-
2.	त्रिवार्षिक सदस्यता शुल्क	रूपये 750/-
3.	द्विवार्षिक सदस्यता शुल्क	रूपये 525/-
4.	वार्षिक सदस्यता शुल्क	रूपये 275/-

नोट : कृपया सदस्यता अवधि अंकित करने का कष्ट करें।

भवदीय

पत्रिका प्रेषण हेतु पता
....
....
....

हस्ताक्षर..
नाम व पद..
जनपद..
कार्यालय..

पर्यावरण चेतना एक पत्रिका ही नहीं एक अभियान भी है
आइये! हम सब मिलकर इसे सफल बनायें।

कल्याणपुर, कानपुर (चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर से संबद्ध) द्वारा विकसित की गई हैं.

'पंत सी-1' किस्म की मिर्चें मुलायम, सुर्ख तीखी, बीजों से भरी हुई और 5-6 सेंटीमीटर लंबी होती हैं. कच्ची अवस्था में ये गाढ़े हरे रंग की होती हैं. मसाले के लिए यह एक अच्छी किस्म है. यह मोजेक रोगरोधी होती है., जो गोविंदबल्लभ पंथ कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर (नैनीताल) द्वारा विकसित की गई है.
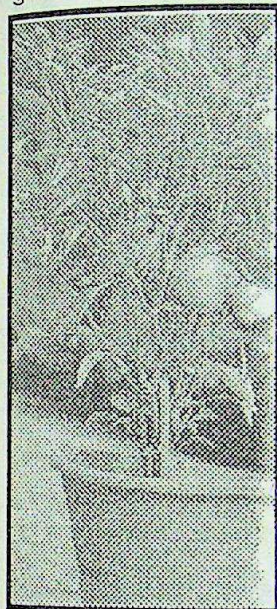
'पूसा सदाबहार' भी एक बहुवर्षीय किस्म है, जो भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा विकसित की गई है. इस के पौधे सालभर फलते रहते हैं. इस की मिर्चें सुर्ख, लंबी और पतली (करीब $2^{1/2}$ से 3 इंच लंबी) तथा बहुत तीखी होती हैं. ये मिर्चें पौधे पर ऊपर की ओर खड़ी रहने के साथ साथ 6-12 के गुच्छों में फलती हैं, जिस के इन के तोड़ने में आसानी रहती हैं. इसी कारण इन्हें अपेक्षाकृत कम दूरी पर लगा सकते हैं. यह एक विषाणु रोगरोधी किस्त है.

मिर्च सालेनैसी कुल का पौधा है. अंगरेजी में यह चिली या रेडपेपर के नाम से जाना जाता है. कैप्सीकम ऐन्नुअम और कैप्सीकम फ्रूटेसैंस इस के वनस्पति शास्त्रीय नाम हैं. मिर्च लगाने के लिए सूर्य के प्रकाश वाला स्थान चयन करना चाहिए. इस के लिए उत्तम जलनिकास वाली दोमट या बहुई दोमट मिट्टी उपयुक्त रहती है. पौधों की रोपाई 2×1 फुट के फासले पर जुलाई से ले कर सितंबर तक और पुनः मार्च अप्रैल में कर सकते हैं. रोपाई के पूर्व इस की पौध पौधशाला में बीज बो कर तैयार करते हैं, जिन की रोपाई एक मास आयु हो जाने पर कर सकते हैं. इस के पूर्व भूमि को तैयार कर लेना भी आवश्यक होता है. इस के लिए भूमि की 2-3 बार खुदाई कर के प्रति 100 वर्ग फुट स्थान के लिए 20 किलोग्राम की गोबर की पुरानी खाद, 75 ग्राम यूरिया,. 230 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट और 75 ग्राम पोटेशियम सल्फेट मिट्टी में फैला कर मिला दें. फिर भूमि को क्यारियों में बांट लें.
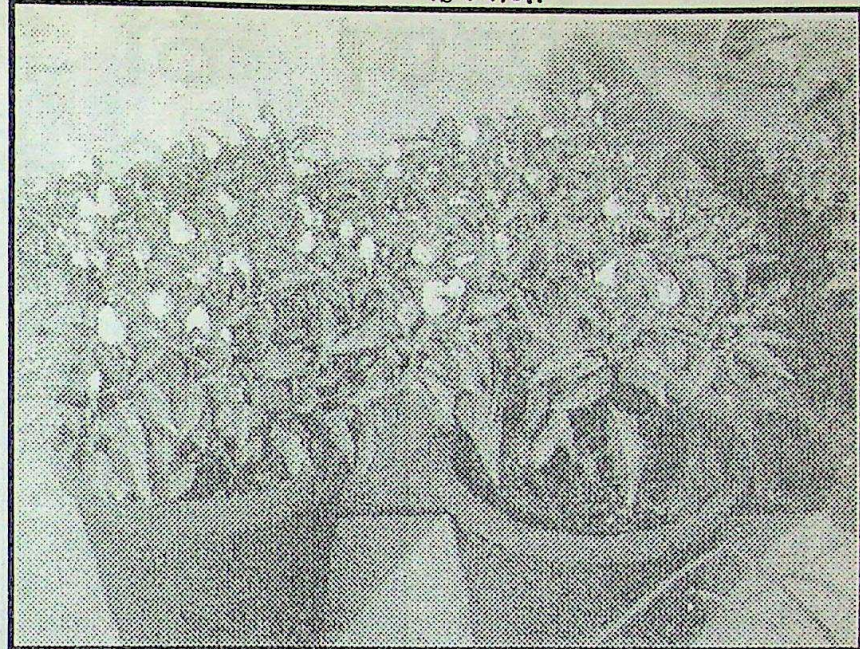
रोपाई के बाद 1 व 2 मास पर इर बार पौधों के चारों ओर प्रति 100 वर्ग फुट स्थान के लिए ही 35 ग्राम यूरिया का बुरकावउ करें. समयसमय पर इन की निराईगुड़ाई व सिंचाई आवश्यकता को देखते हुए करते रहें. मिर्च के पौधों को खादयुक्त गमलों में भी भलीभांति लगा सकते हैं. इन्हें इच्छानुसार सूर्य का प्रकाश पहुंचने वाले स्थानों पर एक स्थान बदल कर दूसरे स्थान पर रख कर भी मिर्चों की सुंदरता का आनंद ले सकते हैं.

लाल हो जाने पर मिर्चों को पौधों पर 8-10 दिन तक आसानी के साथ छोड़ सकते हैं, जिस के पश्चात तोड़ कर इन का उपयोग किया जा सकता है. इन की शाखें थोड़ा सा भी झटका लगने पर टूट जाती हैं. अतः पौधों के पास से आतेजाते अथवा मिर्चों की तोड़ाई करते समय या गमलों का उठाते व रखते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए. इन लाल मिर्चों को पिन होल्डर में लगा कर ड्राइंग रूम को सुशोभित कर के भी आनंद ले सकते हैं. 4-6 दिन के पश्चात इन्हीं मिर्चों को पिन होल्डर से निकाल कर सामान्य उपयोग में ला सकते हैं.।

–शिल्पा श्याम

वृक्षारोपण की जिम्मेदारी सभी विभागों की है : वनमंत्री

उत्तरांचल बनने के बाद उत्तर प्रदेश का वन क्षेत्र सिर्फ ४.६: ही रह गया है। जबकि होना तैंतीस प्रतिशत चाहिए। अतः इसी लक्ष्य को पूरा करने के लिए हरित अभियान चलाया गया है। इसके अन्तर्गत वृक्षारोपण की जिम्मेदारी सभी विभागों की है।

यह बात वनमंत्री श्री राजधारी सिंह ने **'पर्यावरण चेतना'** संवाददाता **'बृजमोहन सिंह'** से एक विशेष भेंट के दौरान कही। उन्होंने कहा कि हमारी गांव की संस्कृति है आज हम गांव की कुश्ती को भूल गए हैं। अब हम क्रिकेट खेलते हैं। लोग टी.वी.की तरफ भाग रहे हैं। जबकि गांव के खेलों से आदमी स्वस्थ रहता है। और यह गरीब लोगों के सहज ही उपलब्ध हो जाते हैं।

वनमंत्री ने कहा कि पहले वृक्षारोपण आदि के आंकड़े गलत होते थे। लेकिन अब ऐसा न हो इसका पूरा प्रयास किया जा

राजधारी सिंह
वन मंत्री, उ.प्र. शासन

रहा है। उन्होंने कहा कि अब वृक्षारोपण की जिम्मेदारी सभी विभागों की है। और इस दिशा में उदासीनता बरतने वाले अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई भी की जाएगी। श्री राजधारी सिंह का कहना है कि जिलाधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि वह वृक्षारोपण के संबध में बैठक कर समीक्षा करें। इस ओर अच्छा काम करने वाले अधिकारियों को सम्मानित भी किया गया है।

वनमंत्री ने कहा कि हमने पर्यावरण और प्रकृति की रक्षा के लिए कानून जरूर बनाए हैं लेकिन जनता को कानून के साथ जोड नहीं पाए हैं। लोगों को इस बात की प्रेरणा नहीं दे पाए हैं कि वृक्षारोपण करना, पर्यावरण और प्रकृति की रक्षा करना हमारा धर्म है।

उन्होंने कहा कि हम लोगों में जागरूकता पैदा कर रहे हैं जिससे कि पर्यावरण की रक्षा की जा सके। वनमंत्री ने कहा कि हमें प्रकृति के उपभोग का हक है लेकिन शोषण का नहीं। इसलिए हमें लोगों में ऐसी चेतना पैदा करनी होगी जिससे कि प्राकृतिक संसाधनों का कम से कम दोहन हो। उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य अधिक से अधिक हरियाली बढ़ाने का भी है।

फिर भी यमुना तो मैली ही रही

रमाकांत की एक कहानी है, तीसरे मंजिल की नदी। 'यह कहानी एक ऐसे बच्चे के बारे में है जिसने नही नही देखी। वह तीसरी मंजिल पर रहता है और उसने सिर्फ रेडियों में नदी की आवाज सुनी है। यह कहानी लिखते हुए उनके लेहन मे जरूर यह सांस्कृतिक प्रश्न रहा होगा कि किस तरह औद्योगिक और महानगरीय संस्कृति के कारण बच्चों का उस सभ्यता से नाता टूट गया है जिसका विकास नदियों के साथ हुआ है। उन्होंनं नदी देखी नहीं, सिर्फ सुनी है और वह भी रेडियो पर। कहने का तात्पर्य यह है कि एक नदी का प्रदूषित हो जाना एक विराट सांस्कृतिक प्रश्न है। विशेष रूप से भारत की राजधानी दिल्ली में जहां हमारे मुहल्ले में सफाई करने वाली जमुना की तरह यमुनी नदी भी मैला ढोते-ढोते एक गंदे नाले में बदल गयी है। क्या इससे सरकार की निष्क्रियता और उसके सांस्कृतिक सरोकारों का पता नहीं चलता कि विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर एक जून से लेकर छह जून तक यमुना की सफाई का एक अभियान चलता है और यमुना से छत टन मैला निकाले जाने के बाद यह अभियान रूक जाता है।

अब तक 'यमुना एक्शन प्लान' के तहत जो तथ्य सामने आये हैं उनके अनुसार यमुना देश की सबसे ज्यादा प्रदूषित नदी है। बेशक यमुना के सुधार की उम्मीदें अभी खत्म नहीं हुई। लेकिन सवाल यह है कि उम्मीदें किनसे हैं। अब तक सामने आने वाले तथ्यों के अनुसार यमुना के किनारे बसी झोंपड़पट्टियों के निवासियों को हटाने के लिए 300 हेक्टेअर जमीन चाहिए और अब तक एक एकड़ जमीन भी नहीं ढूंढी गयी। लेकिन इससे भी बड़ा प्रश्न औद्योगिक कचरे का है और यह कचरा ही नदी के लिए सर्वाधिक घातक है। जहां तक औद्योगीकरण का सवाल है, इंग्लैंड में भी औद्योगिकीकरण के बाद टेम्स जैसी नदियां प्रदूषित हुई थीं। विकसित देशों को भी इस समस्या का सामना करना पड़ा था विकासशील देशों के लिए तो यह समस्या और भी गंभीर है।औद्योगीकरण का मतलब यह है कि गांव का किसान मजदूर बनता है और चिमनी के धुएं के साथ एक संस्कृति आती है। हमारे. यहां विश्लेषक दिल्ली की जनसंख्या बढ़ने का कारण विभाजन मानते हैं। अगर विभाजन न होता तो गांव के लोग रोजी-रोटी की तलाश में शहर आते। सवाल यह है कि एशियाइयों के इंग्लैंड जाने से टेम्स नदी क्यों प्रदूषित होने के बाद भी स्वच्छ हो गयी।

इसलिए कि टेम्स नदी के प्रदूषण के बाद उसे स्वच्छ करने की एक ठोस योजना थी। उसके लिए एक मानक रखा गया था। हमाने देश में योजनाएं बनती हैं, लेकिन लागू नहीं होती। नदी तीसरी मंजिल पर बहती रहती है। अब दिल्ली की मुख्यमंत्री कहती हैं कि यमुना को टेम्स की तरह स्वच्छ किया जाएगा। उनका यह विचार अच्छा है कि भविष्य में नदी के तटों को पिकनिक स्थलों की ताह विकसित कर व्यावसायिक लाभ उठाया जा सकता है लेकिन यमुना के तटों को विकसित करने का ठेका विदेशी कंपनियों को ही मिलेगी और उसमें 750 करोड़ रूपये पानी में डूब जायेंगे। हम एक नदी को खुद 'टेम्स' नहीं बना सकते। और नदी भी क्या जिसमें पानी तभी नजर आता है, तब तालेवाला से छोड़ा जाता है। सूखी हुई नदी से बाढ़ के डर से झोपड़ियां हटायी जाती हैं, क्योंकि यमुना भी बिक चुकी है। यमुना अब, वह यमुना नहीं रह गयी जो हमारे यहां लोकगीतों और लोकसंस्कृति तथा भक्ति काव्य में बहती थी, क्योंकि जब कोई नदी सूखती है तो उसके साथ संस्कृति भी सूखती है। यमुना में जो पानी है, उसमें भी कूड़ा-कचरा है और साफ करने का अभियान पांच दिनों के लिए एक 'फोटो अवसर' बन कर रह जाता है।

हमारे देश में तो संस्कृति नदियों के तटों पर विकसित हुई है। पंजाब नाम भी पांच नदियों के कारण रखे गये हैं और बच्चों के नाम पर रखने की परंपरा यहां रही है। यहां लगने वाला कुम्भ मेला दुनिया भर के लिए आश्चर्य है, जहां ध ार्मिक और संस्कृतिक आस्थाओं के चलते अपार जन समुदाय जुट जाता है। लेकिन यह नदी जो गंगा में जाकर मिलती है, उसमें बस जल कुम्भियां नजर आती हैं और वहां मच्छरों का कुम्भ है। ये नदियां हमारे यहां जन्म से लेकर मृत्यु तक जुड़ी है। इनके किनारे ही चिताएं भी जलती हैं और पिण्डदान भी होते हैं। सिचाई के लिए कृषि प्रधान सभ्यता भी विकसित होती है।

पंडित जवाहर लाल नेहरू ने भाखड़ा की परियोजना बनायी थी। हम तब स्कूल में पढ़ते थे। बिजली निकाल ली गयी तो उसमें क्या बचेगा। यह तो वैसा ही है जैसे दूध से मक्खन निकाल लिया जाए। क्योंकि उनके साथ एक दूसरी तरह का विनाश जुड़ा है। वह अलग विषय है। सवाल यह है यमुना से पहले जो गंगा 'एक्शन प्लान' शुरू हुआ था उसका क्या हुआ। क्या गंगा एक्शन प्लान का मतलब भी लोगों की समझ में आया। यमुना का कोई प्लान शायद इसलिए भी नहीं बन पा रहा क्योंकि अभी तक 'वोट बैंक' की तरह इस्तेमाल होने लायक नहीं है।

—ओमकार सिंह

छोटा बाटन, सूरमा

छोटा बाटन का शरीर अपेक्षाकृत बड़ा, ऊपर से धूसर-भूरा, नीचे से सफेद होता है। और वक्ष पर भूरे रंग की महीन लकीरें होती है। उड़ते समय सफेद निचली पीठ और कटिप्रोथ देखकर इसे पहनाचा जा सकता है। इसके अतिरिक्त पंखों के पिछले किनारों पर चौड़ी सफेद अध वृत्ताकार की पट्टी और पीछे निकली हुई लम्बी पतली लाल टॉगे भी इस चिड़िया के विभेदक लक्षण हैं।

इसकी सफेद दुम में भारी पट्टियां होती हैं। ग्रीष्मकालीन या प्रजननशील पक्षति में ऊपरी भाग पर काले और गेहुंए धब्बे व लकीरें होती हैं।

वक्ष पर भूरी रेखाएं अधिक धनी होती हैं। नर-मादा एक जैसे होते है। यह झीलों, एस्चुरियों, आदि के आस-पास अकेले या छोटे झुंडों में रहती हैं। हरित जंग (ट्रिगा नेबुलेरिया) नामक जाति की कुछ बड़ी आकार वाली बाटन भी जाड़ों में अकेले ही देखाने को मिलती है।

यह अरुणाजंघ से कुछ बड़ी, ऊपर से गहरी धूसर-भूरी और नीचे से सफेद होती है। ललाट, निचली पीठ और कटिप्रोथ सफेद तथा दुम पर हल्की धारियां होती है। पंखों पर पट्टियों का न होना, जैतूनी-हरी टांगों और ऊपर की ओर कुछ-कुछ मुड़ी चोंच इसके विभेदक लक्षण हैं।

यह समूचे भारतीय संघ, पाकिस्तान, बंगलादेश, लंका तथा वर्मा में पायी जाती है। छोटा बाटन अक्सर शीतकालीन यात्रा करती है। यह अन्य जातियों के साथ मिली-जुली टोलियों में देखी जाती है।

इसकी तथा हरितजंघ जाति की चिड़िया की बोली बहुत कुछ मिलती-जुलती है अर्थात् टिवीई-टिवीई-टिवई या टियू-टियू-टियू जैसा तीखी शीश ध्वनि सुनाई देती है। इसका नीडन मौसम-भारतीय सीमाओं (कश्मीर, लद्दाख आदि) में मई से जुलाई है।

यह पीली या हरी आभा लिए पथरीले रंग के चार अंडे देती है।।

इन पर लैवेण्डर या लाल धूसर पृष्ठभूमि पर लाल भूरे या नील लोहित काले धब्बे या बिन्दियां होती हैं जो कि दलदल के पास घास की झाड़ियों में किसी गड्ढे में दिये जाते हैं।

–राजेश कश्यप

ऊर्जा— शहरी कचरे का महत्व

–शिवेन्द्र कुमार पांडे

लेखक कोल इन्डिया लिमिटेड के सेवानिवृत्त मुख्य महाप्रबंधक (गवेषणा) एक भूवैज्ञानिक हैं।

भारत में बड़े पैमाने पर नगरीकरण ओर उपभोक्ता संस्कृति (उपयोग करो, फेंक दो) के उदभव फलस्वरूप शहरी कचरा उत्पादन में वृद्धि एक भयानक स्वरूप धारण करने लगी है, जिसे संभालना दिन पर दिन कठिन होता जा रहा है।

एक दृष्टि से, यह एक –तरफा क्रिया हो गई है जिसके अंतर्गत महानगरों से लेकर छोटे शहरों तक में, खाद्य पदार्थ व अन्य उपभोक्ता सामग्री बाहर से आयात की जाती है ओर प्रतिदिन का कचरा नगरपालिका व नगरनिगम द्वारा शहर के बाहर भूमिभरण के लिए फेंक दिया जाता है। लेकिन कचरा सफाई में लगे कर्मचारियों की अकार्यकुशलता व लापरवाही के कारण सभी भारतीय नगरों में गंदा/प्रदूषित कचरा सर्वत्र फैला दिखाई देता है। यह कचरा मानव स्वास्थ्य को हानि पहुंचाने के अलावा दुर्गन्ध प्रदूषण भी फैल रहा है। फिर कुछ काल पश्चात, कचरा सड़ने पर उसमें से निकले तरल दूषित रसायन, भूमि में रिस कर भूजल–भंडार में प्रदूषण फैलाने लगते हैं।

शहरों की आबादी निंरतर बढ़ते रहने के कारण, जहां कचरे की मात्रा में प्रतिदिन वृद्धि हो रही है, तो दूसरी ओर नगर–पलिकाओं/निगमों द्वारा वर्षों पूर्वस्थापित जल–मल निकासी व्यवस्था चरमराने लगी है व सम्पूर्ण भार संभालने में असमथ्र हो चुकी है और इसके फलस्वरूप कई बीमारियां बढ़ने लगी हैं। इसलिए इन समस्याओं का पर्यावरण–संगत समाधान ढूंढ निकालना एक महात्वपूर्ण विषय बन चुका है, अन्यथा पर्यावरण प्रदूषित होता रहेगा व आम जनता को स्वास्थ्य संबंधी खतरा बना रहेगा।

इसके अलावा, अर्थिक विकास के साथ–साथ औद्योगिक कचरा (अधिक प्रदूषित) उत्पादन भी बढ़ता जा रहा है, जिसे संसाधित कर, उसमें विद्यमान विषैले प्रदूषक तत्वों को पर्यावरण अनुकूल मापदंडों के अनुरूप निम्नतर स्तर पर लाकर, निपटान के लिए प्रौद्योगिकी विकसित करना भी वर्तमान में एक नियमित विषय बन चुका है।

कचरा निपटान की समस्या, केवल भारत जैसे विकासरत देश की ही समस्या नहीं है, विश्व के विकसित देश भी इसका पर्यावरण–संगत समाधान ढूढ़ने का प्रयत्न गम्भीरता से करने में लगे हुए हैं, अगर है तो केवल उनके दृष्टिकोण में कि यह निपटान किस रूप में किया जाये। विकसित देशों में बिजली पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है, उनकी मुख्य समस्या है औद्योगिकरण के फलस्वरूप बढ़ते पर्यावरण प्रदूषण की रोकथाम। इसलिए उनका प्रथम लक्ष्य है प्रौद्योगिकी विकास द्वारा कचरे की मात्रा कम करते हुए, उसके कुशल निपटान की विधी खोजते रहना, क्योंकि पर्यावरण सुरक्षा के प्रति जागरूकता वृद्धि के साथ–साथ इन समृद्ध देशों में नित नए व कठोर कानून पर्यावरण संरक्षण के लिए पारित हो रहे हैं। इसके विपरीत, भारत में बिजली की भारी कमी है, इसलिए सुरक्षित कचरा निपटान कार्यवाई से जूझते हुए कचरे के माध्यम से बिजली उत्पादन को भारत में प्राथमिकता मिली है।

अब चूंकि, सर्वभौम (ग्लोबल) पर्यावरण के अंतर्गत, इस प्रकार के दूषित कचरे को बिना प्रदूषण व पारिस्थिति की संतुलन अस्तव्यस्त किए ग्रहण करने की क्षमता सीमित है, इसलिए पर्यावरण संरक्षण–प्रतिबद्धता में जागरूकता वृद्धि फलस्वरूप विश्व के सभी देशों में कचरा निर्मूलन के लिए कुशल–सुरक्षित–वैज्ञानिक प्रौद्योगिकी विकास की ओर ध्यान दिया जाने लगा है। हाल के वर्षों में इसके सुरक्षित निपटान के लिए कई प्रौद्योगिकिओं का विकास हुआ है, जिनके माध्यम से, न केवल कचरा प्रजनन की मात्रा कम करना व उनकी विषाक्त गुणमा को पर्यावरण धारणयोग्य स्तर पर ला कर निपटान संभव होने लगा है, बल्कि कचरे को ऊर्जा स्रोत के रूप में उपयोग कर, विकेन्द्रीय स्तर पर बिजली उत्पादन भी किया जाने लगा है।

भारत सरकार द्वारा इस क्षेत्र में प्रौद्योगिकी विकास कार्यक्रम जून १९९५ से आरंम्भ किए गये है। वर्तमान में इसके लिए बायोमिथेनाइजेशन, पौलिटाइजेशन, गैसीकरण, पाइरोलेसिस, भस्मीकरण, स्वास्थ्यकर भूमिभरण, आदि जैसे तकनीकें, एकल व मिले जुले रूप में अपनाई जा रही हैं व इनके माध्यम से भारत में बिजली उत्पादन भी होने लगा है।

केन्द्रीय सरकार के 'अपांरपरिक ऊर्जा स्रोत मंत्रालय' द्वारा वर्ष १९९९–२००० में एक अनुमान लगाया गया है कि भारत में शहरी क्षेत्रों के घरों व व्यवसायिक कार्यालयों से प्रतिवर्ष ३ करोड़ टन ठोस अपशिष्ट और ४४० करोड़ घन मीटर द्रव अपशिष्ट का प्रजनन होता है। इसके अलावा औद्योगिक प्रतिष्ठान भी अपशिष्ट प्रजनन करते हैं। फिर इन अपशिष्टों की मात्रा में प्रतिवर्ष वृद्धि होती रहती है। इसी आंकलन के अंतर्गत भारत में अपशिष्ट उपलब्धता और वर्तमान तकनीकी ज्ञान के आधार पर यह अनुमान भी लगाया गया है कि इस स्रोत से १७०० मेगावाट बिजली उत्पादन संभव है (तालिका–१) अब चूंकि यह प्रौद्योगिकी आधारित प्रक्रिया का परिणाम है, इसलिए इस क्षेत्र में प्रौद्योगिकी विकास के साथ, अपशिष्टों

से बिजली उत्पादन वृद्धि की प्रबल संभावना दिखाई पड़ती है।*

सभी प्रकार के अपशिष्टों को उपयोग कर ऊर्जा प्राप्ति की दिशा में वर्ष १९९९–२००० को भारत में एक निर्णायम उपलब्धि वर्ष माना जा सकता है। इसके पूर्व, १९९६–१९९७ से १९९८–१९९९ तक विभिन्न प्रौद्योगिकिओं को उपयोग करते हुए मात्र २ मेगावाट बिजली उत्पादन क्षमता प्रति वर्ष स्थापित की जा सकी थी। लेकिन वर्ष १९९९–२००० में इस परियोजनाओं को गति मिलने के कारण ८.४ मेगावाट बिजली उत्पादन संयंत्र स्थापित करना संभव हुआ है। (तालिका–२)।

वर्ष १९००–२००० की उपलब्धि के बातजूद, उल्लिखित तालिकाओं (१ और २) की विवेचना से स्पष्ट हो जाता है कि कचरा पिटान के क्षेत्र में भारतीय प्रयास अभी प्रारंभिक चरण में हैं और बहुत कुछ करना अभी बांकी है।

औद्योगिक बहिःस्त्राव (एफ्जुआंन्ट) के निपटान में मुख्यतः 'जल प्रदूषण नियत्रण' को प्राथमिकता दी जाती है और इसके लिए भारत सरकार ने कई नियम भी बनाए हैं, जिनके अंतर्गत प्रत्येक औद्योगिक इकाई को अपने निष्काशन योग्य बहिःस्त्राव का उपचार निपटान के पूर्व करना अनिवार्य है ताकि भूजल प्रदूषण फैलने को रोका जा सके। लेकिन खर्चीला कार्य होने के कारण,कई बार भारतीय कारखानों के मालिक इन नियमों का उलंघन करते देखे जाते हैं।

औद्योगिक बहिःस्त्राव उपचार खर्च को कम करने के उद्देश्य से भारत के औद्योगिक, क्षेत्रों में, जहां कई प्रकार की उत्पादन इकाईयां कार्यरत हों, 'सामूहिक बहिःस्त्राव अभिक्रिया संयंत्र स्थापित किए जा रहे हैं, ताकि उस क्षेत्र में कार्यरत इकाईयों को एकल रूप में कम आर्थिक बोझा वहन करना पड़े। लेकिन इस प्रकार की सामूहिक परियोजना में शामिल प्रत्येक इकाई के लिए यह अनिवार्य होता है कि अपने बहिःस्त्राव को, सामूहिक संयंत्र प्रक्रिया से गुजरने के पूर्व एक नियत स्तर तक संसाधित कर ही उनका निष्काशन करे। सामूहिक बहिःस्त्राव अभिक्रिया संयंत्र के कुशल संचालन के लिए इस प्रकार का पूर्व–संसाधन तकनीकी दृष्टि से एक आवश्यक क्रिया है, क्योंकि उससे जुड़ी इकाईयां भिन्न–भिन्न प्रकार के उत्पादनों में संलग्न होती हैं व उनका बहिःस्त्राव भी रसायनिक भिन्नता लिए होता है।

भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा संयंत्र वापी (गुजरात) में कार्यरत है, जिसमें लगभग ८०० असमान औद्योगिक (रंजक, रसायन, दवाई, उर्वरक, आदि निर्माण करने वाली) इकाईयों के बहिःस्त्राव को 'गुजरात प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड' के मापदण्डों अनुरूप संसाधित किया जा रहा है। इस प्रकार के कई संयत्र चमड़ा, कागज, पेन्ट, कैमिकल, आदि उत्पादक उद्योग के बहिःस्त्राव संसाधन के लिए भारत में स्थापित किए जा चुके हैं।

भारत में इस प्रकार के सामूहिक संयत्रों के डिजाइन, निर्माण व संचालन विशेषज्ञों की कोई कमी नहीं है। कमी है, तो केवल थोड़ा खर्च बचाने के लिए– पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्रतिबद्धता न होना व पर्यावरण कानूनों को दृणता से न लागू कर पाना।

लेकिन भारत में पर्यावरण संरक्षण व प्रदूषण नियंत्रण परियोजनाओं को सफल बनाने में सबसे बड़ी बाधा जो देखने में आती है, वह है– 'ठोस अपशिष्टों के निपटान प्रबंधन का घटिया स्तर' इसे समझने के लिए, आइऐ देखते हैं कि कुछ प्रमुख भारतीय नगरों से औसतन कितना कचरा उत्पादन न निपटान होता है (तालिका–३) और इस कचरे का स्वरूप (गुण) कैसा होता है।

यद्यपि जापान व अमेरिका जैसे विकसित देशों में औसतन प्रति व्यक्ति प्रतिदिन के हिसाब से क्रमशः १ व २ किलोग्राम और भारत में ४००–५०० ग्राम प्रति व्यक्ति प्रतिदिन शहरी कचरा उत्पादन होता है, लेकेन भारत में अधिक जनसंख्या के कारण शहरी कचरे की कुल उत्पादन मात्रा बहुत अधिक होती है। इस अंतर के अलावा, विकसित देशों के कचरे में मात्र २५ प्रतिशत भाग जैवनिम्नकर्णीय पदार्थ होते हैं, तो भारतीय कचरे में ८० प्रतिशत

भाग जैवनिम्नकर्णीय पदार्थो का होता है, जिसमें ५०–५५ प्रतिशत आद्रता, ३५–४५ प्रतिशत बायोमास पदार्थ (फल, फूल, सब्जी, पत्ते, खाद्य, सामग्री, आदि) और ८–१५ प्रतिशत अजैव पदार्थ (प्लास्टिक, कांच, पत्थर, धातु, आदि) होते हैं। अर्थात भारतीय शहरी कचरे का मूल स्वरूप (अधिकतर भाग) मुलायम–गूदेदार व निम्न कैलोरी मान (८००–१४००) लिए होता है।

भारतीय शहरी कचरे के उल्लिखित गुणों को देखते हुए, उसका उपयोग बिजली उत्पादन करने के बजाय, उसे कार्बनिक खाद में रूपान्तरित करना ज्यादा आकर्षक प्रतीत होता है। कुछ भारतीय निजी संस्थानों ने इस दिशा में कार्य भी आरंम्भ कर दिया है और वे भारी सफलता का प्रदर्शन कर रहे हैं।

मुम्बई के प्रतिष्ठित औद्योगिक प्रतिष्ठान 'एक्सल इन्डस्ट्रीज लिमिटेड' ने शहरी कचरे से कार्बनिक खाद निर्माण के लिए अभूतपूर्व प्रौधोगिकी का विकास किया है जिसे अपनाने के लिए १२ राज्यों की नगरपालिका रूचि दिखा रही हैं।

इस प्रकार के शहरी कचरे को संसाधित करने के लिए हमारे पास दो विकल्प हैं

१– सूक्ष्मजीवाणुओं की सक्रियता वृद्धि कर कार्बोनिक खाद निर्माण और) केंचुए उत्पादन कर भूमि सुधार द्वारा उर्वरकता वृद्धि। यह दूसरी विधि मुख्यतः सब्जी बाजार के कचरे में कारगर होती है और इसके माध्यम से भूमिसुधार में दो वर्षो तक का समय लग जाता है। इसके अलावा केंचुआ प्रजनन क्रिया सक्रीय बनाए रखने के लिए पेड़ की छाव तले कचरा रखना आवश्यक है क्योंकि केंचुए धूप नहीं सहन कर सकते हैं और शहरों में जहां कहीं कचरा फेंका जाता है, वहां पेड़ की छांव उपलब्ध नहीं होती है।

इन तथ्यों से अवगत एक्सल ने व्यवहरिकता अपनाते हुए कार्बनिक खाद निर्माण के लिए प्रथम विकल्प को चुना है। एक्सल द्वारा विकसित शहरी कचरा संसाधन की सम्पूर्ण प्रक्रिया तीन चरणों में की जाती है

१–शहर के जिस किसी भाग में कचरा इकठ्ठा हो, उसके ऊपर "सेलरिच मिश्रण" का छिड़काव। इस छिड़काव के एक घंटे के भीतर सूक्ष्म जीवाणु सक्रीय होकर कचरे की दुर्गन्ध समाप्त कर देते हैं। फिर सूक्ष्म जीवाणु की क्रिया से कचरे में उष्माक्षेपी ताप ७०° सेन्टिग्रेट तक बढ़ने पर सभी प्रकार की बिमारी फैलाने वाले किटाणुओं का नाश हो जाता है और मक्खी/मच्छर की समस्या से भी छुटकारा प्राप्त हो जाता है। इस क्रिया को तीव्रता प्रदान करने के लिए अधिक सांद्रण युक्त छिड़काव अपना कर जैव निम्निकरण प्रक्रिया कुछ सप्ताहों में पूरी हो जाती है। अब इस उपचारित कचरे को ट्रकों में भरकर "कचरा अभिक्रिया संयंत्र" तक पहुंचाया जाता है। दुर्गन्ध रहित कचरा होने के कारण नगरवासियों को भान भी नहीं होता कि कचरे से भरा ट्रक उनके मोहल्ले से गुजर रहा है।

२– अभिक्रिया संयंत्र स्थल पर कचरा पहुंचने के पश्चात, रद्दी इकठ्ठा करने वाले उसमें से अजैव पदार्थों (प्लास्टिक, कांच, धातु, इत्यादि) को छांट कर पुनःआवर्तन उपयोग के लिए ले जाते हैं। इस प्रकार के कचरे से माल छांटने में उन्हें एक स्वस्थ्य दुर्गन्ध रहित पर्यावरण उपलब्ध होने के साथ–साथ बिमारियों का भी भय नहीं रहता।

इतना कुछ करने के पश्चात बचे हुए कचरे को अभिक्रिया संयंत्र में संसाधित कर कार्बनिक खाद या मृदा सुधारक में परिवर्तित जाता है।

एक्सल के प्रवक्ता, डा. मलय के अनुसार जापान और अमेरिका में भी कचरा अभिक्रिया के लिए सब्जी, मूर्गीखाने व अजैविक कचरे को प्रारंभ में ही पृथक कर संसाधित किया जाता है जिसके फलस्वरूप इन पदार्थो को छांटने मे सलग्न श्रमिकों को प्रदूषित पर्यावरण झेलने के साथ–साथ नाना प्रकार की बीमारियों का खतरा बना रहता है। इस दृष्टि से एक्सल द्वारा मिले–जुले शहरी कचरे को यथा–स्थान पूर्व उपचार पश्चात स्थानान्तरित कर अजैव पदार्थो को छांटने का कार्य और फिर अभिक्रिया संगत सराहनीय प्रयास है। इसकी प्रबल संभावना दिखाती है कि निकट भविष्य में इस विधि का उपयोग भारत में बृहत स्तर पर किया जाने लगेगा।

लेकिन वर्तमान आर्थिक परिदृश्य के अंतरगत कचरा संसाधित कर ऊर्जा प्राप्त करने का खर्च, परंपरागत व्यवसायिक स्रोतों से ऊर्जा प्राप्ति खर्च से कहीं ज्यादा होता है–

१–कचरे से बिजली उम्पादन का खर्च ८ करोड़ प्रति मंगावाट पड़ता है तो दूसरी ओर एक परंपरागत थर्मल संयंत्र से बिजली उत्पादन में ४ करोड़ रूपये प्रति मेगावाट खर्च लाता है।

२–कचरा अभिक्रिया संयंत्र स्थापना में २.५ से ६ करोड़ रूपये पूंजी निवेश (आकार के अनुसार) होती है। इसलिए इनके माध्यम से प्राप्त खाद का मूल्य रसायनिक खाद से कहीं ज्यादा होता है।

३–इसी प्रकार औद्योगिक बहिःस्त्राव से जल–प्रदूषण निम्न करने का खर्च भी बहुत अधिक होता है। एन.टी.पी.सी. ने अपने तालचिर संयंत्र (उडीसा) में १२ करोड़ रूपये खर्च कर एक "जीरी डिस्चार्ज" प्लान्ट स्थापित किया है ताकि ताप संयंत्र में उपयोग किए गए पानी को कृषि/पीने योग्य स्वरूछ बनाकर ब्राह्मनी नदी में प्रवाहित किया जा सके। यद्यपि कचरा संसाधना तकनीकें तात्कालिक आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद नहीं हैं, लेकिन इनके दूरगामी अप्रत्यश्र लाभ को देखते हुए भारत सरकार इनके स्थापना को बढ़ावा देने के लिए आर्थिक परिदान भी देती है। ●

प्रकृति में 'वास्तु शास्त्र' का महत्व

—मोहन राजू एम.

वास्तु से अभिप्राय एक ऐसी शक्ति से है जो ईश्वर एवं प्रकृति के द्वारा आपके घर को प्रदान की जाती हैं। हम सभी प्रकृति के निवासी हैं और हमें इसके नियमों का पालन करना होता है। प्रकृति सभी को सुरक्षा प्रदान करती है, अतः यह सभी के लिए बहुत ही महात्वपूर्ण है। हम प्रकृति के एवं वातावरण के अनुसार फूलों एवं फलों का उत्पादन एवं सेवन कर अपने बतवि में परिवर्तन कर सकते है।

चूंकि मनुष्य प्रकृति के द्वारा उत्पन्न होता है। इसी प्रकार उसे संरक्षण की आवश्यकता है। जो उसे प्राकृतिक तत्वों से ही मिल सकती है। हालांकि ईश्वर ने अच्छे या बुरे का विकल्प भी व्यक्ति के सामने रखा है। प्रकृति के साथ मिलकर कैसे रहते हुए उसकी सुरक्षा की जाए। प्राकृतिक वातावरण के द्वारा हमें एक स्वस्थ्य अर्ज की अनुभूति होती है। और इससे हमें अच्छे परिणामों की प्राप्ति होती है।
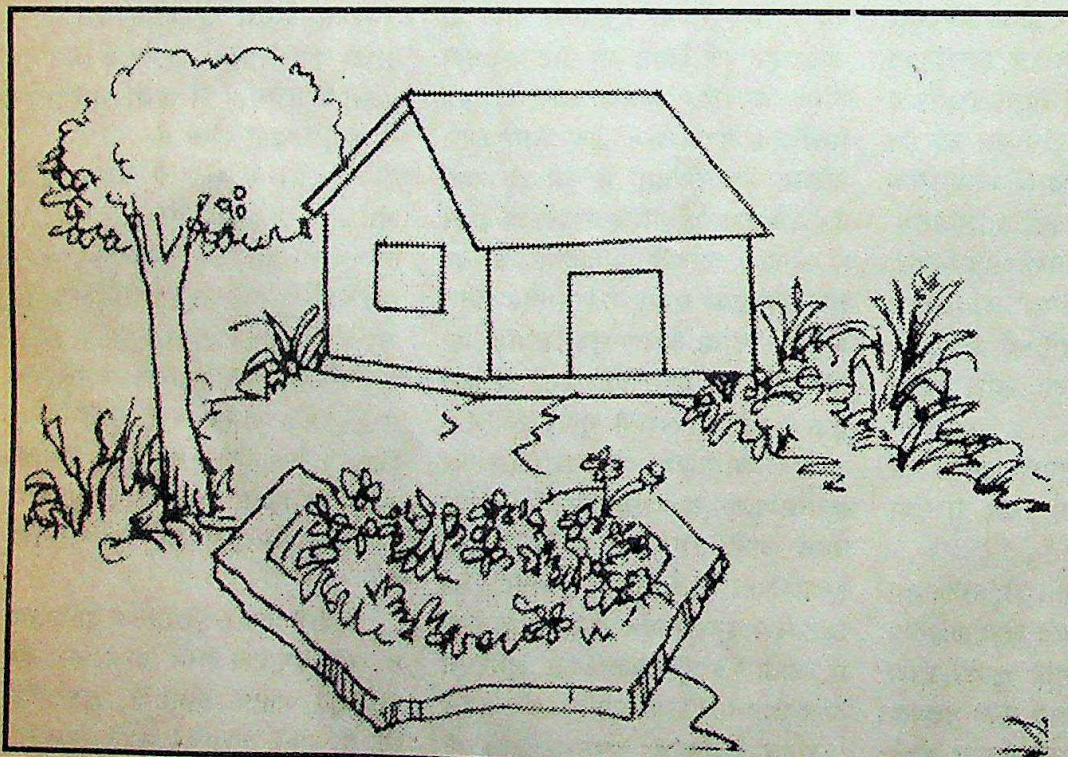
यदि प्रकृति की शक्तियों को एक घर में नियंत्रित कर लिया जाए तो उससे व्यक्ति को अच्छे परिणामों की प्राप्ति होती है। एक घर को बनते समय यदि वास्तु के नियमों को ध्यान में रखा जाए। और प्राकृतिक उर्जा को नियंत्रित करने की ओर ध्यान दिया जाए तो उसमें रहने वाले लोग पर्यावरण एवं प्रकृति द्वारा प्रदत्व लाभों के साथ अच्छा जीवन बिताते हैं।

क्या आप जानते हैं?

1. भारत के कर्नाटक राज्य के कोलार स्थान में सोने की खानें हैं।
2. वर्ष 1985 में मैक्सिको देश में भूकम्प आया था इसमें 2000 लोग मरे थे।
3. नार्वे देश में आधीरात को सूरज निकलता है।
4. 21 जुलाई 1969 को मानव पहली बार चन्द्रमा के धरातल पर पहुँचा।
5. भारत की सबसे लम्बी सुरंग जम्मू कश्मीर के इलाके में है, इस सुरंग का जवाहर टनल है।
6. तिब्बत की उरुत्सों झील प्रत्येक 12 वर्ष बाद मीठे व खारी जल में परिवर्तित होती रहती है।
7. विश्व में सबसे अधिक सोने का उत्पादक दक्षिणी अफ्रीका देश है।
8. संसार में 2792 भाषायें बोली जाती है।
9. संसार का सबसे लम्बा पुल महात्मा गांधी सेतु भारत में है।
10. विश्व की सबसे ऊँची चोटी माउन्ट एवरेस्ट है जो 8848 मील ऊँची है।
11. विश्व का सबसे ऊँचा पठार तिब्बत देश में है।
12. अमरीका निवासी नील आर्मस्ट्रांग चन्द्रमा पर सबसे पहले पहुँचा।
13. सात पहाड़ियों का नगर रोम देश है।
14. आस्ट्रिया देश के टौन पर्वत पर नेडन झरना, रोजाना 3.30 बजे दोपहर एक इन्द्र धनुष प्रतिबिम्बित करता है, जिससे लोग अपनी घड़ी का टाइम भी मिलाते है।
15. ग्रेरनाई मछली पानी में तैरती है, जमीन पर चलती है और हवा में उड़ती भी है।
16. कछुवा की उम्र 300 वर्ष तक होती है।
17. विश्व में सबसे ऊँचा झरना वेनजुयेला में है यह 1006 फुट की ऊँचाई से गिरता है।
18. विश्व का सबसे बड़ा बंदरगाह हार्बर न्यूयार्क में है।
19. फिलिस्तीन देश के जोर्डन नदी में मछली नहीं पाई जाती।
20. विश्व की सबसे लम्बी नदी अमेजन है जो 4195 मील लम्बी है।
21. युवा मनुष्य के शरीर में 45 लीटर जल होता है।
22. मछली ऐसा जीव प्राणी है जिसके आंख पर पलके नहीं होतीं।
23. पेरू देश में स्थित एंडीज पहाड़ों के काम करने वाले कुली लोग कई दिनों तक भूखे रहते हैं। इस दौरान उनका भोजन कोका पौधे की पत्तियां होती हैं।

1. ग्लूकोज के एक अणु से पाइरुविक एसिड के दो अणु बनते है। पाइरुविक एसिड के अनॉक्सी ऑक्सीकरण में किने **A.T.P** मिलते है।
   - (क) 18 (ख) 2
   - (ग) 28 (घ) 38

2. सोयाबीन एक दलहनी फसल है। यह फसल खरीफ के मौसम में बोयी जाती है। इसमें प्रोटीन की मात्रा है।
   - (क) 55 प्रतिशत (ख) 45 प्रतिशत
   - (ग) 40 प्रतिशत (घ) 30 प्रतिशत

3. यदि आलू के टुकड़ों को काटकर, उन्हें किसी विलयन में रखा जाये और कुछ समय बाद माइक्रोस्कोप में देखने पर यह स्पष्ट हो कि कोशिकाएं सिमुड गयी (प्लाज्मोलाइज्ड) हैं, तो विलयन होगा।
   - (क) आइसोटोनिक (ख) हाइपोटोनिक
   - (ग) सान्द्र (घ) हाइपोरटोनिक

4. "जिनेटिक्स एण्ड दि ओरिजिन ऑफ स्पीसीज" नामक पुस्तक लिखी है।
   - (क) डार्विन ने (ख) डॉबजैन्सकी ने
   - (ग) आर्नेस्ट हेकेल ने (घ) डॉ. पी.के. गुप्ता

5. नग्न चट्टानों एवे रेतीले टीलों पर सबसे पहले उगने वाले मरूद्भिद् पौधे होते है।
   - (क) कीटभक्षी पौधे (ख) घासें
   - (ग) शैवाक (लाइकेन) (घ) शैवाल (एल्गी)

6. गेहूं के 200 बीज निर्माण के कितने अर्द्धसूत्री विभाजनों की आवश्यकता होगी।
   - (क) 200 (ख) 250
   - (ग) 150 (घ) 125

7. कुछ आर्किडों में अण्डाशय 180 डिग्री पर मुड़ जाता है यह क्रिया कहलाती है।
   - (क) रिडम्पशन (ख) रिओरियन्टेशन
   - (ग) रिसुपिनेशन (घ) रिनोवेशन

8. 1845-47 के "प्रसिद्ध आयरिस अकाल" में आलू की फसल पूरी तरह नष्ट हो गयी थी। लोग भुखमरी के शिकार हुए क्योंकि आबादी के लिए आलू प्रमुख खाद्य स्रोत था। आलू के इस रोग का नाम है।
   - (क) अरली ब्लाइट ऑफ पोटैटो
   - (ख) लेट ब्लाइट ऑफ पोटैटो
   - (ग) बैक्टीरियल ब्लाइट
   - (घ) ब्लैक वार्ट ऑफ पोटैटो

उत्तर :– 1-ख, 2-ग, 3-घ, 4-ख, 5-ग, 6-ख, 7-ग, [illegible]-क

प्रेम दीवानी ये मछलियां

शायद बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि एक मछली ऐसी भी होती है, जो इंसानों की तरह हंसती है। और अपनी भाषा में बोलती भी है और कभी-कभी इंसानों की जान भी बचाती है। यह मछली इंसानों से दोस्ती भी करती है उन्हें पीठ पर बैठा कर घुमाती भी है और फिर नये-नये करतब दिखाती है। यह भी जानकर सभी को आश्चर्य होगा कि डाल्फिन मछली इंसानों से दोस्ती तो करती ही है, किन्तु अगर कोई जहाज गहरे समुद्र भी भटक जाए या डूबने लगे तो यह मछली काफी सहायता भी करती है। पानी के ऊपरी हिस्से पर यह रास्ता भी बताती है। डाल्फिन मछली बर्फ के टीले से बचाकर जहाजों को सुरक्षापूर्वक किनारे पहुचाने में मद्द करती है। बर्फ के टीले समुद्र में तैरते रहते हैं। ये टीले हजारों फुट लम्बे होते हैं। इनसे अगर कोई जहाज टकरा जाए तो फिर उसकी खैर नहीं। उनसे टकराकर जहाज टूट-फूट जाता है। इससे बचने के लिये अनेक उपाय किये जाते है लेकिन, ऐसे उपाय करने के बाद भी भय यह बना रहता है कि जहाज कहीं भटक न जाये।

समुद्र के बारे में जानने वालों का कहना है कि डाल्फिन मछली का दिमाग बहुत तेज होता है। ये मछलियां खतरे को पहले ही जान जाती हैं और इंसानों को उससे आगाह कर देती हैं।

ये मछलियां तरह-तरह की शरारतें भी करती है। इस शरारत में ये उनके कपड़े समुद्र के किनारों से उठा कर ले जाती हैं। खेल-खेल में लोगों के ऊपर पानी के छीटें भी डालती हैं। अपनी पीठ पर बैठा कर बच्चों को ये पानी में घुमाती भी हैं। ये बच्चों की तरह बहुत जल्दी रूठ भी जाती हैं। रूठकर ये पानी में चली जाती हैं। जब तक इनको मनाया नहीं जाता, रूठी ही रहती हैं।
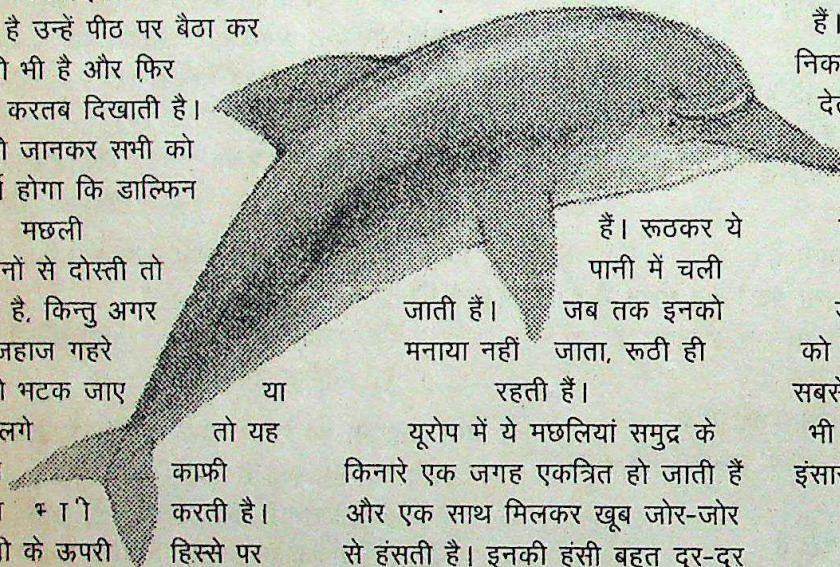
यूरोप में ये मछलियां समुद्र के किनारे एक जगह एकत्रित हो जाती हैं और एक साथ मिलकर खूब जोर-जोर से हंसती है। इनकी हंसी बहुत दूर-दूर तक सुनाई देती है। किनारों पर बैठे या लेटे हुए लोग भी इनकी हंसी सुनकर प्रसन्न हो जाते हैं। बच्चे और औरतें भी चौक कर इन मछलियों की तरफ देखने लगते हैं। मछलियों की तरफ देखने लगते हैं। मछलियों की ऐसी प्रसन्नता व किलकारी भरी आवाजें सुनकर सबके चेहरों पर मुस्कानें आ जाती हैं। और फिर......... मछलियों और इंसानों की हंसी एक में मिलकर गूंजने लगती हैं।

यूरोप के देशों में डल्फिन मछली की तेजी देखकर लोगों ने उसे साध लिया है। यह पानी में भिन्न-भिन्न खेल खेलती हैं। इनके साथ मिलकर वाटरबाल का खेल खेला जाता है। यह खेल मछली और इंसानों के बीच होता है जो सभी को बहुत पसन्द आता है। यह डाल्फिन मछली किसी को नुकसान नहीं पहुंचाती इसलिये अब तो औरतें भी इस खेल मे शामिल हो जाती हैं। वे कई रंगों वाली गेंदों के साथ और पानी के अन्दर इन मछलियों के साथ खेलती हैं। कुछ लोग मछलियों को अपने साथ छलांग लगाना सिखाती हैं। रंग-बिरंगे गोलों में ये मछलियां निकल कर लोगों को आश्चर्य में डाल देती हैं। डाल्फिन मछलियो को छोटे बच्चों और बच्चियों से भी प्रेम है।

समुद्री पार्क में आकर ये बच्चों के साथ घण्टों खेलती हैं।

डाल्फिन मछली प्यार और मुहब्बत को तुरंत पहचान लेती हैं ये जब हम सबसे दोस्ती करती हैं तो उसे निभाती भी हैं। अपने दोस्तों को कभी अगर इंसान रूठ जाये तो ये खुद ही आकर उसे मना लेती हैं।

विशेषज्ञों का कहना है कि ये
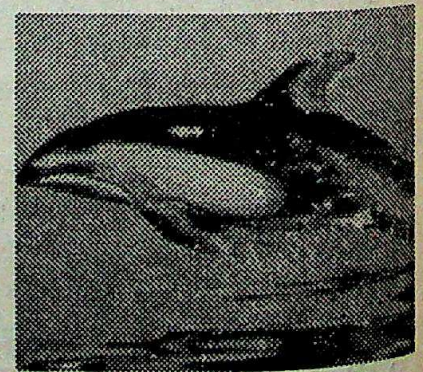
मछलियां प्यार की भूखी होती हैं। इसलिये इंसान से दोस्ती करके ये बहुत प्रसन्न होती हैं।

आने वाले वर्षों में शायद इनसे इंसान की दोस्ती और अधिक मजबूत हो जाये और ये मछलियां इंसान के काम आकर उनकी और भी सहायता कर सकें।

प्रमुख वायदे: जो पूरे हुए...

- ☐ किसानों को उपज का सही मूल्य दिलाने का वायदा पूरा
- ☐ किसान के पास धान रहने तक इस वर्ष **5.40** लाख टन की अभूतपूर्व खरीद
- ☐ प्रदेश के किसानों के लिए पंजाब की भांति सुविधा पैकेज
- ☐ बाजार में आलू की कीमत गिरने से रोकने के लिए आलू निर्यात की व्यवस्था
- ☐ चालू पेराई सत्र के सम्पूर्ण गन्ना मूल्य का भुगतान सुनिश्चित
- ☐ गेहूँ की सही कीमत दिलाने के लिये इस वर्ष लक्ष्य से अधिक खरीद
- ☐ गुड़ एवं खॉडसारी इकाइयों की सुविधा के लिये एकमुश्त मंडी शुल्क समाधान
- ☐ मुर्गी तथा मछली के चारे पर व्यापार कर समाप्त
- ☐ पशु चिकित्सा पंजीकरण शुल्कों में व्यापक कमी
- ☐ घोषित प्राथमिकता के अनुसार किसान, व्यापारी, शिक्षक, श्रमिक, राज्य कर्मचारी अधिवक्ता, संस्कृत तथा अरबी/फारसी मदरसों के शिक्षकों के साथ आमने-सामने बैठकर समस्याओं का निराकरण
- ☐ मुख्यमंत्री द्वारा स्वयं गांवों में रात्रि विश्राम कार्यक्रम की पहल
- ☐ शिक्षकों को पंचम वेतन आयोग की सिफारिशों के अनुरूप वेतन घोषित समय सीमा के भीतर दिया गया।
- ☐ लड़कियों के डिग्री कालेज की स्थापना हेतु **10** लाख रू. की धनराशि तथा उसके बाद भी यथासंभव आर्थिक सहायता।
- ☐ हड़ताल की अवधि **(1999)** के वेतन का शिक्षकों को भुगतान।
- ☐ अक्टूबर **1986** के पूर्व सवित्त मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों को आगामी बजट में अनुदान सूची में स्थान।
- ☐ परिवार कल्याण प्रोत्साहन भत्ता संशोधित दरों पर प्रदत्त।
- ☐ **6** अगस्त **1993** के तदर्थ शिक्षकों का विनियमितीकरण
- ☐ स्कूल से लगी भूमि के सही प्रबंध के लिये शिक्षा विभाग एवं पंचायत विभाग के सहयोग से व्यवस्था
- ☐ शिक्षकों की सामूहिक बीमा राशि **25** हजार से बढ़कर एक लाख
- ☐ पुलिस/पी.ए.सी. जवानों की सेवाकाल में मृत्यु पर मृतक आश्रितों को सेवायोजन के लिए समय सीमा में पांच वर्ष की छूट
- ☐ उद्योग व्यापार में इन्स्पेक्टर राज के समापन हेतु पूर्व में जारी शासनादेश पुनः प्रभावी
- ☐ आवश्यक वस्तु अधिनियम की धारा **3/7** स्थगित
- ☐ न्यायिक सेवा के अधिकारियों को सामान्य दर पर वाहन भत्ता अनुमन्य
- ☐ फैजाबाद में 'अयोध्या निधि' को **11** लाख रू. घोषणा प्रदत्त
- ☐ बाराबंकी पूर्वाचल विकास निधि में सम्मिलित
- ☐ अपंजीकृत मजदूर संघों की कार्यवाहियों पर रोक
- ☐ लेखपाल संघ की मांग के अनुसार गृह निवास विकास खण्डों को छोड़कर तहसील के अन्तर्गत स्थानान्तरण की व्यवस्था
- ☐ पांच या अधिक वर्षों से प्रतीक्षारत लेखपालों को विनियमित करने का आदेश जारी
- ☐ राज्य कर्मचारियों के मृतक आश्रितों को यथाशीघ्र सेवायोजित करने के आदेश जारी
- ☐ न्यायालयों में कम्प्यूटर दिये जाने पर सैद्धान्तिक सहमति
- ☐ बिजली के बिलों का भुगतान न हो पाने की दशा में भी किसानों को छः माह तक सरचार्ज में छूट
- ☐ स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पेंशन में चालू वित्तीय वर्ष में **250/-** की वृद्धि तथा केन्द्र की भांति महंगाई भत्ता
- ☐ होमगार्ड स्वयंसेवकों के ड्यूटी भत्ते में **10** रू. की वृद्धि, कम्पनी कमाण्डर को **200** रू. तथा प्लाटून कमाण्डर को **100** रू. अधिक मानदेय

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ. प्र. द्वारा प्रसारित

स्वागत योग्य प

उत्तर प्रदेश में जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा उन वर्गों का है जो विभिन्न ऐतिहासिक और सामाजिक कारणों से सामाजिक विकास की मुख्य धारा से कटे रह गये जिसे संतुलित करने के लिये स्वतंत्रता के पश्चात उन्हें आर्थिक एवं शैक्षिक तथा सामाजिक स्तर पर आगे लाने के लिये आरक्षण की व्यवस्था प्रदान की गयी। सर्वप्रथम संविधान के अनुच्छेद 46 के अन्तर्गत अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजातियों को सामाजिक न्याय देने और शोषण से उनकी रक्षा करने हेतु सरकारी नौकरियों में आरक्षण दिया गया।

बाद में पिछड़े वर्ग के लोगों को भी आरक्षण देने की मण्डल कमीशन की रिपोर्ट के आधार पर 27 प्रतिशत आरक्षण देने की व्यवस्था की गयी। दलितों को स्वतंत्रता के बाद से ही 21 प्रतिशत आरक्षण प्राप्त था।

लेकिन आजादी के 50 वर्षों बाद सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने हेतु आरक्षण व्यवस्था पर फि से विचार करने की आवश्यकता महसूस हुई, क्योंकि महसूस किया गया कि दलितों और पिछड़ों में शिक्ष सुविधा, तरक्की के अवसरों और सरकारी नौकरि

> हम सुधार कार्यक्रमों के लिये प्रतिबद्ध हैं लेकिन इनका संचालन मशीनी प्रक्रिया के तहत न होकर मानवीय पक्ष को सामने रखकर किया जाना चाहिये।
>
> —राजनाथ सिंह
> मुख्यमंत्री, उ. प्र.

साक्षात्कार

सही बात जब भी हो जाय

सरकार ने अपने कार्यकाल में इतने विलम्ब से सामाजिक न्याय हेतु अति पिछड़ों और अति दलिता को न्याय देने की बात क्यों उठाई ?

बात चार चाल, दो साल और एक साल की नहीं है। बात सत्य की और न्याय की है, इंसाफ और इंसानियत की है। पिछले चार साल बेकार नहीं गये। इस दौरान मौजूदा व्यवस्था को हमने आजमाया और उसी के अन्तर्गत सरकार ने सभी वर्गों के विकास की कोशिश की। लेकिन जब सरकार ने यह देखा कि आजादी के 53 साल बीत गये हैं और हमें भी पहली बार लगातार 5 साल काम के मिले, जिसमें चार सालों तक हमने भरपूर कोशिश कर यह देखा कि पिछड़ों और दलितों के सभी वर्गों को आरक्षण का पूरा लाभ नहीं मिल पा रहा है, पिछड़ों में कुछ जातियां अग्रणी हो गयी हैं और वे आगे बढ़ती जा रही हैं तथा अनेक जातियां जैसी थीं वैसी रह गयीं और इस व्यवस्था पर पुनर्विचार किया। आरक्षण के परिप्रेक्ष्य में जो विसंगति पिछड़ों के मामले में दिखाई पड़ रही है, वही विसंगति दलितों के बीच भी है और बहुत प्रबल रूप से है। इसलिये दोनों वर्गों को पुनर्विचार के दायरे में लाया गया।

हम सभी माननीय मुख्यमंत्री श्री राजनाथ सिंह के आभारी हैं कि उन्होंने इस विसंगति को दूर करने और सामाजिक समरसता की दिशा में सही कदम उठाने का साहसिक निर्णय लिया है। सही बात जब भी हो जाये, देर नहीं होती।

सामाजिक न्याय समिति का स्वरूप क्या है ?

सामाजिक न्याय समिति में अध्यक्ष और उपाध्यक्ष सहित अन्य सदस्य हैं। मुझे इसका अध्यक्ष बनाया गया है और हमारे सहयोगी मंत्री श्री रमापति शास्त्री इसके सहध्यक्ष हैं। श्री दयाराम पाल इसके सदस्य हैं। श्री जे० पी० विश्वकर्मा सचिव I और श्री अरुण आर्या इसके सचिव II हैं तथा श्री एन० सी० शर्मा, श्री पार्थसारथी सेन शर्मा, श्री आशीष कुमार गोयल, श्री भुवनेश कुमार और श्री चन्द्र प्रकाश इसके विशेष सचिव हैं।

यह समिति किस बात का अध्ययन और विचार करेगी ?

समिति के टर्म आफ रेफरेंस में अनुसूचित जाति-जनजाति, पिछड़े वर्गों हेतु समस्त योजनाओं, सुविधाओं का परीक्षण, उत्तरांचल राज्य के गठन के बाद प्रदेश में जनजातियों एवं अन्य वर्गों की संख्या में परिवर्तन होने के कारण प्रदेश के विभिन्न वर्गों की जनसंख्या के अनुरूप आरक्षण, आवश्यक संशोधन का परीक्षण एवं संस्तुति करना है।

वंचित वर्गों को सामाजिक समता दिलाने हेतु सामाजिक न्याय समिति

में प्रतिनिधित्व का वितरण समान रूप से नहीं हो पाया। जिस कारण विकास का लाभ कुछ गिनी-चुनी जातियों में ही सीमित रह गया और परिणामस्वरूप संविधान की आकांक्षा के अनुरूप सभी पिछड़ी और दलित जातियों का उत्थान नहीं हुआ।

नवगठित सामाजिक न्याय समिति अध्यक्ष श्री हुकुम सिंह के अनुसार आज प्रदेश के किसी भी कोने में जाइये तो पिछड़ी जातियों में भी सामाजिक विकास के कारक यथा सड़क, बिजली, पेयजल, स्वास्थ्य एवं शिक्षा सुविधा और स्वरोजगार सुविधायें दलितों और पिछड़ों के बाहुल्य वाले इलाकों में उन्हीं क्षेत्रों तक सिमटे दिखाई पड़ते हैं, जहाँ सरकारी नौकरियों में आरक्षण का लाभ उठाकर लोग भारी संख्या में आगे हो। इससे सामाजिक समरसता के बजाय विषमता बढ़ रही थी। आगे आई जातियां और अधिक आगे तो आ गईं, जबकि उन्हीं के समकक्ष अन्य पिछड़ी या दलित जातियां जहां थीं, वहीं खड़ी दिख रही हैं।

सामाजिक समरसता सुनिश्चित करने हेतु वर्तमान प्रदेश सरकार ने उपलब्ध आरक्षण कोटे के अन्तर्गत अत्यन्त पिछड़ी और अत्यन्त दलित जातियों की पहचान करने हेतु 'सामाजिक न्याय समिति' का गठन किया। इसके अध्यक्ष संसदीय कार्य मंत्री श्री हुकुम सिंह तथा सह अध्यक्ष स्वास्थ्य एवं चिकित्सा मंत्री श्री रमापति शास्त्री बनाये गये हैं। इसके सचिव I श्री जे. पी. विश्वकर्मा तथा सचिव II श्री अरुण आर्य हैं। इसके अन्य सदस्यों में श्री दयाराम पाल, सदस्य विधान परिषद हैं। श्री एन. सी. शर्मा, श्री पार्थसारथी सेन शर्मा, श्री आशीष कुमार गोयल, श्री भुवनेश कुमार और श्री चन्द्र प्रकाश विशेष सचिव हैं।

समिति के उद्देश्य और लक्ष्यों में अनुसूचित जाति-जनजाति, पिछड़े वर्गों हेतु समस्त योजनाओं, सुविधाओं का परीक्षण, उत्तरांचल राज्य के गठन के बाद प्रदेश में जनजातियों एवं अन्य वर्गों की संख्या में परिवर्तन होने के कारण प्रदेश के विभिन्न वर्गों की जनसंख्या के अनुरूप आरक्षण, आवश्यक संशोधन का परीक्षण एवं संस्तुति करना है। ✪◉✪

न्याय, देर नहीं होती
– हुकुम सिंह
अध्यक्ष, सामाजिक न्याय समिति, उ.प्र.

...र्म आफ़ रेफरेंस में अनुसूचित जाति-जनजाति, पिछड़े वर्गों हेतु निर्धारित आरक्षण के सापेक्ष सेवायोजन की स्थिति, सेवायोजन में इनके विभिन्न वर्गों की भागीदारी एवं प्रगति तथा इनके लिये उपलब्ध आरक्षण व्यवस्था व अन्य योजनाओं में सामाजिक न्याय के दृष्टिकोण से संभव सुधार हेतु संस्तुतियां करना है। यह समिति अनुसूचित जाति-जनजाति एवं अन्य पिछड़े वर्गों हेतु समस्त योजनाओं, व्यवस्थाओं एवं सुविधाओं का परीक्षण करेगी और सामाजिक समरसता तथा सामाजिक न्याय के दृष्टिकोण से समस्त सम्भव सुधार करने एवं वंचित समूहों को संवैधानिक व्यवस्था के लाभ उपलब्ध कराने हेतु अपनी संस्तुतियां सरकार को देगी।

यह समिति अपनी संस्तुतियां कब देगी ?

चूंकि सैकड़ों प्रतिनिधि मण्डलों से विचार-विमर्श होगा, हजारों लोगों के सुझावों और पत्रों का अध्ययन करना होगा, आरक्षण के विषय में अब तक गठित सभी आयोगों की संस्तुतियों का अध्ययन करना होगा। यह बहुत बड़ा कार्य और न्याय देने का कार्य है इसलिये हर तरह से परीक्षण करना होगा। इसमें थोड़ा समय लगेगा। फिर भी मैं आशा करता हूं कि यह समिति 15 अगस्त तक सरकार को अपनी संस्तुति दे देगी। थोड़ा-बहुत विलंब हुआ तो 31 अगस्त तक हम हर हाल में अपनी रिपोर्ट दे देंगे।

लोग इसके अनेक राजनीतिक मतलब निकाल रहे हैं। आपका क्या कहना है।

यह प्रश्न राजनीति से ऊपर है। वंचितों को न्याय राजनीति का प्रश्न नहीं है। यह हमारी जिम्मेदारी, हमारी सामाजिक प्रतिबद्धता और जनता के प्रति हमारी सही सोच का परिणाम है। आखिर राजनीति ही सब कुछ नहीं होती, इंसाफ और इंसानियत हमारे जीवन की तरह मूल्यवान हैं। इंसाफ और इंसानियत की रक्षा करना, समाज में उसे प्रतिष्ठित करना हमारी मंजिल है। मेरी सबसे विनम्र अपील है कि हमारे इस फैसले को सिर्फ इंसान और उसके भविष्य को दृष्टि में रखकर देखें, राजनीति की दृष्टि से नहीं।

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ. प्र. द्वारा प्रसारित

जरा सोचिये !
हम भावी पीढ़ी को
विरासत में क्या दे जायेंगे ?
उजड़े हुये वन-पेड़ और बंजर धरती,
कंकरीट की इमारतें, प्रदूषित वातावरण
बच्चे किताबों में पढ़ेंगे, तोता-सारस या
वनराज थे कभी होते थे, मगर डायनासोर की
तरह ये सभी विलुप्त हो गये सदा के लिये
अथवा
हरियाली-खुशहाली और स्वच्छ
हवा-पानी और मिट्टी
आइये! हम सभी संकल्प लें
''पर्यावरण'' को हर प्रकार से सुरक्षित रखें,
पेड लगायें और उनकी देखभाल करें। प्रदूषण की रोकथाम करें।
जनहित में प्रकाशित
पर्यावरण चेतना
सी-5 दिलकुशा कालोनी, लखनऊ, फोन - 482288

स्वत्वधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक मीता सिंह द्वारा नीलम प्रिंटर्स, नरही, लखनऊ फोन - 239672 से मुद्रित

पर्यावरण चेतना

पर्यावरण की राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष 8 नवम्बर 2001 अंक 7

युद्ध की विभीषिका में जलता पर्यावरण
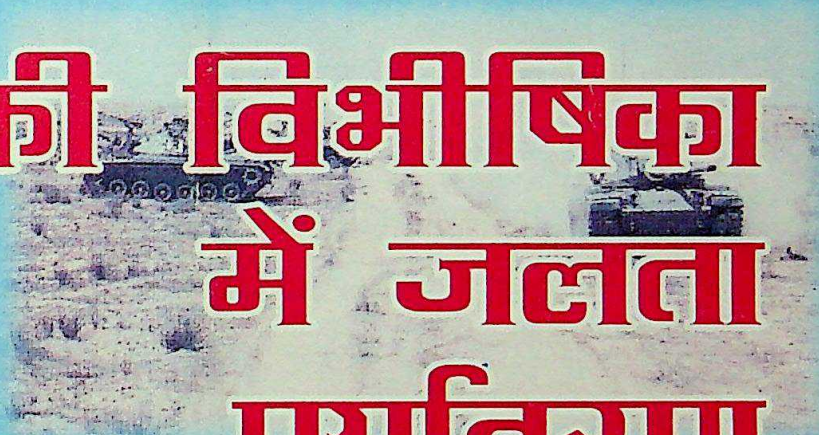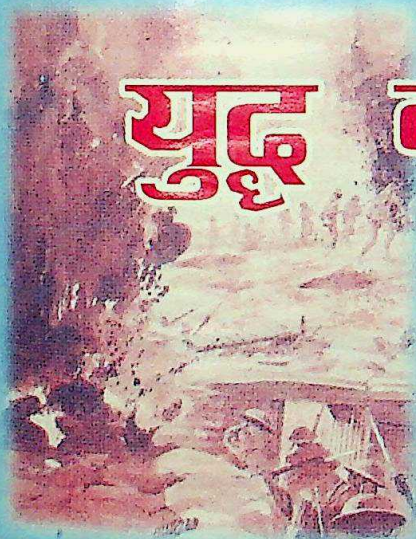
- एक जहरीला जीव चमगादड़
- शिकारी चिड़िया - 'पनचिड़ा'
- सदाबहार पौधों के रंगीले फूल
- जानलेवा भी हो सकता है- 'शोर'

मूल्य 25 रु.

दीपावली शांति व सद्भाव से मनाएं
हर्षोल्लास के उन्माद में यह न भूलें कि आपके त्योहार मनाने के तरीके से किसी को हानि हो सकती है और आपको भी।
तेज आवाज और तेज रोशनी के पटाखे न छुड़ाएं।
एक बार आग लगाने के बाद पुनः पटाखों के निकट न जाएं।
राकेट, चर्खी व फुलझड़ियों आदि को आवासीय स्थल से दूर छुड़ाएं।
अनार व राकेट आदि को छुड़ाते समय हमेशा उसे ऊपर (आसमान) की ओर ही छुड़ाएं।
अस्पताल व स्कूल आदि के पास आतिशबाजी न छुड़ाएं।
याद रखें दीपावली सभी का त्योहार है।
सबकी सुरक्षा – आपकी सुरक्षा
"पर्यावरण चेतना" द्वारा जनहित में प्रकाशित

पर्यावरण चेतना

पर्यावरण संचेतना की राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष : 8 नवम्बर अंक : 7

☐ सम्पादकीय कार्यालय : सी-5 दिलकुशा कालोनी लखनऊ, फो-482288
☐ संपर्क :– नगर कार्यालय, कीर्तिशिखर अपार्टमेंट्स, निकट विकास दीप, ऑफ स्टेशन रोड, लखनऊ, फोन :– 636282
☐ रजिस्टर्ड कार्यालय : बी-1/12 सेक्टर डी–1, कानपुर रोड योजना, लखनऊ, फोन-436767
☐ मुद्रक : नीलम प्रिंटर्स, नरही, लखनऊ फोन - 239672

अनुक्रमणिका

पर्यावरण चेतना के पाठकों व अभिकर्ताओं को दीपावली की हार्दिक बधाई।
–मुख्य प्रबंधक

*सम्पूर्ण वैदिक वांगमय मानव की मनीषा की सर्वोकृष्ट उपलब्धियों का अमूल्य अंश है। प्रकृति के साथ यह अस्तित्व की भावना से युक्त जीवन व्यतीत करने वाले वैदिक ऋषियों ने वसुन्धरा, ऊषा, सूर्य, वायु, जल एवं अन्यान्य प्राकृतिक शक्तियों की भावपूर्ण अभ्यर्थना की है। **''पर्यावरण चेतना''** द्वारा वैदिक सूक्तों की कतिपय ऋचायें, पर्यावरण संरक्षण की पुरातन चिन्तन धारा वर्तमान संकल्पना से जोड़ने की दृष्टि से प्रकाशित की जा रही है। प्रकृति के अनन्य आराधक मंत्र दृष्टा ऋषियों को विनत प्रणाम करते हुये प्रस्तुत हैं प्रकृति पर **''वैदिक चिन्तन''** के कतिपय अंश-*

औदुम्बरेज मणिना पुष्टिकामाय वेधसा। पशुनां सर्वेषा स्फातिं गोष्ठे में सविता करद्।।

(अर्थर्ववेद संहिता भाग–2 औटुम्बरमणि सूक्त–1)

(ज्ञानी अथवा विधाता ने औटुम्बरमणि से सभी प्रकार की पुष्टि करने वालों के लिये एक प्रयोग किया था जिससे सवितादेव हमारे गोष्ठ में सभी प्रकार के पशुओं को बढ़ायें।)

प्रस्तुत श्लोक वर्तमान समय में समीचीन प्रतीत होता है। क्योंकि आज विभिन्न प्रकार के पशु एवं जीव जंतुओं के संरक्षण की आवश्यकता है। क्योंकि हमारी कृषि का एक महत्वपूर्ण स्तम्भ पशु ही है। इसके अलावा पशुओं से ही हमें दूध की प्राप्ति होती है तथा अन्य विशेष कार्य भी पशुओं द्वारा ही संपादित होते हैं। अतः आज पशु धन को बढ़ाने की आवश्यकता है।

करीषिणी फलवती स्वधामिरां च नो गृहे। औदुम्बरस्य तेजसा धाता पुष्टिं दधातु में।।

(अर्थर्ववेद संहिता. भाग–2 औटुम्बरमणि सूक्त–3)

(धातादेव औटुम्बर मणि की तेजस्विता से हमारे अंदर परिपुष्टता को प्रतिष्ठित करें। गोबर की खाद से परिपूर्ण करने वाली गौ संतानों से युक्त होकर हमें अन्न और दूध आदि पर्याप्त मात्रा में प्रदान करें।)

प्रस्तुत श्लोक भी आज के संदर्भ में महत्वपूर्ण है। क्योंकि इसमें भी गायों के महत्व के बताया गया है। और देवताओं से उनकी वृद्धि की प्रार्थना की गयी है। क्योंकि गायों के गोबर से खाद होती है। जिससे कृषि पैदावार में वृद्धि होती है एवं दूध आदि भी प्राप्त होता है। अतः आज की समस्याओं को देखते हुये गायों एवं अन्य पशुओं के अधिकाधिक संरक्षण की जरूरत है।

❋ पर्यावरण चेतना फीचर्स

पर्यावरण विषय पर अच्छी सामग्री

'पर्यावरण चेतना' को पढ़ने की सलाह मेरे एक सहपाठी ने दी थी। यह मेरे वरदान साबित हुई है। इसमें पर्यावरण के विषय पर अच्छी सामग्री का प्रकाशन किया जाता है। इसकों पढ़कर ऐसा लगा कि हम हिन्दी में पर्यावरण साहित्य पढ़कर शिखर पर पहुंच सकते हैं।

'प्रेम दीवानी ये मछलियां' लेख पसंद आया। क्योंकि इसमें डॉल्फिन मछली के बारे में काफी कुछ पता चला। इस अंक का मुखपृष्ठ व साज-सज्जा प्रसंसनीय रही। 'पर्यावरण चेतना' ने सचमुच अपनी अथक मेहनत और गहरी सूझबूझ से हम पाठकों का दिल ही जीत लिया है। हर लेख को पढ़ने की ही नहीं बल्कि आत्मसात करने की इच्छा होती है, आखिर प्रस्तुति का अंदाज भी तो निराला ही है।

-दीपक चौरसिया, रायबरेली

विजय प्राप्त करती नजर आती है

'पर्यावरण चेतना' अब भारत में समस्त छात्र-छात्राओं के मस्तिष्क पर विजय प्राप्त करती नजर आ रही है। यह पत्रिका अपार ज्ञान तथा अथाह चर्चाओं से भरी हुई है। छात्रों की ओर से मेरी सलाह है कि इस पत्रिका का प्रकाशन अब मासिक से पाक्षिक कर दिया जाए। इस अंक के लेख ज्ञानवर्द्धक रहे।

-राजीव दीक्षित, मिर्जापुर

बचपन का दोस्त

समायानुकूल प्रकाशन, सामयिक विषयवस्तु और यथाशीघ्र हम तक पत्रिका पहुंचाने हेतु हम पाठकों की ओर से ढेर सारी शुभकामनायें स्वीकार करें।

यह पत्रिका मेरे बचपन की दोस्त है इसलिए मेरे परिवार में इसे एक सदस्य के रूप में मान्यता मिली है। मेरे परिवार के सारे लोग नये अंक को जब तक पढ़ नहीं लेते इसके प्रति सबकी उत्सुकता देखते ही बनती है।

इसका इर अंक एक दुर्लभ रत्न है जिसमें एक नवीनता, रहस्य और एक दुर्लभ तेज छिपा होता है। इसीलिये इसके पाठक को "पपीहे" की संज्ञा देना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगा। फिर अक्टूबर-2001 के अंक ने तो सारे रिकार्ड तोड़ कर रख दिया। सम्पादक मंडल के अथक परिश्रम का फल हमारे सामने है कि यह पत्रिका उस शिखर पर पहुंची है।

-लोकेन्द्र सिंह, मध्य प्रदेश

पर्यावरण चेतना की प्रगति

मुझे पर्यावरण चेतना का अक्टूबर-2001 का अंक अक्टूबर माह में ही मिल गया। अकसर यह पत्रिका कुछ विलम्ब से मिलती थी। इसे हम 'पर्यावरण चेतना' की प्रगति ही कहेंगे। नयी पत्रिका को पढ़कर बेहद खुशी हुयी। इसमें प्रकाशित पर्यावरणीय समाचार बहुत ही अच्छे लगे। इसी के साथ बागवानी स्तम्भ के अंतर्गत 'मिर्चों से भी सजाएं बगिया' लेख बहुत रोचक लगा।

-मत्सेन्द्र पाण्डे, रायबरेली

यत ते मध्य पुथिवि यच्च नभ्य,
यास्तूर्जस्तन्व: ऊर्जा स्तवन्य: सबंभूवु:,
तासु नो ध्येयभि: न पवस्व,
माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या:
पर्जन्य: पिता स उ न: पिपर्तु: ।।

(अथर्ववेद / भूमि सूक्त १२-१-१२)

हे, पृथ्वी तुम्हारी कटि, नाभि सम्पूर्ण शरीर से जो शक्ति संजात होती है वह हमारी रक्षा करें तुम्हारे मातृवत-स्नेहिल उच्छ्वासों से हम अभिसिंचित हों वसुंधरा जननी है, हम सब इसके पुत्र हैं, बादल हम समस्त प्राणियों के लिए पितृवत है।।

सम्पादक की कलम से...

प्रकृति के लिए बुरा समय?

आतंक के खिलाफ आज जो जंग जारी है उसमें पूरी तौर पर पर्यावरण के मुद्दे की अनदेखी की जा रही है। इस युद्ध में सर्वाधिक क्षति पर्यावरण की ही हो रही है। अमेरिका के नेतृत्व में अफगानिस्तान पर जारी ताबड़तोड़ हमलों में अब तक टनों गोला-बारूद व अन्य तरह के हथियारों का उपयोग किया गया है। जिनसे अफगानिस्तान सहित आसपास के क्षेत्र में बड़ी मात्रा में पर्यावरण प्रदूषण हुआ है। अफगानिस्तान ही नहीं बल्कि यह सारी प्रकृति की हानि है। और इससे समस्त जीव-जन्तु व मनुष्यों पर प्रभाव पड़ना निश्चित है। लेकिन आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई लड़ने वाले इन देशों को इस ओर से कोई भी चिन्ता नहीं है।

वास्तव में पर्यावरण तो पहले से ही आतंकवाद का शिकार है। लेकिन विगत ग्यारह सितंबर को अमेरिका में न्यूयार्क स्थित 'वर्ल्ड ट्रेड सेंटर' तथा वाशिंगटन में पेंटागन पर हुए हमले जहां आतंकवादी हमलों के इतिहास में जाने जाएंगे वहीं दूसरी ओर इससे हुयी पर्यावरण की क्षति को भी भुलाया नहीं जा सकेगा। क्योंकि इसमें जानमान के साथ ही बड़े पैमाने पर पर्यावरण को नुकसान पहुंचा है। ग्यारह सितंबर को जिन चार विमानों को अपहरण किया गया था। उनमें 'वर्ल्ड ट्रेड सेंटर' से टकराने वाले दो बोइंग ७६७ विमानों में ९०,७७० लिटर ईंधन था। जबकि दो अन्य बोइंग ७५७ विमानों में ४२,६८० लीटर ईंधन था। इन विमानों में भरे ईंधन से दुर्घनाग्रस्त क्षेत्रों में प्रभाव पड़ा ही लेकिन 'वर्ल्ड ट्रेड सेंटर' के ध्वस्त होने से टनों मलबा शहर में फैल गया। इसके अलावा ईंधन से लगी आग के कारण उठे धुएं के बादलों ने न्यूयार्क शहर को ही ढक लिया था।

अमेरिका द्वारा की जा रही बदले की कार्रवाई में अब वही हालत अफगानिस्तान की हो रही है। इसी युद्ध का हिस्सा 'एंथ्रेक्स' भी बन गया है। कुल मिलाकर जनधन की हानि के साथ पर्यावरण प्रदूषण की ओर से पूरी तरह से मुंह मोड़ लिया गया है। इस बात से भी इंकार नही किया जा सकता है कि यदि युद्ध लंबा खिंचत्ता है तो उससे गंभीर पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न होंगी। और इसके लिए कौन जिम्मेदार होगा? पूरा विश्व इस बात का गवाह है कि जब-जब युद्ध हुए हैं चाहे वह प्रथम व द्वितीय विश्वयुद्ध रहा हो, खाड़ी युद्ध हो अथवा आज चलने वाला आतंकवाद के खिलाफ युद्ध, उसमें प्रकृति को ही सबसे ज्यादा नुकसान उठाना पड़ा है। आखिर विश्वस्तरीय संस्थाएं क्या कर रही हैं? और उनको पृथ्वी की रक्षा का प्रश्न क्यों नहीं नजर आ रहा है? ऐसा नहीं है कि आतंकवाद को किसी भी दशा में उचित कहा जा सकता है। लेकिन इस बात पर भी विचार होना चाहिए, कि आतंकवाद को कौन लोग बढ़ावा दे रहे हैं और क्यों?

(प्रधान संपादक)

युद्ध की विभीषिका में जलता पर्यावरण
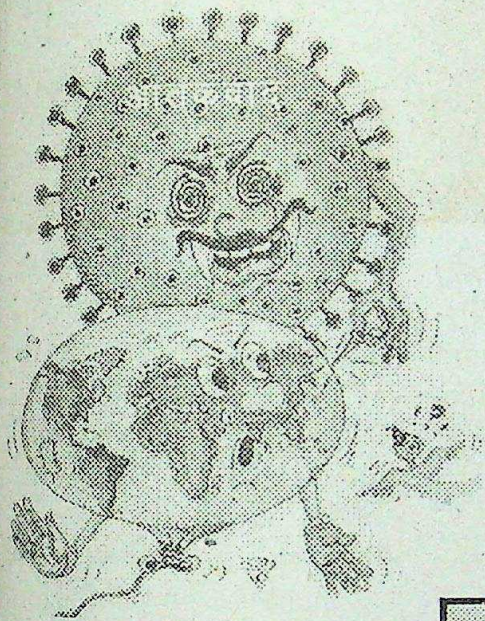
आज रोज ही अफगानिस्तान से भीषण बमबारी और युद्ध की खबरें लगातार आ रही हैं। यहां तक कि यह भी बताया जा रहा है कि कितनी जानमाल की क्षति हुयी है। लेकिन किसी भी टी.वी. चैनल या पत्र पत्रिका ने अपनी न्यूज में यह बताने का कष्ट नही उठाया है कि इस युद्ध से अफगानिस्तान तथा आसपास के क्षेत्र में पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ा है।

11 सितम्बर के अमेरिका में वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर आतंकवादी हमले के बाद से ही ऐसी परिस्थितियां बनी की युद्ध हो गया और साथ ही पर्यावरण के साथ भी खिलवाड़ शुरू हो गया। वैसे विश्व में हुए प्रमुख युद्धों में पर्यावरण को भारी हानि उठानी पड़ी है। आज कुल मिलाकर अफगानिस्तान की हालत एक प्रदूषित पर्यावरण के बदसूरत देश सी हो गयी है। यहां अमेरिका के नेतृत्व में मित्र देशों की सेनाएं लगातार बमों की बरसात कर रही हैं। जिससे तालिबान को जो भी नुकसान हो रहा हो लेकिन पर्यावरण की क्षति नहीं हो रही है। यह असंभव ही है। यहां पर एक-एक बम की उतनी ज्यादा क्षमता है कि जहां पर भी बम गिरता है वहां तालाब बन जा रहे हैं।

बहरहाल इससे पूर्व न्यूयार्क की हालत भी कम ख़राब नहीं हुयी थी। पूरां शहर ही नरक में

तब्दील हो गया था। आज जो स्थितियां बन रही हैं। उससे यह तो निश्चित है कि युद्ध लंबा खिंचेगा। और पर्यावरण को भी भारी नुकसान उठाना पड़ेगा। युद्धों की त्रासदी में सबसे बड़ी हानि पर्यावरण को द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान उठानी पड़ी थी। जब जापान के हिरोशिमा और नागाशाकी शहरों पर परमाणु बम गिराया गया था।

हिरोशिमा जापान के सबसे प्राचीनतम शहरों में से एक है, लेकिन बम विस्फोट की त्रासदी के बाद पूरा विश्व इसके नाम से परिचित हो गया। हिरोशिमा का इतिहास 15 वीं शताब्दी से शुरू होता है। द्वितीय 15 वीं शताब्दी से शुरू होता है। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय यह जापान के विकसित औद्योगिक शहरों में था, इसीलिए यह परमाणु बम का निशाना बना। लगभग एक किमी0 का विनाशक यूरेनियम परमाणु बम जिसकी क्षमता लगभग पन्द्रह हजार टन टी0एन0टी0 थी, के विस्फोट से तत्काल हजारों लोग मर गए। विस्फोट ठीक हिरोशिमा उद्योग प्रसार केन्द्र के ऊपर हुआ। यह केन्द्र शहर की मुख्य औद्योगिक गतिविधियों का केन्द्र था। विस्फोट के समय विस्फोट बिन्दु का तापमान लाखों डिग्री सेंटीग्रेड था, जो विस्फोट के तीन सेकेन्ड बाद 7700 डिग्री सेंटीग्रेड तक हो गया, कल्पना कीजिए लोहा लगभग 1500 डिग्री सेंटीग्रेड पर
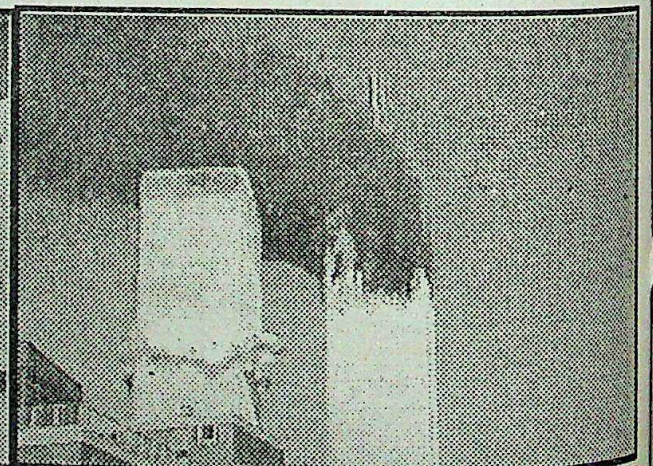
पिघल जाता है। इस विस्फोट की गर्मी से विस्फोट केन्द्र से तीन किमी0 की परिधि में रहने वाले लोग तुरंत मर गये व सारे मकान नष्ट हो गए। जो बचे वे परमाणु बम के रेडियोधर्मी विकीरण की चोट में आ गये और विकीरण जनित बीमारियों के कारण धीरे-धीरे मरने लगे।

इस विस्फोट के कुछ समय बाद शहर के उत्तर पश्चिमी भाग पर बीस मिनट से दो घंटे तक काली वर्षा हुयी जिसके कारण रेडियोधर्मियों विकिरण पूरे क्षेत्र में फैल गया। रेडियोधर्मी विकीरणं अत्यन्त घातक होते हैं। ये रक्त कैंसर से लेकर अनगिनत भयानक बीमारियां पैदा कर मृत्यु का कारण बनते हैं। ऐसा अनुमान है कि इस बम विस्फोट के कारण 1945 के अन्त तक एक लाख चालीस हजार लोग मृत्यु की गोद में समा गये थे। आज भी कुछ लोग विकीरण जनित बीमारियों के कारण बिस्तर पर हैं और रोज मर रहे हैं। इनमें इस त्रासदी के बाद सहायता पहुंचाने वाले कुछ लोग भी विकीरण जनित बीमारियों के शिकार हुये।

रेडियोधर्मी विकीरण के प्रभाव से काफी विकलांग बच्चे पैदा हुए। क्योंकि विकीरण न्यूक्लिक एसिड अर्थात जीन्स को प्रभावित करती है, जिससे गुणसूत्रों की संरचना बदल जाती है और यह बदलाव एक पीढी से दूसरी पीढी में चला जाता है।

परमाणु बम गिरने के बाद हुयी भारी तबाही को देखकर हुए और पश्चाताप की आग में जलते हुए परमाणु बम गिराने वाले विमान के पायलट ने आत्महत्या कर लिया था। इससे पूर्व उसने अपने संस्मरणों में लिखा था कि बम गिराने के बाद हुये विस्फोट से एक पल के लिए उसकी आंखों भी चौंधिया गयी थी और उसको विमान के अन्दर

असहनीय गर्मी और झुलसन का अनुभव हुआ, जिससे एक पल के लिए उसकी आंखों भी चौंधिया गयी थीं और उसके विमान के अंदर असहनीय गर्मी और झुलसन का अनुभव हुआ। जिससे एक पल के लिए उस पर बेहोशी छाने लगी थी। लेकिन असने किसी प्रकार विमान को पुनः नियंत्रित कर लिया।

इस प्रकार खाड़ी युद्ध के दौरान भी पर्यावरण को बहुत ही घातक नुकसान हुआ था। इस युद्ध में इराक और कुवैत के तेल के कुओं में भयकर आग लगी थी जिसे बुझाने में वर्षों लग गए थे। समुद्र के एक भारी क्षेत्र में तेल के फैल जाने और उसमें आग लग जाने से असंख्य समुद्री जीव कल कवलित हो गए थे। इसी के साथ तेल के कुएं जलने से उठे भारी धुएं से कई शहरों का आसमान में धुएं के बादलों से महीनों भरा रहा। यहां तक कि कई-स्थानों पर काली वर्षा भी हुयी थी।

आज आधुनिक समय में अधिकांश देशों के बीच हथियारों की जबर्दस्त होड़ मची हुयी है। इस दौड़ में विकसित देशों के साथ ही विकासशील देश भी शामिल हो गया हैं। यहां तक कि अत्यंत गरीब एवं अल्पविकसित देश हथियारों के ऊपर

अच्छा-खासा धन खर्च कर रहे हैं। जो देश अपने यहा हथियारों के विकास और अनुसंधान में पीछे हैं वे या तो दूसरे देशों से अत्याधुनिक युद्ध का साजोसामान भारी धन खर्च कर खरीद रहे हैं अथवा येन-केन-प्रकारेण तकनीक चोरी कर अपने हथियारों को विकसित करने का प्रयास कर रहे हैं। वैसे हथियारों की इस दौड़ में अतिविकसित देश इस क्षेत्र में चांदी काट रहे हैं। उनको युद्ध का साजोसामान बेचने पर बहुत बड़ा अर्थिक लाभ हो रहा है।

विकसित देशों के बीच इस बात की भी होड़ है कि हथियारों को बेचने के लिये विश्व के बाजार पर किसका नियन्त्रण है। अत्याधुनिक

हथियारों का सबसे खतरनाक आयाम है परमाणविक, जैविक तथा रासायनिक हथियार अफगानिस्तान पर अमेरिका के हमले के साथ ही आतंकवादी संगठनों ने अमेरिका पर जैविक हमला बोल दिया है। जिसके तहत बहुत ही तेजी से 'एंथ्रेक्स' का प्रकोप जारी है। वास्तव में जैविक हमला बहुत ही खतरनाक हथियार है। यह तेजी के साथ एक बड़े क्षेत्र के लोगों को अपनी चपेट में लेता है। और इस पर नियंत्रण पाना भी कठिन होता है।

'एंथ्रेक्स' मुख्यतः पशुओं में होने वाला रोग है लेकिन पशुओं के सम्पर्क में आने पर यह मनुष्यों में भी फैल जाता है। लेकिन यदि बिना पशुओं के सम्पर्क में आए यह मनुष्यों के हो जाता है तो उसे जैविक हमलो की श्रेणी में मान लिया जाता है। इसमें प्राथमिकता स्तर पर तो बचा जा सकता है। लेकिन जब तक 'एन्थ्रेक्स' के लक्षण प्रकट होते हैं तब तक बहुत देर हो चुकी होती है।

अन्य जैविक हथियारों में इबोला, बॉटुलिज़्म टॉक्सिन, स्मालपावस, प्लेग तथा टूलारेमिया आदि हैं। इबोला में हेमोरोजिक बुखार होता है। इसकी उत्पत्ति के बारे में माना जाता है यह बीमारी पशुओं द्वारा ट्रांसमिट हुयी है। बाटुलिज्म टॉक्सिन को एयरोसाल हथियार के रूप में तैयार किया जा सकता है। इसी प्रकार चिकन पॉक्स से बीसवीं शताब्दी में लगभग पांच सौ करोड़ लोग इसकी चपेट में आकर मारे गये थे। एन्थ्रेक्स आज का सर्वाधिक चर्चित जैविक हथियारों में से एक है। इसमें 36 धण्टे के भीतर आदमी की मौत हो जाती है।

जैविक हथियारों में 'प्लेग' इस सभी की सबसे डरावनी बीमारी है। इसी प्रकार टूलारेमिया में श्वास नलियों के हेमरेज से मृत्यु होती है।
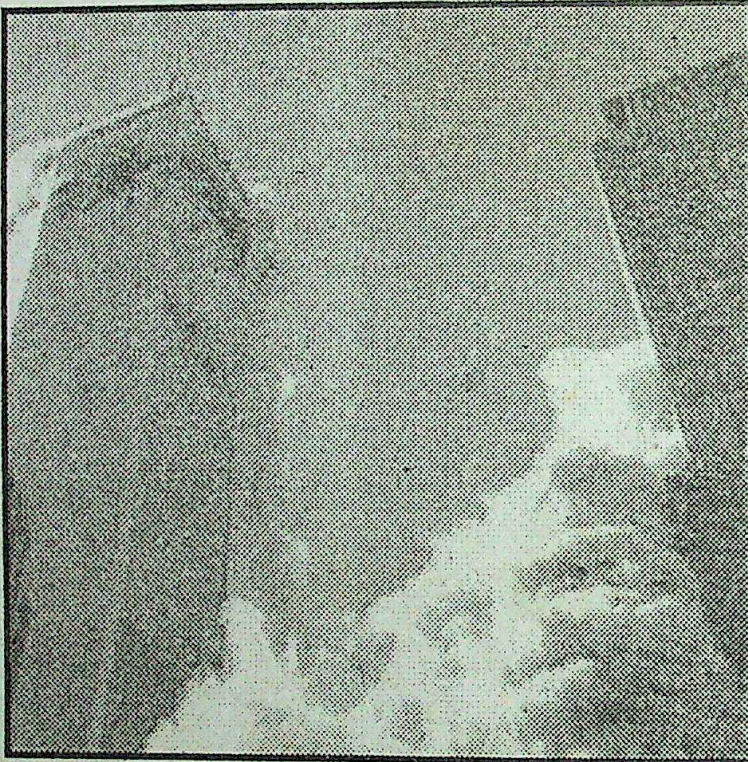
जैविक के साथ ही आज रासायनिक हथियार भी कम खतरनाक नहीं हैं रासायनिक हथियारों में मस्टर्ा, सेरीन, की एक्स जैसी गैसों का इस्तेमाल किया जाता है। ये हवा के साथ ही पानी आदि के द्वारा भी फैलती हैं। इनसे बचाव का एकमात्र रास्ता गैस मास्क है। लेकिन वह भी सुरक्षा की सौ फीसदी गारंटी नहीं देता है।

गत दिनों सीएनएन की एक बेबसाट पर किये गए एक जनमत संग्रह के अनुसार पचास हजार से ज्यादा लोगों में से 73 फीसदी लोगों का मत था कि विरोधी पक्ष रसायनिक अथवा जैविक हथियारों का इस्तेमाल करेगा।

वैसे भी खबरों के अनुसार उपग्रह द्वारा खींची गयी तस्वीरों में अफगानिस्तान में जलालाबाद के बाहर स्थित आतंकियों के प्रशिक्षण शिविरों के परीक्षण रेंजों में मृत पशु दिखायी दिये हैं। जिनसे संकेत मिलता है कि विभिन्न प्रकार के विष के

...प्रयोग किया गया है। विशेषज्ञों का ...ना है कि रसायनिक शास्त्रों के जवाबी ...मले का खतरा इसलिये ज्यादा है क्योंकि ...इन शास्त्रों के इस्तेमाल में कोई बहुत ...बड़ी तकनीक नहीं लगती है।

हालांकि जैविक और रसायनिक ...अस्त्र-शस्त्रों के प्रयोग एवं उनके रखने ...पर प्रतिबंध है लेकिन फिर भी आज इस ...तरह के हथियारों की भरमार है। अमरीका ...वियतनाम युद्ध को अब-तक का एक ...अभूतपूर्व पैमाने और अवधि वाला ...रासायनिक युद्ध कहा जाता है जिसमें ...1961 से 1971 के बीच वियतनामी क्षेत्र ...के बीच वियतनामी क्षेत्र में जंगलों और ...फसलों को नष्ट करने के लिए 94 हजार ...टन से अधिक तृणभक्षियों तथा आठ हजार ...टन जहरीले रसायनों का प्रयोग किया ...गया। नतीजतन, 25 हजार वर्ग किलोमीटर ...क्षेत्र में फैले जंगल एवं तेरह हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला कृषि क्षेत्र नष्ट ...हो गए। इस युद्ध में पन्द्रह विभिन्न जहरीले रसायनों का प्रयोग किया गया, जिसका वियतनामी आबादी के अलावा वहां की परिस्थिति पर भी गहरा असर पड़ा। पर्यावरण में आपवादिक रूप से चिरस्थायी ...हो जाने वाले एक अत्यन्त जहरीले रसायन 'डाइआक्साइड' से युक्त 57 हजार टन 'एजेंट आरेंज' के अंधाधुंध प्रयोग के कारण रासायनिक युद्ध के दीर्घकालीन परिणाम सामने आए थे।

आज अफगानिस्तान के युद्ध की परिस्थितियां देखते हुए इस बात की आशंका से इंकार नहीं किया जा सकता है कि यदि जल्दी ही युद्ध किसी निर्णायक स्तर पर नहीं पहुंचा या न रूका तो यह ...एक बड़े क्षेत्र में फैल सकता है और कई देश इसकी चपेट में आ सकते हैं। उस ...वक्त तो जुनून में न ही किसी को पर्यावरण और प्रकृति की चिंता रहेगी और न ही जान-माल की। सिर्फ एक उद्देश्य रहेगा- विजय का कहीं भी किसी कीमत पर। चाहे प्रकृति का सर्वनाश ही क्यों न हो जाए।

प्रस्तुति- राजेश कश्यप

चिट्ठी या मौत का संदेशा

मारवाड़ का कालिया भाव ही आज का एंथ्रेक्स

-चन्द्रमोहन कल्ला
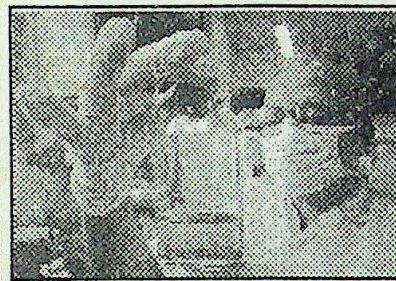
जोधपुर। यूरोपीय देशों में दहशत फैलाने वाला एन्थ्रेस रोग मारवाड़ क्षेत्र में पहले से मौजूद है, जो यहां सर्वाधिक भेड़ों मे पाया जाता है। इस रोग से मरने वाले पशु का चिकित्सक पोस्टमार्टम तक नहीं करते और पता लगने के बाद मृत पशुओं की खाल उतारने वाले भी परहेज करते हैं, क्योंकि इसके कीटाणु मनुष्यं में फैलने से यह रोग उन्हें भी संक्रमित कर उनके लिए जानलेवा सिद्ध होता है। इस रोग को यहां 'कालिया भाव' के नाम से जाना जाता है।

पशु पालन विभाग से मिली जानकारी के अनुसार यूरोपीय देशों में सनसनी फैलाने वाले एन्थ्रेस रोग को जोधपुर संभाग में वर्षो पहले पहचान लिया गया था। बाद में इसका टीकाकरण करते हुए इस रोग पर काबू भी पा लिया गया। वर्तमान में यह रोग गायों और भेड़ों में सर्वाधिक पाया जाता है।

विभाग के चिकित्सकों का कहना है कि जब किसी पशु को यह रोग होता है तो पशुपालक उसके कान पर चीरा लगाते हैं जिसका नियत समय बाद जब खून बंद नहीं होता है तो उसे कालिया रोग होने की पुष्टि करते हुए पशुपालक अन्य पशुओं से उसे अलग कर देते हैं। चिकित्सकों का यह मानना है कि अगर खून का थोड़ी देर बाद थक्का बन जाता है तो उसमें कालिया नहीं होना बताया जाता है।

विभागीय सूत्रों ने बताया कि 90 के दशक में कालिया भाव रोग यहां बहुतायत तौर पर पशुओं में पाया जाता था, जिसका पशुपालकों में भी संक्रमण होने से एकबारगी पश्चिमी राजस्थान में चिकित्सा विभाग भी सतर्क हो उठा था। तब सैकड़ों पशुपालक इस बीमारी की चपेट में आ गये थे। चिकित्सकों का कहना है कि इस रोग के होने के बाद पशु की मौत हो जाती है, यही नहीं मृत पशु को छूने वाले में ही इसके जीवाणु चले जाते हैं,जिसके चलते पशु चिकित्सक ऐसे पशुओं का पोस्टमार्टम करने से भी कतराते हैं।

पशुपालन विभाग के सूत्रों ने बताया कि इसी कालिया भाव रोग का अंग्रेजी नाम एंथ्रेस है। इसमें बेसिलस एन्थ्रेसिस बैक्टीरिया होता है, जो 80 वर्ष तक जीवित रह सकता है। यह रोग रेगिस्तानी और अधिक गर्म प्रदेशों के पशुओं में पाया जाता है। इन्हीं सूत्रों के अनुसार अरब देशों में ऐसी प्रयोगशालाएं हैं जहां ऊंटों और गायों में यह रोग होने पर इसके जीवाणु रखते हुए उस पर परीक्षण किए जाते हैं। यह जीवाणु चमड़ी के भीतर क्लोट करते हुए समूचे रक्त में फैल जाते हैं, जिससे तेज बुखार आकर मुंह और गुप्तांगों से खून आना शुरू हो जाता है जिससे पशु की मौत हो जाती है।

इन्ही सूत्रों ने बताया कि अरब देशों में तो इसका उत्पादन तक होने लगा है। संभवतया वहां किसी पाऊडर में मिला कर इसे यूरोपीय देशों में फैकने का कार्य किया जा रहा है, जिससे अमेरिका और अन्य देशो में इसकी दहशत है। जबकि पश्चिमी राजस्थान और पाकिस्तान के सिंध प्रदेश में तो यही एंथ्रेस कालिया भाव के नाम से जाना जाता है, जो यहां के पशुओं विशेषकर भेड़ों और गायों में अधिक होता है। इन पशुओं का दूध पीने वाले या फिर इनका मांस खाने वाले मनुष्यों में भी यह रोग सहजता से फैलता है।

शांत प्रकृति में ताण्डव करता हुआ मानव

—प्रवीण भूषण

सम्पूर्ण श्रृष्टि कितनी शान्त है, इस बात का एहसास प्रत्येक प्राणी को है। कितने करोड़ों वर्ष लग गये धरती को बनने में। इसके बाद एक अच्छा वातावरण बना। जीवन आये हुये भी लाखों वर्ष हो गये। जब तक मनुष्य इस धरती पर नहीं आया था तब तक प्रकृति यानी धरती की संरचना में धीरे-धीरे फेर बदल प्राकृतिक रूप से होता रहा। तभी उसने अपनी सुविधाओं को संजोना शुरू किया और अप्राकृतिक रूप से प्रकृति में रद्दोबदल करना शुरू कर दिया। पेड़ों को काटना, पर्वतों को काटना, अपने लिए नई से नई चीजे बनाना एवं प्रकृति की सम्पूर्ण चीजों का मनमानी ढंग से सदुपयोग एवं दुरूपयोग करना शुरू कर दिया।

प्रश्न बस इतना सा है, यदि आप किसी वस्तु को छेड़ेगें तो उसकी प्रतिक्रिया की चपेट में भी तो आप को भी आना पड़ेगा। क्या ऐसा है या नहीं। आज जिसको मानव 'प्रगति' परिभाषित करता है वही उसके दुःखों का कारण बन गयी। महोदय आइन्सटाइन परमाणु परीक्षण में सफल होने के बाद रोने लगे, वह यहां तक सोंच गये कि यह 'परमाणु बम' कल सम्पूर्ण श्रृष्टि को तबह भी कर देगा। और वही हो रहा है।

> **करोड़ों अरबों डालर के अस्त्र-शस्त्र प्रत्येक उन्नतिशील देशों के पास एकत्रित हैं, आखिर जब उन्नति/प्रगति की बात है तो तबाही मचाने के सामान क्यों इकट्ठे किये गये हैं। ग्रहयुद्धों की भरमार लगी हुयी है। प्रकृति कुछ बोल नहीं रही है या कुछ देख नहीं रही ऐसा कतई कोई भी मानव न सोचे। आज मनुष्य शान्त प्रकृति में ताण्डव मचा रहा है और वह समय भी नजदीक है जब शान्त प्रकृति भी अपना खेल शुरू करेगी।**

करोड़ों अरबों डालर के अस्त्र-शस्त्र प्रत्येक उन्नतिशील देशों के पास इकत्रित हैं, आखिर [illegible] उन्नति/प्रगति की बात है तो तबा[illegible] मचाने के सामान क्यों इकट्ठे कि[illegible] गये हैं। ग्रहयुद्धों की भरमार ल[illegible] हुयी है। प्रकृति कुछ बोल नहीं [illegible] है या कुछ देख नहीं रही ऐसा क[illegible] कोई भी मानव न सोचे। आज मनु[illegible] शान्त प्रकृति में ताण्डव मचा रहा [illegible] और वह समय भी नजदीक है [illegible] शान्त प्रकृति भी अपना खेल शु[illegible] करेगी, धीरे-धीरे आप देख ही [illegible] है, समुद्र के जल का स्तर [illegible] रहा है, वह घट रही है। दु[illegible] तो इस बात का है कि [illegible] ओर "मदिरा" बेची जा रही [illegible] दूसरी ओर "महानिषेध" कि[illegible] खोल दिये गये हैं। कहने [illegible] मतलब यह है कि किसी प्र[illegible] को करने के लिये अन्तर्मु[illegible] होना पड़ेगा और जो अन्दर [illegible] वही बाहर होना चाहिये। [illegible] प्रकृति के पर्यावरण को सु[illegible] स्वच्छ बनाये रखने की भा[illegible] है तो उसे पूरे तौर तरीके [illegible] ठीक-ठाक बनाये एवं संयोये र[illegible] का दृढ़ संकल्प होना चाहि[illegible] अन्यथा वह दिन दूर नहीं कि जब मनु[illegible] जैसी जाति ठीक उसी तरह न [illegible] हो जाये जैसे डायनासोर या अ[illegible] भीमकाय जीव। हमें ऋणी होना चाहि[illegible] उस प्रकृति मां का जिसने "हमें [illegible] साथ सारी सुविधाओं से ओतप्रोत कि[illegible]

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

समुद्र का विवाह नदी से

तंजावुर। लड़के और लड़की की शादी तो होती रहती हैं लेकिन क्या समुद्र का नदी से विवाह संभव है। ऐसी एक अनोखी शादी गत दिनों तमिलनाडू में हुई।

राज्य के लोग जल संकट से इतने त्रस्त हो गए है कि उन्होंने इससे मुक्ती पानी के लिए तंजावुर के निकट पूमपुखर में यह शादी संपन्न करायी। पूमपूखर में कावेरी नदी समुद्र से मिलती है। इस शादी में दुल्हन थी कावेरी नदी और दुल्हा था समुद्र। शादी के लिए नदी के पानी को चांदी के घड़े में भरकर उसे साड़ी और गहनों से सजाया गया। चांदी के इस घड़े को दुल्हन के रूप में प्रतिस्थापित किया गया। एक दूसरे घड़े में समुद्र का जल भरकर उसे धोती पहनाकर दूल्हे के रूप में सजाया गया।

शुभ मूहुर्त में प्रायः मंत्रोच्चार के बीच कावेरी और समुद्र की शादी संपन्न हुई। मंगलसूत्र बंधक के बाद दोनों घड़ों का पानी समुद्र में उड़ेला गया। इस शादी में धर्मपुरम तिरूवंदुथुराई मठों के पुजारियों सहित बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए। राज्य के डेल्टाई जिलों तंजावुर, तिरूवरूा और नागपट्टनम में पानी के अभाव में करूवाइ और साम्बा धान की फसल की रोपाई बाधित है, क्योंकि बारिश नहीं हो रही है। मेटटर जलाशय में भी पानी का स्तर काफी नीचे चला गया है और यह कुछ दिनों में समाप्त हो जाएगा। वर्षा के कई लक्षण नहीं दिख रहे है।

वेबसाइटों से सावधान

लंदन। इंटरनेट पर वेबसाइट से स्वास्थ्य संबंधी जानकारी हासिल करने वालों सावधान-यह आपके स्वास्थ्य के लिए खतरनाक साबित हो सकती हैं। ब्रिटेन के एक स्वतंत्र उपभोक्ता संगठन के अनुसार के अनुसार स्वास्थ्य संबंधी जानकारी देने वाली दस में सक कम से कम सात वेबसाइट आधी-अधूरी और भ्रामक जानकारियां परोस रही हैं जो स्वास्थ्य के लिए खतरनाक साबित हो सकती हैं।

संगठन ने इंटरनेट के उपयोग करने वालों को चेतावनी दी है कि वे इन साइटों से स्वास्थ्य संबंधी जानकारी लेते समय अतिरिक्त सावधानी बरतें क्योंकि गलत जानकारी स्वास्थ्य के लिए खतरनाक साबित हो सकती है। उन्हें अपने डॉक्टर की राय भी जरूरी है।

'बुल फाइट' नहीं होने दी

मास्को। मास्को में पहली बार आयोजित होने वाली 'बुल फाइट' पशु प्रेमियों के जबदर्शत विरोध के कारण रद् कर दी गयी है। मेयर यूरी लश्कोव ने कहा कि आयोजन रद् करने की सूचना देते हुए कहा कि खूनी खेल रूसी परंपरा के अनुरूप नहीं है। यह आयोजन शहर के ओलम्पिक अखाड़े में कल होने वाला था। युवा संगठनों ने खेल रोकने के लिए सड़कों पर उतर आने की धमकी दी थी।

तांबे के बर्तन ही सर्वोत्तम

लंदन। वैज्ञानिकों का कहना हैं तांबा खाद्य पदार्थों को जहरीला बनाने वाले विषाणुओं को मारने की अदभुत क्षमता रखता है शायद इसीलिए प्राचीन काल में मिस्रवासी पानी शुद्ध रखने के लिए तांबे के बरतनों का बहुत ज्यादा इस्तेमाल करते थे। यहां यूनिवर्सिटी आफ साउथम्पटन के वैज्ञानिकों के एक दल ने अपने परीक्षणों में पाया कि 'इ कोली' नामक विषाणु स्टेनलेस स्टील के बर्तनों में तो ज्यादा समय तक जिन्दा रह सकते हैं जबकि तांबे के बर्तनों में यह कुछ घंटे के अंदर ही मर जाता है।

डॉली क्लोन का निर्माता मानव क्लोनिंग के खिलाफ

वाशिंगटन। डॉली भेड़ का क्लोन बनाकर पूरी दुनिया में चर्चित हुए ब्रिटेन के विज्ञानी इयान विल्मुट अब मानते हैं कि मनुष्य का क्लोन बनाना एक बड़ी गलती होगी। एडिनबर्ग के निकट स्थित रोसलिन इंस्टीट्यूट के निदेशक विल्मुट का कहना है कि यह मानवता के लिए उचित नहीं होगा।

यदि समाज इसे ठीक नहीं मानता तो इस बिलकुल रोक देना चाहिए। बांझपन व दूसरी विसंगतियों से निपटने के लिए मानव क्लोनिंग एक जवाब हो सकता है, पर विल्मुट कहते हैं इससे तमाम दूसरी समस्याएं उत्पन्न हो जाएंगी। उन्होंने कहा कि मानव क्लोनिंग के प्रकृति के सामने संतुलन की समस्या उत्पन्न हो जाएगी। लोग इसका गलत इस्तेमाल भी कर सकते हैं। और हर एक प्रकार की खोज के साथ अच्छे व बुरे दोनों प्रकार के पहेलू जुड़े रहते हैं। इसे देखते हुए लगता है कि यह उचित नहीं है।

बिना आईएसआई मार्क का बोतल बंद पानी गैर कानूनी

चंडीगढ़। चंडीगढ़ स्वास्थ्य विभाग ने शहर में 'आईएसआई' मार्का लगे बिना मिनरल वाटर या बोतल बंद पानी बेचने पर पूरी तरह पाबंदी लगा दी है। इस आदेश का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी। यह आदेश लागू हो गया है। चंडीगढ़ स्वास्थ्य सेवा निदेशक और फूड हैल्थ ऑथॉरिटी डॉक्टर रामेश्वर चंद्र की ओर से जारी आदेशों में कहा गया है कि मिनरल वाटर और बोतलबंद पानी बेचने के लिए ब्यूरो ऑफ इंडियन स्टैंडर्ड्स से क्वालिटी प्रमाणपत्र लेना अनिवार्य है।

ऑथॉरिटी ने शहर में मिनरल वाटर और बोतलबंद पानी बेचने पर रोक लगाने के आदेश पर 29 सितंबर तक ढील दे रखी थी। स्वास्थ्य सेवा निदेशक के आदेश में कहा गया है कि बिना आईएसआई मार्क के मिनरल वाटर बेचने की मियाद 29 सितंबर को समाप्त हो चुकी है और अब इस क्वालिटी प्रमाणपत्र के बिना मिनरल वाटर और बोतलबंद पानी बेचने पर पूरी तरह पाबंदी लगा दी गई है। जबकि ब्यूरो ऑफ इंडियन स्टैंडर्ड्स की मोहर लगी पानी की बोतलें बेचने पर पूरी तरह से पाबंदी लगा दी गई है और इस आदेश का उल्लंघन करने वाले के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी। इसके अलावा स्वास्थ्य सेवा निदेशक ने सभी होटलों और रेस्टोरेंट्स के लिए एक आदेश जारी करके ऐसा रिकार्ड रखने को कहा है कि फूड इंस्प0टरों की ओर से की गई उनकी जांच का दिन और उस का ब्यौरा दर्ज किया जाए। फूड इंस्पेक्टर होटलों और रेस्टोरेंट्स की नियमित जांच करेंगे और रिकार्ड बुक में जांच के दौरान पाई गई स्थितियों का ब्यौरा दर्ज करेंगे। इसके अलावा होटलों और रेस्टोरेंट्स के अलावा खाने-पीने के सामान रखने वाले सभी स्टालों के लिए भी फूड लाइसेंसिंग ऑथॉरिटी से लाइसेंस लेना जरूरी होगा। यह लाइसेंस उन्हें ऐसी जगह पर लगाना होगा जहां यह आसानी से नजर आ सके और जांच करने के लिए आने वाले फूड इंस्पेक्टरों को दिखाया जा सके।

अब बाज संरक्षण व अनुसंधान परियोजना

उदयपुर। देश में बाघ संरक्षण परियोजना के बाद दुसरी बड़ी परियोजना बाज संरक्षण परियोजना होगी। केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्रालय ने राजस्थान सहित देश के अन्य राज्यों में बाज संरक्षण एवं अनुसंधान परियोजना के तहत कार्रवाई शुरु करने के निर्देश दिए है। वन विभाग के सूत्रों ने बताया कि केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्रालय ने देश में शिकारी पक्षी बाज के संरक्षण की महत्ती आवश्यकता महसुस की है। विशेषज्ञों ने वृहद स्तर पर सर्वे कर बाज संरक्षण परियोजना तैयार की है। बताया गया कि इससें पूर्व वन मंत्रालय की बड़ी परियोजना बाघ संरक्षण परियोजना देश में चल रही है।

वन मंत्रालय को राज्य के वन विभाग को भेजे बाज संरक्षण परियोजना के दिशा निर्देशों में बताया गया है कि बाज संरक्षण और अनुसंधान के लिए विभाग संबंधित वन क्षेत्रों में बाज के प्रकृतिक आवासों की निगरानी रखेगा। बताया गया कि खेतों खलिहानों में रसायनिक किटनाशकों को प्रयोग तथा जंगलों की अंधाधुन कटाई से बाज के संरक्षण में कठिनाईयां आ रही है। पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में बाज की भुमिका अहम होती है। अरब देशों में आज भी लोग बाज पालते है। सर्वे में यह भी जानकारी मिली है कि देश में कई स्थानों पर कतिपय समुदाय के लोग बाज का प्रयोग जादु टोने में करते है। बाज का मांस विशेष किस्म की बिमारियों में दवा के तौर पर किया जाता है। सूत्रों ने बताया कि राज्य में बाज संरक्षण एवं अनुसंधान परियोजना के प्रथम चरण में आगामी माह में वन विभाग द्वारा पक्षी विशेषज्ञों तथा बाज पालकों की कार्यशाला आयोजित करेगा। केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्रालय ने इस कार्य के लिए बजट स्वीकृत कर दिया है।

यमुना में अधजले श[illegible] को बहने से रोका जाए[illegible]

सोनीपत। यमुना को प्रदूषण मुक्त [illegible] के अभियान के अंतर्गत सोनीपत जिले में [illegible] अत्याधुनिक शवदाहगृह बनाए जाएंगे। [illegible] यमुना किनारे पर बसे गांवों में बनाया ज[illegible] है। इसके अलावा ठोस कचरे को ठिकाने [illegible] के लिए संयंत्र स्थापित किया जाएगा। [illegible] को प्रदूषण से मुक्ति दिलाने के लिए [illegible] नदी संरक्षण निदेशालय तथा लोक [illegible] विभाग जनस्वास्थ्य मंडल पानीपत द्वारा [illegible] कार्य योजना चलाई जा रही है। इसके [illegible] सोनीपत में दो जल शोधन संयंत्र स्थापि[illegible] दिए हैं।

अधिकारिक सूत्रों के अनुसार [illegible] पूर्व बनाई गई योजना के अंतर्गत राज्य [illegible] शहरों में जलशोधन संयंत्र स्थापित कि[illegible] हैं। कुंडली में बने जल शोधन संयंत्र की [illegible] बढ़ाई जा रही है। सोनीपत में बारह किलो[illegible] लंबे सीवर का निर्माण किया गया है। [illegible] साथ ही तीस एमएलडी मल उपचार [illegible] का निर्माण किया है।

वन्यजीवों की रक्षा पर अब ध्यान देगी सरकार

लखनऊ। प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी राज्य में वन्यजीवों पर बढ़ते जा रहे अपराधों को लेकर चिन्तित हैं। उनकी इस चिन्ता से राज्य सरकार भी जुड गयी है। सरकार की इस सोच के तहत अब वन विभाग ने राज्य में कई वर्षों से वनकर्मियों के खाली पदों को भरने, विभागीय बजट ,बढ़ाने व वन अपराधों पर अंकुश के लिए विशेष न्यायालयो की स्थापना करने का एक प्रस्ताव शासन को भेजा हैं। विभाग के इस प्रस्ताव पर शासन स्तर पर गम्भीरता से विचार किया जा रहा हैं। उच्च स्तरीय प्रशासनिक सूत्रों के मुताबिक सरकार विभाग में वर्षो से खाली पडे वनकर्मियों के पदों को भरने का एक प्रस्ताव शीघ्र ही मत्रिमण्डल के समक्ष लाने जा रही है। इसके साथ ही सरकार राज्य में वन्यजीवों की सुरक्षा के लिए एक मजबूत तंत्र बनाये जाने मर भी गम्भीरता से विचार कर रही हैं।

एक गैर सरकारी आंकलन के मुताबिक बीते आठ वर्षों में प्रदेश में बाघ की 55 व तेन्दुए की 350 खालें मिली और इसी दौरान लगभग 47 बाघ व 35 तेन्दुए मारे गये। राज्य में वन अपराध के इन्हीं आंकड़ों के आधार पर प्रधानमंत्री राजनाथ सिंह को पत्र लिखकर राज्य में बढ़ते वन अपराध पर अंकुश लगाने की ओर ध्यान देने को कहा। मुख्यमंत्री राजनाथ सिंह ने वन विभाग के आला अधिकारियों के साथ बैठक करके उन्हे निर्देश किया कि राज्य में वन्यजीवों व वन सम्पदा की रक्षा के लिए एक व्यापक रणनीति तैयार करके उनके समक्ष प्रस्तुत की जाये, ताकि सरकार की ओर से वन्यजीवों व वन सम्पदा की रक्षा के लिए पुख्ता प्रबन्ध किये जा सकें।

मुख्यमंत्री के इस निर्देश के बाद राज्य के आला वनाधिकारियों ने वन्यजीवों की रक्षा के लिए कार्यरत विभागीय तंत्र की समीक्षा की। समीक्षा में पाया गया कि विभागीय बजट लगातार कम होता जा रहा है।

32 वन प्रभागों में आपरेशन ग्रीन में सुस्ती पर सरकार नाराज

लखनऊ। राज्य के 32 वन प्रभागों में आपरेशन ग्रीन के संचालन में सुस्ती पर राज्य सरकार ने सख्त नाराजगी व्यक्त की है। इन वन प्रभागों के संरक्षकों को कहा गया है कि वे जिलाधिकारियों के साथ बैठक करके आपरेशन ग्रीन अभियान को तेज करें ताकि वृक्षारोपण का निर्धारित लक्ष्य पूरा किया जा सके।

गौरतलब है कि राज्य में हरियाली के दायरे को बढ़ाने के लिए सरकार ने जुलाई माह में आपरेशन ग्रीन अभियान को जोरशोर से शुरू किया था। सरकार इस पूरे अभियान को बहुत गम्भीरता से ले रही है और हर हफ्ते इस अभियान की समीक्षा शासन स्तर पर की जा रही है। गत दिवस इसी तरह की एक समीक्षा के दौरान यह तथ्य सामने आये कि राज्य के 32 वन प्रभागों में वृक्षारोपण का अभियान लक्ष्य से काफी पीछे चल रहा है और इनमें 50 फीसदी से भी कम वृक्ष रोपे जा सके हैं। कुछ वन प्रभागों में तो अभी तक मात्र 12 फीसदी वृक्षारोपण ही हो पाया है। समीक्षा में यह भी पाया गया है कि जनसहभागिता के आधार पर अभी तक राज्य में कुल 1,90,87,355 पौधे रोपे गये हैं। वन संरक्षक कैलाश चन्द्र चौधरी के मुताबिक इस अभियान की शासन स्तर पर अभियान की शासन स्तर पर हुई समीक्षा के दौरान जिन वन प्रभागों में वृक्षारोपण का कार्य बेहद सुस्त पाया गया है, उनके वन संरक्षकों व जिन जिलों में यह वन प्रभाग स्थित है वहां के जिलाधिकारियों को कहा गया है कि वे इस अभियान को गम्भीरता से ले।

वन्य जीवन को दर्शाती रंगोली बनाई बच्चों ने

लखनऊ। वन्यजीव प्रणि सप्ताह के दौरान गतदिवस चिड़ियाधर में विविध प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। बच्चों ने वन्य जीवन से दर्शाती रंगोली बनायी ओर एकांकी नाटक करके लोगों को पर्यावरण व वन्यजीवों की सरक्षा करने का आदेश दिया। इसी तरह पृथ्वी इनोवेशन संस्था द्वारा 'शेर खान' का पत्र बच्चों को दिया, जिसका उत्तर बच्चों ने भी दिया।

क्रिएटिव राईटिंग प्रतियोगिता में जयपुरिया स्कूल के छात्र आनंद मिश्र (प्रथम), नवयुग रेडियंस स्कूल को विजय रत्रा (द्वितीय), सुनिधि शर्मा (तृतीय), व शिवांगी त्रिपाठी (सांत्वना) को रही। संस्था की अनुराधा कुमार ने बताया कि बच्चों को जंगल के 'शेर' की तरफ से एक पत्र वितरित किया गया था।

मानव जीवन में पर्यावरण की भूमिका

—चन्दना पाण्डेय

पर्यावरण और मानव का सम्बन्ध उतना ही सत्य है। जितना कि नियमित और नियम्त्रित ढंग से होने वाले रात और दिन मानव के अस्तित्व को स्वीकारने से पहले पर्यावरण के अस्तित्व की स्वीकारना अत्यन्त आवश्यक है मानव का पर्यावरण के बिना कोई अस्तित्व नहीं है। और पिता उसे समाज का अच्छा नागरिक बनाने की कर्तव्य वहन करता है। सिर्फ इसलिये कि वो अपने बच्चे के लिये सुन्दर भविष्य का निर्माण कर सके, इसके पीछे असका अपना स्वार्थ नहीं होता, दोनों को इस कार्य को निभाने में अपूर्व आनन्द की अनुभूति होती है।

उसी प्रकार प्रकृति माँ अपनी सम्पूर्ण मानव जाति रूपी बच्चों का पालन पोषण करती है और पर्यावरण उन्हें श्रेष्ठ पिता की तरह उससे समबन्धित सम्पूर्ण कार्यों को पूर्ण करता है। इस उम्मीद के साथ कि मानव आने वाले समय में अपने विकास के लिये पर्यावरण को सुरक्षित व स्वच्छ रखें, प्राचीन काल में मानव पर्यावरण के प्रति इतना सचेत नहीं था क्योंकि तब उसकी आवश्यकता उसे महसूस नहीं हुई, वर्तमान में मानव की बढती आकाक्षाओं, महत्वाकांक्षाओं और लालच ने पर्यावरण को झकझोर कर रख दिया है। जब इसका असर मानव के जीवन पर पड़ा तब वह पर्यावरण के प्रति सजग हुआ, इसका कारण ढूंढने के लिये प्रयासरत हुआ।

साइंस और टेक्नोलॉजी में विकास ने जहां मानव को सर्वश्रेष्ठ प्राणी के रूप में धरती पर स्थापित किया है। वहीं पर्यावरण के प्रदूषण ने उसके जीवन को अत्यन्त शोचनीय स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया है।
अब यह विषय प्रत्येक मानव के लिये आवश्यक व सोचनीय बन चुका है। हम अपने आने वाली पीढी को किस तरह का भविष्य दे पायेगें। क्या हम उन्हे स्वच्छ स्वच्छ वातावरण और खुली प्रदूषण रहित हवा दे पायेंगे।

मानव के शरीर में कई तत्व माने गये है। अन्न तत्व, प्राण तत्व, बुद्धि तत्व, और आत्मतत्व, इन तत्वों के बिना मानव का जीवन असम्भव सा प्रतीत होता है। इसे सम्भव बनाये रखने के लिये उसे पर्यावरण पर ही निर्भर रहना पड़ता है। क्योंकि मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति केवल पर्यावरण ही कर सकता है। पर्यावरण के प्रमुख अवयव वायुजल, भूमि है। और समस्त धरती और उस पर उपस्थित वस्तु ही पर्यावरण है। 'स्वच्छ समाज के लिये पर्यावरण का स्वच्छ होना'' उसी तरह आवश्यक है, जिस तरह अच्छा इन्सान बनने के लिये अच्छे विचारों का'' होना आवश्यक है।

प्रकृति या पर्यावरण (एक माँ और पिता की तरह) ने मानवों को अनूठी प्रतिभा, क्षमता, सृजनशीलता, वर्मशक्ति देकर विवेकशीम, चिन्तनशील एवं बुद्धजीवी प्राणी के रूप में धरती पर अवतारित किया है, ताकि मानव पर्यावरण में सन्तुलन बनाये रखकर एक स्वच्छ वातावरण का निर्माण कर सके, मानवों को भी अब इसकी आवश्यकता महसूस होने लगी है, क्योंकि जो ऊर्जा स्रोत कभी भी समाप्त न होने वाले लगते थे वो अब धीरे-धीर खत्म होने लगे है। वन सम्पदा का ह्रास हो रहा है। धरती का उपजाऊपन

कम हो रहा है। खनिज सम्पदा कम हो रही है। पशुओं की सख्या तथा वायु की शुद्धता कम होती जा रही है। इससे नये-नये रोग वे अकारण मौत का स्तर बढ़ता जा रहा है। मानवों को अनेकों प्राकृतिक आपदाओं जैसे, भूकम्प, बाढ़, कुपोषण आदि का शिकार होना पड़ा रहा है। ताजा जल स्रोत भी कम होते जा रहे है, पानी में गन्दगी तथा धरती पर गन्ध के ढेर बढते जा रहे है। इससे मानव के जीवन में पड़ने वाले असर से यह साबित होता है कि पर्यावरण मानव के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है।

साइंस और टेक्नोलॉजी में विकास ने जहां मानव को सर्वश्रेष्ठ प्राणी के रूप में धरती पर स्थापित किया है। वहीं पर्यावरण के प्रदूषण ने उसके जीवन को अत्यन्त शोचनीय स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया है। अब यह विषय प्रत्येक मानव के लिये आवश्यक व सोचनीय बन चुका है। हम अपने आने वाली पीढी को किस तरह का भविष्य दे पायेगें। क्या हम उन्हे स्वच्छ वातावरण और खुली प्रदूषण रहित हवा दे पायेंगे। कही हमारी आने वाली पीढी किसी भयंकर रोग या किन्ही अन्य कारणों से ग्रसित न हो। अब यह वक्त इन विचारों को गहराई से सोचने व इस विषय पर कुछ कदम उठाने का है। ताकि हमारा और हमारी आने वाली पीढी का भविष्य जो कि पर्यावरण से जुडा है। स्वच्छ प्रदूषण रहित हो।

"पर्यावरण मानव के विकास की सीढी है,
सीढी के बिना मंजिल तक नही पहुँचा जा सकता"

विकास के लिये स्वच्छ व प्रदूषण रहित पर्यावरणीय सीढी का निर्माण करें, राष्ट्र का एक नागरिक अगर अपने स्तर व अपने आस-पास के वातावरण को स्वच्छ रखे तो वह दिन दूर नही जब हम यह कह सकेंगे कि हम स्वच्छ पर्यावरणीय देश के नागरिक है।

अरण्य संस्कृति के परिचायक : ट्री–लेबल

आजकल अनेक स्थानों पर उद्यानों में लगे वृक्षों पर ऐसी छोटी-छोटी नाम पट्टिकाएं दृष्टिगोचर होती हैं जो उस वृक्ष का परिचय कराती है। इन पट्टिकाओं में विभिन्न प्रकार की सूचनाएं तथा अंग्रेजी, बॉटनीकल या अन्य किसी भाषा में वृक्ष का नाम तथा उसके परिवार (फैमिली) का विवरण अंकित होता है। सामान्यतया इन पट्टिओं को "ट्री-लेबल" कहा जाता है।

पहली नजर में देखने पर तो ये पट्टिकाएं सौन्दर्यवर्धक फैशन मात्र प्रतीत होती हैं किन्तु ध्यान से देखने पर इनमें अनेक विशेषताएं भी परिलक्षित होती हैं। वृक्षों पर इन सूचना पट्टिकाओं का लगाया जाना निःसन्देह सौन्दर्यवर्धक तो है ही किन्तु इनमें अंकित विवरण के अनुरूप ट्री-लेबल सामान्य दर्शक को अनेक प्रकार की सूचनाएं उपलब्ध करा कर उसके ज्ञान कोष में वृद्धि करते हैं।

सम्पूर्ण विश्व में अनेकों प्रजातियों के पेड़-पौधे, लताएं, वृक्षादि पाए जाते हैं। विशेषज्ञों के अतिरिक्त आम व्यक्ति न तो पादपों की सभी प्रजातियों को पहचानता है न ही उनके गुणों के बारे में जानकारी रखता है। यह तथ्य वन विनाश एवं वृक्षों की अंधाधुंध कटाई का भी एक कारक है क्योंकि किसी भी वस्तु की जानकारी के अभाव में उस वस्तु के प्रति आत्मीयता की अनुभूति नहीं होती है और उसे नुकसान पहुंचाने में किसी को भी कोई संकोच अथवा दर्द नहीं होता। यही स्थिति वृक्षों पर लगाए जाने वाली ट्री-लेबलों के महत्व का बोध कराती है। वृक्षों पर ट्री-लेबल लगे होने से आम व्यक्ति को उस वृक्ष के नाम एवं फैमिली का ज्ञान तो होता ही है साथ ही वृक्ष के अनेक प्रकार के उपयोगी औषधीय गुणों तथा समुदायों के सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरणीय उन्नयन में उनके योगदान की जानकारी भी होती है। ट्री-लेबल लगाने से उद्यान के संधारणकर्ताओं की धरात्मक अभिरूचि तथा सृजनात्मकता का पता भी चलता है।

अनेक वृक्षों पर लगाए गए ट्री-लेबल पर उनके धार्मिक एवं पौराणिक महत्व का अंकन भी देखने में आया है। यह पाठक एवं दर्शक को न केवल वृक्ष के धार्मिक महत्व से परिचित कराता है अपितु उसे प्राचीन संस्कारों एवं विस्मृत ज्ञान का भी स्मरण कराता है। आज भी हमारे समाज में त्यौहार विशेष पर विशिष्ट वृक्ष प्रजाति की पूजन की परम्परा प्रचलित है किन्तु कुछ लोग ही वृक्ष पूजा के मूल कारणों से वाकिफ होते हैं अन्यथा अधिकांशतः तो मात्र परम्पराओं का पालन कर लकीर ही पीट रहे होते हैं। वृक्षों के धार्मिक एवं आध्यात्मिक महत्व बताने वाली पट्टिकाएं वर्तमान वैज्ञानिक एवं प्रदूषित युग में प्राचीन परम्पराओं को पुनर्जीवित करने एवं भारत वर्ष की प्राचीन अरण्य संस्कृति से साक्षात्कार कराने में अहम् भूमिका का निर्वाह करती है। इस तरह वृक्षों पर लगे लेबल एक तरह की सामाजिक थाती बन जाते हैं तथा अध्यात्म के नवीनीकरण एवं उन्नयन का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

आजकल वृक्षों के नाम एवं महत्व को दर्शाने वाली पट्टिकाओं के अतिरिक्त वृक्षों एवं उद्यानों में लगाई जाने लगी है। इनमें संख्या लेबल, नारे व श्लोकों से सम्बन्धित पट्टिकाएं तथा वृक्ष प्रजाति के उपयोग दर्शाने वाली पट्टिकाएं प्रमुख हैं। संख्या लेबल वृक्षों की गणना में सुविधाजनक होते हैं इसी प्रकार नारों व श्लोकों की पट्टिकाएं इस माध्यम से पर्यावरण के प्रति जन अभिरूचि जागृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती हैं। देश की भावी पीढ़ी को प्रकृति से प्रत्यक्ष साक्षात्कार कराने एवं विश्व को प्रदूषित पर्यावरण के खतरों से बचाने के लिए सामान्य आम नागरिकों के मन में वृक्षों के प्रति आत्मीयता विकसित करने के लिए वृक्षों व उद्यानों में इनके प्रयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

–डॉ. राकेश कुमार शर्मा

फलों के पेनसकोला किनारे पर समुद्री किनारे का आनंद लेती व्हेल

पूर्वी चीन के अन्हुई प्रांत स्थित आंगजे एलिजेटर रिप्रोडक्शन सेंटर में तैरते घड़ियाल के बच्चे। ये सभी कृत्रिम ढंग से पैदा किए गए हैं।

हंगरी में एक हैरतअंगेज अंडा देखने को मिला। दो पर्तों वाले इस अंडे का वजन भी सामान्य अंडों से दुगुना है तथा प्रत्येक परत के अंदर जर्दी भी अलग है।

नासा द्वारा गतदिनों जारी चित्र 'फेस ऑन मार्स'– (दाएं) पूर्व के विकिंग स्पेसक्राफ्ट द्वारा लिए चित्र (बाएं) के मुकाबले ग्रह पर किसी मानव आकृति का ज्यादा स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करता है।
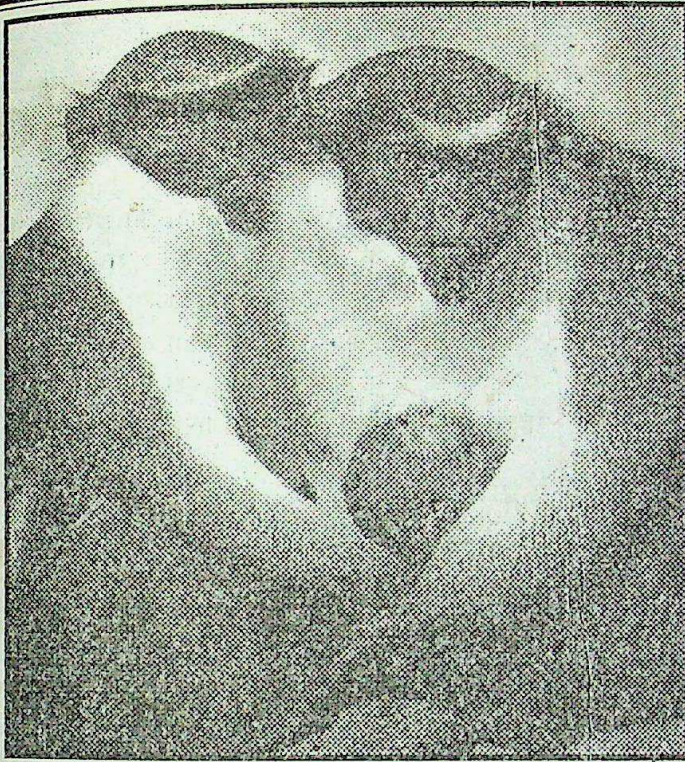
अपनी मां के साथ चिपका बंदर का एक बच्चा।

बहमास के अबाको द्वीप के तट पर व्हेल की जांच करते अनुसंधानकर्ता।

ग्रीक के सिगरी वृक्ष संग्रहालय में लगभग दो करोड़ वर्ष पुराने विश्व के सबसे बड़े वृक्ष का साढ़े सात मीटर ऊंचा अंश

उड़ीसा के नंदनकानन में एक ताल में तैरता एक रॉयल बंगाल टाइगर
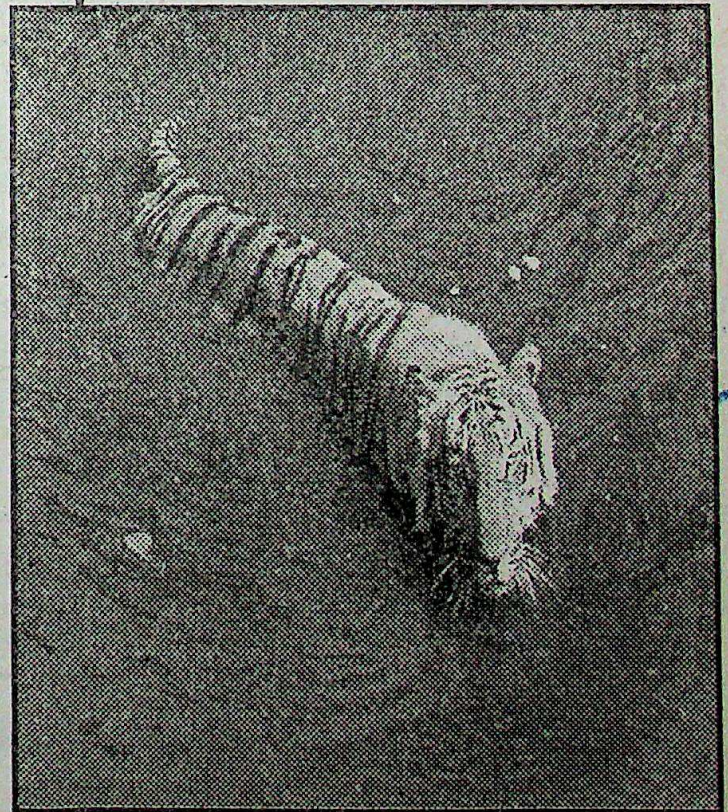
वृक्षों की रक्षा के लिए बलिदान

थार का मरुस्थल, जहां मीलों तक रेत ही रेत है। मरुस्थल के इस 'महासागर' में द्वीप की भांति है-हरियाली से घिरा एक गांव। यह विश्नोई लोगों का गांव है, जो कभी पेड़ नहीं काटते।

इस गांव के सरपंच के अनुसार जोधपुर को बसानेवाले जोधाजी के समय पापसर नामक एक गांव में एक बच्चे ने जन्म लिया। उसका नाम रखा गया-जम्बेश्वर ! जम्बेश्वर बड़ा हुआ तो उसे पशु चराने का काम सौंपा गया।

तभी सन 1476 में भयानक सूखा पड़ा। पेड़-पौधे सूखने लगे। एक दिन जम्बेश्वर ने देखा, उसके मित्र पशुओं को चारा देने के लिए वृक्ष काट रहे हैं। निर्दोष हरिणों को भी वे मार रहे हैं।

जम्बेश्वर परेशान हो उठा। वह एक वृक्ष के नीचे बैठकर सोचने लगा, क्यों लोग हरे-भरे वृक्षों को काट रहे हैं? क्यों निर्दोष हरिणों को मार रहे हैं।? तभी एक हरिणी उसके पास आयी। उसे भूखा जानकर जम्बेश्वर ने उसे पेड़ से फलियां तोड़कर खिलायीं। तृप्त हरिणी के स्तनों से दूध बह निकला। जहां-जहां हरिणी के दूध की बूंदें गिरीं, वहां-वहां हरी-हरी घास उग आयी। जम्बेश्वर ने प्रकृति के नियमों को जान लिया। उसने उनतीस नियम बनाये। इनमें से कुछ नियम वृक्षों की सुरक्षा के लिए है। विश्नोई कभी हरे वृक्ष नहीं काटते। सूखे वृक्षों की लकड़ी को भी वे पानी से धोकर उपयोग में लाते हैं, ताकि उसमें रहने वाले कीड़े-मकौड़े न जल जाए।

जम्बेश्वर, जो अब जम्बोजी के नाम से पूजे जाते हैं, के आदेशों और नियमों की परीक्षा की घड़ी उनके तीन सौ वर्षों बाद आयी। एक राजा को महलों के लिए लकड़ी की जरूरत पड़ी। उसके ठेकेदार विश्नोई लोगों के गांव पहुंचे।

वहां उन्होंने हरे-भरे वृक्षों को काटना शुरू किया तो अमृता देवी नामक एक ग्रामीण स्त्री अपनी चार बेटियों के साथ सामने आकर पांच पेड़ों से लिपट गयी।

यह शायद संसार का पहला चिपको आंदोलन था!

ठेकेदार निर्मम था। उसने अमृता देवी और उसकी चार बेटियों की मौत के घाट उतारने के बाद पेड़ काटने चाहे। पर विश्नोई भी आन के पक्के थे। एक-एक कर छह सौ त्रिसठ विश्नोइयों ने वृक्षों की रक्षा में प्राण गंवाये।

इसी बीच राजा को इस नर-संहार की खबर मिली। वह तुरंत वहां पहुंचा। उसे ठेकेदार के कृत्य पर पश्चाताप हुआ। उसने घोषणा की अब विश्नोइयों के गाव का कोई वृक्ष नहीं काटा जाएगा, न कोई पशु मारा जाएगा। राजा ने वृक्षों की रक्षा के लिए प्राण देने वाले लोगों की स्मृति में एक स्मारक भी बनवाया।

नंगी आंखों सूर्य देखने का दावा

लखनऊ। हैदर कैनाल रेलवे कालोनी निवासी रेलवेकर्मी राजेन्द्र नाथ तिवारी नंगी आंखों सूर्य को देखने का दावा करते हैं।

श्री तिवारी ने गत दिवस पर्यावरण चेतना कार्यालय में आकर इस बात का दावा किया। उन्होंने कहा की कितनी भी घटे तक नंगी आंखों सूर्य को देख सकते हैं। उन्होंने कहा कि इसका उनकी आंखों पर कोई भी बुरा असर नहीं हुआ है। और सूर्य को देखने पर उन्हें एक अजीब सी अनुभूति होती है।

लुप्त होते जा रहे हैं पेड़-पौधे

पृथ्वी पर पदार्पण करने के समय से ही मनुष्य पेड़-पौधों पर निर्भर रहा है। उन्हीं से प्रत्यक्ष रूप से उसे भोजन मिलता है, उन्हीं ने उसे वस्त्र मिलते हैं और उन्हीं से आवास बनाने की सामग्री। जैसे-जैसे मनुष्य प्रगति करता गया, पेड़-पौधों पर उसकी निर्भरता बढ़ती गई। साथ ही उसे यह भी ज्ञान भी होता गया कि पेड़-पौधे उसके लिये उससे कहीं अधिक उपयोगी हैं जितने वह सोचता था। वे मनुष्यों के लिये-वास्तव से सब जन्तुओं के लिये-आक्सीजन उपलब्ध कराते हैं, पर्यावरण को शुद्ध और स्वास्थ्यवर्धक रखते हैं तथा अनेकोनेक उद्योगों को कच्चे माल उपलब्ध कराते हैं।

एक समय थल के अधिकाशं भाग के वन थे! पर बढ़ती हुई आबादी के लिये, खेती करने, रहने ओर कारखानों के लिये स्थान प्राप्त करने के लिये उन्हें तेजी से काटा जाने लगा। आरंभ में वनों को काटने की दर इतनी तेज नहीं थी कि मनुष्य पर उसके स्पष्ट प्रभाव पड़ते। पर जनसंख्या की वृद्धि दर में और औद्योगिकीकरण में तेजी आने के साथ-साथ वे स्पष्ट और भयंकर होने लगे। वनों की अंधाधुंध कटाई से पेड़-पौधों के अनेक वंश और जातियां समूल रूप से नष्ट हो गयीं। समझा जाता है कि जंगल काटने की दर इतनी तेज है कि संसार में हर सेकंड 2 एकड़ जंगल कट रहे हैं। इस प्रकार एक मिनट में 120 एकड़ और एक वर्ष में 63 करोड़ एकड़ जंगल साफ हो जाते है। इनमें 48 करोड़ एशियाई देशों में साफ होते हैं। यदि यही क्रम जारी रहा तो इस शताब्दी के अंत तक संसार में शायद ही कही प्राकृतिक बन बचें। इसलिये अनेक देशों में वन संरक्षक के साथ-साथ पुनः वनरोपण का बहुत कार्यक्रम कार्यान्वित किया जा रहा है।

वैसे वन संरक्षण के लिये प्राचीन काल में ही आवश्यकतानुसार कदम उठाये जाते थे। हमारे देश में सबसे पहले चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन काल में इस दिशा में कानून बनाये गये थे। उनके विद्वान प्रधानमंत्री, कौटिल्य ने वन संरक्षण की दृष्टि से पूरे देश को आठ क्षेत्रों में विभक्त किया था। उसके बाद अशोक महान के शासन काल में वन संरक्षण के लिये कदम उठाये गये। पर आज के संदर्भ में ये बहुत ही अप्रभावी हैं। दुर्भाग्य से बाद में एक ओर वनों की अंधाधुंध कटाई होने लगी और दूसरी ओर उनके संरक्षण की ओर ध्यान देना बंद कर दिया गया।

इस प्रकार की स्थिति हमारे देश में ही नहीं संसार के लगभग हर देश में थी जिसके परिणामस्वरूप लगभग तीन लाख पुष्पी जातियों में से 20,000 से अधिक लुप्हत प्रायः स्थिति में पहुंच चुकी है। समझा जाता है कि अनेक देशों मे बार-बार भयंकर सूखे की स्थिति उत्पन्न होने का मुख्य कारण भी वनों की कटाई है। आजकल अफ्रीका के इथोपिया देश में चल रहे इस सदी के भयंकरतम सूखे का श्रेय भी पेड़ों की अंधाधुंध कटाई को दिया जा रहा है।

अब तीव्र औद्यौगिकीकरण, मोटर आदि वाहनों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि और वनों विचार किये तेजी से कटाई के फलस्वरूप वायुमंडल में कार्बन डायआक्साइड की मात्रा में निरंतर तेजी से वृद्धि हो रही है। 1970 में किये गये अध्ययनों में वायुमंडल में प्रति दस लाख भाग वायु में कार्बन डायआक्साइड तथा अन्य विषैली गैसों की मात्रा 293 भाग पायी गयी थी। पर समझा जाता है कि अब वह बढ़कर 350 भाग प्रति दस लाख भाग हो गयी है। और जब समस्या विश्व स्तर पर भी विकराल रूप धारण करने लगे तो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उसके निवाकरण हेतु कदम उठाने पड़े। 1968 मं यूनेस्कों सम्मेलन में भी वनस्पति संरक्षण की बात उठी ओर समझा जाने लगा कि वनस्पति संरक्षणए के बिना वन्य जीवों को बचाना लगभग असंभव होगा। तभी कुछ विशेष समितिया यथा. इन्टरनेशनल बायोलाजिकल प्रोग्राम, अंतर्राष्ट्रीय जीवविज्ञान कार्यक्रम (इन्टरनेशनल यूनियन फार कंजरवेशन आफ नेचुरल रिसोर्सेज) अंतर्राष्ट्रीय संरक्षण और प्राकृतिक संसाधन यूनियन जैसी अन्य समितियां वनस्पति एवं जीव संरक्षण के लिए अग्रसर हुई।

भारत में अनुमानतः 12000 पुष्पी पौधों की जातियां पायी जाती हैं। इनमें से कितनी ही लुप्त हो गई हैं या लुप्त होने वाली हैं। इसके बारे में कुछ वैज्ञानिकों ने यदा-कदा सर्वोक्षण भी किये हैं पर उनमें सही तस्वीर नहीं उभरती।

लुप्त होती जा रही वनस्पतियों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण ने संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार के सहयोग से "पोसेफ" (पी.आ.एस. सी.ई.पी.एच.) नाम से योजना बनायी है। यह योजना कलकत्ता, शिलांग, कोयम्बतूर, और देहरादून केन्द्रों में कार्यान्वित हो रही है।

●●●

1. निम्न तीन राशियों की विमा समान होती है -

1.कार्य,ऊर्जा, बल 2. स्थितिज ऊर्जा, गतिज ऊर्जा, बल

3. दाब,प्रतिबल,प्रत्यास्थता गुणाक 4. वेग, संवेग आवेग।

2. यदि किसी बिन्दु को स्थिति सदिशा है तो ग्रेड (1/r) का मान होगा-

(1) $^1/r^2$ (2) r/r^2 (3) $-r/r^2$ (4) $-1/r^2$

3. उर्ध्वाधर वृत में गतिशील वस्तु का क्रान्तिक वेग Vc निम्न सूत्र द्वारा व्यक्त किया जाता है-

1. $Vc = rg$ 2. $Vc = rg$ 3. $Vc = {}^1/rg$ 4. $Vc = r^2g^2$

4. प्रक्षेपित राकेट जब पृथ्वी के गुरूत्व बल की सीमा पार कर लेता है तो उस पर लगने वाला बल कहलाता है -

1. प्रतिक्रिया बल 2. गुरूत्वीय बल
3. उत्क्षेप बल 4. अभिकेन्द्रीय बल

5. वेग-समय वक्र का दाब देता है -

1. विस्थापन 2. त्वरण 3. संवेग 4. बल

6. एक हॉर्स पावर में वाट होते हैं -

1. 453वाट 2. 10^7वाट 3.746वाट 4. 36×10^3वाट

7. अप्रत्यास्थ टक्कर में संरक्षित नहीं रहती हैं-

1. संवेग 2. आवेग
3. स्थितिज ऊर्जा 4. गतिज ऊर्जा

8. दो सजल आवृत्ति दोलक में अनुनाद होगा जब अनेक बराबर होगें-

1.आयाम 2. आवृत्ति
3. आवर्तकाल 4. द्रव्यमान एवं आकार

9. कृत्रिम उपग्रह में लोलक घड़ी प्रयुक्त नहीं करते क्योंकि-

1. ऊर्जा एवं संवेग नियत नहीं रहते
2. अंतरिक्ष में वायुमण्डल नहीं हैं
3. 'g' व 't' का मान नियत नहीं रहता 4. इनमें से कोई नहीं।

उत्तर तालिका

1.(3) 2.(3) 3.(2) 4.(3) 5.(2) 6.(3) 7.(4) 8.(2) 9.(3)

क्या आप जानते हैं?

1. आप मानें या न मानें जिस प्रकार आकाशगंगा में असंख्य तारे दिखाई देते हैं, ठीक उसी प्रकार दूरबीन से वायुमडल में झांकें तो सूक्ष्मजीव के असंख्य झुण्ड दिखाई देते हैं।

2. पृथ्वी के 2000 मीटर ऊपर के वायुमंडल में सूक्ष्मजीव शून्य हो जाते हैं।

3. आन मेंने या न मानें एक मिलीमीटर की लंबाई में करीब 222 सूक्ष्मजीव खड़े हो सकते हैं।

4. मनुष्य के मुहं में 100 से ज्यादा विविध प्रकार के सूक्ष्मजीव पाए जाते हैं।

5. मानव शरीर में बड़ी आंत में सूक्ष्मजीव सबसे अधिक पाए जाते हैं, कहते हैं बड़ी आंत में मल के कुल भार का एक तिहाई भार कोलाईयफार्म जीवों का होता हैं।

6. एक सूक्ष्मजीव का जन्म समय करीब 20 मिनट का होता हैं।

7. मनुष्य की एक मिलीमीटर लार में 43 मिलियन से 5.5 बिलियन सूक्ष्मजीव उपस्थित रहते हैं।

8. सूक्ष्मजीवों में भी आपस में प्रेम, सहयोग तथा कटुता पाई जाती हैं।

9. जो सूक्ष्मजीव दूध में होते हैं वे ही मनुष्य की लार में पाए जाते हैं।

10. छाछ के सूक्ष्मजीवाणु मनुष्य को बीमार करने वाले जीवों को नष्ट करने में सक्षम होते हैं।

11. हर मनुष्य अपनी विष्ठा द्वारा हर रोज 17 मिलियन बिलियन को लाईफार्म जीवाणु निष्कारित करता हैं।

12. डोडरलीन बेसिलस' तथा स्ट्रेप्टोकोकस जीव अपने आपने 15 दिनों के कार्य द्वारा स्त्री के माहमारी-चक्र स्थापित करते हैं।

13. विटमिन B_1, B_2, B_{12} तथा K सूक्ष्मजीव ई. कोलाई द्वारा बड़ी आंत से मनुष्य को प्राप्त होते रहते हैं।

14. मनुष्य श्वास द्वारा करोड़ों सूक्ष्मजीव निगल लेता है। परन्तु बाहर श्वास निकालता है तो 500 गुणा कम निकालता है।

पर्यावरण चेतना मिशन

पर्यावरण संचेतना के प्रसार का जनांदोलन

'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' वसुन्धरा जननी है हम सब उसके पुत्र हैं, अथर्ववेद के भूमिसूक्त के सृष्टा वैदिक ऋषि ने सहस्त्रों वर्षों पूर्व उद्घोषित किया था। विश्व में विद्यमान प्रत्येक प्राणी, प्रत्येक वनस्पति एवं प्रत्येक स्पन्दनशील प्रजाति पर प्रकृति मां का बराबर स्नेह एवं संरक्षण है। विभिन्न प्रजातियों के अस्तित्व के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ी हुई है पारिस्थितिक संतुलन की अद्भुत प्रणाली है। इस विश्व प्रकृति की अनूठी व्यवस्था के मध्य कोई प्रजाति एकांग आचरण नहीं कर सकती, एकांगी आचरण का निश्चित परिणाम है उस प्रजाति का समूचा विनाश। मानव भी इसका अपवाद कदापि नहीं हो सकता। विकास की अंधी दौड़ में प्राकृतिक संसाधनों का निरंतर दोहन, विनाश की ओर अग्रसर होती मानव बस्तियां कचरे के ढेर में बदलते महानगर, मृतप्राय नदियां, विषाक्त होते सागर, निरंतर प्रदूषित होती हवा, पानी,मिट्टी और आकाश जैसे जीवन के आधारभूत तत्व। विस्फोटक स्थिति में पहुंचाने वाली मानव प्रजाति की संख्या। निश्चित रूप से यह सब मानव के अस्तित्व के विनाश की पूर्व सूचनाएं हैं।

बींसवी शताब्दी की इस सांध्य बेला में हमें चिन्तन करना होगा कि हम अपनी भावी पीढ़ी को विरासत में क्या देने वाला हैं.....प्रदूषण से भरा महाविनाश के कगार पर बैठा मानव संसार और मूल्यहीन जीवन पद्धति जो केवल स्वकेन्द्रित मोहांध मानवों की आसुरी प्रकृतियों में उत्तरोत्तर वृद्धि करेगी और जिसका निश्चित परिणाम है समूचा मानव जाति का महाविनाश एवं उसके साथ ही पृथ्वी पर विद्यमान सम्पूर्ण जीव एवं वनस्पति जगत की अकाल मृत्यु।

वसुन्धरा के अनुपम वरदानों की रक्षा एवं विवेकपूर्ण विकास की संकल्पना को जन–जन तक पहुंचाने के लिए **'पर्यावरण चेतना मिशन'** का सूत्रपात किया गया है। इसका लक्ष्य है प्रत्येक मानव को उसके अस्तित्व से सपरिचित कराना एवं विश्व के समस्त जीव एवं वनस्पति जगत की प्रजातियों से भ्रातृत्वपूर्ण सहअस्तित्व की भावना का प्रसार करना, संशय और अविश्वास के इस वातावरण में आस्था एवं विश्वास की ज्योति जगाना। प्रत्येक मानव में शाश्वत जीवन मूल्यों की पुर्नप्रतिष्ठा, एक ऐसी वैश्विक व्यवस्था की रचना का प्रयास, ज़िसमें वसुन्धरा के गर्भ से उत्पन्न प्रत्येक जीव, वनस्पति एवं स्वयं मानव पूर्ण सहअस्तित्व के भावच के साथ प्रकृति प्रदत्त वरदानों का सम्यक प्रयोग करते हुए उन्हें संरक्षित कर सकें।

'पर्यावरण चेतना मिशन' विश्व के प्रत्येक धर्म, जाति, क्षेत्र, देश और संस्कृति में विद्यमान शाश्वत जीवन मूल्यों को प्रत्येक मानव के अन्तर्गत तक पहुंचाने का महायज्ञ है। प्रत्येक प्रबुद्ध एवं चिन्तशील जन का हम आहवान करते हैं कि वे प्रकृति एवं समाज के स्वयं पर विद्यमान ऋण के प्रति सचेष्ट होकर उसवे चुकाने और इस महायज्ञ में दीक्षित होकर, पर्यावरण संरक्षण को जन–जन तक पहुंचायें एवं विवेकपूर्ण विकास की संकल्पना से प्रत्येक व्यक्ति को परिचित करयें। जीवन के आधारभूत तत्वों वायु, जल, मिट्टी जीव एवं वनस्पतियों के संरक्षण को अपनी जीवन पद्धति का अनिवार्य अंग बनायें। भोगपूर्ण, प्राकृतिक संरक्षण एवं जीव दया से संबन्धित वैदिक ऋषियों के उद्गीथ भगवान बुद्ध महावीर, ईसा, हजरत मोहम्मद एवं अन्यान्य महापुरूषों के शाश्चत संदेशों का अनुसरण कर पृथ्वी के अनुपम वरदानों की रक्षा में सतत सहयोग करें एवं भोगपूर्ण, एकांगी, स्वार्थपरक जीवन पद्धति का परित्याग कर विवेकपूर्ण विकास की संकल्पना को प्रत्येक मानव तक पहुंचायें।

संयोजक

पर्यावरण चेतना मिशन

सम्पर्क : **पर्यावरण चेतना परिसर,** मानस इन्कलेव, इनदिरा नगर
लखनऊ, दूरभाष : 359897

● सी-5, दिलकुशा कालोनी, लखनऊ, दूरभाष : 482288

● बी-1/12, सेक्टर डी-1, कानपुर रोड योजना, लखनऊ, दूरभाष : 436767

'पर्यावरण चेतना मिशन' में सम्मिलित होने के लिए आयु, लिंग, धर्म, वर्ण, जाति, प्रदेश एवं अन्य किसी भी प्रकार को कोई प्रतिबंध नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति इस महायज्ञ में अपना दायितव स्वयं निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है। मिशन के संचालक एवं व्यवस्थ को दृष्टिगत रखते हुए मिशन में दीक्षितजनों की तीन श्रेणियां हैं :

☐ **पूर्णकालिक जीवनव्रती परिव्राजक :**

इस वर्ग में मिशन के लक्ष्यों के प्रतिवद्ध कार्यकर्ता हैं जिन्होंने अपने जीवन को पूर्णरूपेण अथवा स्वयं निर्धारित समय के लिये मिशन को समर्पित किया है। न्यूनतम एक वर्ष का समय देना अनिवार्य होगा। इस वर्ग में सामान्यतः उन्ही बंधुओं को दीक्षिता किया जाता है जो मिशन को समर्पित किये गये समय में पारिवारिक दायित्व से मुक्त हों। जीवनवती परिवाजकों की न्यूनतम आवश्यकताओं की प्रतिपूर्ति मिशन परिवार की ओर से की जाती है।

☐ **पर्यावरण बंधु :**

इन श्रेणी में दीक्षित किये जाने वाले बंधुओं को मिशन के उद्देश्यों की प्रतिपूर्ति हेतु निर्धारित संकल्प-पत्र आवेदन करना होता है। संकल्पबद्ध बंधुओं को अपने दैनिक समय में से न्यूनतम दो घंटे का मिशन के उद्देश्यों हेतु देना होगा।

☐ **पर्यावरण मित्र :**

इस श्रेणी में दीक्षित किये जाने वाले जनो को निर्धारित संकल्प-पत्र पर आवेदन करना होगा और स्वयं निर्धारित समय पर्यावरण मिशन के कार्यों के लिए देना होगा।

आदमी के हाथ

इतने बहशी और बर्बर
आदमी के हाथ
जो बंजर में फूल खिलाते हैं
लहलहाते-झूमते-फलते
हजारों किस्म के
दिक्कालजीवी पेड़
आदमी के हाथ का आशीष पाते हैं।
आज वही खुरपी सम्हाले हाथ
जब बढ़ते हैं आगे
जड़ों की ओर
पौधों की रूह कॉपती है।
आखिर किस तरह की
हाविश और हैवानियत में
मुब्तिला हैं आदमी के हाथ
क्या वाकई जिन्दा है
इन हाथों के पीछे आदमी ?

✦ नंद भारद्वाज

पर्यावरण चेतना

हिन्दी मासिक पत्रिका

दिल्ली प्रदेश एवं हिमाचल प्रदेश के शिक्षा विभाग तथा उत्तर प्रदेश शासन के वन विभाग, स्थानीय निकाय, शिक्षा विभाग, ग्राम्य विकास एवं पंचायत राज विभाग द्वारा अनुमोदित

पर्यावरण संचेतना के प्रसार के क्षेत्र में प्रयासरत राष्ट्र भाषा हिन्दी की एकमात्र पत्रिका

विश्व प्रकृति की धरोहर एवं वसुन्धरा के अनुपम वरदानों की रक्षा हेतु
पर्यावरण संरक्षण के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के महायज्ञ में आपकी सहभागिता अपेक्षित है।

"पृथ्वी मां का ऋण लौटायें, विश्व प्रदूषण मुक्त बनायें"

❁ मुख्य कार्यालय : पर्यावरण चेतना परिसर, पिकनिक स्पाट रोड, इंदिरा नगर, लखनऊ, फोन-359897
❁ रजिस्टर्ड कार्यालय : बी-1/12, सैक्टर-डी1, कानपुर रोड योजना, लखनऊ, फोन-436767
❁ सम्पादकीय कार्यालय : सी-5, दिलकुशा कालोनी, लखनऊ, फोन-482288

पत्रिका का प्रकाशन, मई 1994 से निरंतर हो रहा है। पूरे भारतवर्ष में इसका प्रसार है। स्वतंत्र प्रसार के साथ ही दिल्ली एवं हिमाचल प्रदेश के वन विभाग, ग्राम्य विकास विभाग, शिक्षा विभाग, पंचायती राज विभाग, प्रदेश के स्थानीय निकाय एवं अन्य विभागों द्वारा यह नियमित रूप से मंगायी जा रही है। आपसे अनुरोध है कि आप स्वयं/संस्थान/विभाग/पुस्तकालय हेतु "पर्यावरण चेतना" पत्रिका की सदस्यता ग्रहण करने की कृपा करें एवं पर्यावरण संरक्षण के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के इस महायज्ञ में अपना योगदान करें।

पत्रांक : .... दिनांक : ....

सदस्यता पत्रक

सेवा में,

प्रसार व्यवस्थापक
पर्यावरण चेतना हिन्दी मासिक
सी-5, दिलकुशा कालोनी
लखनऊ (उ0प्र0)

महोदय,

कृपया अपने कार्यालय/संस्थान/पुस्तकालय के लिये "पर्यावरण चेतना" हिन्दी मासिक की सदस्यता हेतु चेक/ड्राफ्ट (प्रधान संपादक, पर्यावरण चेतना, लखनऊ के पक्ष में देय हो) आपूर्ति आदेश के साथ संलग्न कर भेजने का कष्ट करें।

पर्यावरण चेतना पत्रिका की शुल्क दरें :-

1.	आजीवन सदस्यता शुल्क	रूपये 5000/-
2.	त्रिवार्षिक सदस्यता शुल्क	रूपये 750/-
3.	द्विवार्षिक सदस्यता शुल्क	रूपये 525/-
4.	वार्षिक सदस्यता शुल्क	रूपये 275/-

नोट : कृपया सदस्यता अवधि अंकित करने का कष्ट करें।

भवदीय

पत्रिका प्रेषण हेतु पता
....
....
....

हस्ताक्षर..............................
नाम व पद..............................
जनपद..............................
कार्यालय..............................

पर्यावरण चेतना एक पत्रिका ही नहीं एक अभियान भी है
आइये! हम सब मिलकर इसे सफल बनायें।

शिकारी चिड़िया : पनचिड़ा

यह घरेलू कौवे के आकार की, काफी लम्बे तथा नुकीले पंखों और चितकबरी पक्षति वाली कुररी–जैसी चिड़िया होती है। इसका ऊपरी भाग मुख्यतः काला–भूरा, निचला भाग चमकीला सफेद होता है। इसकी नारंगी–पीली विशिष्ट चोंच चाकू की तरह पार्श्वतः चपटी रहती है और टांग चमकीली लाल होती है। नर मादा एक से होते हैं केवल मादा आकार में कुछ छोटी होती है। नदी के ऊपर पानी की सतह के पास नीचे ही अकेले या छोटी टोलियों में उड़ान भरती देखी जाती है। यह उत्तरी भारत की बड़ी नदियों सिंधु, गंगा, ब्रह्मपुत्र, तथा इनकी सहायक उपनदियों- में बहुत देखने को मिलती है। तथा पाकिस्तान और बंगलादेश में भी पाई जाती है।

इसका स्वभाव कुररी से काफी मिलता जुलता है। दिन तथा चांदनी रात में नदी के आस-पास ऊपर नीचे काफी सक्रिय होकर शिकार करती फिरती है। पानी की सतह पर जाकर अपने पंखों को धीरे-धीरे फड़फड़ाती हुई और निचला चिबुक (चोंच का नीचे वाला भाग) पानी के अन्दर तथा ऊपरी चिबुक पानी के ऊपर खोले हुए मछली की तलाश में रहती है। मछली पास आते ही झटके से पकड़ कर सिर की ओर से निगल जाती है। इसका भोजन मुख्य रूप से मछली है।

इसकी बोली कुछ तीखी चीं-चीं वाली कूजन, कभी-कभी कएप-कएप जैसी नास्य ध्वनि भी करती है। इसका नीडन मौसम-मुख्यतः फरवरी से अप्रैल होता है। यह जलधारा के बीच निकली बलुई भूमि या सूखी-सूखी नदी की बालू के गड्ढे के अन्दर बिना घास-पात से सजाया घोंसला बनाती है।

इसके अण्डे-तीन या चार, फीके गुलाबी पाण्डु रंग से फीके आसमानी रंग के या धूसर-सफेद, भूरी चित्तियों और धब्बे वाले होते हैं। केवल मादा ही अण्डे सेने का काम करती है।

अण्डों से निकलने पर बच्चों की चोंच, कुररी के बच्चों की तरह सामान्य शक्ल की तथा रंग शृंग एक जैसा होता है।

-राजेश कश्यप

सदा बहार पौधों के रंगीले फूल

भारतीय जलवायु में जिस प्रकार मौसम का परिवर्तन होता रहता है, ठीक इसी प्रकार वनस्पति जगत में भी पौधों का मौसम के अनुसार बदलाव होता रहता है। सामान्यतया उद्यान में ऋतु को ध्यान में रखते हुए ही पौधों का चयन किया जाता है और नए पौधे लगाए जाते हैं। ऐसा करने से वर्षभर उद्यान में बहार रहती है। इस प्रकार के मौसमी घरेलू पौधों में एक समूह ऐसा भी है जिस के पौधे जो कि वैसे तो सदाबहार रहते हैं, परंतु फूल इन में साल में एक या दो बार आते हैं, इस तरह के पौधों की सब से बड़ी विशेषता यह है कि जब इन के फूल निकलने शुरू होते हैं तो बाकी सभी खिलने वाले पौधों से से ये अलग ही दिखाई देते हैं तथा बिना फूल के पौधों की पत्तियां भी, जो कि सामान्यतया बनावट में दूसरों से भिन्न होती हैं, सभी पुष्प प्रेमियों का मन मोह लेती हैं। इस प्रकार के पौधों को हर पुष्पप्रेमी अपने उद्यान में लगाना पसंद करता है।

इस तरह के सदाबहार रंगीले फूलों वाले पौधों में एफीलेंड्रा, बिगोनिया, जरबेरा, केलनचूई, जिरेनियम, इत्यादि पौधे बहुत ही लोकप्रिय हैं। इन पौधों की सब से बड़ी विशेषता यह है कि इन्हें उद्यान में क्यारियों के लिए तथा आंतरिक सजावट के लिए गमलों में लगा कर किसी भी स्थान विशेष को सुंदर ढंग से संवारा जा सकता है।

पौधों की देखभाल : अच्छे परिणाम प्राप्त करने के लिए इन सदाबहार पौधों के रखरखाव पर समुचित ध्यान दिया जाए तो ये वर्षभर तरोताजा रहते हैं। अगर आप को पौधों के विकास, इन की बढ़ोत्तरी, भोजन तथा फूल आने के मौसम का ध्यान हो तो कोई कारण नहीं कि पौधे आप की आशा के अनुसार परिणाम न दें। इस के लिए पौधों की सामान्य आवश्यकताओं की जानकारी का होना जरूरी है। तब बहुत कम खर्च में आप अपने उद्यान को सौंदर्यमय बना सकते हैं। सदाबहार पौधे चाहे किसी भी ऋतु में फूल देने वाले हों, उन्हें जहां तक हो सके वर्षा ऋतु अथवा बसंत ऋतु में बदलना चाहिए। इन्हें जमीन व गमलों दोनों ही जगह लगाना ठीक रहता है। गमलों में लगाने से आप गृह सज्जा की रूचि को भी पूरा कर सकते हैं तथा फूल आने पर घर या किसी अन्य स्थान पर इन्हें बदल कर रख सकते हैं। सदाबहार पौधों के लिए पत्तियों की सड़ी खाद उत्तम रहती है, क्योंकि इस में जड़ों के आसपास नमी बनाए रखने की क्षमता होती है। इस खाद का उपयोग करने से दीमक की संभावना भी नहीं रहती। पौधों में पानी ऋतु को ध्यान में रखते हुए देना चाहिए, क्योंकि ज्यादा पानी पौधों के लिए जहर का काम भी कर सकता है। इस से पौधों की जड़ें सड़ कर खत्म हो जाएंगी और पौधों की बढ़ोत्तरी पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। ग्रीष्म ऋतु में अवश्य दोनों समय पौधों को पानी देना चाहिए तथा सप्ताह में एक बार अवश्य इन पर

पानी का छिड़काव करना चाहिए, जिस से पत्तियों पर जमी धूल मिट्टी निकल जाएगी और पत्तियों की चमक बढ़ जाएगी। **पौधों की बढ़ोत्तरी :** सदाबहार पौधों में बीज का इतना महत्व नहीं है। इन में या तो बीज बनते ही नहीं और अगर बनते हैं तो वे अपरिपक्व होते है, जिन से नए पौधे बनने की आशा रखना व्यर्थ है। इन की बढ़ोत्तरी का सब से उचित माध्यम इन के तनों की कटिंग अथवा इन के राइजोम या सकर हैं जिन पर जड़ें निकलती हैं, उन से आसानी से नए पौधे तैयार किए जा सकते हैं। पौधों को लगाने अथवा तैयार करने के लिए वर्षा या बसंत ऋतु सब से उपयुक्त समय है। इस समय इन के बढ़ने की सम्भावना शतप्रतिशत रहती है। नए पौधों को 10-15 दिन के लिए छाया वाले स्थान पर रखना चाहिए, बाद में जब वे संभल जाएं तब कहीं पर रखे जा सकते हैं।

फूल निकलने के समय क्या करें?

सदावहार रंगीले पौधों में फूल वर्ष में एक बार ही आते हैं, इसलिए इन का बहुत महत्व हैं। फूल पौधों पर ज्यादा समय टिकते हैं, इसलिए फूल आने से पहले क्या आवश्यक कारवाई करनी चाहिए, अगर इस विषय पर आवश्यक जानकारी हो तो अच्छे परिणामों की आशा की जा सकती है। इस के लिए निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए :

- गमलों व क्यारियों में फूल आने से एक महीने पहले खाद देनी चाहिए।
- फूलों की कलियां निकलने पर किसी भी स्थिति में पौधों को नहीं बदलना चाहिए, ऐसा करने पर कलियां या फूल पीले पड़ कर खत्म होने की संभावना रहती है।
- फूल अगन लंबाई में निकलें तो सहारे के लिए दूसरे पौधों की टहनियां काम में ली जा सकती हैं। इस से फूल सीधे रहेंगे व झुकेंगे नहीं।
- सूखी पत्तियों को समय पर तोड़ लेना चाहिए अन्यथा ये नई पत्तियों की आभा को कम कर देती हैं।
- जब पौधों पर फूल हों तब पत्तियों पर पानी का छिडकाव यदाकदा अवश्य करना चाहिए। इस से पौधा तरोताजा बना रहेगा।
- रडार 20 इ.सी. का उपयोग कर दीमक से पूर्णरूप से छुटकारा पाया जा सकता है।

सदाबहार पौधों का परिचय :

इस समूह के कुछ मुख्य पौधों का परिचय इस प्रकार है :

एफीलेंड्रा : यह 'एकेंथेसी' परिवार का बहुत ही सुंदर पौधा है। इस पौधे का उद्गम स्थल ब्राजील माना गया है, पर अब यह संसार के बहुत से देशों में सजावट के लिए बहुतायत से लगाया जाता है। इसे 'जेबरा प्लांट' के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि इस की गहरे रंग की पत्तियों पर पीली या सफेद धारियां होती है। ज़ेबरा प्लांट सामान्यतया मध्यम श्रेणी का पौधा है, इस की पत्तियों के अलावा इस के फूल भी सुंदर होते हैं जो 6 से 9 इंच तक लंबे होते हैं और सामान्यता पौधों के ऊपरी हिस्से में निकलते हैं।

इस पौधे की करीब 150 किस्में हैं, जो कि अंदरूनी गृहसज्जा व छायावाले स्थान पर लगाने के लिए उपयुक्त हैं। इस पौधे को गमले व क्यारियों दोनों ही जगह लगाया जा सकता हैं। इस की बढ़ोत्तरी कटिंग द्वारा की जा सकती हैं। इस पौधे के पीले रंग के फूल उसी या दूसरे रंग के सहपत्रों (ब्रेक्ट्स) से ढके रहते हैं, जो कि इस की सुंदरता को और बढ़ा देते हैं।

बिगोरिया : यह 'बिगोनीएसी' परिवार का सदस्य है तथा सदाबहार पौधों में बहुत ही लोकप्रिय है। बिगोनिया को वर्षा ऋतु में इस के राइजोम (प्रकंद) द्वारा आसानी से बढ़ाया जा सकता है। बिगोनिया की पत्तियां बनावट, रंग व आकृति के अनुसार बहुत सुंदर मानी जाती हैं। इन का आकार सामान्यतया हाथी के कान की आकृति से मिलताजुलता होता है। इस कारण बिगोनिया को 'एलिफेंट इयर प्लांट' भी कहते हैं।

इस प्रकार छोटेबड़े उद्यानों में इन सदाबहार पौधों को गमलों व क्यारियों में लगाया जाए तो वर्ष भर हरे भरे रह कर ये पौधे आप के घर या उद्यान की शोभा बढ़ाते ही हैं। —शिल्पा श्याम

जानलेवा भी हो सकता है शोर

दीपावली के आते ही चारों ओर खुशी का माहौल हो जाता है। इसी के साथ शुरू हो जाती है पटाखों की घूम–धडाम। लेकिन क्या कभी आपने सोचा है कि ध्वनि प्रदूषण कितना हानिकारक है। एक स्तर से अधिक शोर जानलेवा भी हो सकता है कि हमें दीपावली के मौके पर ध्वनि प्रदूषण के बारे में जानकारी होनी चाहिए और सावधानीपूर्वक तरीके से त्योहार को मनाना चाहिए।

"शोर सापेक्षा होता है, शहर में अगर वायुयान की आवाज का अर्धशोर है तो किसी शांत मठ में कलम घिसने की आवाज शोर है।"

आज से करीब 70 वर्ष पूर्व नोबल पुरस्कार विजेता राबर्ट कॉच ने यह भविष्यवाणी की थी कि "एक दिन ऐसा आएगा जब मनुष्य को स्वास्थ्य के सबसे बुरे के रूप में निर्दयी शोर से जूझाना पड़ेगा।

आज यह भविष्यवाणी अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई है। पिछले दो दशकों से दुनिया में शोर जिस कदर बढ़ी है यही गति रही तो आगामी तीन दशाकों में मानव जीवन खतरें में पड़ जायेगा एवं आबादी का बहुत बड़ा भाग शोर के कारण बहरा हो जाएगा। वाहन क्रांति ने हमारे सामने परिवाहन के विपुल साधन उपलब्ध कराये है। साइकिल, रिक्शा, घोड़ा, ऊंट, तांगा, बैलगाड़ी, टमटम आदि का स्थान मोपेड, स्कूटर, मोटर साइकिल, ट्रक, कार रेल तथा वायुयान ने लिया है। इन वाहनों के उपयोग ने हमारे सामने ध्वनि प्रदूषण की समस्या उत्पन्न कर दी है। वाहनों का अनियंत्रित शोर लोगों के कानों में पिघलता शीशा उड़ेल रहा है। लेटिन का अर्थ है "अनियंत्रित ध्वनि" सीधे-सादे शाब्दों में कहा जा सकता है कि अनावश्यक, असुविधाजनक तथा अनुपयोगी आवाज ही शोर है।
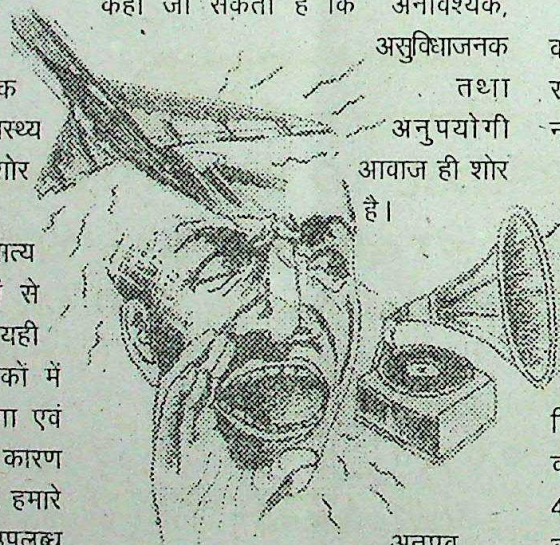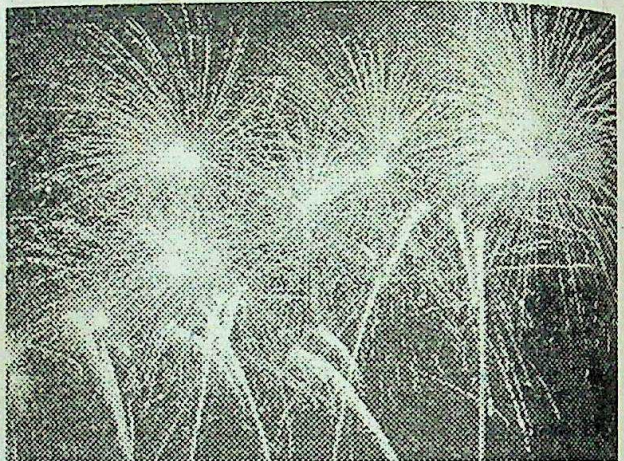
अतएव कोई भी आवाज़ शोर है या नहीं उसके कारण तीव्रता, आवृत्ति निरंतरता अथवा व्यवधान आदि पर निर्भर करते है।

वायु, जल, पृथ्वी, में व्याप्त प्रदूषण की तरह शोर भी पर्यावरण प्रदूषण में सम्मिलित हो गया है। शोर भी कम घातक नहीं है। एक व्यक्ति को जो आवाज शोर मालूम देती है वही दूसरे को अच्छी लगती है, लेकिन वैज्ञानिकों ने शोर को मापने की इकाई बनाई है। जिसे डेसीबल करते है। साथ ही साथ किस स्थान पर ध्वनि की तीव्रता कितनी होनी चाहिए, इसका भी निर्धारण किया गया है। इसके अनुसार ध्वनि की तीव्रता अस्पतालों के आसपास 40 डेसीबल, बस्तियों में 50 डेसीबल, कम भीड़भाड़ वाली सड़कों पर 80 डेसीबल से अधिक नहीं होना चाहिए। बातचीत

भी ध्वनि की श्रेणी में आ जाती है। 80 से 75 डेसीबल की ध्वनि एक दूसरे की बात सुनने में कठिनाई उत्पन्न कर सकती है।

आज के औद्योगिक जीवन में शोर का चक्रव्यूह आपको चारों ओर से घेरे हुए है। प्रातः बिस्तर से उठिए तो अलार्म घडी का शोर सडकों पर जाएं तो वाहनों का शोर, आसमान से उड़तें हुए हवाई जहाज का शोर, आफिस में गपशप का शोर, कारखानों में मशीनों का शोर खेती में ट्रेक्टरों का शोर खलियानों में थ्रेशर का शोर, बाजार में शोर, कोई मरे तो शोर, कोई पैदा हो तो शोर, विवाह-समारोह जुलूस-प्रार्थना आदि सभी स्थानों पर शोर ही शोर है।

शोर का प्रभावः-

अधिक तेज शोर से आखों की ज्योति मंदपड़ जाती है। रात को देखने में कठिनाई का अनुभव होती है, विचारों की श्रृंखला टूटती है, मस्तिष्क की विद्युत तरंगों में गड़बड़ी होने लगती है, हिंसा की भावना तेज होती है, उत्तेजनापूर्ण जीवन और झुकाव बढ़ जाता है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक पास्कल का कथन है कि शोर श्रवण प्रणाली को ही नहीं प्रभावती करता बल्कि वह मस्तिष्क पर भी कुप्रभाव छोड़ता है, जिससे सारे शरीर पर दृष्टि तत्व सक्रिय हो उठते हैं।

हमारी चिंतन धारा में मुख्य बाधा भी यह शहरी शोर है। हावर्ड विश्वविद्यालय के प्रो.विलियंस ने पर्यवेक्षण करके यह निष्कर्ष निकाला कि मनुष्य की जीवन शक्ति को नष्ट निकाला कि मनुष्य की जीवन शक्ति को नष्ट करने और उसे अकाल मृत्यु का ग्रास बनाने के लिए कोलाहल का बहुत बड़ा हाथ है। बड़े शहरों में सड़क के किनारे बने हुए घरों में जो लोग रहते हैं दौडती हुई मोटरों, ट्रकों, कारों एवं अन्य वाहनों के शोर के कारण (उनकी आवाजों) उनके मस्तिष्क को क्षुब्ध करती हैं। फलतः अन्य मुहल्ले में रहने वाले की अपेक्षा वे अनिद्रा, घबराहट, धड़कन, बधिरता, रक्तचाप, अपच जैसी बीमारियों के शिकार हो जाते है। शोर हमारे कानों को सर्वाधिक प्रभावित करता है। धीरे-धीरे कान के भीतरी भाग की तंत्रिकाएं नष्ट हो जाती है, और कम सुनाई पड़ने लगता है और स्थिति यहां तक पहुंच जाती है कि आदमी बहरा हो जाता है। शोर से इमारतों आदि को भी नुकसान पहुंचता है तथा मवेशियों के कार्य में गिरावट ला सकता है। शोर से अंडा उत्पादन कम हो जाता है।

सन 1966 में रूस के गोर्की नगर में अभ्यस्त शोर का प्रभाव पशुओं पर क्या पड़ता है इसका परीक्षण किया गया तो यही पाया गया है कि वे कर्कश ध्वनियों को सुनने के कारण अपनी सामान्य दिनचर्या छोड़ बैठते हैं और उद्विग्न रहने लगते है। उनकी कार्यक्षमता घट जाती है और अस्वस्थता आ घेरती है। पालतू पक्षी भी शोर से घबराते हैं। जो पालतू नहीं है वे कोलाहल से हटकर अपने घोसले अन्यत्र बनाने की तैयारी करते है। एक दो वर्ष पूर्व कानपुर में ध्वनि प्रदूषण के बारे में सर्वेक्षण करवाया गया था तो यह निष्कर्ष निकाला था कि 40 प्रतिशत स्कूली बच्चों को कम सुनाई पड़ने लगता है। इसके अतिरिक्त कम उम्र के इन बच्चों में चिड़चिड़ाहट, सिरदर्द, याददाश्त कमजोर होने की शिकायतें मिली हैं। संगीत रिकाड़ों और कैसेटों को धुनों, लाउडस्पीकर, वाहनों के हार्न और नगर के बीच से होकर गुजरने वाली रेलगाड़ियों के शोर से यहां के वातावरण में इतना ज्यादा ध्वनि प्रदूषण है कि 60% बच्चे अपनी कक्षाओं में एकाग्रता से नहीं बैठ पाते है।

शोधकर्ता डा. मिश्र ने इस बात को भी रेखाकिंत किया है कि हवाई जहाजों के गुजरने, रैलगाड़ी और बसों के तेज हार्न का बच्चों पर इस सीमा तक गलत प्रभाव पड़ता है उनमें उत्तेजना, पीड़ा, रक्तचाप आदि की शिकायतें होने लगती हैं।

विशेष प्रकार के आडियो मैटरिक मूल्यकांन यह बताते है कि तीन से छः साल तके शोरगुल के माहौल से अध्ययन करने के बाद छात्रों में बार-बार सिरदर्द और स्वभाव से चिड़चिड़ा होने की संभावना बहुत बढ़ जाती है।

शोर के व्यापक और घातक परिणामों को देखते हुए यह प्रश्न पैदा होता है कि इससे किस प्रकार छुटकारा पाया जाए। विश्व स्वास्थ्य संगठन और पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट के अनुसार वातावरण पर्यावरण से संबंधित सभी समस्याओं से ध्वनि प्रदूषण को नियंत्रित करना सबसे सरल ओर आसान है :-

त्यौहार, समारोह, शादी, विवाह, जुलूस, आदि मांगलिक अवसरों पर लाउडस्पीकर का प्रयोग अनावश्यक रूप से न करें। कई देशों में तो लाउड स्पीकरों के प्रयोग पर ही पाबंदी लगी हुई है।

बस स्टैण्ड, रेलवे स्टेशन, औद्योगिक संस्थान आदि आबादी से दूर स्थापित किये जाएं। हवाई अड्डे तो आबादी से 10 किमी0 दूर स्थापित किये जाने चाहिए।

निवास के लिए कम से कम शोर वाले स्थान का चुनाव करना, भवन के आगे वृक्ष और झाड़ियां लगाकर शोर का शोषण करना है। मकान निर्माण के समय शोर वाली जगह के पास किचन, बाथरूम, बनवाना तथा शांत भाग की ओर बैडरूम तथा स्टडी रूम बनवाना चाहिए। विदेशों में तो प्रेशर हार्न पर प्रतिबंध लगा हुआ है जबकि अपने यहां तो इसका धड़ल्ले से अस्तेमाल हो रहा है। घनी आबादी वाले क्षेत्रों में वाहनों की आवाज नहीं होनी चाहिए।

- कल कारखानों में प्रयोग होने वाली मशीनें कम से कम शोर करें, साइलेंसर की व्यवस्था हो, मशीनों के समय-समय पर ओव्हार आइलिंग होनी चाहिए, चिकने पदार्थों के उपयोग से घर्षण का शोर कम किया जा सकता है।
- परिवाहन प्रदूषण की रोकथाम के लिए सरकारी स्तर पर व्यापक कार्रवाई होनी चाहिए। सालेंसर रहित वाहनों पर जुर्माने की व्यवस्था होनी चाहिए। प्रेशर हार्न की बजाए मधुर आवाज वाले हार्न का प्रयोग होना चाहिए।
- सड़कों के दोनों किनारों पर सघन वृक्षारोपण किया जाना चाहिए रेलवे लाइन के दोनों ओर भी वृक्ष लगाए जाने चाहिए। कल-कारखानों में होने वाले शोर को कम करने के लिए अहाते में पेड़-पौधे लगाने चाहिए।
- वैज्ञानिकों की मान्यता है कि वृक्ष 10 डेसीबल तक शोर कम कर देते है तथा वायु प्रदूषण को भी रोकते हैं।
- सोवियत ध्वनि विशेषज्ञों का कहना हैं कि यदि आप घर के आसपास हाने वाले शोर से परेशान है तो घर को हल्का नीला या हल्का हरा पुतवा लेना चाहिए। अनुसंधानों से यह मालूम हुआ है कि हल्का नीला और हल्का हरा रंग ध्वनि के सबसे उपयुक्त अवरोधक हैं।
- प्रत्येक, व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह रेडियों, ट्राजिस्टर, टेपरिकार्ड, टी.वी. बहुत ही धीमी गति से सुने।
- यह अपने सपन्न होने वाले धार्मिक समारोह, विवाह, यज्ञ, अनुष्ठानों में ध्वनि विस्तारक यंत्रों का प्रयोग कम से कम करें।
- घर के सामान फर्नीचर आदि को धीरे रखें। दरवाजे और खिड़कियों पर मोटे कपड़ो के पर्दे डालें तथा दरवाजों को धीरे से बंद करें। घरेलू प्रयोग की मशीने का समय-समय पर मरम्मत करवाते रहें तथा उनमें तेल व ग्रीस देते रहें।
- दीपावली व शादी के अवसरों पर आजकल तेज आवाज वाली आतिशबाजी का प्रयोग किया जाता है, उस पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए।
- यदि कोई व्यक्ति या संस्था ध्वनि प्रदूषण करे तो, उसके विरूद्ध उचित कार्रवाई की जाये ताकि अन्य लोगों को भी शोर के प्रति भय उत्पन्न हो।
- समाचार पत्र-पत्रिकाओं एवं विज्ञापनों के माध्यमों द्वारा जनसाधारण को शोर से होने साले दुष्परिणामों के बारे में जानकारी करवाना चाहिए ताकि नागरिकों में स्वतः ही शोर कम करने की प्रवृत्ति उत्पन्न हो।
- परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए शहरों से पीछे हटकर दोहतों में बसने की बात सोची जानी चाहिए। अधिक कमाई तथा अधिक शहरी चकाचौंध के आकर्षण में अपना शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य गवां बैठना कहां की बुद्धिमानी है।

प्राचीनकाल में इस बात को भली भांति समझा गया था इसलिए उस समय शिक्षण संस्थाएं, शांध संस्थान, चिकित्सा केन्द्र,साधना स्थल सुदूर देहातों में एकांत अन्य प्रदेशों में बनाए गए थे। जिसमें कोलाहल रहित वातावरण में शांत, संतुलित, स्वस्थ, सुखी व सुन्दर जीवन व्यतीत किया जा सके। हमारे लिए भी उसी राह को अपनाना श्रेयस्कर होगा।

यदि पर्यावरण विशेषज्ञों की चेतावनी पर ध्यान दिया जाए तो हम स्वयं तथा विश्व को उस महाविनाश से बचा सकते हैं जो इस शताब्दी के अंतिम दौर में हमारी प्रतीक्षा में हैं।

—अभय कुमार जैन

एक जहरीला जीव चमगादड़

अक्सर हम देखते हैं कि शाम होते ही सभी पक्षी अपने-अपने घोंसलों की ओर लौटने लगते हैं, लेकिन इसके विपरीत चमगादड़ शाम होते ही आकाश में उड़ने लगते हैं। दिन में चमगादड़ पुराने खंडहरों अंधेरी कोठरियों, दीवारों में छिपे रहते हैं। प्रायः चमगादड़ निर्जन एवं एकांत स्थानों में अपना पड़ाव डाले देखे जाते है। संभवतः इसीलिए इनकों अशुभ माना गया है कि ये उजाड़ और वीरान के चहेते हैं।

शाम होते ही चमगादड़ भोजन की तलाश में निकलते हैं और उड़ान भरते रहते है। छोटे चमगादड़ तीन-चार इंच के होते हैं जब कि बड़े चमगादड़ अठारह से चौबीस इंचों तक के देखे गये हैं। बड़े चमगादड़ अंधेरे जंगलों में पेड़ों की शाखाओं से उल्टे लटके रहते हैं। अन्य पशु-पक्षियों की भांति चमगादड़ भी झुंडों में रहते हैं।

मांसाहारी जीव चमगादड़ के भोजन का भी अपना एक अलग तरीका है। ये मांसाहारी जीव हैं। इनका मुख्य भोजन वैसे तो रक्त है, लेकिन इसके अलावा यह कीड़े-मकौड़े, छोटी-बड़ी चिड़ियों को भी मजे से खाते हैं। अन्य मांसाहारी जीवों की तरह ये अपने शिकार को समूचा या टुकड़ें करके नहीं खाते, वरन उसे अपने लंबे परों के बीच दबा लेते हैं और उड़ते समय ही उनका खून चूसकर छोड़ देते हैं।

चमगादड़ दिन में देख सकते हैं

चमगादड़ मादा एक बार में एक ही बच्चा देती है, जो बड़े होने तक अपनी मां के पेट पर उल्टा लटका रहता हैं। चमगादडों में मादाओं की संख्या नर के मुकाबले अधिक होती है। वैसे यह कहा जाता है कि चमगादड़ को दिन में नहीं दिखता, लेकिन व्यवहार में चमगादड़ों को दिन में उड़ते व आंखे खोले देखा गया है। चमगादड़ पेड़ों में उलटे लटके दिन में अपना प्रणय-व्यापार करते देखे जा सकते है। एक नर चमगादड़ पेड़ की शाखा पर उलटे लटकें अपनी प्रेयसी मादा के करीब खिसकता रहता है और अपने पंखों के फैलाव से मादा को अपनी गिरफ्त में ले लेता है। प्रणय के समय इनकी बेसुरी चीखें निकलती रहती हैं। चमगादड़ों के झुंड जहां किसी पेड़ पर पड़ाव डालते हैं, वहां इनका मल भीषण दुर्गंध फैला देता है।

शरीर में प्राकृतिक राडार

वैज्ञानिकों ने पाया है कि आंखें बंद करने का चमगादड़ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा और वे पूर्व की भांति उड़ते रहे।

दो सौ वर्ष पूर्व अर्थात सन 1780 में इटली के वैज्ञानिक स्पेजनी ने एक प्रयोग किया। उसने कुछ चमगादड़ों की आंखों पर पट्टियां बांधकर उन्हें एक कमरे में छोड़ दिया। कमरे को प्रकाशित करके इनकी गतिविधियों का निरीक्षण किया अक्सर हम देखते हैं कि शाम होते ही सभी पक्षी अपने-अपने घोंसलों की ओर लौटने लगते हैं, लेकिन इसके विपरीत चमगादड़ शाम होते ही आकाश में उड़ने लगते हैं। दिन में चमगादड़ पुराने खंडहरों अंधेरी कोठरियों, दीवारों में छिपे रहते हैं। प्रायः चमगादड़ निर्जन एवं एकांत स्थानों में अपना पड़ाव डाले देखे जाते है।

—पर्यावरण चेतना डेस्क

जैसे को तैसा

एक दिन सोनू बन्दर आम खरीदने लोमड़ी की दुकान पर गया। वहां उसने अच्छे-अच्छे आम छाँटकर लोमड़ी को दिए। लोमड़ी ने उन आमों को तौलकर थैले में रख दिया। इसके बाद बन्दर ने जेब से रूपये निकालकर लोमडी को दिये और थैले को लेकर अपने घर चला आया।

घर आकर उसने बच्चों को आम खाने के लिए अपने पास बुलाया। बच्चों के आने पर उसने आम निकाला तो चौंक गया। थैले में सड़े आम थे। वह सोचने लगा कि उसने तो अच्छे आम छाँटकर रखे थे, फिर यह कैसे बदल गये।

वह तुरन्त सब आमों को लेकर लोमड़ी के पास गया और इस बारे में पूछा। बन्दर की बात सुनकर लोमड़ी बोली, "तुम झूठ बोल रहे हो। तुमने जो आम छांटे थे, वही लेकर गये थे।"

बन्दर ने आम बदलने के लिए लोमड़ी से कई बार कहा। परन्तु वह राजी नहीं हुई। बन्दर दुखी होकर घर लौट आया। वह बार-बार यही सोचता रहा कि आम कैसे बदल गये, परन्तु कोई कारण समझ में नहीं आया।

दूसरे दिन उसने यह बात अपने दोस्त खरगोश को बतायी। इस पर खरगोश ने कहा कि इसी प्रकार की घटना किसी कुत्ते के साथ भी घट चुकी है। यह सुनकर बन्दर ने कहा, "इसका पता लगाना चाहिए। अब तुम इस बारे में कुछ उपाय सोचो।"

खरगोश ने इस बानरे में कुछ देर सोचने के बाद बन्दर के कान में धीरे से एक उपाय बताया। दूसरे दिन बन्दर और खरगोश लोमड़ी की दुकान पर गये। वहां बन्दर ने अच्छे-अच्छे आम छाँटकर लोमडी को दिये। लोमड़ी ने उन आमों को तौलकर एक थैले में रख दिया। इसके बाद बन्दर ने जेब से रुपया निकालकर लोमड़ी को दिया तो उसने आमों का थैला उठाकर दे दिया। खरगोश यह सब बड़े ध्यान से देख रहा था।

बन्दर जब थैला लेकर चलने लगा तो खरगोश ने उससे कहा, "अरे, एक आम हमें तो खिला दो।"

"अरे, मैं तो भूल गया। लो, खा लो।"

इतना कहकर बंदर ने थैले से एक आम निकालकर खरगोश को दे दिया। खरगोश ने आम देखा- तो हँसते हुए बंदर से कहा, "अरे, यह क्या? सड़ा आम हमें ही दोगे। कोई अच्छा आम दो।"

उस सड़े आम को देखकर बन्दर आश्चर्य से बोला," अरे, यह कैसे हो गया? मैंने तो अच्छे छाँटे थे।"

फिर उसने थैले के सब आम ठेले पर उड़ेल दिये। थैले के लगभग सभी आम खराब थे। उन आमों को देखकर बन्दर ने लोमड़ी से कहा, "यह मेरे आम नहीं हैं। मैंने जो आम छाँटकर दिये थे, वह थैला कहाँ है?"

अब लोमड़ी क्या बोलती। उससे कुछ बोलते नहीं बन रहा था। तभी खरगोश ने ठेले पर रखे थैले से आम निकाला तो वह भी सड़ा था। वह आश्चर्यचकित होकर बोला, "इसमें भी सड़े आम हैं।" फिर उसने जल्दी से एक अन्य थैले में से आम निकाला तो वह भी सड़ा था। उसने उन थैलों की ओर इशारा करते हुए लोमड़ी से पूछा, "क्या इन थैलों में खराब आम रखती हो?"

"नहीं।" लोमड़ी बोली।

"तभी इसमें खराब आम कैसे आ गये?" खरगोश ने पूछा।

लोमड़ी को इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं सूझ रहा था। उसने बात को टालने के लिए बन्दर से कहा, "तुम इस थैले के आम ले जाओ।" इतना कहकर उसने एक किनारे रखा एक थैला उठाकर बन्दर को पकड़ा दिया।

खरगोश ने देखा तो उस थैले में अच्छे आम थे। यह देखकर वह लोमड़ी पर बिगड़ने लगा। उसने कहा "तुम ग्राहकों को ठगती हो। तुम उनके अच्छे आमों को बदलकर खराब आम पकड़ा देती हो।"

"तुम झूठ बोलते हो।" लोमड़ी ने कहा।

"क्या मैं झूठ बोल रहा हूँ? तुमने अभी मेरे अच्छे आमों का थैला बदलकर खराब आम को थैला क्यों दिया था।" खरागोश ने जोर से बोलते हुए कहा।

अब लोमड़ी से बन्दर एवं खरगोश की कहासुनी होने लगी। झगड़ा होते देखकर कई लोग वहां आकर खड़े हो गये।

तभी उधर जंगल का मंत्री भालू आ गया। उसने पूछा, "यहां भीड़ क्यों लगी है? क्या बात हैं?"

इस पर खरगोश ने भालू को पूरी बात बताते हुए कहा, "यह ग्रहकों को ठगती है। यह कई थैलों में खराब आम रखे रहती है और ग्राहकों के अच्छे आम के थैले को मौका पाकर बदल देती हैं। ग्राहक को यह पता नहीं चलता। जब वह घर जाकर देखता है तो पछताता है।"

यह सुनकर भालू ने लोमड़ी से पूछा, तो उसने हमलाते हुए कहा, "यह झूठ बोल रहे है।" "अगर आपको मेरी बात पर विश्वास न होतो इन थैलों को देख लीजिए।" इतना कह कर खरगोश ने जल्दी से दो थैलों के आम ठेले पर उड़ेल दिये जो लगभग खराब थे। इस पर भालू ने अपने सिपाही सियार से कहा, "इसे पकड़कर ले चलो और जेल में बंद कर दो। वहीं सब पता चल जाएगा।" यह सुनकर लोमड़ी गिड़गिड़ाने लगी। आज खरगोश की होशियारी से लोमड़ी को सबक मिल गया। घर लौटते समय बन्दर और खरगोश बहुत खुश थे।

—विनय कुमार मालवीय

स्वत्वधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक मीता सिंह द्वारा नीलम प्रिंटर्स, नरही, लखनऊ फोन - 239672 से मुद्रित
एवं बी-1/12 डी-1 कानपुर रोड योजना, लखनऊ से प्रकाशित

पर्यावरण चेतना
पर्यावरण की राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका
वर्ष 8
दिसम्बर 2001
अंक 8
अपना ही आशियाना बना प्रदूषण का जनमदाता
घोंसला बनाने वाला सांप
लुप्त हो रही हैं उभयचर प्रजातियां
मक्के की खेती ने दिखाई नयी राह
पर्यावरण के क्षेत्र में रोजगार के अवसर

पर्यावरण चेतना

पर्यावरण संचेतना की राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष : 8 दिसम्बर अंक : 8

- सम्पादकीय कार्यालय : सी–5 दिलकुशा कालोनी, लखनऊ। (482288)
- सम्पर्क: नगर कार्यालय : कीर्तिशिखर अपार्टमेंट्स, निकट विकास दीप, 22, ऑफ स्टेशन रोड, लखनऊ (फोन : 636282)
- कार्यकारी सम्पादक पत्राचार: पोस्ट बाक्स नं. 301 जी.पी.ओ., लखनऊ–226001
- रजि० कार्यालय: बी-1/12 सेक्टर डी–1, कानपुर रोड योजना,लखनऊ(फोन: 436767)

अनुक्रमणिका

सम्पूर्ण वैदिक वांगमय मानव की मनीषा की सर्वोकृष्ट उपलब्धियों का अमूल्य अंश है। प्रकृति के साथ यह अस्तित्व की भावना से युक्त जीवन व्यतीत करने वाले वैदिक ऋषियों ने वसुन्धरा, ऊषा, सूर्य, वायु, जल एवं अन्यान्य प्राकृतिक शक्तियों की भावपूर्ण अभ्यर्थना की है। **''पर्यावरण चेतना''** द्वारा वैदिक सूक्तों की कतिपय ऋचायें, पर्यावरण संरक्षण की पुरातन चिन्तन धारा वर्तमान संकल्पना से जोड़ने की दृष्टि से प्रकाशित की जा रही है। प्रकृति के अनन्य आराधक मंत्र दृष्टा ऋषियों को विनत प्रणाम करते हुये प्रस्तुत हैं प्रकृति पर **''वैदिक चिन्तन''** के कतिपय अंश-

औदुम्बरेज मणिना पुष्टिकामाय वेधसा। पशुनां सर्वेषा स्फातिं गोष्ठे में सविता करत्।।

(अर्थर्ववेद संहिता भाग–2 औटुम्बरमणि सूक्त–1)

(ज्ञानी अथवा विधाता ने औटुम्बरमणि से सभी प्रकार की पुष्टि करने वालों के लिये एक प्रयोग किया था जिससे सवितादेव हमारे गोष्ठ में सभी प्रकार के पशुओं को बढ़ायें।)

प्रस्तुत श्लोक वर्तमान समय में समीचीन प्रतीत होता है। क्योंकि आज विभिन्न प्रकार के पशु एवं जीव जंतुओं के संरक्षण की आवश्यकता है। क्योंकि हमारी कृषि का एक महत्वपूर्ण स्तम्भ पशु ही है। इसके अलावा पशुओं से ही हमें दूध की प्राप्ति होती है तथा अन्य विशेष कार्य भी पशुओं द्वारा ही संपादित होते हैं। अतः आज पशु धन को बढ़ाने की आवश्यकता है।

करीषिणी फलवती स्वधामिरां च नो गृहे। औदुम्बरस्य तेजसा धाता पुष्टिं दधातु में।।

(अर्थर्ववेद संहिता भाग–2 औटुम्बरमणि सूक्त–3)

(धातादेव औटुम्बर मणि की तेजस्विंता से हमारे अंदर परिपुष्टता को प्रतिष्ठित करें। गोबर की खाद से परिपूर्ण करने वाली गौ संतानों से युक्त होकर हमें अन्न और दूध आदि पर्याप्त मात्रा में प्रदान करें।)

प्रस्तुत श्लोक भी आज के संदर्भ मं महत्वपूर्ण है। क्योंकि इसमें भी गायों के महत्व के बताया गया है। और देवताओं से उनकी वृद्धि की प्रार्थना की गयी है। क्योंकि गायों के गोबर से खाद होती है। जिससे कृषि पैदावार में वृद्धि होती है एवं दूध आदि भी प्राप्त होता है। अतः आज की समस्याओं को देखते हुये गायों एवं अन्य पशुओं के अधिकाधिक संरक्षण की जरूरत है।

❁ पर्यावरण चेतना फीचर्स

जानकारी एवं ज्ञान का खजाना है यह पत्रिका

पर्यावरण चेतना का मैं एक नियमित पाठक हूँ। इसकी सहज एवं सरल प्रस्तुति का मैं कायल हूँ। ताजा अंक मेरे लिए जानकारी एवं ज्ञान का खजाना साबित हुआ। 'नया अंक ज्ञानवर्धक एवं तुलनात्मक अध्ययन के दृष्टिकोण से अतिमहत्वपूर्ण है। हमें ज्ञान के इस खजान' से नवाजने के लिए आपका शुक्रिया।

मैं पर्यावरण चेतना को पर्यावरण शिक्षा के प्रसार का एक अच्छा माध्यम मानता हूँ। यह पत्रिका पर्यावरण की वास्तविक स्थिति से लोगों को अवगत कराने का एक सशक्त माध्यम है। आशा करता हूँ कि भविष्य में भी आप हमारे समक्ष इसी प्रकार के रोचक एवं ज्ञानवर्धक तथ्यों को प्रस्तुत करते रहेंगे। आज वर्तमान समय में पर्यावरण चेतना की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण हो गयी है जब अधिकांश लोग सिर्फ अपने स्वार्थ के चलते पर्यावरण की सुरक्षा के मुद्दे को लगभग भूल ही गए हैं। ❁ **राजेन्द्र कुमार**, कलकत्ता

युद्ध नहीं होने चाहिए

पर्यावरण चेतना का नवम्बर माह का अंक मिला। इसकी आवरण कथा युद्ध की विभीषिका में जलता पर्यावरण' बहुत ही अच्छा लगा। आज के आधुनिक समय में जब पूरे विश्व के राष्ट्र और लोग इस बात से सहमत हैं कि पर्यावरण को बचाना जरूरी है। नहीं तो हमारी पृथ्वी खतरे में पड जाएगी। ''ऐसे वक्त जब लोग सब कुछ भूलकर युद्ध के मैदान में कूद पड़ते हैं। उस समय ये सब बातें बिलकुल भी नहीं सोचते हैं कि उनका यह युद्ध वास्तव में पूरी पृथ्वी को ही प्रभावित कर रहा हैं इसलिए आज इस बात की जरूरत है कि युद्ध की स्थितियों पर जोर शोर से आवज उठाई जाए और लोगों के जागरूक किया जाए। ❁ **प्रवीण सिंह**, सुल्तानपुर

अपने आप में अनूठी

मैं बी०ए० द्वितीय वर्ष हूं। मैंने पर्यावरण चेतना के बारे में अपने कई दोस्तों से सुना था परतु पढ़ने का मौका न मिल पाने के कारण नहीं देख सका। इस माह इस पत्रिका को पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। निसंदेह यह पत्रिका अपने आप में अनूठी है।

'पर्यावरण चेतना' के बारे में जैसा दोस्तों से सुना था वैसा ही पाया। पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक लेख एवं स्तम्भ काफी अच्छे लगे। जहां तक मैं समझता हू इस जैसी पर्यावरण से संबंधित दूसरी पत्रिका नहीं है। मैं आपकी पत्रिका का नियमित पाठक बनना चाहता हू कृपया इससे संबंधित समस्त जानकारी भेजने का कष्ट करे। ❁ **बृजेश कुमार**, रामनगर, नैनीताल

यत ते मध्यं पृथिवि यच्च नभ्यं,
यास्तूर्जस्तन्वः ऊर्जा स्तवन्यः सवंभूवुः,
तासु नो ध्येयभिः न पवस्व,
माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः
पर्जन्यः पिता स उ नः पिपर्तुः।।

(अथर्ववेद / भूमि सूक्त: १२–१–१२)

हे, पृथ्वी तुम्हारी कटि, नाभि सम्पूर्ण शरीर से जो शक्ति संजात होती है वह हमारी रक्षा करें तुम्हारे मातृवत-स्नेहिल उच्छवासों से हम अभिसिंचित हों वसुंधरा जननी है, हम सब इसके पुत्र हैं, बादल हम समस्त प्राणियों के लिए पितृवत है।।

प्रकृति के बचाव की जरूरत?

हमारी पुरानी चलन में शादी-विवाह के मौके पर सबको आने का न्योता दिया जाता था। सबसे पहले हम अपने घर के बड़ों को और पितरों को न्योता देते थे। फिर पास-पड़ोस वालों को न्योता देते थे। देवी-देवताओं को व ग्राम-देवता को न्योता दिया जाता था। इसके साथ ही आंधी, पानी, सांप, बिच्छू आदि तक को भी न्योता दिया जाता था। इससे पता चलता है कि इनका भी हमारे जीवन में बहुत महत्त्व है। क्योंकि सांप जमीन को उपजाऊ बनाते हैं। उनका भोजन मेंढक है। इस प्रकार सांप, मेंढकों की संख्या को अधिक बढ़ने से रोके रहते हैं। इसी तरह से नवला भी है, जो सांप का शत्रु है। नेवला सांपों की संख्या बढ़ने नहीं देता। इसी प्रकार वन में बाघ हैं। जंगल में पशुओं की संख्या को संतुलित बनाये रखने में बाघ का बहुत बड़ा हाथ होता है। बाघ का भोजन हिरन है, हिरनों की संख्या अगर कम न रखी जाये तो हिरन जंगल से बाहर निकलकर खेतों को खाना शुरू कर देंगे। इसीलिए पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, जीव-जन्तु सभी को संरक्षण देना हर व्यक्ति का कर्तव्य है।

पिछले दो सौ सालों से आदमी अपने चारों तरफ की प्राकृतिक वस्तुओं से बिलकुल बेखबर हो गया। जिसके कारण बहुत सारे जंगल काट डाले गये। हिरन और बाघ जैसे पशुओं का भी उनकी खाल और मांस के लिए बड़ी तेजी से शिकार किया गया। पक्षियों का मांस पाने के लिए उन्हें बड़ी संख्या में मारा गया। कस्तूरी मृग को हमने कस्तूरी पाने के लिए ढूंढ-ढूंढ कर मारा। इसका नतीजा यह हुआ कि कस्तूरी मृग अब आम तौर से मिलते ही नहीं हैं। हम जिस धरती पर रहते हैं उस पर हमारे चारों ओर पेड़-पौधे हैं, पशु-पक्षी हैं, कीड़े-मकोड़े व अन्य जीव-जन्तु भी हैं। हममें से बहुत कम लोग इस बात पर ध्यान दे पाते हैं कि प्रकृति से पैदा की हुई इन सभी चीजों और जीवों का हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। प्रकृति-चक्र को ठीक से बनाये रखने के लिए इन सबका बचाव भी उतना ही जरूरी है, जितना कि खुद हमारा है।

इस सम्पूर्ण चर, अचर जगत के जीवन-चक्र का संचालन कार्य प्रकृति ने बड़े संतुलन के साथ संयोजित कर रखा है। इसके संतुलन-संयोजन में प्रकृतिजनित जीव, जन्तु, वनस्पति, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पर्वत, धरती, पक्षी कीट-पतंगे आदि सभी का अपने-अपने स्तर से सहयोग है। अतः इनका अपने उसी प्राकृतिक, स्वाभाविक रूप में सक्रिय बने रहना-सृष्टि के क्रिया-चक्र को संतुलित बनाये रखना अनिवार्य है, आवश्यक है। इनमें प्रत्येक एक दूसरे के सहयोगी हैं- और यही सहयोग-समुच्चय उनमें से प्रत्येक का पर्यावरण है। इस सहयोग-समुच्चय का किसी भी रूप में क्षय समूचे चक्र की गति को गड्ड-मड्ड कर देता है। इस गड्ड- मड्ड से समूची सृष्टि खतरे में पड़कर समूल नाश की स्थिति उत्पन्न कर सकती है।

प्रधान संपादक

अपना ही आशियाना बना प्रदूषण का जन्मदाता

नोतन लाल
रिटा. लेक्चरर
डी.1209, डबुआ कालोनी,
फरीदाबाद, हरियाणा

सामान्यतः हम सब लोग कल-कारखानों, मशीनों, वाहनों, तथा अन्यान्य बाह्य प्रदूषणों से तो अवगत हैं परन्तु घरों, दुकानों, कार्यालयों, सिनेमाघरों, होटलों, आदि की चार दीवारी के भीतर होने वाले भयंकर प्रदूषण में बहुत कम परिचित हैं। वर्तमान में स्थिति यह है कि हम घर के अंदर मौजूद प्रदूषक तत्वों की पहचान नहीं कर पा रहे हैं। हमारी बदलती जीवन शैली में भौतिक जीवन स्तर को सुधारने में जो प्रयास हुए है उसमें ज्यादातर उपकरण प्रदूषण उत्पन्न करने वाले रेफ्रिजरेटर, एयर कंडीशनर, कीटनाशक, स्प्रे, मास्टिको रिपेलेन्ट दुर्गन्ध नाशक, हेयर स्प्रे, पेंट, वार्निश, पांलिश, प्लास्टिक एवं सनमायका के फर्नीचर इत्यादि हैं। हमारे घरो प्रदूषण मुख्ता स्रोत है भोजन निर्माण साधन। उसके बाद मनुष्य में धूम्रपान की आदत। इस सबसे उत्पन्न होने वाले प्रदूषण से कई तरह की बीमारियां उत्पन्न होती हैं। इसकी वजह से चक्कर आना, मितली होना, सिरदर्द एवं सुस्ती महसूस करना आम शिकायतें हैं। अस्थमा, कैंसर जैसे घातक रोग के कारण भी घरों में मौजूद हैं। घरेलू वायु में ऑक्साइड (मुख्यतः नाइट्रोजन) तथा अमोनिया की संभावना बढ़ जाती है। विशेषज्ञों के अनुसार शिशुओं में सांस सम्बन्धी समस्याएं वायु में ऑक्साइड की मात्रा बढ़ने के साथ बढ़ सकती हैं।

अपने घरों की आधुनिक, आरामदेह और स्फूर्तिदायक बनाने की हमारी अशिलाषा, पूर्णतया सही है, लेकिन क्या इसके लिए घर को कैंसर फैलाने वाले रसायन, जो फर्श साफ करने वाले पदार्थों, चेहरा साफ करने वाले टिश्यू पेपर और चिपकाने वाले पदार्थों में मौजूद होते हैं, की शरणस्थली बनाना आवश्यक है? इस तरह के क्लोरेडेन लारमूलेशन के बारे में ज्ञात हो गया है कि उनमें 40 अन्य पदार्थों के अलावा कार्सिनोजेनिक "अक्रिय

तत्व' और कई प्रदूषक जैसे प्रोपलीन ऑक्साइड, हेफ्साक्लोराब्यूटाडाइन, कार्बन टेट्राक्लोराइड आदि मौजूद होते हैं जो बेहद हानिकारक होते हैं। ऐसे हानिकारक रसायनों से प्रभावित परिसरों को "सिक बिल्डिंग सिन्डोम" के नाम से पुकारा जाता है। पोषणहार विशेषज्ञ (न्यूट्रीशनिष्ट) डा0 विजया वेंकट के अपरोक्त विचार एक समय में इतने प्रभावी नहीं समझे जाते थे, लेकिन आज वे एक सिद्धांत के रूप में समझे जाते हैं।

डा0 वेंकट के अनुसार बाह्य वातावरण की वायु बेहद प्रदूषित होने के बाद भी गतिशील होती है, लेकिन बंद इमारत के अंदर की वायु स्थिर होने के कारण व्यक्ति के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है।

बंद स्थानों मे पेस्टनाशी का उपयोग कदापि नहीं करें। कीट-पतंगे को दूर रखने के लिए समुचित सफाई के साथ प्राकृतिक पदार्थ जैसे नीम का तेल, यूकेलिप्टस का तेल और सिन्ट्रोनिला का प्रयोग करना चाहिए। अपने घरों और दफ्तरों के बंद वातावरण में धूम्रपान करना निषेध कर दें। घरों की सफाई के लिए प्रयोग किये जाने वाले उत्पादों जैसे फर्श और टाइल की पॉलिश, कपड़े धोने वाले साबुन, वायु शोधक आदि के निर्माताओं से मांग करनी चाहिए के वे अपने उत्पादों के निर्माण में उपयुक्त होने वाले रसायनों के बारे में जानकारी दें। इससे आपकों निर्णय लेने में आसानी होगी कि यह उत्पाद आनके लिए जरूरी है या नहीं।

यह सर्वविदित तथ्य है कि देश की 70 फीसदी आबादी गांवों में निवास करती है और देहात में आज भी ज्यातातर आबादी खाना बनाने के लिए लबड़ी और उपले का चूल्हा इस्तेमाल करती है। गुजरात, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, के किए गए अध्ययनों से पता चलता है कि ग्रामीण एवं अध |शहरी स्थानों में 80 प्रतिशत आबददी अस्थसमा, कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी के घेरे में है। वहीं शहरी आबादी जो मिट्टी तेल और गैस का प्रयोग करती है वह भी बंद रसोईघर या अपर्याय वातायन होने की वजह से प्रदूषण की शिकार है। अतः जहां ग्रमीण जीवन में लकड़ी और उपले जैसे ईधन के विलल्प व उचित प्रयोग की जरूरत है वहीं शहरी क्षेत्रों में निवासरत लोगों को चाहिए कि उनका रसोईधर साफ, हवादार स्थान पर हो। ईधन के विकल्प में सौर चूल्हों का उपयोग बहुत ही उतम विकल्पों में से एक है। अमेरिका के वैज्ञानिकों के अनुसार विश्व के सर्वाधिक प्रदूषित स्थान घर ही होते हैं जहां मनुष्य का अधिकांश समय गुजरता है। ऐसा विदित हुआ है कि बाहरी खुली वायु की तुलना में घर की अन्दर की वायु में प्रदूषित तत्व अधिक होते हैं। गलीचे के नीचे, प्लाईवुड से बनी अलमारियों में तथा कैरोसिन स्टोव के समीप इस प्रदूषक तत्वों की अधिक मात्रा रहती है। आधुनिक घरों में जहां वातानुकूलन के कारण हवा का आवागमन बहुत कम होता है, ये प्रदूषक तत्व निरन्तर बढ़ते रहते हैं।

विशेषज्ञों की राय है कि नए ढंग की "एयर टाइट सीलिंग" वाली इमारतों में "रूग्ण इमारत रोग" भी अधिक देखने में आता है। संश्लेषित भवन निर्माण सामग्री से भी कार्बनिक पदार्थ धीरे-धीरे मुक्त होते रहते है। जिनसे इमारतों के अन्दर प्रदूषण फैलता रहता है। इमारतों में प्रदूषण फैलाने वाले प्रदूषक हैं- फार्मेल्डीहाइड, बेनजीन तथा ट्राइक्लोरोथीन। फार्मेल्डीहाइड का उपयोग ताप प्रतिरोधक फोम, प्लाइवुड तथा व्यावसायिक कागज उत्पादों में होता है। बेन्जीन एक औद्योगिक विलायक है जिसका व्यापक रूप से उपयोग स्याही, तेलों प्लास्टिक आदि में होता है। स्वास्थ्य वैज्ञानिक ट्राइक्लोरोइथीलीन को यकृत कैंसर का सबसे बड़ा कारक मानते हैं। इसका उपयोग छपाई की स्याही, पेन्टो, वर्निश तथा रासायनिक गोंदों में होता है। वैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि "रूग्ण इमारत रोग" से बहुत से लोगों में एलर्जी के लक्षण भी उत्पन्न हो जाते हैं जैसे आंख में खुजली चलना, त्वचा

पर लाल निशान होना, सांस लेने में परेशानी तथा सिर भारी होना आदि।

वानस्पतिक गतिकी अनेक वातावरणी प्रक्रियाओं, भू-स्थिति तथा सम्बद्ध क्षेत्रों के विशिष्ट जैव पर्यावरणीय गुणों का प्रतिफलन है। जलवायु संबंधी परिवर्तन आंधी, आग तथा कीट-महामारी आदि के द्वारा पादव जैव विविधता को असंतुलित करते हैं। विश्वस्तर पर ये परिवर्तन इतने जटिल होते हैं कि इनका सटीक प्रारूप बनाना मुश्किल है, किन्तु उनके प्रभाव के महत्व को ध्यान में रखते हुए क्षेत्रीय स्तर पर उनका निर्धारण अत्यंत ही महत्वपूर्ण है।

हमारी बदलती जीवन शैली प्रदूषण कर रही है। आज घर में मच्छर, कामरोज, मक्खी, व कीट माने के लिए कीटनाशकों का प्रचलन तेजी से बढ़ा है। ये कीटनाशक मनुष्य के लिए उतने ही जहरीलें हैं जितनी कीटों के लिए। इसी तरह घरों में फ्रिज एवं एयरकंडीशनर से उत्पन्न होने वाले प्रदूषक तत्व क्लोरोफलोरो कार्बन (सी.एफ.सी) ओजोन परत नष्ट करने का कारक हैं। कूलर के ठहरे हुए गंदे पानी में मलेरिया एवं डेगू जैसी बीमारी उत्पन्न करने वाले मच्छर उत्पन्न होते हैं। वहीं उसमें पैदा होन वाली फफूंद से ब्रोकाइटिस, एलर्जी और खांसी संबंधी अन्य रोग होते हैं। इतना ही नहीं एयर फ्रेशना, दुर्गन्धनाशक, हेयर स्प्रे, पेंट, वार्निश तथा पालिश के इनके रासायनिक कण हवा में तैरते रहते हैं और सांस के माध्यम से मानव शरीर पहुंचकर नुकसान पहुंचाते हैं।

अध्ययनों से पता चलता है कि डिटरजेंट के रसायन कपड़े से मुक्त नहीं होते हैं, चाहे उसे कितना ही धोया जाये। अनुमान है कि दो मिलीग्राम डिटर्जेंट प्रतिदिन मनुष्य भोजन के साथ ग्रहण कर रहा है। इसमें मौजूद रसायन शरीर तंत्र को जीर्ण कर देते हैं।

इसी तरह ड्रायक्लीन किए हुए कपड़ों से ड्राईक्लारी इथीलीन निकलता है जो स्वास्थ्य के हितकारी नहीं है।

मानव ने आदिकाल से ही प्रकृति के महत्व को समझ लिया था तभी तो पशु,पर्वत,नदियां, तथा वनस्पतियां मानव की आरध्य बनी थीं। ऋग्वेद के यदि कुछ पन्नों को आप पलटें तो पाएंगे कि जहां अनेक देवी-देवीताओं की पूजा-अर्चना के मंत्र भरे पड़े हैं वहीं एक मंत्र ''ओ वनस्पतये नमः'' इस बात का संकेत देता है कि हमारे पूर्वज वनस्पतियों की पूजा, यज्ञों में इसीलिए करते थे कि वनस्पतियां उनकी जीवनदायनी थी। एक समय था, जब आदिमानव का आशियाना पेड़ों की डालें हुआ करती थी। उस समय मनुष्य पेड़-पौधों को बिना नुकसान पहुंचाये उनके संरक्षण में रहता था तथा अपना भोजन, वस्त्र, रक्षा आदि पेड़ों से ही प्राप्त करता था। परन्तु आजकल का आकाश में उड़ने वाला विकसित मानव नदियों में कचरे बहा रहा है, पहाड़ों के ऊपर उगे जंगलों के पेड़-पोधों तथा जानवरों को समाप्त करके अपने ही आस्तित्व को समाप्त करना चाहता है। इसका नतीजा यह हुआ कि हमारा पर्यावरण काफी दूषित होकर अब हमें ही चपेट रहा है।

टाटा एनर्जी रिसर्च इंस्टीट्यूट (टेरी) के एक अध्ययन से पता चला कि धरेलू प्रदूषण के मामले में समृद्धि भी एक अहम भूमिका अदा कर रही है। इलेक्ट्रानिक सामान पर निर्भरता, सौन्दर्य, प्रसाधन, मक्छर और कॉकरोच मारने वाली दवाएं, घर की सफाई करने के आधुनिक उपकरण और पेंट इस सिलसिलें में सबसे आगे हैं। इन्हें खरीदने वाले लोग इनके साथ ओजोन, बेंजीन और फॉर्मेल्डीहाइड जैसे प्रदूषक भी घर ला रहे हैं।

✠ ✠ ✠ ✠

हम भी किसी से कम नहीं

लगता है कि आजकल पर्यावरण नामक पिषय के जन्मपत्री के ग्रह उच्च स्थान पर हैं। जहां देखो पर्यावरण, पर्यावरण और पर्यावरण की चर्चा। पर इस उज्जवल भविष्य वाले पर्यावरण के सितारे गर्दिश में जाते नजर आते हैं क्योकि इसके साथ एक और शब्द जुड़ गया है जिसे चाहकर भी हम उससे अलग नहीं कर पर रहे हैं और उसी शब्द का नाम है-प्रदूषण-यानी पर्यावरण प्रदूषण।

हमारे मन पर, अखबार, आकाशवाणी,दूरदर्शन,पर्यावरणविद्, समाजसेवी संस्थाएं आदि हर रोज यह दबाव डाल रहीं हैं कि फैक्ट्रियों द्वारा गंदा पानी नदी में छोड़ना, जहरीली वायु आकाश में छोड़ना वनों, का कटान, कीटनाशकों का प्रयोग, यातायात के साधनों द्वारा छोड़ा गया धुंआ प्रत्येक आदमी का जीना हराम करता जा रहा है।

ऐसा होते-होते एक समय ऐसा आएगा जब हमें लेने के लिए शुद्ध वायु से भरे थैले काफी महंगे दामों में खरीदने पड़ेंगे।

लेकिन सच पूछा जाए तो एक सामान्य आदमी को इस बात का अंदेशा भी नहीं होगा कि वह अपने हाथों से रोज पर्यावरण को कितनी हानि पहुंचाता है।

'क्या कहा? अपने पेड़ नहीं काटे, फैक्ट्री भी नहीं लगाई है तो हम प्रदूषण कैसे फैला सकते हैं, भला।'

तो चलिए आप भी जानिए कि सामान्य मानव की दिनचर्या क्या है और इससे पर्यावरण को हानि वाली क्षति कितनी है यानी कि हम आप कौन से कम हैं पर्यावरण प्रदूषित करने में।

एक सामानय आदमी के दिन की शुरूआत बिस्तर छोड़ने के बाद सुबह-सुबह दांत मांजने से होती है। सामान्यतः दांत मांजने के लिए 5 से 10 ग्राम दंतमंजन पाउडर या 2-4 ग्राम टूथपेस्ट ब्रुश पर लगया जाता है। दंतमंजन में भी कभी-कभी तम्बाकू का इस्तेमाल भी होता है। जिसमें-निकोटिन होता है। टूथपेस्ट या टूथपाउडर में संतृप्त, रसायन, फास्फेट, कार्बोनेट के रूप में रहते हैं। इसके अलावा रंजक, खुशबू, चमकीले एवं फ्लोराइड जैसे किस्म के 8 से 15 रसायन रहते हैं।

पुणेवासी होने के नाते मैं सिर्फ पुणेवासियों द्वारा नित्य फैलाये जा रहे पर्यावरण प्रदूषण की बात बताता हूँ। अब यदि ऐसा मान लें कि पुणें शहर की जनसंख्या 25 लाख है और कम से कम 20 लाख लोग हर रोज एक बार दंतमंजन करते हैं, कुल्ला करके 20 लाख लोग पेस्ट या पाउडर मुंह से नाली में फेंकते हैं तो इसके द्वारा हम कम से कम 20 लाख ग्राम यानी 1200 किलोग्राम रसायन बिना कोई फैक्ट्री लगाये पुणे की मोला नदी में छोड़ते हैं।

कुल्ला करने के बाद आती है दाढ़ी बनाने की। शेविंग क्रीम , या साबुन में कम से कम 5 से 20 किस्म के रसायन रहते हैं जैसे वसा अम्ल लवण, बोरिक अम्ल, मेंथॉल, ग्लिसरीन, प्रोबीलिन ग्लॉयकोल, पायस, सुगंधियां आदि।

मान लिया पुणे शहर में आधी जनसंख्या पुरूषों की है। अगर हर रोज वे दाढ़ी बनाना चाहें तो 20 लाख ग्राम (200 किलोग्राम) रसायन हर रोज गटर में चला जाएगें।

फिर बारी आती है स्नान करने

की। चलो मान लें कम से कम 15 लाख लोग स्नान का आनंद उठाते हैं और बाकी सिर्फ हाथ मुंह धो कर अपनी सफाई की इतिश्री कर लेते हैं। स्नान के एक साबुन में कम से कम दस रसायन रहते हैं। गटर में 150 लाख ग्राम रसायन सिर्फ स्नान करने के बाद फेंका जाता है।

स्त्री वर्ग में शैंपू नाम की चीज सिर धोने के लिए इस्तेमाल की जाती है। इससे कम से कम 15 रसायन होते हैं। हो सकता है कि एक लाख स्त्रियां शैंपू का इस्तेमाल करें तो इसका हिसाब आप स्नान के साथ जोड़ सकते हैं।

अब बारी आई कपड़े धोने की। उसमें साबुन और डिटर्जेंट पाउडर का इस्तेमाल होता है कपड़े धोने के साबुन-डिटर्जेंट में कम से कम 5 से 10 रसायन रहते हैं। चलो मानते हैं कि कम से कम 5 ग्राम से 10 ग्राम अगरबत्ती तो हमेशा भगवान के सामने जलाता ही है। साथ में हमारे शहर में कम से कम 15 लाख लोग कपूर, तेल, धूप जलाकर भगवाल को प्रसन्न रखने की चेष्टा में लगे रहते हैं। इसमें कोयला, नाइट्राइट, थेलेट, सुगंधी रसायन, केरोसिन, फास्फोरस (माचिस द्वारा) ओर पेट्रोल जैसे रसायन का जलना शामिल है। कम से कम 20 लाख ग्राम रसायन (सुबह और शाम) में उड़ाया जाता है। वायु प्रदूषण, इसके अलावा बीडी, सिगरेट, लकड़ी, कोयला आदि के जलाने से भी होता है।

पूजा हो गई तो पेटपूजा भला कैसे पीछे रहे। रसोईघर में फल, फूल, खाद्य सामग्री, पेय, तरकारी, धान्य, दूध, मलाई, चाय, कॉफी के द्वारा वसा अम्ल, टैनिन, कैफिन, प्लास्टिक के थैले व्यर्थ पदार्थों से प्रदूषण संभव है। कम से कम 20 ग्राम और अधिक से अधिक 50 ग्राम व्यर्थ पदार्थ हर आदमी से पैदा होते हैं तो इसका हिसाब कम से कम 500 लाख ग्राम (घर में सिर्फ एक बार खाने की कीमत)।

खाना खाने के बाद चौका बरतन करने के लिए पाउडर का प्रयोग किया जाता है। एक अच्छे पाउडर में कम से कम 4-5 ग्राम रसायन होते हैं। हरेक आदमी को कम से कम 5 ग्राम पाउडर बरतन साफ करने के लिए चाहिए होता है। तो पूरा में 175 लाख ग्राम पाउडर फिर गटर में चला जाता है।

बाद में ऑफिस, स्कूल, बाजार जाने के लिए हम वाहनों का इस्तेमाल करते हैं। इस प्रदूषण से तो आम जनता परिचित है ही। पेट्रोल पंप से पेट्रोल डीजल की खपत से इस प्रदूषण का अंदाज लगाया जा सकता है।

आजकल पुणे में सामान्य आदमी (2000 रूपये महीना पाने वाले) के पास कम से कम 2 मोपेड होती हैं। मान लो, 10 लाख मोपेड़ों में कम से कम 1/2 लीटर (20-30 किलोमीटर के लिए) पेट्रोल का उपयोग सिर्फ सामान्य आदमी करता है। बस, कार, स्कूटर का हिसाब तो आप ही लगाइए।

सामान्यतः स्त्रियां सौंदर्य प्रसाधन के रूप में कम से कम पाउडर, बिंदी का प्रयोग तो करती ही हैं। पुणे में कुमकुम लगाने के लिए कम से कम 1 ग्राम कुमकुम का इस्तेमाल होता है जिसमें 5-6 रसायन, अंतर्निहित हो सकते हैं। 20 लाख ग्राम रसायन का हिसाब उधर हो गया जो मुंह धोने के बाद गटर में ही जाएगा। 3 लाख उच्चशिशित महिलाएं कम से कम 5 तरह के सौंदर्य प्रसाधन अपनाती हैं। जिसमें फेस-पैक, नेलपॉलिश, लिपस्टिक, रूज, परफ्यूम, बिन्दी शामिल हैं। 20 लाख ग्राम रसायन इसके द्वारा हर रोज हवा, पानी में फेंका जाता है। कम से कम 2 लाख पुरूष स्प्रे परफ्यूम दिन में 2 बार अपने ऊपर या अपने रूमाल पर छिड़कते है। कम से कम 4 से 20 लाख ग्राम रसायन हवा में इस तरह से हम जानबूझ कर फेंकते हैं।

सामान्य आदमी के पास आजकल कम से कम एक रेड़ियों होता ही है। 7 लाख लोगों के पास फ्रिज, टी.वी. स्टीरियो हैं। आजकल घरों में पानी खींचने के लिए मोटर लगी होती है। घर में इससे ध्वनि प्रदूषण फैलता ही रहता है। लेकिन सड़क पर इससे ज्यादा ध्वनि प्रदूषण स्कूटर, कारों, बसों, आदि के द्वारा होता है।

जब दिन ढलने के बाद रात आती है तो मच्छरों की याद आती है। इनसे निपटने के लिए कीटनाशक स्प्रे/अगरबत्ती, जिसमें कम से 4-5 रसायन रहते है, का हम उपयोग करते हैं। मान लो पुणे में सिर्फ 20 लाख लोग मच्छर मारने के लिए कीटनाशक छिड़कते हैं तो इससे 50 लाख ग्राम रसायन हवा में समा जाता है जो हवा प्रदूषित कर सकता है।

पूरे प्रदूषण का हिसाब-किताब तो हरेक इन्सान के मल-मूत्र से पूरा होगा। हरेक आदमी कम से कम 300 मिलि लीटर मूत्र और 250 ग्राम मल, नाक, मुंह के द्वारा 5-20 ग्राम श्लेष्म के जरिये दिन 1/2 किलो कम से कम व्यर्थ पदार्थ उत्सर्जित करता है। चलो मान लें 25 लाख पुणेवासी जनता शोचालय का इस्तेमाल करती है तो 7 1/2 लाख किलो ग्राम उत्सर्जित पदार्थ पूना की नदी में जाता होगा बाकी अन्य जगहों से 7 1/2 लाख किलो ग्राम उत्सर्जित पदार्थ से प्रदूषण गंदगी द्वारा होता होगा। तो देखिए, यह सामान्य मानव जीवन की नित्यप्रति क्रियाओं से कितना, रसायन युक्त प्रदूषित पानी गटरों द्वारा नदी, नालों में, जमीन में हर रोज चला जाता है लेकिन लौटता है फ़िर प्रदूषित अन्न, धान्य, दूध, जलचर और पानी द्वारा भस्मासुर जैसे असुर की तरह अपने ही हाथ से अपने को भस्म, नष्ट करने के लिए। यह खतरा

जानकर, विश्व में एक नयी इंकोलेबल प्रणाली जाग उठी है। वह प्रणाली नैतिक है।

कोई भी उत्पादन, जिसका निर्माण प्रयोग अथवा निपटान ऐसे तरीके से किया जा रहा है, जिससे उसके द्वारा पर्यावरण को होने वाली क्षति काफी हद तक कम हो जाती है तो उस उत्पादन को हम पर्यावरण मित्र कह सकते हैं।

भारत में पर्यावरण और वनमंत्रालय की ओर से पर्यावरण मित्र ले वाले प्रसाधन, साबुन, प्रक्षालकों, प्लास्टिक वस्तुओं, कागज और पैकेजिंग कागज रंग, स्नेहकों, खाद्य तेलों, खाद्य पदार्थ, बिजली उपकरण, कपड़ा, ऐरोसोल स्प्रे, काष्ठ विकल्प, कीटनाशक, औषधि वस्तुएं आदि के निर्माण का काम चल रहा है। यह इकोलेबल स्कीम पूर्णतः ऐच्छिक है। भारत सरकार के पर्यावरण और वन मंत्रालय की ओर से मिट्टी का घड़ा इस चिन्ह यानी "इकोमार्क" के लिए चुना गया है।

यह चिन्ह निर्धारित गुणवत्ता, सुरक्षा, उत्पादन सुरक्षा नियम का पूर्ण पालन करने वाले उत्पादक को मिल सकता है। आशा है जब ऐसे उत्पाद भविष्य में बनेंगे तो उसे खरीदकर सामान्य नागरिक अपने हाथ से न खुद की बल्कि पर्यावरण संरक्षण करने में भी जरूर मदद करेगा।

वन तथा जल प्रबंधन में जन सहयोग

कर्नाटक राज्य भारत के उन राज्यों में से एक है, जहां वनों की काफी अधिक बहुतायतता है। राज्य में 38,894 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में वन हैं जो कि राज्य के क्षेत्रफल का 20.15 प्रतिशत भाग है।

राज्य का वन विभाग विभिन्न कार्यक्रमों को अपनाकर वनों के संरक्षण में लगा हुआ है। राज्य को अधिक राजस्व दिलाने में वन विभाग कार्य कर रहा है। इसके लिए वन प्रबंधन के विद्धान्तों को अपनाया जा रहा है। भारतीय वन सर्वेक्षण की रिपोर्ट के अनुसार राज्य में 64 वर्ग किमी. के क्षेत्र में वनों को बढ़ाया गया है। वर्ष 2000-01 के दौरान वन विभाग द्वारा वनीकरण कार्यक्रम के अन्तर्गत 55,949 हेक्टेयर क्षेत्र जो कि वन-विहीन था, में वनों को लगाने तथा उसके संरक्षण की ओर कार्य किया जा रहा है। वनोपज की क्षेत्रीय जनता में बढ़ती मांग को दृष्टिगत रखते हुए तथा वनों पर आधारित औद्योगिक इकाईयों द्वारा वनोपज की मांग को देखते हुए वनीकरण की ओर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। मांग सर्वेक्षण के अनुसार लगभग 61 अरब वनोपज बीजों का विवरण किया गया है। राज्य में वन्यजीव संरक्षण की वृद्धि तथा दावग्नि, पर्यावरणीय क्षति तथा अवैध शिकार और अतिक्रमण की ओर भी ध्यान दिया जा रहा है।

भारत सरकार द्वारा प्रोजेक्ट टाइगर के संरक्षण तथा नागरहोल राष्ट्रीय पार्क में जैव-विकास कार्यक्रमों की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। राज्य में स्थानीय लोगों का सहयोग भी वन विकास में लिया जा रहा है। विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत पर्यावरण की ओर ध्यान देते हुए जलाऊ लकड़ी के लिए मुख्य प्राथमिकता देते हुए वनों के लिए नीति बनाई गई है ताकि ग्रामीण क्षेत्र के निवासियों को जलाऊ लकड़ी प्राप्त हो सके तथा वनों का संरक्षण भी किया जा सके।

वनों का संरक्षण

अतिक्रमण की समस्या वनों के लिए बहुत ही घातक सिद्ध हुई है। वनों में लगने वाली आग, जिससे वनों की उर्वरकता तो प्रभावित होती ही है, साथ ही वनों के नष्ट होने की संभावना भी शत-प्रतिशत रहती है। वनों की चाहरदीवारी तथा तारबाड़ तथा कार्ययोजनाओं को ठीक एवं प्रभावी ढंग से लागू करके वनों का संरक्षण किया जा रहा है।जल संरक्षण के क्षेत्र में भी 9 जिलों के 34 तालुकों में जल संग्रहण के लिए तालाब बनाए गए हैं। राज्य में प्रति वर्ष पड़ने वाले सूखे से निपटने के लिए इन तालुकों में विश्व बैंक की सहायता से तालाब बनाए जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों में स्थानीय जनता का सहयोग लिया जा रहा है।

विश्व बैंक द्वारा 2000-3000 जल संग्रहण तालाब बनाने की योजना है जिन्हें आगामी 5 वर्षों में पूरा किया जाना है। अभी तक राज्य में 36969 तालाब हैं।

—डा० दीपक शर्मा

नामों से एक दूसरे का अभिवादन करती हैं डॉल्फिन

वाशिंगटन। स्कॉटलैंड स्थित 'यूनिवर्सिटी ऑफ सेंट एन्ड्रयूज' के एक जीवविज्ञानी विंसेंट जैनिक का कहना है कि डॉल्फिन 'नाम' से एक दूसरे का अभिवादन करती हैं और अंधेरे जल सागर तथा दूरियों में एक- दूसरे से सम्पर्क बनाये रखने के लिए भी वह एक दूसरे के नामों को पुकारती हैं। इसके लिए वह विशेष प्रकार की सीटी जैसी ध्वनि निकालती हैं।

विसेंट जैनिक के इस अनुसंधान अध्ययन के अनुसार डॉल्फिनों के पास स्पष्ट और सुसंगत शब्द भंडार है और वह एक-दूसरे को अलग-अलग पहचानने में भी समर्थ होती हैं। जीवविज्ञानी विंसेंट जैनिक का कहना है कि, 'प्रत्येक डॉल्फिन इसके लिए अति विशिष्ट संकेत स्वर विकसित कर लेती है और हमेशा एक प्रकार की 'कॉल' का इस्तेमाल करती है, जिसे कुछ लोग 'नाम' कह सकते हैं।' जैनिक ने स्कॉडलैंड के 'मॉर फिर्थ' नामक सागर तट पर 'बॉटलनोज' डॉल्फिनों पर अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला है।

उन्होंने छह हाइड्रोजन और कम्प्यूटर आधारित तरीकों का इस्तेमाल करके डॉल्फिनों की १,७१६ प्रकार की विशेष सीटियों अथवा ध्वनियों को पकड़ा और उनका अध्ययन किया है। 'सैल्मन' पकड़ने या अपना आहार पाने के लिए यह डॉल्फिनें जलडमरूमध्य से इस तट पर आ जाती हैं।

जैनिक का कहना है डॉल्फिन यदि किसी भी स्थान पर दोबारा एकत्र होना चाहें तो वह एक-दूसरे के नामों को पुकार कर ऐसा आसानी से, कर लेती हैं। जैनिक का कहना है कि वह 'ध्वनि सम्पर्क' जैसा है। यह काफी कुछ उस तरह का है जिस तरह हम पक्षियों और मानवों के बारे में जानते हैं।' अपने अध्ययन में जैनिक ने यह भी पाया कि बंदरों और अन्य नरवानरों के समान डॉल्फिनें भी विभिन्न बोलियां बोलती हैं।

वैज्ञानिकों ने विशाल नक्षत्र को खोजा

अल पासो। पृथ्वी के पीछे बृहस्पति के आकार जितना परिक्रमारत एक नक्षत्र खोजा गया है। यह नक्षत्र इस रहस्योद्घाटन में मदद कर सकता है कि जीवन के विभिन्न स्वरूपों के कारण पृथ्वी ब्रह्मांड का एक अनमोल रत्न है।

यूनिवर्सिटी आफ टेक्सास की मैक्डोनल्ड वेधशाला में कार्यरत विलियम कोचरन का जारी एक विज्ञप्ति में कहना है कि जिस एप्सिलान इरिडानी नक्षत्र की यह परिक्रमा कर रहा है वह काफी कुछ हमारे सूर्य के समान है। विलियम कोचरन का कहना है कि यह घटना हमारे अपने ही पिछवाड़े में किसी ग्रह को खोजने जैसा है। विलियम के सहयोगी ज्योफ मर्सी का कहना है कि यह एक रोमांचक खोज है क्योंकि यह नक्षत्र स्वंय में एक ऐसा निकटवर्ती नक्षत्र है जिसको पहली बार किसी ग्रह के रूप में देखा गया है। यह नक्षत्र पृथ्वी से लगभग १० प्रकाश वर्ष दूर है। इस नक्षत्र का नाम बीब्लंड है।

लंबी उम्र वाले पेड़ों को विकसित किया

वाशिंगटन। कनाडा के वैज्ञानिकों ने जीन के आधार पर ऐसे पेड़ों का विकास किया है, जिनका जीवनकाल अधिक होगा और जिन पर अधिक और बेहतर फल लगेंगे। ऐसे पेड़ों का वातावरण और कीटों का प्रभाव भी नहीं पड़ेगा। विशेषज्ञों का कहना है कि जीनों में फेर बदल करके उगाये गये पेड़ों पर कीटनाशकों के छिड़काव की जरूरत नहीं होगी क्योंकि इन पेड़ों के संपर्क में आने वाले कीट स्वंय ही मर जायेंगे। तथा इन पर लगने वाले फल भी काटने के बाद घंटों लाल नहीं होगें।

वैज्ञानिक अभी यह पता नहीं लगा पाये हैं कि ऐसे पेड़ों का वातावरण और परिस्थितिकी पर क्या प्रभाव पड़ेगा। इस्राइल में सामान्य पेड़ों की पैदावार में वृद्धि कर दी गयी है इसकी वजह से पुराने घने जंगलों को बनाये रखने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि ये पेड़ कार्बन डाई आक्साइड की ज्यादा मात्रा सोखकर वातावरण में बढ़ती उष्मा को कर देंगे।

उत्तरांचल में हाथियों का उत्पात जारी

गत सप्ताह में चार बार जंगली हाथियों द्वारा देहरादून के ग्रामीण क्षेत्रों में फसलों को नष्ट किए जाने तथा नागरिकों को घायल किए जाने का समाचार है। गन्ने तथा बाजरे की फसलों को नष्ट किए जाने का समाचार चांदमारी ग्राम (डाईवाला) से मिला है।

क्षेत्र के नागरिकों का इस सम्बंध में कहना है कि विगत 50 वर्षों में यह पहली बार हुआ है कि लच्छीवाला रेंज में हाथियों द्वारा खड़ी फसलों पर इस प्रकार हमला किया गया है। साथ ही क्षेत्र के मिस्सर वाला, सतीवाला, गुल्ला वाला, खैरी तथा सिगंलास में लगभग 500 परिवार हाथियों द्वारा किए गए उत्पात से प्रभावित हुए हैं। कृषक जो अधिकतर छोटे भूमिधर हैं हाथियों को भगाने के लिए पटाखों को जलाते टायर तथा कनस्तर-ड्रमों को बजाकर सारी रात जाग रहे हैं। वन विभाग में इस घंटना की जानकारी देने पर वन विभाग के रेंजर कर्मचारियों की कमी का रोना-रो रहे हैं तथा प्रभावी कार्यवाही कर पाने में असहाय हैं। ग्रामीण दलवीर सिंह का इस सम्बंध में कहना है कि यदि झूठी रिपोर्ट की जाए कि खेत में सूअर मार दिया गया है तो तुरन्त ही 20 वनकर्मियों का झुण्ड आकर ग्रामीण को तंग करता है।

ग्राम सभा के सदस्य मेंगा सिंह का कहना है कि हाल के हमले का कारण क्षेत्र में बहने वाली 200 मीटर चौड़ी सुसवा नदी है जो कि हाथियों के लिए सीमा का कार्य करती है। इस नदी के आसपास के क्षेत्र में फसलों तथा गन्ने की खुशबू के कारण हाथी प्रायः इन क्षेत्रों में फसल नष्ट करने चले आते हैं।

—डा० दीपक शर्मा

खारे पानी की सांभर झील का अस्तित्व खतरे में

जयपुर। खारे पानी की देश की सबसे बड़ी सांभर झील का अस्तित्व आज खतरे में पड़ गया है। एक तरफ केन्द्र सरकार इस क्षेत्र को निजी हाथों में देने का तत्पर है दूसरी तरफ स्थानीय प्रशासन इस क्षेत्र में पानी का स्वतंत्र बहाव अवरूद्ध कर रहा है और इससे झील का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर के रामसर समझौते के अनुसार सांभर झील देश के अंतर्राष्ट्रीय महत्व के छह आर्द्र क्षेत्रों में से एक है। यह खारे पानी की झील देश की सबसे बड़ी झील है। और इसकी परिस्थिति को बरिकरार रखने की जिम्मेदारी भारत सरकार की है। इसके बावजूद झील का इलाका निजी क्षेत्र को बेचकर इसका अस्तित्व संकट मं डाला जा रहा है। इसक ७४ प्रतिशत शेयर मुम्बई की एक कैपीटल मार्केट कंपनी के मार्फत बेचे जाने का सौदा किया गया है। जबकि राज्य सरकार ने यह क्षेत्र वापस उसे देने की मांग की है।

सांभर झील २६ अप्रैल १६६१ के पंचाल द्वारा भारत सरकार को ६६ वर्ष के लिये लीज पर दिया गया था। इसके तहत राजस्थान सरकार का इस अवधि के लिये प्रतिवर्ष सासढ़े पांच लाख रूपया किराया दिया जाना तय किया गया था।

आशंका है यदि यह क्षेत्र निजी हाथों में दे दिया गया तो अधिक नमक उत्पादन के लाभ में वे यहां झील के तल तक खुदाई कर इसे नष्ट कर देंगे।

आयुर्वेद संबंधी जानकारी इन्टरनेट पर डाली जाएगी

नयी दिल्ली। आयुर्वेदिक दवायें बनाने में काम आने वाली जड़ी बूटियों के पौधे प्राप्त करने तथा उनके संरक्षण के लिये सरकार एक हजार करोड़ रूपये की परियोजना शुरू करने जा रही है। इसके अलावा आयुर्वेद के बारे में प्राचीन साहित्य को इंटरनेट पर लाने की भी योजना है ताकि विश्व को स्वास्थ्य के क्षेत्र में भारत को इस समृद्ध विरासत की जानकारी मिल सके।

सरकार देश में पुश्तों और पीढ़ियों से चली आ रही आयुर्वेद संबंधी समस्त जानकारी को एकत्र कर इंटरनेट पर डालने की योजना बना रही है। इस योजना के तहत हमारे भारतीय धर्म ग्रंथों में दी गयी इलाज की तकनीक और चिकित्सा पद्धति को वेबसाइट के द्वारा इंटरनेट पर डाला जाएगा। जिससे उक्त जानकारी का लाभ व्यापक स्तर पर उठाया जा सके। इस योजना की सफलता की आशा की जा रही है।

गोमती नगर में परिंदों के अस्पताल की स्थापना होगी

लखनऊ। जैन धर्म में जीव रक्षा का बड़ा महत्व है। इसी नियम के तहत श्री 1008 भगवान चन्द प्रभु सेवा संस्थान द्वारा गोमती नगर विशाल खण्ड में पक्षियों के उपचार हेतु एक 'बर्ड हास्पिटल' बनाने का निर्णय किया गया है। प्रमुख अभियन्ता धर्मवीर जैन अंजलि जैन की देखरेख में यह कार्य शुरू किया जा रहा है।

ज्ञात हो कि दिल्ली लाल किले के सामने जैन लाल मंदिर में विगत कई दशकों से परिन्दों का एक अस्पताल चल रहा है। इसमें प्रतिदिन दुर्घटना के शिकार एवं अस्वस्थ पक्षियों का इलाज का उन्हें छोड दिया जाता है। इसी की तर्ज पर लखनऊ में भी पक्षियों का अस्पताल बनाया जा रहा है। गोमती नगर में निर्माणधीन मंदिर परिसर में इस चिकित्सालय के अतिरिक्त इस वर्ष क्षेत्रीय जनता के लाभार्थ एक औषधालय की भी स्थापना की जानी है।

इस संदर्भ में जीव दया के प्रचारक जैनाचार्य विद्यासागर से दिशा निर्देश प्राप्त करने के लिए एक दस सदस्यीय दल मंदिर के मंत्री मगल लाल जैन के नेतृत्व में जबलपुर गया हुआ है।

संस्थान से जुडे निर्माण संयोजक सुरेश चन्द जैन ने बताया कि पक्षी चिकित्सालय प्रदेश में अपने प्रकार की विशिष्ट संस्था होगी जो निरीह पक्षियों को स्वास्थ्य लाभ देगी।

इस चिकित्सालय में पक्षियों को स्वच्छन्द वातावरण में रहने, आहार व चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध करायी जायेगी। उनकी देख-रेख के लिए मंदिर में निर्माण कार्य शुरू हो गया है। संस्थान के अध्यक्ष शिखर चन्द्र जैन ने इस अस्पताल को जल्द ही शुरू करने में पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया है।

●●●

ऐमू परिवार में वृद्धि के लिए नयी योजना

लखनऊ चिडियाघर में बारह वर्ष पहले डरबन से आये ऐमू पक्षी के परिवार में अब तक कोई वृद्धि नहीं हुई हैं। प्रतिवर्ष होने वाले अण्डों से बच्चा न निकलने से हारकर इस बार अण्डों को चिड़ियाघर अस्पताल के 'इन्क्यूरेटर' और पशुपालन विभाग के माध्यम से निजी फार्मों में रखवाकर बच्चा निकालने का प्रयास करेगा। चिड़ियाघर में रह रहे दो ऐमू पक्षियों को 'डरबन' से चार पेन्टेड स्टार्क पक्षी के बदले लाया गया था। ऐमू दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा पक्षी है। चिड़ियाघर में रह रहे दोनों ऐमू पक्षी मादा है। चिड़ियाघर के वातावरण और पक्षियों की परवरिश में कमी मान कर इन अण्डों को अलग रखने की योजना बनायी गयी है। ऐमू पक्षी आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड में पाये जाते हैं। यह वर्ष भर में एक बार अण्डा देते हैं। ऐमू की उम्र तीस से पैंतीस वर्ष होती है। चिड़ियाघर में रह रहे ऐमू की उम्र लगभग बीस वर्ष है। ऐमू की जंगली आहार, बीज, छोटे-मोटे कीडे-मकौडे, चींटियां होती है। चिड़ियाघर में इनकों भीगा चना, मूगफली, लहसुन, हरा साग भी दिया जाता है। ऐमू अपने दूश्मनों से अपनी रक्षा पैर के वार से करते हैं। चिड़ियाघर निदेशक बी.प्रभाकर के अनुसार इस वार वे अण्डे को पशुपालन विभाग और कुछ निजी फार्मों पर रखवायेंगे जिससे उनसे बच्चे निकलने की पूरी संभावना है।

डीजीपी ने नाटक देखा

तेज आवाज वाले पटाखो किस तरह जीवन को नुकसान पहुंचा सकते हैं, यह दिखा नुक्कड नाटक 'तेज पटाखे की आवाज से प्रदूषण को रोकना' में।

यायावार मंडल की यह अल्पअवधि की प्रस्तुति पुलिस लाइन में आयोजित हुई। जीतेन्द मित्तल के निर्देशन में संपन्न हुए नाटक को पुलिस महानिदेशक आर.के.पंडित ने भी देखा।

डीजीपी ने इस अवसर पर अपने संबेधन में अभिभावकों पर अपने संबोधन में अभिभावकों का आह्वान किया कि वे आतिशबाजी में शामिल अपने बच्चों की और विशेष ध्यान रखें। उन्हें तेज आवाज वाले पटाखों से होने वाले नुकसान के बारे में जानकारी दें।

मक्के की खेती ने दिखाई नयी राह

–निरंकार सिंह

उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जिले की ग्राम विकास समिति ने मक्के की उन्नतशील खेती का प्रदर्शन किसानों के खेतों पर करके उसका उत्पादन ढायी से तीन गुना बढ़ा दिया है।

इस समिति के कर्मचारियों की प्रेरणा से किसान खेती के नये तौर तरीके अपना कर अपनी माली हालत को भी सुधार रहे हैं। भारत सरकार के कृषि मंत्रालय के तहत मक्के की खेती की इस सफलता को देखकर केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री श्रीपाद यस्सो नाइक भी हैरत में पड गये। सरकार की इस योजना की सफलता के पीछे श्री नाइक का भी हाथ है।

उन्होंने बाराबंकी और लखनऊ में आकर न केवल किसानों को उन्नतशील मक्के का बीज वितरित किया बल्कि फसल तैयार होने पर उसे देखने भी आये।

अपनी योजना की सफलता से गद्गद कृषि राज्य मंत्री ने ग्राम विकास समिति के कर्मचारियों की
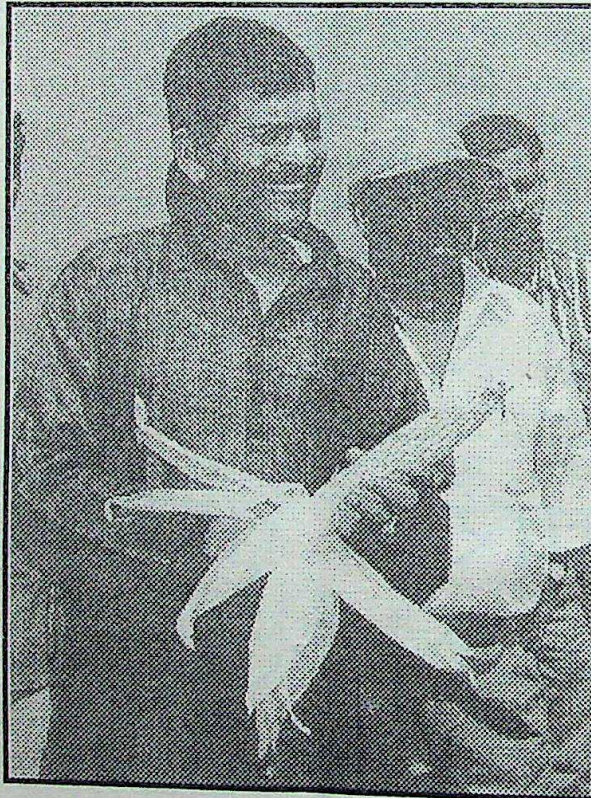
भी सराहना की। लेकिन सवाल यह उठता है कि मक्के का उत्पादन बढ़ाकर जो काम ग्राम विकास समिति ने कर दिखाया है वह कार्य हमारे देश में कृषि विभाग, खंड विकास अधिकारी तमाम सुविधाओं के बावजूद क्यों नहीं कर पा रहे हैं? जाहिर है कि कृषि योजनाओं को पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ लागू किया जाय तो हम अपना खाद्यान्न उत्पादन दो से तीन गुना बढ़ा सकते हैं।

लेकिन इसके लिए कोई न कोई निगरानी या जांच की व्यवस्था विकसित करनी पड़ेगी जिससे योजनाओं के लागू होने से लेकर अन्तिम परिणाम पाने तक भ्रष्टाचार, जातिवाद और अनुशासन हीनता का हम मुकाबला कर सकें।

बाराबंकी की ग्राम विकास समिति की सफलता ने जो राह दिखाई है उससे हम नया माडल तैयार करके पूरे देश में अपना खाद्यान्न उत्पादन बढ़ा सकते हैं।

विश्व में मक्के का खाद्यान्न की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण स्थान है। गेहूँ और चावल के बाद इस फसल का विश्व स्तर पर तीसरा स्थान है। क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का विश्व में पांचवा एवं उत्पादन की दृष्टि से ग्यारहवा स्थान है।

यह अकेली एक ऐसी फसल है जिसे मानव भोजन के अतिरिक्त कई प्रयोगों में लाया जा सकता है जिसमें पशु आहार, स्टार्च, ग्लूकोज व तेल उत्पादन, (मक्का से 3050 किस्म की सामग्री बनती है,) प्रमुख है। इसके अतिरिक्त बेबीकार्न, स्वीटकार्न एवं पापकार्न के रूप में यह फसल बड़े शहरों में विशेष मान्यता रखती है।

भारत में जनसंख्या का घनत्व बहुत अधिक है इस शताब्दी तक अपने देश की जनसंख्या एक अरब से अधिक हो जायेगी।

इसके लिये देश में खेती योग्य भूमि 14.3 करोड़ हैक्टेयर से अधिक बढ़ने की कोई सम्भावना नहीं है।

अतः उपयुक्त फसल प्रणाली ही बढ़ती जनसंख्या के भोजन एवं वस्त्र की आवश्यकता की पूर्ति का एक मात्र विकास है।

फसल प्रणाली के मुख्य आयाम सघन खेती एवं मिश्रित खेती है सो विश्व भर में कृषि वैज्ञानिक इस बात पर एकमत है कि दुनिया को भूख से मुक्ति केवल मक्का ही दिला सकती है। इस कारण ही 21 वीं सहस्त्राब्दी को 'मक्का सहस्त्राब्दी वर्ष' घोषित किया है।

खाद्य सुरक्षा में मक्का का इस सहस्त्राब्दी में अत्यंत योगदान रहेगा व भारत सरकार कृषि एवं सहकारिता विभाग के तकनीकी मिशन ने मक्का, दाल, तिलहन, की उन्नतशील खेती के लिए प्रदेश के सात जनपदों को चुना है।

इस कार्यक्रम के तहत ग्राम विकास समिति जो इन्डियन पोटाश लि0 की सहयोगी संस्था है, को 1200 एकड़ मक्का की सहफसली खेती का प्रदर्शन करने की जिम्मेदारी सौपी गयी थी। इसमें प्रत्येक कृषक को खाद, बीज व दवा दी गयी है। कृषकों ने वैज्ञानिक ढंग से मक्के के साथ मूंग, उरद, अरहर, मूगंफली, ककड़ी सहित कई सब्जियां बोयी जिससे उन्होंने अतिरिक्त लाभ कमाया है। ग्राम्य विकास समिति ने लखनऊ, बाराबंकी, सीतापुर, सुल्तानपुर, में 900 एकड़ मक्का की सहफसली फसल बोई। इस खेती से किसानों का मक्के का उत्पादन पहले की अपेक्षा ढायी से तीन गुना अधिक बढ़ गया। इससे इन जिलों के किसान उत्साहित हैं और अब वे मक्के की खेती करना चाहते हैं। ■

भारतीय उपमहाद्वीप में भूगर्भीय परिवर्तन बढ़े

वैज्ञानिकों ने बताया है कि भारतीय प्लेट में भूगर्भीय तथा टेक्टोनिक परिवर्तन विगत दशक में देखने में आया है। यह परिवर्तन भूकम्पीय परिवर्तनों तथा टेक्टोनिक गतिविधियों के कारण असामान्य रूप से दृष्टिगत हुआ है। विगत दशक के दौरान आए भूकम्पों के कारण ही भारतीय प्लेट में असामान्य रूप से परिवर्तन दृष्टिगोचर हुआ है।

वैज्ञानिकों का इस संम्बन्ध में कहना है कि देश में भूकम्प क्षेत्रों में हुए परिवर्तन का प्रभाव एक प्रकार से आवश्यक था। भारतीय प्लेट के लिए शताब्दी में यह दशक बहुत अधिक सक्रियता का रहा है। उत्तरकाशी, लातूर, जबलपुर, चमोली, तथा भुज क्षेत्र में आए भूकम्प ने भारतीय शील्ड को प्रभावित किया है तथा इस कारण भूकम्पीय ऊर्जा का भारी मात्रा में उत्सर्जन हुआ है। प्रो0 जे0 एन0 नेगी, प्रमुख भूवैज्ञानिक, राष्ट्रीय भू-भौतिकी अनुसंधान संस्थान का यही मानना है।

जापान और चीन के बाद भारत का शील्ड क्षेत्र तथा हिमालय क्षेत्र तीसरा सबसे बड़ा भूकम्पीय क्षेत्र है, जिससे परिवर्तनीय भूकम्प गतिविधियों के कारण ऊर्जा अवमुक्त हुई हैं। भूकम्पीय प्रभावित उच्च क्षेत्रों में दो वर्षो के अन्तराल से भूकम्प आने की संभावना अत्यधिक प्रबल रहती है। वैज्ञानिकों का कहना है कि निम्न या सुप्त माने जाने वाले भूकम्पीय क्षेत्रों में भी काफी अधिक सक्रियता पाई गई है।

इन्हीं तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए समुद्री तटों की ओर आने वाले भूकम्प-जैसे पान्डिचेरी से 50 किमी. के आसपास वाले क्षेत्र भी अब जोन-3 में शामिल किए गए हैं। अब समय आ गया है जब हम भूकम्पीय नीति में तुलनात्मक अध्ययन करके सभी महानगरों तथा बड़े नगरों में भवन निर्माण नीतियों में तदनुसार परिवर्तन कर लें।

विश्व के अन्य नगरों तथा क्षेत्रों में आए भूकम्पीय परिवर्तनों की अपेक्षा भारतीय प्लेट में देखी गई भूकम्पीय ऊर्जा का आकलन अपेक्षाकृत काफी अधिक पाया गया है। —डा० दीपक शर्मा
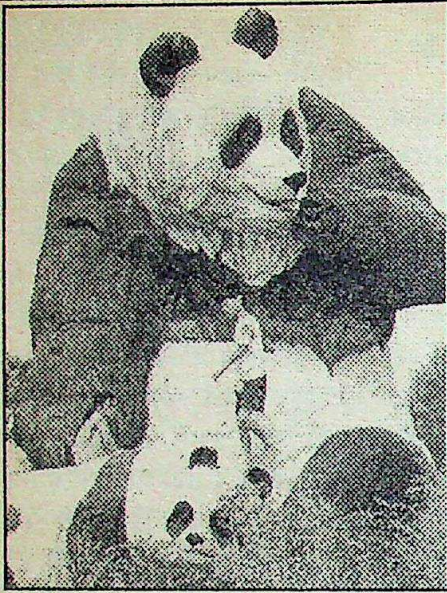
बीजिंग में दुर्लभ प्रजाति के एक पांडा की विशाल मूर्ति के साथ खेलते बच्चे
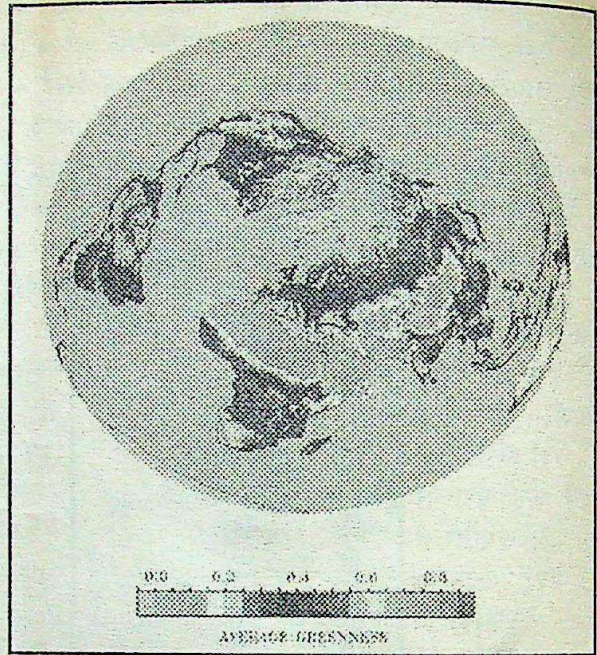
अंतरिक्ष से लिए गए पृथ्वी के इस चित्र को गत दिवस जारी किया गया। जिसके अनुसार उत्तरी गोलार्द्ध में हरियाली में वृद्धि हुई है।

अमेरिका के 'सन डिगो' चिड़ियाघर में मादा जिराफ अपने नवजात बच्चे को प्यार से सहलाते हुए
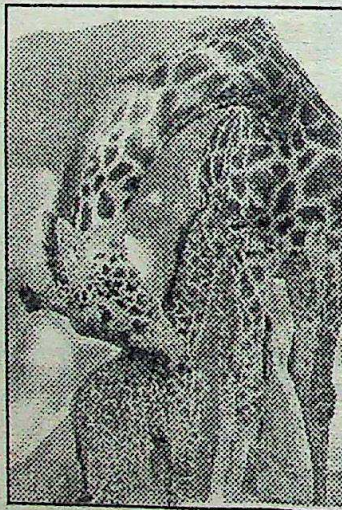
दक्षिणी आर्जेंटिना के प्रमुख ग्लेशियर 'पेरिटो मेरिनो' में उड़ता यह बैलून ग्लोबल वार्मिंग को नियंत्रित करने की चेतावनी देता हुआ।

थाईलैंड में हाथी पर बैठे बालक
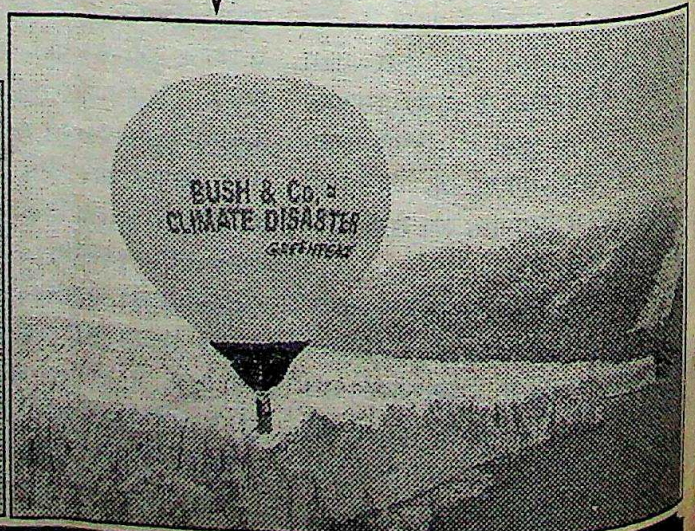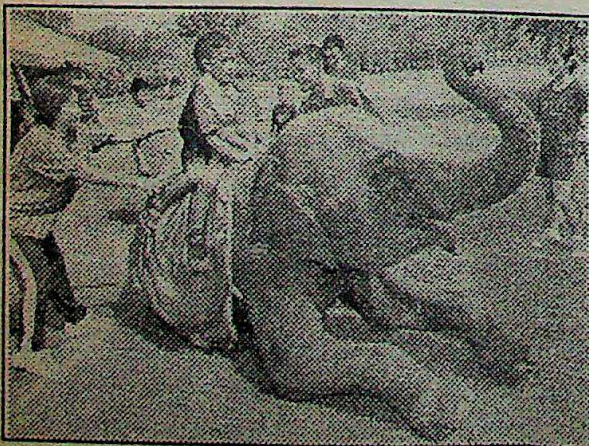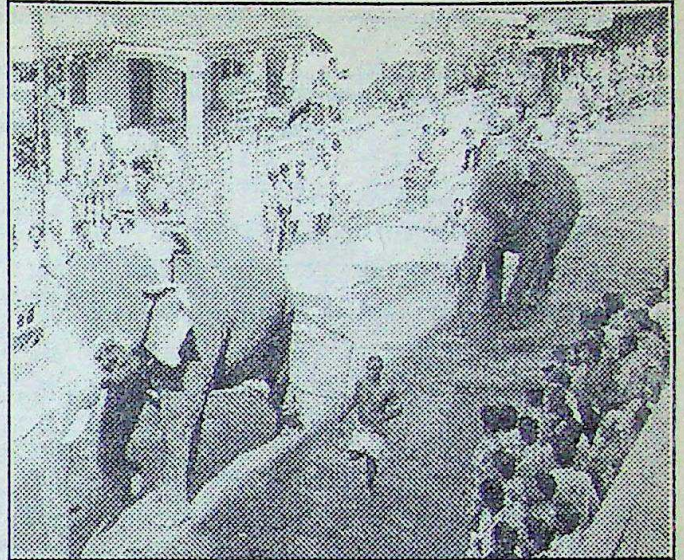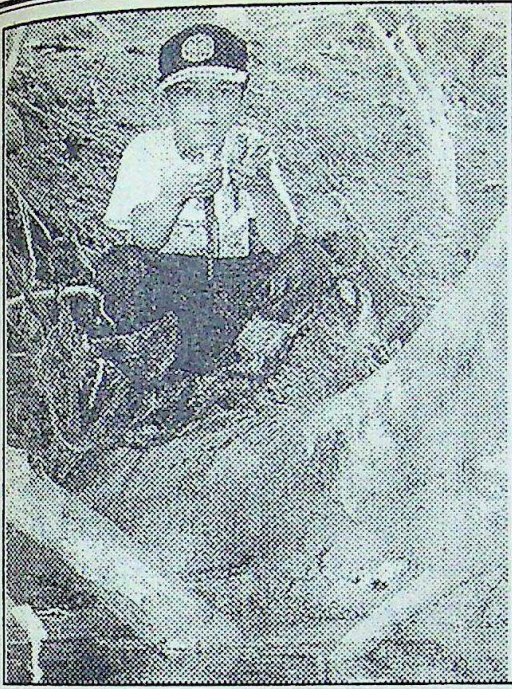
हिन्दू महोत्सव में तीस हाथियों की दौड़ का आनंद उठाते दर्शक

ब्राजील की मीडियो नदी में तेल के कारण मरी मछलियों को हाथ में पकड़े हुए बालक

इंग्लैंड में विगटन फार्म में अपने नवजात मेमनो के साथ खेलती उनकी मां

आस्ट्रेलिया, सिडनी में बोतल से दूध पीता सात सप्ताह का बंगाली बेबी टाइगर

पेरिस में हुए समारोह में गधों को निहारते लोग
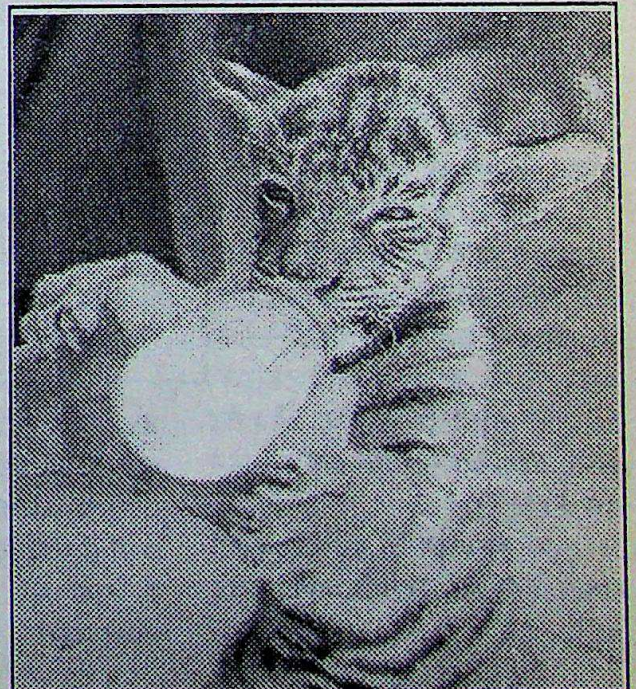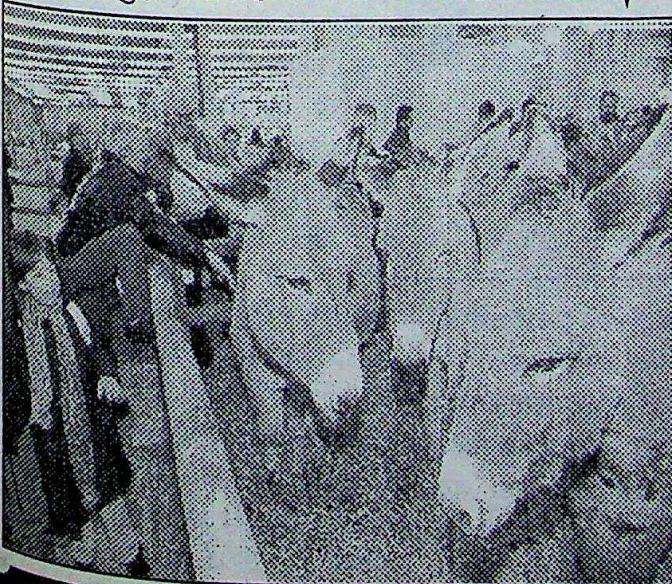
चौधरी नरेन्द्र सिंह के साथ खास मुलाकात

रसद एवं खाद्य मंत्री चौधरी नरेन्द्र सिंह। सीधा एवं सरल स्वभाव। कम बोलना जिनकी फितरत में शामिल है। छात्र जीवन से ही जनसेवा से जुड़े श्री सिंह की गिनती प्रदेश के काबिल और ईमानदार नेताओं में होती हैं इनकी छवि और कार्यशैली का ही नतीजा है कि इस वर्ष इनके विभाग ने अब तक रिकार्ड धान की खरीदारी की है। साथ ही इन्होंने इस पर भी ध्यान दिया कि प्रदेश में कोई भी व्यक्ति भूखा न सोये। फिलहाल वो अपनी किसान मजदूर बहुजन पार्टी के विकास पर भी विशेष ध्यान दे रहे हैं। अपने व्यस्त कार्यक्रम में से समय निकाल कर **पर्यावरण चेतना संवाददाता 'बृजमोहन सिंह'** से बातचीत की। चौधरी नरेन्द्र सिंह ने बताया कि इस वर्ष पूरे प्रदेश में 1570द धान क्रय केन्द्र खोले गये हैं। एक नवम्बर सन् 2001 तक कुल 12111 मीटरी टन धान खरीदा जा चुका है। जबकि पिछले वर्ष की इस तारीख तक यह मात्रा 4071 मीटरी टन थी। बिचौलियों से किसानों के हितों की रक्षा के बारे में श्री सिंह ने बताया कि वो खुद अचानक क्रय केन्द्रों पर जाकर इसकी जांच करते हैं साथ ही प्रतिदिन पूरे प्रदेश की खरीद की रिपोर्ट अपने पास मंगाते हैं। उन्होंने बताया कि प्रदेश में ऐसे बीस जनवदों को चिन्हित किया गया है जहां धान की आवक अधिक होती है। इसलिए इन जिलों में वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा व्यापक रूप से भ्रमण कर समीक्षा की जाती रहेगी। **प्रस्तुत हैं बातचीत के प्रमुख अंश–**

प्र.– अन्नपूर्णा योजना के तहत किस प्रकार वितरण हो रहे हैं?

उ0. इसमें दो लाख 6 हजार ऐसे बेसहारा व्यक्ति हैं जिन्हें कोई आय का जरिया नहीं है, इसके लिए पूरी व्यवस्था है और अधिकारी गॉव-गॉव में जाकर इसकी समीक्षा करेंगे और जिन्हें भी इस काम में कुछ गलत लगे तो वह एक पोस्ट कार्ड जिलाधिकारी, उपरोक्ता अधिकारी, खाद्य आयुक्त या मेरे यहां शिकायत करें। और उनके खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई की जाएगी।

प्र.– धान की खरीद के लिए आपके विभाग की क्या तैयारी हैं?

उ0. इसके लिए प्रदेश में 1605 क्रय केन्द्र खोले गये हैं, जिसके लिए उचित व्यवस्था की गयी है। धान की खरीद भी प्रारम्भ हो गयी है जिसके तहत 12 करोड़ रूपये पी.सी.एफ को, 4 करोड़ रूपये (एग्रो) तथा 4 करोड़ रूपये उपभोक्ता सहकारी संघ को दिये गये हैं।

प्र.–भण्डारण की इस वर्ष कितनी क्षमता है? और कितनी धान खरीद हुई?

उ0. भण्डारण की पर्याप्त क्षमता है और इस वर्ष रिकार्ड धान खरीदी गई है, जिससे लोगों और किसानों में विश्वास पैदा हुआ है। तथा इस वर्ष
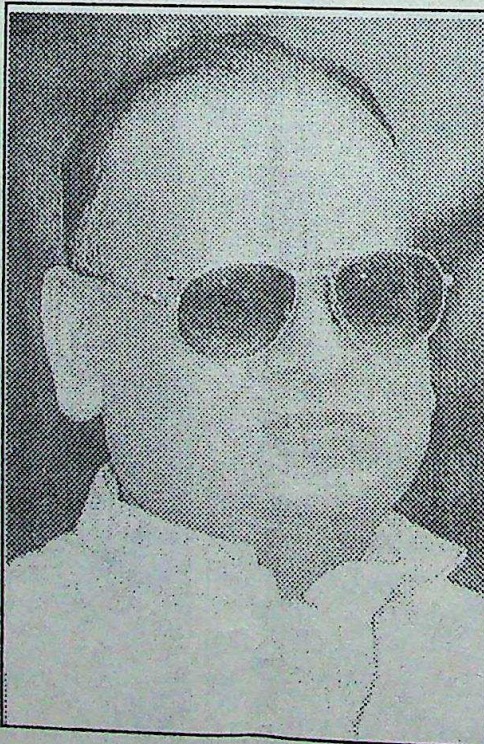
आठ लाख मेट्रिक टन धान खरीदने का लक्ष्य है जो वह अवश्य पूरा करेंगे।

प्र.–किसानों की समस्याओं दूर करने के लिए किसान बन्धु समिति गठित की गयी थी, यह समिती कहा तक सफल रही?

उ0. इस समबन्ध में सहयोग के लिए सभी विधायकों और सांसदों को पत्र लिखा है। तथा इसकी समीक्षा वह स्वयं कर रही है। और इस बार कोई शिकायत नही आयी, जिसके लिए उन्होंने अधिकारियों को अच्छा कार्य करने के लिए पुरस्कृत किया है।

प्र.– राजनाथ सिंह के साथ कैसा अनुभव रहा?

उ0. राजनाथ सिंह काफी सक्षम व्यक्ति हैं।

प्र.–आपकी पार्टी की चुनावी तैयारियां क्या हैं?

उ0. सभी जनपदों में मासिक समीक्षा बैठक हो रही है, मंडल स्तर पर प्रतिक्षण शिविर भी लगाये जा रहे हैं। इसमें 11 सौ लोगों को प्रशिक्षित किया गया। एक शिविर उन्होंने लखनऊ में लगाया था जिसमें 86 लोगों की एक साथ रखा गया, जिनमें 30 कोआर्डिनेटर नियुक्त किये गये। उनका सदस्यता अभियान काफी तेजी से चल रहा है। और आगामी माह में उनकी पार्टी की ओर से छात्र और महिला सम्मेलन भी कराये जायेंगे।

प्र.– चुनाव में अपनका किस पार्टी के साथ समझौता होगा?

उ0. किसान मजदूर, बहुजन पार्टी, भाजपा व सहयोगी दलों के साथ मिलकर चुनाव लड़ेगी और इसका किसी पार्टी में विलय नहीं होगा।

पर्यावरण के क्षेत्र में रोजगार के अवसर

—मनीष कुमार

मनुष्यों तथा सभी जीवधारियों के चारों ओर उपस्थित वह सब जो उस पर प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव डालता है पर्यावरण कहलाता है। जल, थल, वायु, ऊर्जा, सूक्ष्म तथा वृहद् जीव जन्तु तथा पादप यह सब पर्यावरण के अंश है। पर्यावरण के अन्तर्गत 'परिस्थितिक' तथा 'पारिसथितिकी तन्त्र' शामिल है। परिस्थितिकी से तात्पर्य है- 'जीव तथा पर्यावरण के पारस्परिक संबंध ा को परिस्थितिकी कहते है। 'परिस्थितिकी तन्त्र, परिस्थितिकी का ही शुद्ध रूप है। जिसेA.G.Tansley(1935 Britisgh) ने परिभाषित किया- "किसी क्षेत्र में कार्य करने वाले जैविक तथा भौतिक अंशी की पारस्परिक क्रिया को परिस्थितिकी तन्त्र' कहते है।"

पर्यावरण के प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष प्रभाव का असर सबसे अधिक मनुष्यों पर पडता है। क्योकि वह अपनी वृद्धि, विकास तथा सुव्यवस्थित रूप से अपना जीवन चक्र चलाने के लिए पर्यावरण पर निर्भर है। लेकिन पिछले कुछ दशको से जिस तेजी से पर्यावरण प्रदूषण की समस्या बढ़ रही है उसने मनुष्यों को यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि यदि अनियात्रित औद्यौगिक विकास, प्रदूषण, मनुष्यों को सन्तुलित प्राकृतिक पर्यावरण में हस्तक्षेप तथा जीवी, वनस्पतियों और जैव विविध ताओं के विनाश की गति यही रही तो इस धरती पर लम्बे समय तक मानव जीवन का बने रहना असम्भव होगा। हाल ही में कुछ जटिल समस्याओं जैसे-भोजन परत में छिद्र, ग्रीन हाउस प्रभाव, ग्लोबल वार्मिग तथा अन्य पर्यावरण समस्याओं की वैज्ञानिकों ने खोजा हैं इस समस्याओं को रोकने के लिए तथा इनके समाधान के लिए सबको मिलकर एक मंच पर एकत्रित होकर ठोस कारगर कदम उठाने होगे। जिसकी पहल 1972 में संयुक्त राष्ट्रसंघ (यू.एन.ओ.) द्वारा आयोजित Storkhalm Conference में भी गई जिसमें Ruman Cunironment को अनुकूल व सुधारने के लिए ठोस कार्यक्रम तथा नीतियां बनायी गई जिसके अन्तर्गत पर्यावरण शिक्षा एक प्रमुख तथा बडे स्तर का कार्यक्रम है। इसके द्वारा बुजुर्गो, बच्चों और विशेषकर युवा पीढ़ी की पर्यावरण प्रदूषण के प्रभावों तथा कुप्रभावों के प्रति जागरूकता करना है।

भारत के साथ-साथ विश्व में भी पर्यावरण से संबंधित विभिन्न परियोजनाओं तथा कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिनमें कुछ प्रमुख इस प्रकार है।

1. समुदाय आधारित पर्यावरण संरक्षण पर क्षेत्रीय कार्यशाला- नई दिल्ली ।
2. ग्रामीण बालकों के लिए पर्यावरण शिक्षा तथा संचार परियोजना- तमिलनाडु।
3. देशराज के अभिलेखन के माध्यम से जैवविविधता के प्रति जागरूकता- खोनोमा-(आसाम)
4. पर्यावरण और समाज-शिक्षा और जन जागरूकता -येरूलिनिकी- (ग्रीस)
5. विकास के लिए पर्यावरण शिक्षा- हवाना- (क्यूबा)
6. इन्वायरमेन्ट जेयूबीस (पर्यावरण एवं युवक) - कनाडा

जिस प्रकार भौतिक शास्त्री, रसायन शास्त्री, जीव शास्त्री, भूगर्भ शास्त्री, तथा विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ उपस्थित अपने क्षेत्रों में कार्य करके विकास के नये आयाम खोल दिये है। उसी प्रकार पर्यावरण विषय के विशेषज्ञ पर्यावरण विद् की भारत जैसे विकासशील देश के लिए अति आवश्यकता है क्योंकि यहां पर पर्यावरण संबंधित समस्याएं विकराल रूप धारण किये हुये लगातार बढ़ती जा रही है।

पर्यावरण विषय के अन्तर्गत हवा, जल, मृदा, ऊर्जा तथा जीवों तथा पादपो के चारों ओर उपस्थित वह सब जो पर्यावरण के अंश है उनका अध्ययन तथा उनके बीच पारस्परिक संबंधी की क्रिया विधि का वर्णन होता है। पर्यावरण की विभिन्न विषयों तथा क्षेत्रों से संबंधित करके उसे विभिन्न भागों में विभाजित किया गया है जिनमें कुछ महत्तवपूर्ण निम्न है।

1. पर्यावरण जन्तु-पादप विज्ञान
2. पर्यावरण रसायन विज्ञान
3. पर्यावरण भौतिक विज्ञान
4. पर्यावरण भूगर्भ विज्ञान
5. पर्यावरण ऊर्जा विज्ञान
6. पर्यावरण विधि
7. सामाजिक पर्यावरण विज्ञान
8. पर्यावरण प्रबन्धन

पर्यावरण के लिए सबसे अधिक प्रदूषित कारक प्रदूषण है। प्रदूषण को कम करने तथा रोकने के लिए पर्यावरण से संबंधित विभिन्न प्रकार के कानून तथा इसके विभिन्न अंशों (जल, वायु, मृदा तथा अन्य) का जैविक, भौतिक तथा रासायनिक अध यन किया जाता है जो निम्न विश्लेषणों तथा अध्यनों पर आधारित है

1. पर्यावरण विश्लेषण
2. पारिस्थितिकी तन्त्र विश्लेषण
3. सामुदायिक अध्यन
4. पर्यावरण विघटन
5. जैव विविधता संरक्षण
6. पर्यावरण मॉनीटटिंग, प्रभाव निध ारण तथा पर्यावरण विकास का अध्यन।

विश्व के साथ-साथ भारत के विभिन्न विश्व विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में पर्यावरण विषय स्नातक तथा परास्नातक स्तर पर शिक्षा क्षेत्र में शामिल है। इसके अतिरिक्त सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थानों द्वारा डिप्लोमा कोर्स चलाये जा रहे हैं। लखनऊ दिल्ली तथा अन्य विश्व विद्यालयों में डिग्री कोर्स के साथ-साथ रोध कार्य भी प्रारम्भ हो गया है।

पर्यावरण की शिक्षा प्रत्येक स्त्री-पुरूष

के लिए समान रूप से आवश्यक होनी चाहिए क्योंकि पर्यावरण का प्रभाव प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से सभी प्राणियों पर पडता है। इस क्षेत्र में एक अकेले व्यक्ति का योगदान भी बूंद-बूंद से घडा भरने के समान हैं पर्यावरण विषय की विश्व विद्यालय के साथ-साथ स्कूल स्तर पर भी लागू किया जाना चाहिए जिसमें हम आने वाली पीढ़ी को प्रारम्भ से ही पर्यावरण के प्रति जागरूक कर सके इसके लिए भारत में प्रयास भी शुरू कर दिये गये है। भारत सरकार ने लगभग प्रत्येक राज्य में पर्यावरण शिक्षा केन्द्र (सी.ई.ई.) खोले हैं। जिनका कार्य 'योजना शिक्षा' तथा पर्यावरण जागरूक कार्यक्रम के जरिये समाज तथा आम नागरिक को हस स्तर पर 'सन्तुलित व स्वच्छ पर्यावरण से अच्छे स्वास्थ्य की ओर' नामक अवधारण से जोडना है। कुछ (सी.ई.ई.) केन्द्रों को वर्णन नीचे दिया गया है।

1. centrl for enviromental education thalty tekra ahemdabad- 380054

ph. 079-6442642/51, E mail-cee india @ vsnl. com

2. cee- 18 green park, anndh pune- 411007

ph. 020-5885875, E mail,cee,central @ vsnl. com

3- cee-Iccmrt bunilding. 21/467 ring road, Indra Nagar,Lucknow-226016, ph.-0522-342381,E mail cee North @ wl vsnl net. com

4- cee-s-230 greates New Delhi - 110048

ph- 011-6238048, e-mail-Shyamala @ del2 vsnl. net. in.

विभिन्न सरकारी तथा गैर सरकारी इंजीनियरिंग कालेज तथा संस्थानों में पर्यावरण इंजीनियरिंग में स्नातक तथा परारनातक की डिग्री प्रदान की जा रही है। जिसके पश्चात town and country playingn, ruman settlement, slum impromentand industrial denigs तथा इससे संबंधित अन्य क्षेत्रों में रोजगार प्राप्त किया जा सकता है।

हाल के कुछ दशकों से जिस तरह से पर्यावरण की समस्या उत्पन्न हुई है और पर्यावरण शिक्षा का प्रसार हुआ हैं। पर्यावरण विज्ञान एक बहुउपयोगी विषय के रूप में प्रस्तुत हुआ है। इस क्षेत्र में रोजगार करने से मनुष्य धनोपार्जन के साथ-साथ पर्यावरण को भी स्वच्छ रखने में सहयोग कर सकता है। इसमें सरकारी तथा गैर सरकारी क्ष्वेत्र में रोजगार करने के अतिरिक्त अपना निजी रोजगार की प्रारम्भ किया जा सकता है।

सरकारी तथा गैर सरकारी क्षेत्र की औद्योगिक इकाइयों, विभिन्न संस्थानों, संगठनों, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड तथा अन्य पर्यावरण से संबंधित क्षेत्रों में कार्य किया जा सकता है।

पर्यावरण विषय से शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात विभिन्न क्षेत्रों में जैसे-प्रोजेक्ट की ऑडिनेटर, सांइटिस्ट, इंजीनियर, पर्यावरण नीति तथा प्रबंधन में रोजगार की अपार संभावनाएं है। प्रदूषण की बढ़ती समस्या के कारण औद्योगिक इकाईयों तथा अन्य जगह पर्यावरणविद की नियुक्ति आवश्यक है। ❖

अधिक से अधिक वृक्ष लगाने का सुझाव

पर्यावरण संरक्षण और प्रदूषण रोकने के लिए बस्ती के मण्डलायुक्त ने ग्रामीणों से अधिक से अधिक वृक्ष लगाने का सुझाव दिया, साथ ही वृक्षों की सजगता से रक्षा भी करने पर बल दिया। उन्होने वृक्ष को मानव जीवन के लिए बहुत उपयोगी बताया है। पर्यावरण के प्रति अति सजग बस्ती मण्डल के मुण्डलायुक्त विनोद शंकर चौबे ने कुआनों नदी पार के बारह क्षेत्र में ग्राम पंचायत द्वारा वन विभाग को दी गयी भूमि पर वैदिक मन्त्रोचारण के साथ वृक्षारोपण के बाद गांव वालों से कहा कि वृक्षारोपण कार्यक्रम में अधिक से हिस्सा लें, तथा अन्य लोगों को अपने-अपने घरों के आसपास वृक्षारोपण के लिए प्रेरित करें। उन्होंने उपस्थित कर्मचारियों को सुझाव दिया कि वृक्षारोपण कार्यक्रम में उपजिलाधिकारियों तथा तहसीलदारों को भी साम्मलित किया जाये, जिससे इस पवित्र कार्य में उनका भी सहयोग मिल सके।

—सोहन सिंह

पर्यावरण चेतना मिशन

पर्यावरण संचेतना के प्रसार का जनांदोलन

'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' वसुन्धरा जननी है हम सब उसके पुत्र हैं, अथर्ववेद के भूमिसूक्त के सृष्टा वैदिक ऋषि ने सहस्त्रों वर्षों पूर्व उद्घोषित किया था। विश्व में विद्यमान प्रत्येक प्राणी, प्रत्येक वनस्पति एवं प्रत्येक स्पन्दनशील प्रजाति पर प्रकृति मां का बराबर स्नेह एवं संरक्षण है। विभिन्न प्रजातियों के अस्तित्व के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ी हुई है पारिस्थितिक संतुलन की अद्भुत प्रणाली है। इस विश्व प्रकृति की अनूठी व्यवस्था के मध्य कोई प्रजाति एकांग आचरण नहीं कर सकती, एकांगी आचरण का निश्चित परिणाम है उस प्रजाति का समूचा विनाश। मानव भी इसका अपवाद कदापि नहीं हो सकता। विकास की अंधी दौड़ में प्राकृतिक संसाधनों का निरंतर दोहन, विनाश की ओर अग्रसर होती मानव बस्तियां कचरे के ढेर में बदलते महानगर, मृतप्राय नदियां, विषाक्त होते सागर, निरंतर प्रदूषित होती हवा, पानी,मिट्टी और आकाश जैसे जीवन के आधारभूत तत्व। विस्फोटक स्थिति में पहुंचाने वाली मानव प्रजाति की संख्या। निश्चित रूप से यह सब मानव के अस्तित्व के विनाश की पूर्व सूचनाएं हैं।

बींसवी शताब्दी की इस सांध्य बेला में हमें चिन्तन करना होगा कि हम अपनी भावी पीढ़ी को विरासत में क्या देने वाला हैं.....प्रदूषण से भरा महाविनाश के कगार पर बैठा मानव संसार और मूल्यहीन जीवन पद्धति जो केवल स्वकेन्द्रित मोहांध मानवों की आसुरी प्रकृतियों में उत्तरोत्तर वृद्धि करेगी और जिसका निश्चित परिणाम है समूचा मानव जाति का महाविनाश एवं उसके साथ ही पृथ्वी पर विद्यमान सम्पूर्ण जीव एवं वनस्पति जगत की अकाल मृत्यु।

वसुन्धरा के अनुपम वरदानों की रक्षा एवं विवेकपूर्ण विकास की संकल्पना को जन–जन तक पहुंचाने के लिए **'पर्यावरण चेतना मिशन'** का सूत्रपात किया गया है। इसका लक्ष्य है प्रत्येक मानव को उसके अस्तित्व से सपरिचित कराना एवं विश्व के समस्त जीव एवं वनस्पति जगत की प्रजातियों से भ्रातृत्वपूर्ण सहअस्तित्व की भावना का प्रसार करना, संशय और अविश्वास के इस वातावरण में आस्था एवं विश्वास की ज्योति जगाना। प्रत्येक मानव में शाश्वत जीवन मूल्यों की पुर्नप्रतिष्ठा, एक ऐसी वैश्विक व्यवस्था की रचना का प्रयास, जिसमें वसुन्धरा के गर्भ से उत्पन्न प्रत्येक जीव, वनस्पति एवं स्वयं मानव पूर्ण सहअस्तित्व के भावच के साथ प्रकृति प्रदत्त वरदानों का सम्यक प्रयोग करते हुए उन्हें संरक्षित कर सकें।

'पर्यावरण चेतना मिशन' विश्व के प्रत्येक धर्म, जाति, क्षेत्र, देश और संस्कृति में विद्यमान शाश्वत जीवन मूल्यों को प्रत्येक मानव के अन्तर्गत तक पहुंचाने का महायज्ञ है। प्रत्येक प्रबुद्ध एवं चिन्तशील जन का हम आहवान करते हैं कि वे प्रकृति एवं समाज के स्वयं पर विद्यमान ऋण के प्रति सचेष्ट होकर उसवे चुकाने और इस महायज्ञ में दीक्षित होकर, पर्यावरण संरक्षण को जन–जन तक पहुंचायें एवं विवेकपूर्ण विकास की संकल्पना से प्रत्येक व्यक्ति को परिचित करयें। जीवन के आधारभूत तत्वों वायु, जल, मिट्टी जीव एवं वनस्पतियों के संरक्षण को अपनी जीवन पद्धति का अनिवार्य अंग बनायें। भोगपूर्ण, प्राकृतिक संरक्षण एवं जीव दया से संबन्धित वैदिक ऋषियों के उद्गीथ भगवान बुद्ध महावीर, ईसा, हजरत मोहम्मद एवं अन्यान्य महापुरूषों के शाश्चत संदेशों का अनुसरण कर पृथ्वी के अनुपम वरदानों की रक्षा में सतत सहयोग करें एवं भोगपूर्ण, एकांगी, स्वार्थपरक जीवन पद्धति का परित्याग कर विवेकपूर्ण विकास की संकल्पना को प्रत्येक मानव तक पहुंचायें।

संयोजक

पर्यावरण चेतना मिशन

सम्पर्क : **पर्यावरण चेतना परिसर,** मानस इन्कलेव, इन्दिरा नगर
लखनऊ, दूरभाष : 359897

● सी-5, दिलकुशा कालोनी, लखनऊ, दूरभाष : 482288

● बी-1/12, सेक्टर डी-1, कानपुर रोड योजना, लखनऊ, दूरभाष : 436767

'पर्यावरण चेतना मिशन' में सम्मिलित होने के लिए आयु, लिंग, धर्म, वर्ण, जाति, प्रदेश एवं अन्य किसी भी प्रकार को कोई प्रतिबंध नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति इस महायज्ञ में अपना दायितव स्वयं निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है। मिशन के संचालक एवं व्यवस्थ को दृष्टिगत रखते हुए मिशन में दीक्षितजनों की तीन श्रेणियां हैं :

☐ पूर्णकालिक जीवनव्रती परिव्राजक :

इस वर्ग में मिशन के लक्ष्यों के प्रतिवद्ध कार्यकर्ता हैं जिन्होंने अपने जीवन को पूर्णरूपेण अथवा स्वयं निर्धारित समय के लिये मिशन को समर्पित किया है। न्यूनतम एक वर्ष का समय देना अनिवार्य होगा। इस वर्ग में सामान्यतः उन्ही बंधुओं को दीक्षिता किया जाता है जो मिशन को समर्पित किये गये समय में पारिवारिक दायित्व से मुक्त हों। जीवनवती परिवाजकों की न्यूनतम आवश्यकताओं की प्रतिपूर्ति मिशन परिवार की ओर से की जाती है।

☐ पर्यावरण बंधु :

इन श्रेणी में दीक्षित किये जाने वाले बंधुओं को मिशन के उद्देश्यों की प्रतिपूर्ति हेतु निर्धारित संकल्प-पत्र आवेदन करना होता है। संकल्पबद्ध बंधुओं को अपने दैनिक समय में से न्यूनतम दो घंटे का मिशन के उद्देश्यों हेतु देना होगा।

☐ पर्यावरण मित्र :

इस श्रेणी में दीक्षित किये जाने वाले जनो को निर्धारित संकल्प-पत्र पर आवेदन करना होगा और स्वयं निर्धारित समय पर्यावरण मिशन के कार्यों के लिए देना होगा।

आदमी के हाथ

इतने बहशी और बर्बर
आदमी के हाथ
जो बंजर में फूल खिलाते हैं
लहलहाते-झूमते-फलते
हजारों किस्म के
दिक्कालजीवी पेड़
आदमी के हाथ का आशीष पाते हैं।
आज वही खुरपी सम्हाले हाथ
जब बढ़ते हैं आगे
जड़ों की ओर
पौधों की रूह कॉपती है।
आखिर किस तरह की
हाविश और हैवानियत में
मुब्तिला हैं आदमी के हाथ
क्या वाकई जिन्दा है
इन हाथों के पीछे आदमी ?

— नंद भारद्वाज

आपूर्ति आदेश

पर्यावरण चेतना

हिन्दी मासिक पत्रिका

दिल्ली प्रदेश एवं हिमाचल प्रदेश के शिक्षा विभाग तथा उत्तर प्रदेश शासन के वन विभाग, स्थानीय निकाय, शिक्षा विभाग, ग्राम्य विकास एवं पंचायत राज विभाग द्वारा अनुमोदित

पर्यावरण संचेतना के प्रसार के क्षेत्र में प्रयासरत राष्ट्र भाषा हिन्दी की एकमात्र पत्रिका

विश्व प्रकृति की धरोहर एवं वसुन्धरा के अनुपम वरदानों की रक्षा हेतु

पर्यावरण संरक्षण के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के महायज्ञ में आपकी सहभागिता अपेक्षित है।

"पृथ्वी मां का ऋण लौटायें, विश्व प्रदूषण मुक्त बनायें"

❁ मुख्य कार्यालय : पर्यावरण चेतना परिसर, पिकनिक स्पाट रोड, इंदिरा नगर, लखनऊ, फोन-359897

❁ रजिस्टर्ड कार्यालय : बी-1/12, सेक्टर-डी1, कानपुर रोड योजना, लखनऊ, फोन-436767

❁ सम्पादकीय कार्यालय : सी-5, दिलकुशा कालोनी, लखनऊ, फोन-482288

पत्रिका का प्रकाशन, मई 1994 से निरंतर हो रहा है। पूरे भारतवर्ष में इसका प्रसार है। स्वतंत्र प्रसार के साथ ही दिल्ली एवं हिमाचल प्रदेश के वन विभाग, ग्राम्य विकास विभाग, शिक्षा विभाग, पंचायती राज विभाग, प्रदेश के स्थानीय निकाय एवं अन्य विभागों द्वारा यह नियमित रूप से मंगायी जा रही है। आपसे अनुरोध है कि आप स्वयं/संस्थान/विभाग/पुस्तकालय हेतु "पर्यावरण चेतना" पत्रिका की सदस्यता ग्रहण करने की कृपा करें एव पर्यावरण संरक्षण के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के इस महायज्ञ में अपना योगदान करें।

पत्रांक : ....   दिनांक : ....

सदस्यता पत्रक

सेवा में,

प्रसार व्यवस्थापक
पर्यावरण चेतना हिन्दी मासिक
सी-5, दिलकुशा कालोनी
लखनऊ (उ0प्र0)

महोदय,

कृपया अपने कार्यालय/संस्थान/पुस्तकालय के लिये "पर्यावरण चेतना" हिन्दी मासिक की सदस्यता हेतु चेक/ड्राफ्ट (प्रधान संपादक, पर्यावरण चेतना, लखनऊ के पक्ष में देय हो) आपूर्ति आदेश के साथ संलग्न कर भेजने का कष्ट करें।

पर्यावरण चेतना पत्रिका की शुल्क दरें :-

1.	आजीवन सदस्यता शुल्क	रूपये 5000/-
2.	त्रिवार्षिक सदस्यता शुल्क	रूपये 750/-
3.	द्विवार्षिक सदस्यता शुल्क	रूपये 525/-
4.	वार्षिक सदस्यता शुल्क	रूपये 275/-

नोट : कृपया सदस्यता अवधि अंकित करने का कष्ट करें।

भवदीय

पत्रिका प्रेषण हेतु पता
....
....
....

हस्ताक्षर..................................
नाम व पद..................................
जनपद..................................
कार्यालय..................................

पर्यावरण चेतना एक पत्रिका ही नहीं एक अभियान भी है
आइये! हम सब मिलकर इसे सफल बनायें।

शर्मीला लेकिन चालाक पक्षी है मोर

वर्षा की रिमझिम फुहारों के साथ पावस ऋतु का प्रारम्भ होता हैं जब आसमान में काले, कजरारे बादल उमड़-घुमड़ उठते हैं, तब पंखे फैला कर नाचते मयूर की छटा बस देखते ही बनती है। उसे देखकर लोगों का मन-मयूर भी नाच उठता है।

मोर हमारा राष्ट्रीय पक्षी है। लगभग एक मीटर लम्बी, बहुरंगी पूंछ, मनमोहक कलगी, चमकदार हरी गर्दन और सुन्दर पंखों के कारण यह हमारे देश का सबसे सुन्दर पक्षी माना गया है। पंखों की यह लम्बी पूंछ केवल नर मोर में हीहोती हैं। मोरनी की इस प्रकार की पूंछ नहीं होती। नर की टांगों में एक-एक नुकीला खार भी होता है। मुख्यतः वर्षा काल में मोर मोरनियों को रिझाने के लिए पंख फैलाकर नाचता है।

मोर देश भर में पाया जाता हैं यह घने जंगलों से लेकर खेत-खलिहान और घरों के आस-पास भी पाया जाता है। यों, यह शर्मीला लेकिन चालाक पक्षी है। एक-एक मोर के साथ 5-6 मोरनियां घूमती रहती हैं। इसकी 'मियांव-मियांव' की आवाज से सभी परिचित हैं। यह आवाज काफी दूर-दूर तक सुनाई देती है। मोर का मुख्य भोजन अनाज, फसलों के नए अंकुर और कल्ले, कीड़े, छिपकलियां और सांप हैं। मोरनी जुलाई से सितम्बर तक अंडे देती है। इस सुन्दर राष्ट्रीय पक्षी के शिकार पर कानूनी प्रतिबन्ध है। हमें इसके संरक्षण में हर संभव सहयोग देना चाहिए। इसके खूबसूरत पंखों से सजावटी चीजें बनाई जाती हैं।

—पर्यावरण चेतना डेस्क

अति आधुनिक स्थापत्य का उदाहरण है चंडीगढ़

दो राज्यों की राजधानी होते हुए भी चंडीगढ़ केंद्रशासित प्रदेश है- शहर 1950 में बना था। भाशा के आधार पर 1986 में पंजाब में विलय करने का निर्णय हुआ। 383 मी. ऊंचे 114 वर्ग किमी में अति आधुनिक स्थापत्य का उदाहरण 50 वर्षों का शहर है चंडीगढ़। पांच लाख लोगों के रहने के लिए अनलकी 13 को छोड़कर 47 से0टरों में शहर बना है। हर से0टर अपने आप में संपूर्ण है। बाजार, दुकानें बनी हैं। राज्य परिवहन की बस, आटो, रिक्शा और टैक्सी से इनका आपसी संपर्क बना हुआ है। यह शहर वाहनों पर निर्भर है। सेक्रेटेरियट भवन, उच्च न्यायालय (महाकरण), विधानसभा, स्टेट लाईब्रेरी, सुपर बाजार, सुकना लेक, शांति कुंज, मुन लाईट गार्डन, उत्तरपूर्व से आरंभ होकर द-पश्चिम तक शहर में 8 किमी दीर्घ लिनीयर पार्क या लेजर वैली, शहीद स्मारक, ज्योमेट्रिक हिल, टावर आफ शैडो- सभी इमारतें आधुनिक स्थापत्य का उदाहरण हैं।

शहर मानव शरीर के ढांचे पर बना है। मनुष्य के हृदय की तरह चंडीगढ़ का दृश्य है सिटी सेंटर तथा व्यापारिक इलाका 17। जिला मुख्यालय, आईएसबीटी बस टर्मिनल, शापिंग सेंटर, परेड ग्राउंड, आफिस, बैंक, जिला अदालत सभी सिटी सेंटर में हैं। दिन की अपेक्षा रात की रोशनी से शहर की छटा और सुंदर हो उठती है। शाम के फौवारों पर भी रोशनी होती है। उत्तर में सिर या लिभिंग अर्थात जीवन धारण के लिए आवश्यक इमारत शैली का उदाहरण कैपिटल काम्प्लेक्स है। सिर पर बंधी पगड़ी की तरह सरकारी भववन और विश्वविद्यालय है। हाथ और पैर का रूप औद्योगिक अंचलों ने लिया है। सर्कुलेशन अर्थात टीवीसी शैली में द्रुतगति और धीरगति से वाहनों के चलने की प्रणाली में नवीनता है। बिसरा अर्थात वक्ष और उदर का बीच का हिस्सा हरी घास की कालीन बिछा खुली हवा सेवन करने का आदर्श स्थान है। इस बिसरा ने औद्योगिक और बस्ती इलाके के बीच सीमा निर्धारित की है। लंग्स अर्थात फेकड़ा बना है रास्ते के किनारे बने तरह-तरह के फूलों के बगीचे से। क्षण भर विश्राम लेकर फिर से चल सकते हैं यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज सिटी है चंडीगढ़।

वैचित्र्य और नवीनता से भरे पीडब्ल्यूडी के इंसपेक्टर नेकचंद के हाथों में बना राक गार्डन चंडीगढ़ पर्यटन का मुख्य केंद्र है। शहर से निकले कूड़े, नदी-नालों में मिली कई चीजों के साथ शिवालिक पहाड़ के रंग-बिरंगे पत्थरों को सजाकर से0टर 1 में (कैपिटल काम्प्ले0स के पास) 10 हे0टेयर भूमि पर नीले आकाश के नीचे 1958-76 में जादूपुरी या फेंटेसी आफ द लास्ट किंगडम बना है। सेक्रेटेरियट के पास शहर के उत्तर सुखना लेक के करीब मुक्तांगन थियेटर, मुक्तागन म्युजिय, कृत्रिम जल प्रपात, दरबार हाल और पैवलेलियन भी राक गार्डन में बना है। अप्रैल-सितंबर में 9-13.00 और और 15-19.00 तक और अक्टूबर से मार्च में 9-13.00 और 14-18.00 तक राक गार्डन खुला रहता है। बाहर से देखने में साधारण होने पर भी गार्डन से अभिभुत करता है। चंडीगढ़ घूमने वालों के लिए राक गार्डन के करीब के सेक्टर 1 में 3 किमी की सुकना लेक है। लेक से शहर के उत्तर पूर्व दुग्धधवल चंडीदेवी के मंदिर का शिखर दिखाई देता है- पहाड़ की ढलान पर इसी देवी के नाम पर चंडीगढ शहर का नामकरण हुआ है। हाईकोर्ट के उत्तर एकता की प्रतिमूर्ति ओयेन टू गिम, आपेने टू रिसीव चंडीगढ़ का विशाल ओपेन हैंड अर्थात इस्पात से बना हाथ हावा में घूमता रहता है। 50 टन के हाथ की ऊंचाई 14 मी है, ज्यामेट्रिक हिल, टावर आफ सैडो सभी में नवीनता है। लाकर बुसियर की एक और कीर्ति म्युजियम और आर्ट गैरली भवन है। सेक्टर 10 में ये आसपास बने हैं। मुगल, कांगड़ा, राजस्थानी मिनीएचर चित्रों और मार्डन आर्ट के पैनल चित्रों का संग्रह गैलरी का आकर्षण बढ़ाता है। अवींद्रनाथ, रोयरिकेर चित्र, स्वदेशप्रेम से ओतप्रोत सिख कैनवास चित्रों इवो लिउशन आफ लाइफ म्युजियम भी सेक्टर 10 में है सिंधु सभ्यता के समय से अब तक की

कई चीजें सेक्टर 16 में 30 एकड़ जमीन पर बना है एशिया का वृहत्तम जाकिर गुलाबबाग। केवल आकार ही नहीं यहां 50000 पौधों में 1600 तरह के गुलाब खिलते हैं। 2000 तरह के गुलाब खिलाने की तैयारियां चल रही हैं। जाकिर गुलाब बाग सुबह से शाम तक खुला रहता है।

चंडीगढ़ भारत के सबसे सुव्यवस्थित शहरों में से एक है। अन्य महानगरों की अपेक्षा यहां आवासीय क्षेत्र इस तरह से विकसित किए गए हैं कि निवासियों को स्थान और सुविधा दोनों का लाभ मिले। शहर की हरीतिमा अन्य शहरों के लिए एक सबक है। यहां का माहौल शहर के संपन्न होने का एहसास दिलाता रहता है। यह शहर भारत में सबसे ज्यादा निजी वाहनों की संख्या के लिए भी जाना जाता है।

दूसरे बड़े शहरों की तुलना में यहां झुग्गी बस्तियों, फुटपाथिया दुकानों और भिखारी लगभग 70 के बराबर है। शहर में आवारा पशुओं को ढूंढना मुश्किल है। इसके साथ-साथ इस शहर की कुछ कमियां भी हैं, चंडीगढ़ इतना ज्यादा वृहत है कि बीच में कई स्थान निर्जन हैं। इसके चलते एक स्थान से दूसरे स्थान के बीच दूरी और समय दोनों ही अधिक प्रतीत होती है। शायद यही कारण है कि चंडीगढ़ अधिक प्रतीत होती है। शायद यही कारण है कि चंडीगढ़ पर यह आरोप लगाया जाता है कि यह शहर भारत के अन्य शहरों की तरह जीवंत और रंग-बिरंगा नहीं है। चंडीगढ़ भारत का पहला ऐसा शहर है जिसे नियोजित रूप से बसाया गया। इसकी परिकल्पना फ्रेंच वास्तुकार व सिटी प्लानर ली कार्बुजिए ने की थी।

—रामानुज प्रसाद

आकर्षक पत्तों वाले पौधे और उनकी देखभाल

बागवानी एक कला है-किसी का भी हराभरा बगीचा देखने पर हमारा प्रकृतिप्रेमी मन हर्षित हो उठता है। पौधे और उन में आए फूल प्रकृतिप्रेमियों का मन मोह लेते हैं। पेड़पौधे कई तरह के होते हैं और उन में तरह-तरह के फूल आते हैं। परंतु फोलिएज या इंडोज प्लांट अपने आप में इतनी सुंदरता समेटे होते हैं कि इन्हें फूलों की जरूरत ही नही होती, बल्कि इन्हें पत्तों की खूबसूरती के कारण ही उगाया जाता है। इन भीतरी पौधों में कुछ हैं। कैलेडियम, कोलियस मरांटा, बिगोरिया, ऐलोकेशिया, इरेंथियम, एक्सीफा इलास्टिका, अरूकेरिया, होस्टा, पाम, एस्पेरेगस, ड्रेसिना, सीडम, फर्न, पेलीओनिया आदि। ये पौधे अपने स्वभाव से काफी नाजुक होते हैं। अदरूनी साजसज्जा में इन का विशेष महत्व है। इन पौधों को बसंत ऋतु या बरसात के मौसम में उगाना चाहिए।

उगाने का तरीका : इन को कई तरह से उगाया जा सकता है, जैसे :-

● कई पौधों की टहनियां काट कर गाड़ने से उन में जड़ें फूट आती हैं, जैसे क्रोटन डिफनबेचिया। ● कुछ पौधों में टहनियों के ऊपर ही कुछ दूर से छाल हटा कर चिकनी मिट्टी व थोड़ा खाद बांध दें, जिसे गुट्टी बांधना कहते हैं। समयसमय पर इन में पानी देने पर इन में जड़ें आने पर इन को गमले में लगा दें, जैसे क्रोटन, रबरप्लांट। ● कुछ पौधों में पौधे के आसपास किनारों से छोटे पोधे निकलने लगते हैं जिन्हें बरसात या बसंत ऋतु में सावधानीपूर्वक निकाल कर अलग गमले में लगा दिया जाता है। ● कुछ पौधे वायु में ही जड़ें छोड़ देते हैं, जैसे मनीप्लांट ऐसे पौधों को जड़ समेत टहनी से काट कर मिट्टी में लगाने से पौधा तैयार हो जाता है। ● कुछ पौधों को बीज से उगाया जा सकता है, जैसे कैलेडियम, कोलियस आदि।

इन पौधों को लगाने के लिए मिट्टी में लगभग 25-30 प्रतिशत अच्छी गली पत्ती की खाद मिलाएं, क्योंकि इन पौधों की जड़ों को ऊमस की आवश्यकता होती है और पत्ती ऊमस को पर्याप्त मात्रा में रोक कर पेड़ की जड़ों को पूर्ति करती रहती है। समयसमय पर कोई भी रासायनिक खाद थोड़ी-थोड़ी मात्रा में दें। महीने में एक बार कीटनाशक दवाएं अवश्य छिड़कें, जिस से कि चीटियां, दीमक, सूक्ष्म कीटाणु आदि पेड़ों को कोई नुकसान न पहुंचा सकें।

—पर्यावरण चेतना फीचर्स

भालूटोंगरी का सिरफिरा भालू

उड़ीसा की गरमी और जंगल, दोनों ही माने हुए हैं। जंगल इतना सघन कि दिन में भी रात-जैसा आलम। गरमी इतनी तेज कि पेशाब के साथ लहू निकलने लगे। बरसात में भयानक बाढ़ और पानी को बरफ बना देने वाली कड़ाकेदार ठंड। जंगली जानवरों का भय अलग से। पता नहीं, वहां के लोग जीते कैसे होंगे?

मुझे उन जंगलों की याद आते ही सचमुच कंपकंपी छूटने लगती है। जिधर दृष्टि जाए, उधर जंगल। गहरी खाइयां। कटीली झाड़ियां। आदमखोर जानवर। पहाड़ ही पहाड़। दरख्त ही दरख्त। खोहें और चट्टानों की लंबी, कभी न खत्म होने वाली श्रृंखला। रोज-रोज मरत-मरते बचना।

सन 1963 का वाकया है जब मुझे इन जंगलों की सैर करने का मौका मिला। नौकरी थी, वरना ऐसे घने जंगलों की सैर किसी सिरफिरे को ही शोभा देती। पहले ही दिन लगा कि नौकरी छोड़कर भागना पड़ेगा। एक-एक दिन एक वर्ष जैसा गुजरता। गाहे-बगाहे मौत का साया रात-दिन मंडराता रहता। नींद भी चौंक-चौंककर किश्तों में आती। अजगर, शेर, भालू, वनभैंसों से रोज का साबका पड़ता। दिन-रात कलेजा दोगुनी रफ्तार से धड़कता रहता। ऊपर से घने जंगलों में सर्वेक्षण का कार्य। खुदा ही मालिक था। जिला बोलांगीर से गुजरते हुए नेशनल हाई-वे को छोड़कर यदि कच्चे में उतरा जाए, तो घने जंगलों और मीलों का सफर तय करते हुए आप निश्चय ही भालूटोंगरी तक पहुंच जाएंगे। भालूटोंगरी यानी भालुओं का स्थायी निवास देनेवाली पहाड़ी। गोया कि उस पहाड़ी में बसेरा सिर्फ भालुओं का ही। पूरी की पूरी पहाड़ी भालुओं के कुनबों के कब्जे में। मजाल कि कोई दूसरा जानवर वहां पनाह ले सके। भालुओं की पीढ़ी दर पीढ़ी का एकछात्र एक राज्य हो गया था वहां।

यूं समझिए कि दुर्भाग्य ही था, जो अनजाने में मैंने अपना कैंप भालूटोंगरी के समीप ही लगवा दिया। एक तो उस समय मुझे भालूटोंगरी का पूर्व इतिहास पता नहीं था। दूसरे, भालूटोंगरी के ही एक सिरफिरे भालू की करतूतें ज्ञान नहीं थीं। शाम को घर लौटते घसियारों ने जानकारी दी तो अवश्य, पर अब क्या होता जब चिड़ियां चुग गयीं खेत। कैंप लगाना और हटाना कोई घंटे-दो घंटे का काम तो है नहीं।

अपनी जिंदगी की यह सबसे भयानक रात थी। चारों तरफ से जानवरों की सामूहिक आवाजें डर पैदा कर रही थीं। कैंप के पास में ही जानवर पर जानवर इकट्ठे हो रहे थे। ऐसा प्रतीत होता था कि थोड़ी ही देर में उनके जीवन में दखलंदाजी करनेवाले इन गिने-चुने आदमियों को खा-पीकर वे रफूचक्कर हो जाएंगे। आज के बाद न तो कोई दिन होगा न रात। वह कालरात्रि थी हम लोगों के लिए। तिस पर वह सिरफिरा भालू, जिसने भालूटोंगरी का नाम जंगल के दूर-दूर गांवों तक फैला दिया था, रह-रहकर दहशत पैदा कर रहा था।

राम-राम कर सुबह हुई। कितनी ही शीघ्रता की जाती फिर भी कार्य समाप्ति में तीन दिन तो लग ही जाते। और इधर यह आलम था कि एक-एक रात कत्ल की रात महसूस हो रही थी। तिस पर मुसीबत यह कि कार्यक्षेत्र में पहुंचने का रास्ता भी भालूटोंगरी होकर था। मरता क्या न करता? कार्य तो करना ही था।

उस समय दिन में नौ बजे थे, जब हम लोग भालूटोंगरी की चढाई तय कर रहे थे। आधी पहाडी चढ़कर, पीछे की ओर घूमते हुए पानी वाला नाला पारकर दूसरी तरफ निकल जाने की योजना थी। आगे-आगे मैं था और पीछे-पीछे मजदूर थे।

तभी खड़-खड़ की आवाज हुई। मुझे तकरीबन पचास फुट आगे एक आदमी को खदेड़ते हुए एम भारी-भरकम भालू दिखायी दिया। आदमी भालू को चकमा देकर दाये-बायें भाग रहा था।

—मार्कण्डेय सिंह

लुप्त हो रहीं हैं उभयचर प्रजातियां

कुछ समय पहले जीव विज्ञानिकों के एक दल ने जब की कि 1970 के दशक से दुनिया भर में उभयचरों की आबादी रूप से वैज्ञानिक समुदाय में हलचल मच गयी। क्योंकि जैव विविधता को बचाये रखने की दृष्टि से यह एक अशुभ संकेत था। मेढ़कों की दो महात्वपूर्ण प्रजातियां (आस्ट्रेलिया का गैस्ट्रिक ब्रूडिंग फ्रॉग और कोस्टारिका का स्वर्णिम टोड) विलुप्त होने के कगार पर पहुंच गयी हैं।

मान्टेवर्डे संरक्षित चिरमेघ वन (प्रिजर्वड क्लाउड फारेस्ट) में अनुसंधान करने वाले एलन पाउण्ड्स के अनुसार स्वर्णिम टोडों के प्रमुख प्रजनन क्षेत्र में पहले जहां 1500 तक टोड एकत्र होते थे, 1987 से सिर्फ इक्का-दुक्का टोड ही देखे गये हैं। आबादी में इस अप्रत्याशित कमी के संदर्भ में शक की सूई सबसे पहले पर्यावरणीय परिवर्तनों की ओर घूमी। जीव विज्ञानियों और पर्यावरणविदों को शंका हुई कि मेढकों के लगभग गायब हो जाने की स्थिति में पहुंचने का कारण कोई ऐसा सूक्ष्म पर्यावरणीय परिवर्तन है जिसके प्रति वे बहुत संवेदनशील हैं। अनुमान लगाने के इस क्रम में कार्बन डाई आक्साइड के कारण हुई तापमान वृद्धि, कीटनाशी रसायनों, अम्लीय वर्षा और किसी अज्ञात विषाणु जैसे अनेक कारकों को आधार बनाकर इस घटनाक्रम की व्याख्या करने की कोशिशें की गयीं।

लेकिन ड्यूक विश्वविद्यालय के जोसेफ एच.के.पीचमैन और उनके सहयोगियों द्वारा किये गये एक दीर्घकालिक अध्ययन से कुछ और ही संकेत मिलता है। पीचमैन और उनके सहयोगियों ने दक्षिण कैरोलिना स्थित 'रेनबो बे' नामक एक जलाशय में उभयचरों की आबादी का 12 वर्षों तक अध्ययन किया है। इस अध्ययन को उभयचरों की आबादी के सम्बन्ध में सर्वाधिक विस्तृत जानकारी एकत्र करने वाला अध्ययन माना जाता है। इससे प्राप्त आकड़ों से यह निष्कर्ष निकलता है कि सूखे के कारण आबादी में होने वाला अनियमित उतार-चढ़ाव ही उभयचरों की संख्या कम होने का कारण है।

अध्ययनकर्ताओं ने सेलामैंडरों की तीन और मेंढक की एक प्रजाति की आबादी पर अपनी निगाह रखी थी। यद्यिप अध्ययन के दौरान इन प्रजातियों की आबादी में नाटकीय उतार-चढ़ाव परिलक्षित हुआ लेकिन जिन वर्षों में जलाशय के सूखने से पहले असमें पानी अधिक समय तक ठहरा उन वर्षों में विभिन्न प्रजातियों के सफल प्रजनन की संभावनाएं अपेक्षाकृत अच्छी रहीं। यद्यिप आबादी में उतार-चढ़ाव आश्चर्यजनक रूप से अधिक पाया गया लेकिन वर्षा की मात्रा को इसका कारण मान लेने पर इसकी व्याख्या सहजता से की जा सकती थी।

पीचमैंन का कहना है कि इसमें कोई संदेह नहीं है कि प्राकृतिक आवासों के नष्ट होने से अनेक उभयचर विलुप्त होने के कगार पर पहुंच गये हैं। लेकिन उसने अनुसंधान से पता चलता है कि आबादी में प्राकृतिक रूप से होने वाला उतार-चढ़ाव काफी अधिक हो सकता है और इस सम्बन्ध में किसी दीर्घ कालिक अभिलेख के अभाव में इसे एक 'प्रवृत्ति' (ट्रेन्ड) मान लेने की भूल हो सकती है। यद्यपि जिन प्रजातियों का उन्होंने अध्ययन किया वे सूखे से प्रभावित हुई थीं लेकिन सूखा पड़ने लगा है। पीचमैन का कहना है कि कम से कम इस अध्ययन स्थल के संदर्भ में तो उनके अनुसंधान से यह स्पष्ट है कि प्राकृतिक रूप से आबादी में कितने अधिक उतार-चढ़ाव की अपेक्षा की जा सकती है।

पीटर जे. मोरिन जैसे कुछ अनुसंधानकर्ता तो इस बात से सहमत ही नहीं हैं कि दुनिया भर में उभयचरों की आबादी कम हो रही है। उनका कहना है कि आबादी में उतार-चढ़ावा तो लगा रहता है और कभी-कभी किसी प्रजाति की स्थानीय आबादी पूरी तरह विलुप्त भी हो सकती है। मोरिन के अनुसार कोई निष्कर्ष निकालने से पहले यह मालूम होना चाहिए कि क्या ऐसा घटनाएं अब पहले से अधिक हो रही हैं? लेकिन इस तरह का कोई प्रमाण अब तक उपलब्ध नहीं है।

उभयचरों की आबादी में अप्रत्याशित कमी के वास्तविक कारणों के बारे में अनिश्चितता बने रहने से उनका शीघ्रातिशीघ्र पता लगाना और भी जरूरी हो गया है। पाउण्ड्स और पीचमैन दोनों इस बात से सहमत हैं कि आवास के

नष्ट होने के आधार पर स्वर्णिम टोड की आबादी घटने की व्याख्या नहीं की जा सकती, यह प्रजाति अब तक केवल मान्टेवर्डे चिरमेघ वन के एक सीमित क्षेत्र में ही देखी गयी है। 1964 में स्वर्णिम टोड की खोज के समय से अबतक यह क्षेत्र ज्यों का त्यों बना हुआ है। उसमें किसी तरह का मानवीय हस्तक्षेप नहीं हुआ है। ऐसी स्थिति में प्रकृतिक आवास के नष्ट होने को आबादी घटने का कारण नहीं माना जा सकता। इसी प्रकार 'गैस्ट्रिक ब्रूडिंग फ्राग' की आबादी का घटना भी रहस्य के घेरे में है। पाउण्ड्स इस समय स्वर्णिम टोड की आबादी घटने और 1980 के दशक के आखिरी हिस्से में कोस्टारिका में असामान्य रूप से ऊंचे तापमान के बीच किसी प्रकार का सम्बन्ध होने की संभावना की जांच- पड़ताल कर रहे हैं।

अनिश्चितता के इस माहौल में पारिस्थिति विज्ञानी यह महसूस करते हैं कि प्राकृतिक आवासों के संरक्षण के तर्क को बल प्रदान करने के लिए जरूरी है कि जैव विविधता के सम्बन्ध में ठोस आंकड़ों और सूचनाओं के भण्डार में अधिककाधिक वृद्धि की जाये। अमेरिका की इकोलाजिकल सोसायटी ने जैव विविधता, भूमण्डलीय परिवर्तनों और निर्वहनीय पारिस्थितिक समुदायों के बारे में अधिकाधिक जानकारी जुटाने के उद्देश्य से 'निर्वहनीय जीव मण्डल पहल' नाम से एक कार्यक्रम तैयार किया है।

-अखिलेश कुमार सिंह

घोंसला बनाने वाला सांप

मद्रास स्नेक-पार्क के डॉयरेक्टर रोमुलस व्हिटेकर का एक जरूरी तार तेरे फोटोग्राफर भाई राजेश बेदी के नाम आया, जिसमें लिखा था, 'अंडमान में शेषनाग का घोंसला मिल गया है। आप आ सकेंगे?' शेषनाग के अड्डे बच्चों का अब तक संतोषजनक फोटोग्राफिक रेकॉड नहीं किया जा सका था। इस अत्यंत घातक नाग की फोटोग्राफी करना खतरे से भरपूर है। इस बात को भलीभांति जानते हुए भी राजेश इस 'फोटो-एक्सपीडीशन' पर चल पड़े।

शेषनाग का घोंसला करमटांग जंगल में था। वहां तक पहुंचने के लिए राजेश ने गोड़ाल नामक एक करेन गाइड को साथ ले लिया।

साधारण फनियर सांपों के विष की तुलना में राजनाग का विष कम जहरीला होता हैं। विषों के प्रभाव की जांच के लिए एक-जैसे दो जानवरों लें। एक जानवर को फनियर के विष का इंजेक्शन दें और दूसरे को उतना ही मात्रा में राजनाग के विष का इंजेक्शन दें। पहले जानवरों को जल्दी मौत हो जाएगी, लेकिन राजनाग की विषग्रंथियां बहुत बड़ी होती है। एक दोहन में उनसे सात धन (क्यूबिक) सेंटीमीटर विष निकल आता है, जो एक हाथी को मार सकता है। राजनाग का विष वात संस्थान पर कार्य करता है। राजनाग के डसने के बाद मनुष्य बीस-पचीस मिनट में मरते देखे गये हैं। डसे हुए आदमी को इलाज के लिए अस्पताल ले जाने का समय ही नहीं मिल पाता। फोटों खींचते समय राजेश इतना लीन हो जाते हैं कि उन्हें अपनी सुध नही रहती। कहीं वे शेषनाग के चंगुल में आ जाएं तो? ऐसी विपदा का सामना करने के लिए, व्हिटेकर ने शेषनाग के प्रतिविष मस्तु (एण्टिविनीन सीरम) की तीन शीशियां मंगा ली थीं। गोड़ाल के साथ ये सिरफिरे प्रकृति-प्रेमी आठ जून को एक बजे घोंसले की जगह पहुंचे।

शेषनाग के अड्डेः– शेषनाग और पक्षियों में यह समय है कि दोनों घोंसला बनाते हैं, दोनों अंडे देते हैं और दोनों अंड़ों को सेते हैं। दूसरे सांप स्वयं घोसला नहीं बनाते। वे कहीं कूड़े-कचरे के अंदर 'अंड़े रख देते हैं। उसके बाद अंड़ों या बच्चों की सार-संभाल नहीं करते। कचरे के सड़ने से पैदा हुई गरमी में अंडे खुद-ब-खुद सेये जाते हैं।

पक्षियों के अंड़ों के ऊपर भंगुर छिलका होता है, लेकिन शेषनाग के अंडे के ऊपर पतले चमड़े-जैसी दृढ़ झिल्ली का आवरण होता है। बच्चा जब बाहर निकलता है तब अंड़ा एक सिरे से फट जाता है, पक्षियों के अंड़ों के समान टूटता नहीं। अंडे देने के बाद नागिन घोंसले में अंड़ों के ऊपर बैठकर उन्हें सेती है।

१. खगोलीय दूरबीन में कौन से लेंस प्रयुक्त होते हैं ?
(क) तीन उत्तल लेंस
(ख) दो उत्तल लेंस
(ग) एक उत्तल एवं एक अवतल लेंस
(घ) दो अवतल लेंस

२. स्पाइक रोग किसमें होता है।
(क) टमाटर में
(ख) चावल में
(ग) तम्बाकू में
(घ) चन्दन में

३. किसके निर्देशन में पहले नाभिकीय संयंत्र का निर्माण हुआ था ?
(क) अलबर्ट आइन्सटीन (ख) एनरीको फर्मी
(ग) आटोहोन (घ) चैडविक

४. अश्रु गैस का सूत्र क्या है ?
(क) CCl_2NO_3 (ख) CH_5NO_3
(ग) CCl_3NO_2 (घ) CH_2NO_2

५. पानी में हवा का बुलबुला किस प्रकार के लेंस की भांति कार्य करता है ?
(क) उत्तल लेंस (ख) अवतल लेंस
(ग) पतले लेंस (घ) कान्टैक्ट लेंस

६. निर्वात में विद्युत चुम्बकीय तरंग का वेग होता है–
(क) 3×10^{12} मीटर/सें०
(ख) 3×10^{8} मीटर/सें०
(ग) 3×10^{10} मीटर/सें०
(घ) शून्य

७. गेलेना किस धातु का अयस्क है ?
(क) लेड (ख) कोबाल्ट
(ग) यूरेनियम (घ) मैग्नीशियम

८. इलेक्ट्रान वोल्ट किसका मात्रक है ?
(क) ऊर्जा (ख) वेग
(ग) शक्ति (घ) इलेक्ट्रानों की संख्या

९. कुएं से प्रतिध्वनि प्राप्त करने के लिये कुआं कम से कम कितना गहरा होना चाहिये ?
(क) 20 मीटर (ख) 18.8 मीटर
(ग) 16.5 मीटर (घ) 14.5 मीटर

१०. ओजोन परत की मोटाई नापने वाली इकाई क्या है ?
(क) नौट (ख) डाप्सन
(ग) प्वायज (घ) मैक्सवेल

११. निम्न में से कौन अष्ठिफल का उदाहरण है ?
(क) मटर (ख) अनार
(ग) संतरा (घ) नारियल

१२. सिलिंडरों में भरी कुकिंग गैस किस अवस्था में होती है ?
(क) द्रव (ख) गैस
(ग) ठोस (घ) प्लाज्मा

१३. शरीर के लिये विटामिन डी का निर्माण कौन करता है ?
(क) अस्थि मज्जा (ख) यकृत
(ग) त्वचा (घ) पित्ताशय

१४. खुले स्थान में ज्यादा समय तक रखा दूध खट्टा हो जाता है, ऐसा उसमें किसके कारण होता है ?
(क) कार्बोनिक अम्ल
(ख) साइट्रिक अम्ल
(ग) लैक्टिक अम्ल
(घ) मैलिक अम्ल

१५. ग्लूकोज के एक अणु में पाइरूविक एसिड के दो अणु बनते हैं। पाइरूविक एसिड के अनाक्सी आक्सीकरण में कितने ATP मिलते हैं।
(क) 18 (ख) 2
(ग) 28 (घ) 38

१६. सोयाबीन एक दलहनी व तिलहनी फसल है। यह फसल खरीफ के मौसम में बोयी जाती है। इसमें प्रोटीन की मात्रा है –
(क) 55 प्रतिशत (ख) 45 प्रतिशत
(ग) 40 प्रतिशत (ग) 30 प्रतिशत

१७. यदि कटे आलू के टुकड़ों को किसी विलयन में रखने के कुछ समय बाद माइक्रोस्कोप से देखने पर यह ज्ञात हो कि कोशिकाऐं सिकड़ गयी है। तो विलयन होगा –
(क) आइसोटोनिक
(ख) हाइपोटोनिक
(ग) सान्द्र (घ) हाइपरटोनिक

१८. नग्न चट्टानों एवं रेतीले टीलों पर सबसे पहले उगने वाले मरूद्भिद पौधे होते हैं –
(क) कीटभक्षी पौधे
(ख) घासें
(ग) शैवाक (लाइकेन)
(घ) शैवाल (एल्गी)
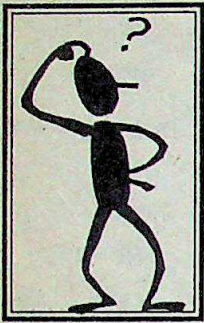
क्या आप जानते हैं?

१. विश्व का सबसे लम्बा पेड़ उत्तरी कैलीफोर्निया में स्थित है। इसकी लम्बाई ३६७ फुट है।

२. अफ्रीकन बाओबाब पेड़ की गोलाई १०० फुट है। पूर्वी जिम्बाम्बे में बाओबाव वृक्ष की गोलाई इतनी अधिक है कि उसमें पूरी एक बस समा जाये। बाओबाव पेड़ मुम्बई में भी पाये जाते हैं।

३. अमरीका और अफ्रीका के कटिबन्धीय जंगलों में पाये जाने वाले रेफिनगा पॉम की पत्तियाँ ७२ फुट तक लम्बी होती हैं।

४. पेड़ों में सबसे बड़ा बीज डबल कोकोनट पॉम का होता है, इसका वजन २७ किग्रा० होता है। यह सिसली (Seychelles) में पाया जाता है।

५. मधुमक्खियाँ एक बार में लगभग ५०० फूलों से पराग इकट्ठा कर सकती है।

६. विश्व का सबसे विशाल पुष्प रेफलीशिया आर्नोल्डिआई नामक परजीवी पौधा है यह दक्षिण पूर्व एशिया के जंगलों में पाया जाता है। इस पुष्प का व्यास लगभग ९१ सेमी० तथा भार ७ किग्रा० होता है। यह पुष्प अत्यन्त तीव्र दुर्गन्ध युक्त होता है।

७. बर्च पेड़ के फूलों का एक गुच्छा ५.५ मिलियन पराग कण पैदा कर सकता है।

८. नये वातावरण में अपने को बनाये रखने के लिए कई पेड़ सदाबहार से पतझड़ी पेड़ों में बदल गये उदाहरण के लिए चीनी रोडोडेन्ड्रान, जो कि चीन में सदाबहार थे, जब यूरोप और उत्तरी अमेरिका में लगाये गये तो ये पतझड़ी पेड़ों में बदल गये।

९. क्लीमेन्ट-सात, जो १५२३ से १५३४ के बीच पोप रहे, मशरूम के लिए इतने अधिक दीवाने थे कि उन्होंने पापल स्टेटस में मशरूम खाना बन्द करवा दिया, किन्तु फिर भी उनकी खाने की मेज पर इसकी कमी रहती थी।

१०. केरोसीन फफूँदी जेट ईंधन टैंकों में भी रह सकती है। मिट्टी के तेल से बने ईंधनों में हाइड्रोकार्बन व थोड़ी मात्रा में पानी होता है। फफूँदी कार्बन को कार्बोहाइड्रेट में बदल देती है।

११. गालापागोस द्वीप के कठफोड़वे कैक्टस के कॉटों से पेड़ की छाल छील कर कीड़े खाते हैं।

१२. "भारतीय वनस्पति उद्यान" हावड़ा में १३५० जातियों के १५,००० से भी अधिक पौधे हैं।

१३. भारतीय वन्य जीव परिषद की स्थापना सन १९५२ में हुई।

१४. लगभग २४० वर्ष पुराना विशाल वट वृक्ष भारतीय वनस्पति उद्यान कलकत्ता में है।

१५. प्रतिदिन वयस्क मनुष्य को औसतन १४ किग्रा० वायु, १.४ किग्रा० भोजन और २ किग्रा० पानी की आवश्यकता होती है।

१६. UNEP की रिपोर्ट के अनुसार प्रतिदिन २५००० लोग पानी द्वारा फैलने की बीमारियों से मरते हैं। इसके अतिरिक्त विश्व की ७८ प्रतिशत जनसंख्या को स्वच्छ और पीने योग्य पानी उपलब्ध नहीं है।

१७. मनुष्य पाँच हफ्तों तक बिना खाये रह सकता है, पाँच दिन तक बिना पानी पिये रह सकता है किन्तु बिना हवा के वह पाँच मिनट तक नहीं रह सकता है।

१८. १९९३ में WHO और UNEP की रिपोर्ट के अनुसार टोक्यो, लंदन और न्यूयार्क सबसे कम प्रदूषण वाले शहर थे।

१९. WHO की रिपोर्ट के अनुसार प्रतिवर्ष लगभग ७,५०,००० लोग कीटनाशक जहर का शिकार होते हैं, जिससे लगभग १४००० मौतें होती हैं।

२०. अमेरिका के वैज्ञानिक जान मार्टिन के अनुसार समुद्र में उपस्थित आइरन Fe ग्लोबल वार्मिंग को रोक सकता है।

२१. अमेरिकन वैज्ञानिक ने कुछ ऐसे बैक्टीरिया खोजे हैं जो ओजोन को नुकसान पहुँचाने वाले पदार्थों को समाप्त करते हैं।

पर्यावरणीय ज्ञान पहेली के उत्तर

१.	(क),	२.	(ग),	३.	(ख),
४.	(ग),	५.	(ख),	६.	(ख)
७.	(क)	८.	(क)	९.	(ग)
१०.	(ख)	११.	(घ)	१२.	(ख)
१३.	(घ)	१४.	(ग)	१५.	(ख)
१६.	(ग)	१७.	(घ)	१८.	(ग)

श्रद्धांजलि
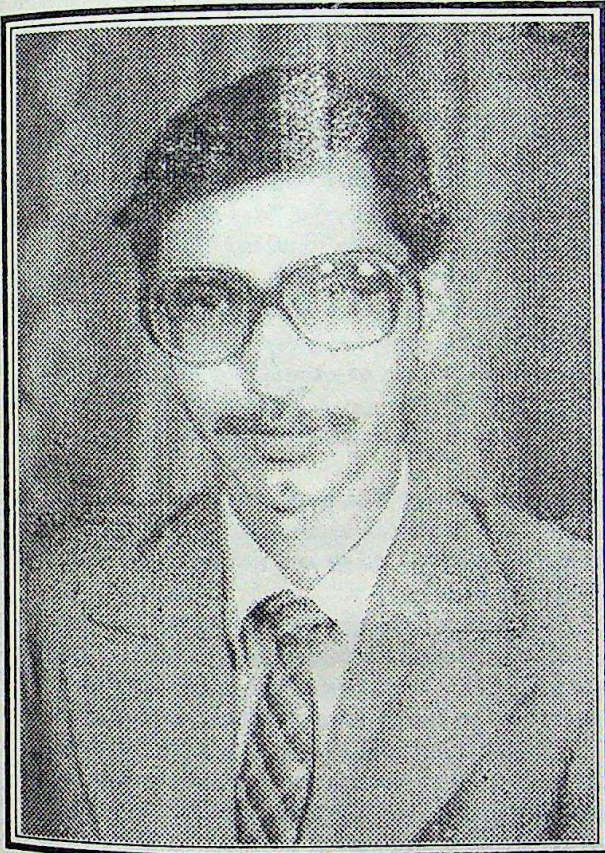
स्व. श्री महेश जोशी

पत्रकारों तथा गैर पत्रकारों के हितों की रक्षा व उनके संघर्षों में अग्रणी भूमिका निभाने वाले पचास वर्षीय महेश जोशी का गत ग्यारह नवंबर २००१ को स्थानीय मेडिकल कालेज में निधन हो गया। श्री जोशी पिछले छह माह से कैंसर रोग से पीड़ित थे। श्री जोशी अपनी पैनी लेखनी और श्रमिकों तथा पत्रकारों की लड़ाई में सबसे आगे रहने वाले संघर्षशील पत्रकार के रूप में जाने व पहचाने जाते थे। वो भारतीय श्रमजीवी पत्रकार यूनियन की लखनऊ शाखा के महासचिव तथा राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य भी रहे। वे यू.पी. जर्नलिस्ट एसोसिएशन के संस्थापकों में से थे।

श्री जोशी का जन्म पिथौरागढ़ के देवलथल स्थान पर हुआ था। यहीं पर उन्होंने प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा ग्रहण की। इसके बाद उच्च शिक्षा के लिये प्रयाग विश्वविद्यालय जाना पड़ा। पत्रकारिता के उच्च अध्ययन के लिए यूरोपीय देश बल्गारिया में छह माह बिताने के बाद तत्कालीन सोवियतसंघ, इटली, वेनिस तथा रूमानिया आदि का भी दौरा किया।

आपका पत्रकारिता का जीवन वर्ष १९७८ से शुरू हुआ। उसके उपरान्त इलाहाबाद से प्रकाशित होने वाले नार्दन इण्डिया ग्रुप के दैनिक समाचार पत्र 'अमृत प्रभात' में कार्य किया। इसके उपरांत कुछ समय तक 'अमर उजाला' में कार्य करने के बाद 'शैल जागर' नामक साप्ताहिक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ कर उसका संपादन किया। आप लखनऊ से प्रकाशित 'पर्यावरण चेतना' मासिक पत्रिका में भी रहे।

श्री जोशी सामाजिक कार्यों से भी काफी जुड़े हुये थे। पर्वतीय होने के नाते वो उत्तराखण्ड आंदोलन से भी जुड़े रहे और संघर्ष किया। श्री जोशी ने उत्तराखण्ड जाकर पर्यावरण संरक्षण तथा पॉलिथीन विरोधी आंदोलन की कमान भी संभाली। लखनऊ में पंतनगर, खुर्रमनगर कालोनी में संस्कृति समिति तथा पेयजल संकट से निपटने के लिए क्षेत्रवासियों के सहयोग से ट्यूबवेल की स्थापना और पेयजल प्रबंध में अग्रणी रहे। वे पंतनगर जनकल्याण समिति के उपाध्यक्ष भी थे।

वरिष्ठ पत्रकार श्री महेश जोशी के आकस्मिक निधन पर 'पर्यावरण चेतना' परिवार के सदस्यों ने एक शोक सभा कर उनको श्रद्धांजलि अर्पित की।

भारतीय श्रमजीवी पत्रकार संघ के अध्यक्ष के. विक्रम राव, उत्तर प्रदेश जर्नलिस्ट एसोसिएशन के वीर विक्रम बहादुर मिश्र, यू.पी. प्रेस क्लब के अध्यक्ष शिवशंकर गोस्वामी, प्रेस क्लब के सचिव जोखू तिवारी, पत्रकार नेता हसीब सिद्दीकी, हिसामुल सिद्दीकी, रवीन्द्र सिंह, रामदत्त त्रिपाठी, हिन्द मजदूर सभा के महामंत्री उमाशंकर मिश्र, पर्वतीय महापरिषद के अध्यक्ष मोहन सिंह विष्ट तथा महासचिव तारा सिंह विष्ट, पर्वतीय समाजोत्थान परिषद के जी. एस. नयाल, कैप्टन सी. एस. नेगी, पर्वतीय महासभा के अध्यक्ष कर्नल के. एस. रावत, लोक जिम्मेदार पार्टी के प्रमुख धर्म सिंह, डी. एस. रावल ने श्री जोशी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है।

चित्रकार : सुदर्श गुप्त
ला–माटीनियर्स कालेज, लखनऊ
क्लास : iii-D

जानवर भी गणना कर सकते हैं

बच्चों! तुमने तोते को 'राम-राम' रटते हुये और कभी-कभी पूरे वाक्य बोलते सुना है। बन्दरों के नकलची होने का भी तुम्हें पता ही है। और भी, ऐसे कई जीव-जन्तु हैं जिन्हें सिखाया-पढ़ाया जा सकता हैं। ऐसा केवल सर्कस में ही नहीं होता, अन्य स्थानों पर भी होता है। उदाहरण के लिए कुत्तों को प्रशिक्षित कर उनसे अपराधी पकड़ने में पुलिस मदद लेती है। इसी तरह से प्रशिक्षित घोडे तो पुलिस और सेना के प्रमुख अंग ही हैं। परन्तु इन जन्तुओं को अगर गणित पढ़ना और सवाल हल करना सिखा दिया जाये तो वह वास्तव में चमत्कारी घटना होगी।

बात अटपटी है पर असंभव नहीं। आजकल बैक्टीरिया की मदद से कम्प्यूटर चलाने का प्रयास किया जा रहा है और सिद्धांत रूप में इसमें सफलता भी मिली है। कम्प्यूटर का सीधा-सा अर्थ होता है-गणना (कम्प्यूट) करने वाला यन्त्र-संगणक। अतः अगर किसी जीव या जानवर को संगणना करना सिखा दिया जाये तो वह "जीवित कम्प्यूटर" ही होगा।

इस क्षेत्र में बाजी मार ले गया पूर्वी जर्मनी के अल्वरफील्ड नगर का वासी आस्टिन, जिसने कुछ वर्ष पूर्व अपने घोड़े "हयान्स" को गणित पढ़ाकर लोगों को अचंभित कर दिया। हुआयों कि आस्टिन ने एक सर्कस में देखा कि हाथी दो अंकों का जोड़ बता देता था। फिर क्या था, उसे अपने बुद्धिमान घोडे को भी गणित पढ़ाने का शौक चर्राया। हयान्स गणित के आधारभूत नियमों-जोड़, घटा, गुणा, भाग, तो सीख ही गया साथ ही, गणित के अनेक प्रकार के सवाल हल करने लगा। सार्वजनिक प्रदर्शन कर आस्टिन अब तक बहुत रूपया कमा चुका है।

आस्टिन ने धोड़े को पहले गिनती गिनना सिखाया। हयान्स पूंछ हिलाकर और अपनी एड़ी से ठोकरें मार-मार कर संख्या बताने लगा। आस्टिन का उत्साह बढता गया और हयान्स को जोड़-घटा, गुणा-भाग, सिखाने लगा। एक वर्ष में हयान्स इन गणितीय क्रियाओं को सफलतापूर्वक करने लगा। कुछ समय बाद हयान्स इन कार्य में इतना माहिर हो गया कि वह बड़ी-बड़ी संख्या का वर्गमूल ही नहीं, घनमूल और चतुर्थ मूल भी इसी तरह इशारे से बताने लगा।

घोड़े की बढ़ती लोकप्रियता ने वैज्ञानिकों और गणितज्ञों का ध्यान आकृष्ट किया। शुरू-शुरू में उन्हें इसमें आस्टिन की कोई चाल नजर आई। एक बार महान् गणितज्ञ डा० हामेल ने जॉच के तौर पर घोड़े से 7890481 का चतुर्थ मूल निकालने का अग्रह किया।

कुछ ही सेकेंड में हयान्स ने सही उत्तर,53 बता दिया। डा० हामेल के आश्चर्य का ठिकाना तब नहीं रहा जब उत्तर की परख के लिए स्वयं उनहें 18 बार गुणा, 10 बार घटाना और 3 बार भाग देना पड़ा।

इस तरह से, विश्व में अपनी तरह का अकेला प्रशिक्षित यह घोड़ा अब "चलते-फिरते कम्प्यूटर" के रूप में लोकप्रियता पा रहा है।

–पर्यावरण चेतना डेस्क

जरा सोचिये !
हम भावी पीढ़ी को
विरासत में क्या दे जायेंगे ?
उजड़े हुये वन-पेड़ और बंजर धरती,
कंकरीट की इमारतें, प्रदूषित वातावरण
बच्चे किताबों में पढ़ेंगे, तोता-सारस या
वनराज थे कभी होते थे, मगर डायनासोर की
तरह ये सभी विलुप्त हो गये सदा के लिये
अथवा
हरियाली-खुशहाली और स्वच्छ
हवा-पानी और मिट्टी
आइये! हम सभी संकल्प लें
"पर्यावरण" को हर प्रकार से सुरक्षित रखें,
पेड़ लगायें और उनकी देखभाल करें। प्रदूषण की रोकथाम करें।
जनहित में प्रकाशित
पर्यावरण चेतना
सी-5 दिलकुशा कालोनी, लखनऊ, फोन - 482288

स्वत्वधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक गीता सिंह द्वारा नीलम प्रिंटर्स, नरही, लखनऊ फोन - 239672 से मुद्रित

पर्यावरण चेतना

वर्ष : 8 अप्रैल 2002 अंक : 12

पर्यावरण एवं स्वास्थ्य विशेषांक
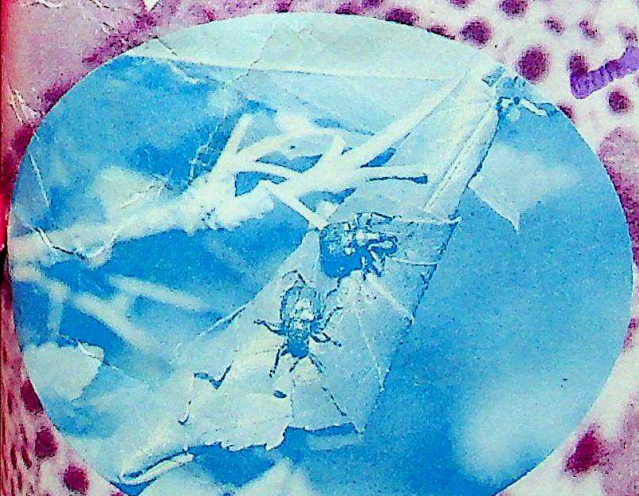
- गन्ना एक गुण अनेक
- बाल पर्यावरण चेतना
- कुत्ते सूंघकर बताएंगे मरीज को कैंसर है
- उभरती जल समस्या का समाधान पानी की खेती
- गोडावण के अस्तित्व पर मंडराता संकट

मूल्य 25/-

पर्यावरण चेतना

पर्यावरण संचेतना की राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष : 8 अप्रैल अंक : 12

- कार्यालयः कीर्तिशिखर अपार्टमेंट्स, निकट विकास दीप, २२.ऑफ स्टेशन रोड, लखनऊ (फोन : ६३८६२६)
- प्रधान सम्पादक कार्यालय : सी–५, दिलकुशा कालोनी, लखनऊ (फोन : ४८२२८८)
- रजि०कार्यालयः बी–१/१२ सेक्टर डी–१, कानपुर रोड योजना, लखनऊ (फोन : ४३६७६७)

अनुक्रमणिका

प्रकृति की आराधना का वैदिक उद्‌गीथ

सम्पूर्ण वैदिक वांगमय मानव की मनीषा की सर्वोत्कृष्ट उपलब्धियों का अमूल्य अंश है। प्रकृति के साथ यह अस्तित्व की भावना से युक्त जीवन व्यतीत करने वाले वैदिक ऋषियों ने वसुन्धरा, ऊषा, सूर्य, वायु, जल एवं अन्यान्य प्राकृतिक शक्तियों की भावपूर्ण अभ्यर्थना की है। **''पर्यावरण चेतना''** द्वारा वैदिक सूक्तों की कतिपय ऋचायें, पर्यावरण संरक्षण की पुरातन चिन्तन धारा वर्तमान संकल्पना से जोड़ने की दृष्टि से प्रकाशित की जा रही है। प्रकृति के अनन्य आराधक मंत्र दृष्टा ऋषियों को विनत प्रणाम करते हुये प्रस्तुत हैं प्रकृति पर **''वैदिक चिन्तन''** के कतिपय अंश-

औदुम्बरेज मणिना पुष्टिकामाय वेधसा। पशुनां सर्वेषा स्फातिं गोष्ठे में सविता करत्।।

(अर्थर्ववेद संहिता भाग–2 औटुम्बरमणि सूक्त–1)

(ज्ञानी अथवा विधाता ने औदुम्बरमणि से सभी प्रकार की पुष्टि करने वालों के लिये एक प्रयोग किया था जिससे सवितादेव हमारे गोष्ठ में सभी प्रकार के पशुओं को बढ़ायें।)

प्रस्तुत श्लोक वर्तमान समय में समीचीन प्रतीत होता है। क्योंकि आज विभिन्न प्रकार के पशु एवं जीव जंतुओं के संरक्षण की आवश्यकता है। क्योंकि हमारी कृषि का एक महत्वपूर्ण स्तम्भ पशु ही है। इसके अलावा पशुओं से ही हमें दूध की प्राप्ति होती है तथा अन्य विशेष कार्य भी पशुओं द्वारा ही संपादित होते हैं। अतः आज पशु धन को बढ़ाने की आवश्यकता है।

करीषिणी फलवती स्वधामिरां च नो गृहे। औदुम्बरस्य तेजसा धाता पुष्टिं दधातु में।।

(अर्थर्ववेद संहिता भाग–2 औटुम्बरमणि सूक्त–3)

(धातादेव औटुम्बर मणि की तेजस्विता से हमारे अंदर परिपुष्टता को प्रतिष्ठित करें। गोबर की खाद से परिपूर्ण करने वाली गौ संतानों से युक्त होकर हमें अन्न और दूध आदि पर्याप्त मात्रा में प्रदान करें।)

प्रस्तुत श्लोक भी आज के संदर्भ मं महत्वपूर्ण है। क्योंकि इसमें भी गायों के महत्व के बताया गया है। और देवताओं से उनकी वृद्धि की प्रार्थना की गयी है। क्योंकि गायों के गोबर से खाद होती है। जिससे कृषि पैदावार में वृद्धि होती है एवं दूध आदि भी प्राप्त होता है। अतः आज की समस्याओं को देखते हुये गायों एवं अन्य पशुओं के अधिकाधिक संरक्षण की जरूरत है।

❁ पर्यावरण चेतना फीचर्स

पानी पीजे छान के

'पुरानी प्रसिद्ध कहावत है–'पानी पीजे छान, गुरू कीजे जान के'' इसमें छने पानी यानी स्वच्छ पानी की बड़ी महत्ता दिखाई गई है कि देखभाल के स्वच्छ पानी ही पीना चाहिए, क्योंकि गन्दे पानी से सैकड़ों रोगाणु पनपते हैं। अब तो गन्दे पानी की एक बूंद में हम खुर्दबीन की मदद से गंदगियां, सूक्ष्म जंतु, रोग फैलाने वाले रोगाणु देख सकते हैं। जब यह कहावत बनी होगी उस समय खुर्दबीन नहीं थी, पर उस समय के सयाने लोगों ने अपने लम्बे अनुभवों के आधार पर ही यह बात कही होगी जो आज भी खरी उतरती है।

अगर हम गंदा पानी पिएंगे तो पानी के साथ हमारे शरीर में ढेर सारे महीन जंतु, रोगाणु तथा विषैली चीजें भी पहुंच जाएंगी और कई बीमारियां पैदा कर देंगी। इसलिए मैं पर्यावरण चेतना के माध्यम से लोगों को संदेश चाहता हूं कि लोग पेयजल के प्रति बेहद सतर्क रहें और शुद्ध जल ही पिएं तथा पानी को प्रदूषण से बचाएं।

–सोमेश रघुवंशी, अलीगढ़

संदेश देते लेख

'पर्यावरण चेतना' का मार्च २००२ का अंक प्राप्त हुआ। ज्ञानवर्द्धक जानकारियों से भरापूरा यह अंक वास्तव में सही दिशा देने वाला है। यही नहीं बल्कि पर्यावरण चेतना का हर अंक अपने आप में अनूठा तथा रोचक जानकारियों से भरा पूरा होता है। इस अंक में प्रकाशित शिवेन्द्र कुमार पांडे का लेख गोधन आधारित कृषि का महत्व बहुत ही अच्छा लगा। जो निश्चित ही यह संदेश देता है कि हमें अपने देश में प्राकृतिक रूप से सहजता से उपलब्ध होने वाले संसाधनों के माध्यम से उन्नति की ओर अग्रसर होना चाहिए। **–राकेश वर्मा, पटना**

पृथ्वी का अस्तित्व खतरे में डालता मानव

चांद की तली पर जा पहुंचा है आज जमाना, यह कथन आज साधारण सा लगता है क्योंकि आज का जमाना मंगल के तल पर पहुंच चुका है। मानव में कुछ ऐसी बात तो होनी चाहिए जिससे उसकी ऊंचाईयों एवं असीमितताओं के आदर्श लक्षण चित्रित हों। कुछ ऐसे ही लक्षण मनुष्य में हैं, जिस पर आज हम गर्व महसूस कर रहे हैं।

आज हम इतना गर्व महसूस कर रहे हैं कि आज का मानव बिना किसी अधिकार के किसी दूसरे की सीमा में प्रवेश कर रहा है, अनाधिकार किसी के अस्तित्व में हस्तक्षेप कर रहा है। यहां तक कि आज का मानव एक दूसरे ग्रह के लिए अपनी माता पृथ्वी का अस्तित्व खतरे में डाल रहा है। जिस माता ने उसे पाल पोस कर बड़ा किया, आज उसी को धोखा देने पर उतारू है। क्या यह उचित है? वह यह नहीं जानता कि इसका दुष्परिणाम उसकी अपनी संतानें ही झेलेंगी। वह शायद रहे न रहे।

–अभिषेक तिवारी, लखनऊ

विज्ञान की महारथता का बुरा असर भी

'पर्यावरण चेतना' का हर नया अंक पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में नई–नई जानकारी देता है। यह सच है कि कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है। लेकिन यह अच्छी बात नहीं कि थोड़ा सा पाने के लिए बहुत ज्यादा खोना पड़े विज्ञान की इस दौड़ में थोड़ी सी महारथता हासिल करने पर प्रकृति पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों ही रूपों से बहुत बुरा असर पड़ता है। एक ओर जहां विज्ञान की उन्नति व विकास के कारण ही कुछ विशेष प्रजाति के जीव–जंतुओं और पेड़–पौधों के लुप्त होने का सिलसिला जारी है, तो दूसरी ओर विज्ञान ही लुप्त होने वाले पेड़ों और जीवों के आनुवांशिक इकाइयों को 'जीन बैंक' में संरक्षित कर उस पर निरंतर शोध कार्य कर रहा है। इससे स्वयं सिद्ध होता है कि विज्ञान वरदान के साथ–साथ अभिशाप भी है।

–अनिल सिंह, राजस्थान

सामग्री का अच्छा समावेश

'पर्यावरण चेतना' ठीक प्रकार से देखी। पत्रिका अच्छी बन पड़ी है। इसकी विषय वस्तु भी अच्छी है। पर्यावरण–प्रदूषण के कारक पर्यावरण स्वच्छ रखने के उपाय से सम्बन्धित तमाम छोटे–बड़े बिन्दुओं पर विद्वजनों के विचार व विवेचनाओं को पत्रिका में समुचित स्थान मिला है। यदि पर्यावरण से सम्बंधित कहानियों का भी समावेश किया जाये तो पत्रिका का कलेवर अधिक सुन्दर व रोचक हो जाए। वैसे पत्रिका को अपने स्तर पर पहुंचने में अभी लम्बी यात्रा करनी होगी।

–अमरनाथ, सीतापुर

बच्चों को पर्यावरण शिक्षा से ही प्रकृति की रक्षा हो सकेगी

आज पर्यावरण की रक्षा के लिए बहुत जोर-शोर से आवाजें उठायी जा रही हैं तमाम सरकारी एवं गैरसरकारी संगठन तथा पर्यावरणविद् इस ओर काफी गंभीर दिखते हैं। लेकिन अभी भी इस ओर बहुत कम ही लोगों का ध्यान है कि यदि हमें पर्यावरण की रक्षा करनी है तो इसके लिए स्वयं कुछ करने के साथ ही बच्चों को भी इस दिशा में शिक्षित करना होगा। उन्हें प्रकृति के बारे में जानकारी देनी होगी। तथा प्रदूषण से हानि-लाभ भी बताने होंगे तभी हम इस प्रकृति की रक्षा कर पाएंगे। क्योंकि बच्चे ही कल का भविष्य हैं। और इन्हीं से इस धरती मां की रक्षा की जा सकती है।

ऐसा नहीं है कि इस ओर प्रयास नहीं किए जा रहे हैं लेकिन अभी बच्चों के लिए पर्यावरण की शिक्षा को अनिवार्य नहीं बनाया जा सका है। क्योंकि अधिकांश स्कूलों में वर्षों से चली आ रही हमारी पुरानी शिक्षा पद्धति ही लागू है। जबकि आज बहुत ही बदलाव आ चुका है और भविष्य की चुनौतियों को देखते हुए अभी और भी परिवर्तन की आवश्यकता है। वर्तमान समय में बच्चों को उपयुक्त शिक्षा प्रदान करने के लिए 'न्यू मिलेनियम एजूकेशन सिस्टम' का उदय एक क्रान्तिकारी उपलब्धि है। और यह सफल भी हुआ है। क्योंकि इसके माध्यम से बच्चों को एक नई दिशा मिली हैं इसी के अन्तर्गत 'पर्यावरण चेतना' द्वारा भी एक नए प्रयास की शुरुआत 'बाल पर्यावरण चेतना क्लब' के रूप में की जा रही है। जिसमें बच्चों को प्रकृति की जानकारी के साथ ही उनमें रचनात्मक क्षमताओं के विकास का प्रयास भी शामिल है। 'बाल पर्यावरण चेतना क्लब' का प्रयास यही होगा कि बच्चे प्रकृति के बारे में पढ़ें और लिखें जिससे उनमें पेड़-पौधों, जीव-जन्तुओं व अपनी धरती माता के प्रति लगाव व जुड़ाव उत्पन्न हो सके।

आखिर बच्चे ही हैं जो आगे चलकर बड़े-बड़े काम करेंगे। बचपन में जैसी भी छाप उनके मन पर पड़ जाती है वे वैसा ही काम करते हैं। तो आइये हम सब अपने बच्चों व छात्रों को पर्यावरण की रक्षा के प्रति शिक्षित व जागरूक करने का संकल्प लें जिससे हम सबका, बच्चों का और प्रकृति का कल सुखमय हो सके। यहां प्रमुख बात यह भी है कि यदि हम अभी इस ओर जरा भी सचेत न हुए तो शायद अपने बच्चों के भविष्य से ही खिलवाड़ करेंगे। क्योंकि स्वच्छ पर्यावरण ही स्वस्थ नागरिकों को बनाने में सक्षम होता है। और स्वच्छ नागरिकों से ही एक विकसित समाज और राष्ट्र का निर्माण होता है।

प्रधान संपादक

प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं का पुनर्गठन

किसी राष्ट्र का स्वास्थ्य वहां के लोगों, समुदायों, गांवों एवं शहरों और उस औसत स्वस्थ वातावरण का कुल योग है जिसमें व्यक्ति तथा समुदाय रहते हैं। एक स्वस्थ राष्ट्र का विकास तभी संभव है जब उसके नागरिक, समुदाय तथा सरकार पूरी भागीदारी के साथ इस लक्ष्य की ओर उन्मुख हों। पिछले पांच दशकों में राष्ट्र के स्वास्थ्य संबंधी विभिन्न पहेलुओं में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। पर दुर्भाग्य से यह प्रगति असमान है तथा केवल कुछ राज्यों में ही हुई है। हिन्दी– भाषी क्षेत्र का बड़ा हिस्सा तथा उड़ीसा एवं असम अब भी अविकसित हैं। दिलचस्प बात यह है कि अच्छे हालात वाले राज्यों जैसे केरल, महाराष्ट्र, पंजाब आदि में कई ऐसे क्षेत्र हैं जहां लोगों के स्वास्थ्य की स्थिति कई वर्षों से स्थिर रही है।

हमने पिछले कुछ वर्षों में कई संक्रामक बीमारियों जैसे मलेरिया के फैलने की निराशाजनक स्थिति देखी है। यह भी संदेहास्पद है कि देश के अधिकतर भागों में उपलब्ध स्वास्थ्य सेवाएं आधुनिकीकरण से उत्पन्न स्वास्थ्य सेवाओं जैसे हृदय रोग, दुर्घटना, गुप्त रोगों इत्यादि से जूझने के लिए पर्याप्त हैं।

ऐसे में यह आवश्यक है कि आने वाले वर्षों में पिछड़े क्षेत्रों के लोगों के स्वास्थ्य सुधार पर पर्याप्त ध्यान दिया जाए तथा यह भी सुनिश्चित किया जाए कि विकसित राज्यों के पिछड़े इलाकों पर भी समुचित ध्यान दिया जा रहा है। भारत के स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र को नई चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करने के वास्ते उपलब्ध व्यवस्था में बुनियादी सुविधाओं को पुनर्जीवित किए जाने की भी आवश्यकता है। यह काम महज सरकार एवं उसके अधिकारियों द्वारा नहीं किया जा सकता। इसमें देश के प्रत्येक नागरिक की उत्सावर्द्धक एवं दृढ़ सहभागिता चाहिए जिससे वह अपनी एवं अपने समुदाय की स्वास्थ्य–संबंधी जिम्मेदारी ले सके। हमें निजी एवं स्वयंसेवी संस्थाओं की जिम्मेदारीपूर्ण हिस्सेदारी भी सुनिश्चित करनी होगी।

वर्तमान समय में देश में उपलब्ध ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं का सदुपयोग एक बड़ी चुनौती है। पंचायती राज की संभावनाओं को ध्यान में रखकर यह प्रस्ताव रखा गया है कि ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं को धीरे–धीरे परंतु सुनिश्चित तौर पर ग्राम पंचायत, पंचायत समिति तथा जिला परिषदों के प्रति जवाबदेह बनाया जाए। इस दृष्टिकोण के अच्छे उदाहरण महाराष्ट्र, पश्चिम बांगल एवं कुछ अन्य राज्यों में मौजूद हैं। इससे लोगों की भागीदारी में काफी मदद मिलेगी।

वर्तमान में स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए निर्धारित २ से ३ प्रतिशत की योजनागत राशि को बढ़ाकर कम–से–कम ५ प्रतिशत करना होगा ताकि जिला अस्पतालों, प्राथमिक चिकित्सा केन्द्रों एवं उप–केन्द्रों में पर्याप्त मात्रा में उपकरण, दवाईयां तथा अन्य चीजें उपलब्ध कराई जा सकें और वे कुशलतापूर्वक कार्य कर सकें। वर्तमान स्थिति बेहद चिंताजनक है। उपलब्ध राशि का करीब ८० प्रतिशत हिस्सा केवल वेतनों पर खर्च कर दिया जाता है और बचा हुआ हिस्सा ही दवाइयों, उपकरणों तथा अन्य आपूर्तियों के लिए बच पाता है। अगर हम इस स्थिति को सुधारने के लिए तुरन्त कोई कदम नहीं उठाते तो देश में बीमारों की संख्या बेहिसाब बढ़ जाएगी और उपलब्ध साधनों का काफी बड़ा भाग उनके इलाज में ही खप जाएगा।

–आलोक मुखोपाध्याय

सरकारी स्वास्थ्य कर्मचारियों से लोगों की एक बड़ी शिकायत यह है कि वे सेवा–स्थल पर मौजूद ही नहीं रहते। इस संदर्भ में कठोर निर्णय लेने होंगे। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर एम.बी.बी.एस. डाक्टरों की अनुलब्धता का समाधान इस तरह किया जा सकता है कि आयुर्वेद डाक्टरों की नियुक्ति कर उन्हें आठ महीने के लिए स्वास्थ्य प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया जाए और तत्पश्चात प्राथमिक चिकित्सा केन्द्रों की जिम्मेदारी उन्हें सौंपी जाए। किसी भी चिकित्साशास्त्र के स्नातक के

वास्ते स्नातकोत्तर में दाखिला लेने के पहले दो वर्ष के लिए ग्रामीण सेवा अनिवार्य कर दी जाए। सामाजिक विकास तथा सामुदायिक स्वास्थ्य प्रबंधन को ध्यान में रखकर यह प्रशिक्षण दूसरे प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों के कर्मचारियों के लिए भी अनिवार्य होने चाहिए। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि प्रत्येक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, सी.एच.सी. तथा उपकेन्द्र पूरी तरह उपकरणों एवं कर्मचारियों से सम्पन्न हो।

प्रतिभाशाली युवा विशेषज्ञों को प्राथमिक चिकित्सा सेवा में शामिल होने को प्रोत्साहित करने के वास्ते 'भारतीय स्वास्थ्य सेवा' का गठन किया जाना चाहिए ताकि देश की स्वास्थ्य सेवा के प्रबंधन की जिम्मेदारी प्रतिभाशाली युवाओं के कंधों पर डाली जा सके। इन युवाओं का इस क्षेत्र में आकर्षक कैरियर के प्रति आश्वस्त होना जरूरी है। इसकी प्रक्रिया भारतीय प्रशासनिक सेवा के अनुभवों को ध्यान में रखकर तैयार की जानी चाहिए। सेवा–अवधि में डाक्टरों की व्यावसायिक योग्यता का एक निश्चित स्तर बनाए रखने के लिए एक वैधानिक व्यवस्था को लाना जरूरी है। अन्य भारतीय प्रशासनिक सेवाओं की तरह ही नर्स समेत सभी स्वास्थ्य कर्मचारियों को सेवा पूर्व पर्याप्त प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। इसे सभी स्तर के स्वास्थ्य कर्मचारियों के लिए अनिवार्य सतत शिक्षा द्वारा और सुदृढ़ बनाया जाना चाहिए।

दोहरे प्रयासों से बचने के लिए स्वास्थ्य, जनसंख्या और महिलाओं एवं बच्चों संबंधी सभी ग्रामीण कल्याण कार्यक्रमों को समन्वित करना होगा। इससे उपलब्ध साधनों का सही उपयोग सुनिश्चित होगा। इसका अर्थ यह होगा कि एक कार्य करने वाले कर्मचारी धीरे–धीरे बहुआयामी कर्मचारी बन जाएंगे और उन्हें कम लोगों की देखभाल करनी होगी।

आशा की जाती है कि सामानों की पर्याप्त आपूर्ति से 'रेफेरल' सेवाओं पर बेहतर नियंत्रण पाया जा सकेगा। जिससे उप–मंडल एवं जिला अस्पतालों में होने वाली भीड़–भाड़ को रोका जा सकेगा। यह भी आवश्यक है कि सभी प्राथमिक चिकित्सा केन्द्रों में सामान्य परीक्षणों के लिए लैबोरेट्री सुविधाएं उपलब्ध हों।

वर्तमान में कई स्तरों पर चल रहे टी.बी., मलेरिया, यौन रोगों एवं एड्स के विशेष कार्यक्रमों को धीरे–धीरे प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा के तहत लाया जाना चाहिए ताकि स्वास्थ्य समस्याओं का प्रबंधन ढुलमुल न हो।

देश में एक अधिक व्यावहारिक एवं वैज्ञानिक स्वास्थ्य प्रबंधन सूचना व्यवस्था लानी होगी जो मूलभूत चिकित्सा आंकड़े तो संग्रहीत करे, पर स्वास्थ्य सेवा कम्र्चारियों पर बोझ नहीं हो जिससे उपलब्ध आंकड़ों का इस्तेमाल हो सके। उन्नत एवं समान राष्ट्रीय स्वास्थ्य आंकड़ों के लिए पूरे देश में एक समान स्वास्थ्य प्रबंधन सूचना व्यवस्था लागू की जानी चाहिए।

प्राचीनकाल से ही भारतीय स्वास्थ्य संस्कृति बेहद समृद्ध रही है, लेकिन पिछले काफी समय से उसके प्रति लापरवाही बरती जा रही है। इसीलिए स्थानीय स्वास्थ्य परम्परा को पुनर्जीवित करने के हर संभव प्रयास किए जाने चाहिए। इसके तहत स्थानीय पारम्परिक स्वास्थ्य चिकित्सकों को अपने माहौल में अपने ही लोगों की स्वास्थ्य समस्याओं का समाधान कम खर्च पर करने में मदद मिलेगी। भारतीय चिकित्सा पद्धति विभाग को चाहिए कि ऐसे चिकित्सकों के कौशल एवं ज्ञान को विकसित करने के लिए एक कार्यक्रम तैयार करे। साथ ही इस व्यवस्था में व्याप्त बुराइयों को समाप्त करने का प्रयास भी किया जाना चाहिए।

पूरे देश में स्थानीय स्वास्थ्य चिकित्सकों और सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के प्रयासों को और पुष्ट बनाया जाना चाहिए। इस योजना का केन्द्र गांव का ही एक सामाजिक व्यक्ति हो। उसे 'पंचायत सहायक' कहा जाए। उसका चयन ग्राम पंचायत द्वारा हो। उसे स्वास्थ्य संबंधी बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पंचायत की मदद करनी होगी तथा सरकारी स्वास्थ्य इकाइयों एवं लोगों के बीच कड़ी का काम करना होगा। मैदानी इलाकों में प्रति १००० व्यक्ति एवं पहाड़ी आदिवासी तथा दुर्गम इलाकों में प्रति ७०० व्यक्ति एक पंचायत स्वास्थ्य सेवक हो। पूरे देश को विभिन्न चरणों में इसके तहत लाना चाहिए।

पूरे देश में स्कूल अध्यापकों, पंचायत सदस्यों, युवा संगठनों, महिला–मंडलों एवं स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं द्वारा स्वास्थ्य शिक्षा,

विशेषकर स्कूली स्तर पर स्वास्थ्य शिक्षा के विशेष प्रयास किए जाने चाहिए ताकि लोगों में स्वास्थ्य के बारे में सही एवं वैज्ञानिक समझ विकसित हो। इस प्रक्रिया के तहत शिक्षा मंत्रालय के सहयोग से यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि गांव के सभी स्कूलों में स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध हों एवं पीने के लिए पर्याप्त स्वच्छ पानी की व्यवस्था हो।

देश के प्रत्येक जिले में जिला स्वास्थ्य योजना हो जिसे जिला–स्तर पर तैयार किया जाए। पंचायत स्वास्थ्य योजना को इसके साथ जोड़ा जाए। जिला–स्तर की योजना में विभिन्न इलाकों के लिए पर्याप्त लोच हो, मसलन पर्वतीय एवं मरूस्थलीय इलाकों में एक स्थायी अस्पताल के अलावा 'मोबाइल सेवा' की भी व्यवस्था हो। जबकि यह ज्ञात है कि अस्वस्थता का एक महत्वपूर्ण कारण सुरक्षित पेयजल का अभाव है तो यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि देश के प्रत्येक नागरिक के लिए पर्याप्त मात्रा में सुरक्षित पेयजल उपलब्ध हो। इस कार्यक्रम को ग्रामीण क्षेत्र एवं रोजगार मंत्रालय के सहयोग से क्रियान्वित किया जाना चाहिए। सुरक्षित पेयजल के स्रोत के सही रख–रखाव के लिए शुरू से ही इन स्रोतों की रख–रखाव प्रणाली से समुदायों को जोड़ा जाना चाहिए।

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि इस देश की करीब एक तिहाई आबादी, खासकर जनजातीय, पर्वतीय एवं शुष्क इलाकों में रहने वाले लोगों के स्वास्थ्य की स्थिति नाजुक है। लेकिन उनकी स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं खाद्य सुरक्षा एवं पिछड़ेपन जैसी अन्य समस्याओं से जुड़ी हैं। सामाजिक विकास मंत्रालय द्वारा किए गए शोधों से स्पष्ट है कि कमजोर एवं पिछड़े इलाकों के लिए उप–योजना तैयार करने की तत्काल आवश्यकता है। यह स्पष्ट है कि ऐसी आबादी का स्वास्थ्य उनके आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक स्तर से पूरी तरह जुड़ा होता है। एक समन्वित स्वास्थ्य एवं विकास कार्यक्रम द्वारा उनकी बिगड़ती स्थिति सुधारने का बड़े पैमाने पर प्रयास होना चाहिए और उसके लिए पर्याप्त धन, सामुदायिक प्रयास एवं स्वयंसेवी संगठनों का सहयोग सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

अधिक पिछड़े इलाकों की स्थिति में स्थायी सुधार की निकट भविष्य में कोई उम्मीद नहीं है अतः इन क्षेत्रों में रियायती भोजन की आपूर्ति शुरू करनी होगी। चूंकि हमारे देश में अतिरिक्त अनाज गोदामों में पड़ा है और इस प्रकार की व्यवस्था से आंध्र प्रदेश एवं तमिलनाडु में अच्छे परिणाम मिले हैं, यह कोई कठिन काम नहीं होना चाहिए। इससे देश के सबसे कमजोर तबके के लिए भोजन एवं स्वास्थ्य की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकेगी।

ग्रामीण क्षेत्रों की कई उभरती स्वास्थ्य समस्याएं विकास प्रक्रिया से जुड़ी हैं। यह आवश्यक है कि योजनाएं बनाते समय इन परियोजनाओं के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों पर विचार किया जाए। कीटनाशक विष, प्रदूषित तथा भूमिगत जल और रेगिस्तानी इलाकों में मलेरिया का प्रकोप विकास से जुड़ी समस्याएं हैं। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि विकास परियोजनाओं से जुड़े सभी स्वास्थ्य–संबंधी खतरों को ठीक तरह से जांच–परख लिया जाए। इसी प्रकार ग्रामीण इलाकों में यौन रोग एवं एड्स संबंधी शिक्षा का प्रसार किया जाना चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों में भारी संख्या में मजदूरों के शहर आने से इन रोगों से उत्पन्न समस्याएं खतरनाक रूप ले रही हैं।

पिछली योजनाओं के दौरान कुष्ठ रोग निवारण व्यवस्था में पर्याप्त सुधार हुआ है। इस सफलता से जुड़े अनुभवों का उपयोग अन्य राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों के लिए भी किया जाना चाहिए। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि अगले कुछ वर्षों में मलेरिया तथा टी.बी. की समस्या से निपटने के लिए पर्याप्त मात्रा में वित्तीय संसाधन उपलब्ध हों।

नई आर्थिक नीति तथा उदारीकरण के चलते नई दवा नीति बनी जिसके परिणामस्वरूप दवाओं की कीमतों में काफी बढ़ोत्तरी हुई और दवाओं का आयात भी बढ़ा परंतु आवश्यक दवाओं की सूची तैयार करना, असंगत एवं हानिकारक दवाओं की बिक्री रोकना, उपभोक्ताओं को उन दवाओं के बारे में चेतावनी देना जिनमें टेराटोजेनिक प्रभाव है तथा निष्पक्ष दवा सूचना देना जैसे कई कार्य अभी बाकी हैं। अतः नई दवा नीति में निम्न बातों का समावेश किया जाना चाहिएः–

१. राष्ट्रीय दवा प्राधिकरण का गठन।

२. सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र के लिए अनिवार्य दवाओं की सूची तैयार करना।

३. अनिवार्य दवाओं की ऐसी सूची तैयार करना जो अलग–अलग स्तरों पर लागू हो सके।

४. राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्रों के विशेषज्ञों के लिए टी.बी., मलेरिया, यौन रोग आदि के बारे में स्पष्ट चिकित्सकीय दिशा–निर्देश तैयार करना तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों तथा उप–केन्द्रों द्वारा दवाओं की खरीद, वितरण तथा उचित दर केन्द्रों से दवाओं के वितरण आदि के बारे में भी दिशा–निर्देश निर्धारित करना।

५. अनुचित दवाओं के प्रभावों की जांच तथा उनकी जांच रिपोर्ट तैयार करने के लिए केन्द्रों की स्थापना।

६. विशिष्ट स्वास्थ्य समस्याओं जैसे टी. बी. एवं यौन रोग के संदर्भ में दवा की सुझाई गई मात्रा तथा वास्तव में उपयोग में लाई गई मात्रा के बीच का असंतुलन जानने के लिए विपणन के बाद सर्वे एवं अध्ययन कराना।

७. खराब दवाओं, हानिकारक दवाओं तथा प्रतिबंधित दवाओं से संबंधित अदालती मामलों पर नजर रखना तथा उनके बारे में सूचना देना।

चूंकि पूरे देश में ग्रामीण क्षेत्र में अयोग्य डाक्टर बड़ी संख्या में मौजूद हैं अत

उनके ज्ञान में सुधार के प्रयास होने चाहिए। साथ ही उनके उपचार का दायरा कम किया जाना चाहिए ताकि कम से कम लोग उनकी गिरफ्त में आएं।

संगठित एवं योग्य डाक्टरों के लिए यह अनिवार्य होना चाहिए कि वे टीकाकरण तथा परिवार नियोजन सेवाओं में योगदान दें। निजी क्षेत्र में कम कीमत पर अच्छी सेवा उपलब्ध कराने के लिए निजी डाक्टरों की एक भागीदारीपूर्ण व्यवस्था तैयार की जानी चाहिए। सरकारी डाक्टरों की निजी प्रैक्टिस पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया जाना चाहिए।

जरूरतमंद क्षेत्रों में बेहतर प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए स्वयंसेवी क्षेत्र को इस कार्य में शामिल किया जाना चाहिए। वे स्कूल एवं अन्य मंचों से स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। प्रशिक्षित स्वयंसेवी संगठनों से सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं तथा सरकारी स्वास्थ्य कर्मचारियों के प्रशिक्षण में भी मदद लेनी चहिए। इसी तरह उन्हें पूरे देश में चलाए जाने वाले टी.बी. एवं मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रमों में भाग लेना चाहिए। स्वयंसेवी संगठनों के राष्ट्रीय एवं राज्य–स्तरीय नेटवर्क का इस्तेमाल सबसे निचले स्तर की स्वयंसेवी संस्थाओं की बेहतर भागीदारी के लिए किया जाना चाहिए।

स्वयंसेवी संगठनों की बढ़ती व्यावसायिक कुशलता तथा स्वास्थ्य सेवाओं के विभिन्न क्षेत्रों में उनके द्वारा किए गए सफल परीक्षणें को देखते हुए उन्हें केन्द्र एवं राज्य–स्तरीय योजनाओं के गठन तथा संचालन के कार्य में लगाया जाना चाहिए। इसमें स्वयंसेवी संगठनों का 'राष्ट्रीय नेटवर्क' भूमिका अदा कर सकता है।

शोध के मुद्दे

१. सामुदायिक भागीदारी।

२. प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों में भारतीय चिकित्सा प्रणालियों का समन्वय।

३. ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं के लिए कारगर तथा सस्ती स्वास्थ्य प्रबंधन सूचना व्यवस्था विकसित करना।

४. ग्रामीण स्वास्थ्य व्यवस्था को वित्त प्रदान करना।

५. स्वास्थ्य शिक्षा के कारगर तरीके अपनाना।

६. अन्तर्क्षेत्रीय समन्वयन तथा ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक विकास कार्यों का केन्द्रीकरण।

७. जिला–स्तर पर सरल एवं कारगर तरीके से स्वास्थ्य निगरानी करना। इससे हमें सार्वजनिक स्वास्थ्य के मुख्य क्षेत्रों में सफलतापूर्वक लागू किए गए तरीकों को समझने में मदद मिलेगी।

भविष्य में निम्नलिखित गतिविधियों के इर्द–गिर्द प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं का पुनरुत्थान करना होगा:

– सामुदायिक स्वास्थ्य प्रबंधन में स्थानीय लोगों की हिस्सेदारी।

– प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्ध सुविधाओं का पूरा उपयोग किया जाए तथा वर्तमान आलस्यपूर्ण व्यवस्था को सुधारा जाए और वर्तमान एवं भविष्य की स्वास्थ्य चुनौतियों के लिए तैयार रहा जाए।

– खासकर पिछड़े इलाकों में स्वास्थ्य कार्यक्रम योजनाओं के अवलोकन तथा क्रियान्वयन में स्वयंसेवी संगठनों की सक्रिय हिस्सेदारी।

– रोग निवारण, रोग निषेधन तथा देखभाल संबंधी कार्यों में निजी क्षेत्र की अनुशासित एवं जिम्मेदारीपूर्ण भागीदारी सुनिश्चित करना।

– स्थानीय स्वास्थ्य परमपरा एवं चिकित्सकों का पुनर्गठन ताकि पूरे देश में स्वास्थ्य सेवा के विकास में वे महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें।

– जिला–स्तर पर विकेन्द्रित योजना बनाना जिसमें स्थानीय आवश्कताओं और अवरोधों को ध्यान में रखा जाए।

– धीरे–धीरे स्वास्थ्य सेवाओं की जिम्मेदारी पंचायतों एवं जिला परिषदों को सौंप दी जाए और उन्हें राज्य स्वास्थ्य सेवा से तकनीकी सहयोग, मार्गदर्शन तथा नेतृत्व मिले।

– स्वास्थ्य सेवाओं के लिए योजनागत आबंटन बढ़ाकर कम से कम ५ प्रतिशत किया जाए।

– कमजोर तबके के लोगों के स्वास्थ्य में सुधार के लिए विशिष्ट उपयोजना बनाई जाए।

निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि स्वास्थ्य सब कुछ तो नहीं है, पर स्वास्थ्य के बिना कुछ भी नहीं है।

कुत्ते सूंघकर बताएंगे मरीज को कैंसर है

मेरठ। अपराध जाँच में तहलका मचा देने वाली कुत्तों के सूँघने की गजब की शक्ति का इस्तेमाल अब रोगों के निदान में भी किया जा सकेगा। विशेषज्ञों के अनुसार कैंसर, ट्यूमर और अन्य ऐसे आंतरिक रोगों, विकारों एवं बदलाव को सूँघकर ढूँढने की शक्ति कुत्तों में पाई गई है, जिसका पता बाहर से लगा पाना संभव नहीं है। उनका मानना है कि रोग निदान की इस अनोखी तकनीक के प्रचलन में आने पर न सिर्फ महँगे लैपरोस्कोपी, दूरबीन आदि परीक्षणों से छुटकारा मिल सकेगा, बल्कि उनसे होने वाले अनेक दुष्प्रभावों से भी बचा जा सकेगा।

सेना के रिमाउंट वैटरिनरी कोर (आरवीसी) मेरठ के श्वान प्रशिक्षण केन्द्र में मुख्य प्रशिक्षक कर्नल आर.के. दीवान ने यहाँ बताया कि मनुष्य में जिस न्यूनतम गंध को सूँघने की शक्ति होती है, कुत्ता उसके मात्र दस लाखवें हिस्से की तीव्रता वाली गंध को भी सूँघकर उसका पता लगा लेता है।

कर्नल दीवान ने बताया कि कुत्ते गंध पाने और उसे पहचानने के लिए नाक के एक विशेष कक्ष में हवा भर लेते हैं जो श्वास के साथ बाहर नहीं निकाली जाती। इस तरह गंध अणु उस समय तक वहीं रहते हैं, जब तक उनकी गंध ग्रहण न कर ली जाए। इसके लिए कुत्ते की नाक में 20 करोड़ गंधग्राही कोशिकाएँ होती हैं, जिन्हें यदि फैलाया जाए तो नाक की झिल्ली उनके शरीर की कुल सतह से अधिक क्षेत्र घेर लेगी। जर्मनी और इंग्लैंड समेत अनेक यूरोपीय देशों में कुत्तों के सूँघने की अति परिष्कृत शक्ति का इस्तेमाल मानव रोगों के निदान में सफलतापूर्वक किए जाने की चर्चा करते हुए कर्नल दीवान ने बताया कि भारत में भी ऐसे परीक्षण एवं कोशिशें जारी हैं। उन्होंने बताया कि शरीर से निकलने वाले हारमोनों की गंध सूँघकर पहचान लेने के कारण कुत्ते मनुष्यों में गर्भ परीक्षण भी आसानी से कर सकते हैं, जिसकी विश्वसनीयता अन्य परंपरागत परीक्षणों से कहीं अधिक पाई गई है।

उन्होंने बताया कि हारमोनों की गंध को सफलतापूर्वक पहचान लेने के कारण भारत के बड़े-बड़े डेयरी फार्मों में मवेशियों के मदमस्त होने की जाँच कुत्तों से करवाई जा रही है।

इसके अलावा लकड़ी की घोर शत्रु दीमक की खोज भी कुत्तों द्वारा आसानी से करवाई जाती है, जो लकड़ी को ऊपर से सूँघकर ही अंदर दीमक होने की निशानदेही करवा देते हैं। कुत्ते की सूँघने की शक्ति के इस्तेमाल के कारण ही मनुष्य से उसका बहुत पुराना नाता रहा है।

कुत्तों को उनके पूर्वज भेड़ियों की तरह एक अतिरिक्त छठी ज्ञानेंद्री का स्वामी बताते हुए कर्नल दीवान ने कहा कि गंध के आधार पर पीछा करने की गजब की शक्ति कुत्तों के पास होती है, जिसका इस्तेमाल जासूसी और विभिन्न खोजों में किया जाता है। उन्होंने बताया कि इसी के आधार पर प्रशिक्षित कुत्तों को रास्ता बताते हुए बढ़ना, चौकसी, बारूदी सुरंगों की खोज, विस्फोटक खोज तथा अतिविशिष्ट व्यक्तियों की सुरक्षा जैसे कार्यों में निपुणता हासिल होती है और वह इन कार्यों को सफलतापूर्वक अंजाम भी देते हैं।

कर्नल दीवान ने बताया कि प्रशिक्षण के बाद अपने-अपने क्षेत्र में महारत हासिल कर लेने वाले कुत्तों की कार्यकुशलता एवं विश्वसनीयता 85 प्रतिशत से भी अधिक होती है, जबकि वही कार्य अत्याधुनिक मशीन या उपकरण से करवाने पर मात्र 12 से 18 प्रतिशत विश्वसनीयता एवं क्षमता ही प्राप्त की जा सकती है। कर्नल दीवान के अनुसार विस्फोटकों की खोज के लिए प्रशिक्षित एक कुत्ता करीब 42 हजार रुपए कीमत का पड़ता है, जबकि यही काम अंजाम देने वाली अत्याधुनिक मशीन की कीमत 11 से 20 लाख रुपए तक होती है। मशीन का रखरखाव और उसके खराब होने की दशा में उसकी मरम्मत भी काफी महँगी पड़ती है, लेकिन इनकी जगह कुत्तों का इस्तेमाल करके इससे बचा जा सकता है। श्वान प्रशिक्षण केंद्र की कार्यप्रणाली समझाते हुए कर्नल दीवान ने बताया कि कुत्तों की 400 से अधिक ज्ञात नस्लों में से मात्र जर्मन शैफर्ड और लैबरेडर रिट्रीवर कोन सिर्फ प्रशिक्षित किया जाता है, बल्कि उनकी नस्ल भी यहीं तैयार करवाई जाती है। चार से छह महीने का बच्चा प्रशिक्षण के लिए उपयुक्त रहता है और करीब एक वर्ष के कुशल प्रशिक्षण के बाद वह अपने काम को अंजाम देने लायक बन पाता है। आठ-नौ वर्ष बाद जब कुत्तों की क्षमता काम करने लायक नहीं रहती तो उन्हें सेवानिवृत्त कर दिया जाता है, क्योंकि उन पर किया जाने वाला खर्चा बाद में बर्दाश्त नहीं किया जा सकता है। प्रशिक्षित कुत्तों का सुरक्षा हेतु इस्तेमाल एवं उनकी महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ बताते हुए कर्नल दीवान ने कहा कि एसपीजी (स्पेशल प्रोटेक्शन ग्रुप) तथा एनएसजी (नेशनल सिक्यूरिटी गार्ड) ब्लैक कमांडो में कुत्तों को सफलतापूर्वक इस्तेमाल किया जा रहा है। अक्टूबर 1992 में सेना के इन्हीं कुत्तों ने भारत-पाकिस्तान सीमा पर तैनात रहने के दौरान 185 बारूदी सुरंगों को खोजकर दुनिया को चौंका दिया था, जो ज्यादातर 1948 से भी बहुत पुरानी थीं और उनको इससे पूर्व कभी खोजा नहीं जा सका था। सहायक प्रशिक्षक मेजर सी.एस. सोहल और मेजर प्रमोद देशमुख ने बताया कि आर.वी.सी सेंटर एवं स्कूल मेरठ की स्थापना 17 अप्रैल 1948 में हुई थी। उन्होंने बताया कि वर्ष 1960 से यहाँ सेना के श्वान प्रशिक्षण केन्द्र ने भी काम करना शुरू कर दिया और तभी से यह देश के प्रमुख प्रशिक्षण केन्द्रों में से एक है, जहाँ से करीब सौ कुत्ते प्रतिवर्ष प्रशिक्षित करके देश के विभिन्न भागों में भेजे जाते हैं।

वानर परिवेदना

लंबी पूंछ लटकाये,
छत की मुंडेर पर बैठा हुआ बंदर।
गर्दन घुमा–घुमा कर देखता है,
इधर–उधर चौतरफा
क्या था? क्या हो गया?
क्या होगा अब, इस शहर का?
तंग हो गई गलियां,
संकरी हो गई सड़कें
उखड़ गई सड़कें, निकल गई हड्डियां,
पेवर की सड़कें, खा गये कड़के।
आते–जाते लोग, भीड़भाड़,
रेलमपेल, टकराते, भिचड़ाते
भागे जा रहे लोग।
बाप रे बाप! कितने सारे लोग असंतुलित
जनसंख्या, जनसंख्या विस्फोट!
विभीषिकी खड़ी मुंहफाड़े!
अस्त–व्यस्त जिन्दगी,
ये मशीनरी जिन्दगी, फैल रहा प्रदूषण
लील रहा प्रदूषण, क्या होगा अन्त
इस भीड़ भरी दुनिया का?
भीड़ भरी दुनिया में आने से , जाने से,
घबराता है बंदर, डरता है बंदर
लंबी पूंछ लटकाये, छत की मुंडेर पर
बैठा हुआ बंदर।
डरता है बंदर इंसान से,
इंसान के अंदर छिपे हैवान से।
यहां तो–
भाई, भाई को काटता है,
इंसान, इंसान को मारता है।
तो फिर– उसे कौन छोड़ेगा?
उसे कौन बख्शेगा?
ना बाबा, ना, नीचे आया तो,
भगाया जाऐगा, डराया जाऐगा,
मारा जायेगा, हैवान के डर से
शंकित, आशंकित, संतप्त, भयग्रस्त
आना नहीं चाहता,
नीचे उतर कर बंदर।
ठगा–ठगा सा, टुकुर–टुकुर, ताकता है,
झांकता है, इर्दगिर्द बंदर।
लंबी पूंछ लटकाये,
छत की मुंडेर पर बैठा हुआ बंदर।
सड़कों पर आवे, तो कैसे आवे?
सड़ांध भरी, गटरें, गंदी बुदबुदाती
नालियां, नंगी उकरड़ें पर लगे ढेर सारे
कूड़े–करकट के ढेर,
कचरे के अंबार। आने को नीचे करता
नहीं मन। पेड़ों पर ही जी लेने को करता
है मन।
पापी पेट! भूख जो सताती, आता है
नीचे, उफ! चौतरफा प्रदूषण ही प्रदूषण
घबरा कर वापस चढ़ जाता मुंडेर पर
बंदर। लंबी पूंछ लटकाये छत की मुंडेर
पर बैठा हुआ बंदर।
आवाजाही– दुपहिये, तिपहिये, बसों की
भां–भौं। वाहनों, मोटरों की चिल्ल–पौं!
घर्राहट् भर्राहट्, धड़ल्ले से बजने वाले
ढोल–ढमाकों, बैण्ड–बाजों
की कानफोड़ आवाजें।
ध्वनि विस्तारक यंत्रों की। अनवरत,
निरन्तर, बढ़ता ध्वनि–प्रदूषण।
भट्टों से, कारखानों की चिमनियों से
निकलता जहर, कसैला, विषैला धुआं
चौतरफा, जी घबराता है।
दम घुटने लगता है। मुंह बिचकाता है
सोचता है बंदर कि ऐसे में नगर के
बीचोबीच नगर पालिका दफ्तर
निश्चिंत बेखबर, ऊंघ रहा है,
लम्बी तानकर सो रहा है।
इसीलिए भनभनाते मच्छरों की भरमार
से, भय से, आता नहीं नीचे बंदर।
क्या करे? कहां जाये? कैसे जाये?
ताकता, झांकता, पछताता चुपचाप
लंबी पूंछ लटकाये, छत की मुंडेर पर
बैठा हुआ बंदर।
आदमी के कृत्य से कितना दुःखी है
बेचारा? वक्त का मारा, बेसहारा।
कहते हैं लोग– 'आदमी के वंशज होते
थे बंदर।' इसी आदमजात ने कितना
किया है प्रकृति का दोहन?
कैसा किया है, प्रकृति का शोषण?
किया है कितना पर्यावरण प्रदूषित?
कि– पड़ गया संकट में मानव ही का
अस्तित्व। होते थे पेड़ पौधे देवतुल्य।
घट गया अब इनका कितना मूल्य?
मगर इसी मानव ने काट दिये पेड़,
नंगे कर दिये जंगल। उजाड़ दी हरियाली
मानव के इस कृत्य पर प्रश्न पूछता है
लम्बू पूंछ लटकाये, छत की मुंडेर पर
बैठा हुआ बंदर।

–श्याम अश्याम, बांसवाड़ा (राज.)

गिद्धों को बचाने में ब्रिटेन आगे आया

हाल ही में हरियाणा सरकार ने ब्रिटेन की रॉयल सोसायटी फॉर द प्रोटेक्शन ऑफ बर्ड्स और मुंबई की बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी के साथ एक परियोजना चलाने का फैसला लिया है। इस परियोजना के अंतर्गत तेजी से लुप्त हो रहे गिद्धों को बचाने पर काम किया जाएगा। राज्य सरकार के प्रवक्ता ने कहा है कि इस परियोजना के लिए सभी वांछित स्वीकृतियां और संसाधन उपलब्ध करा दिए गए हैं। सरकारी सूत्रों का कहना है कि पूर्व पटिलाया राज्य की शाही शिकारगाह बीर शिकारगढ़ में गिद्धों के प्रजनन के लिए एक कार्यक्रम चलाया जाएगा।

इस परियोजना को ब्रिटिश सरकार ने एक लाख पौंड की सहायता दी है। उल्लेखनीय है कि करीब पिछले एक दशक से भारतीय उपमहाद्वीप में गिद्धों की जनसंख्या बड़ी तेजी से कम हो रही है। इसे बचाने के बहुत सारे प्रयास भी असफल सिद्ध हुए हैं। हजारों की संख्या में गिद्ध खतरनाक वायरस के शिकार बन गए हैं। वायरस के इस हमले से गिद्धों की सारी प्रजाति ही खत्म हो गई है। उदाहरणों से समझा जा सकता है कि गिद्धों की संख्या में कितनी तेजी से कमी हुई है। केवलादेव नेशनल पार्क में सफेद पीठ वाले गिद्धों का प्रजनन बड़े पैमाने पर होता था। इस बात का उल्लेख 1956 के दस्तावेजों में है कि तब यहां गिद्धों के 350 से अधिक घोंसले थे, पर सन् 2000 तक इनकी संख्या केवल 2 रह गई। प्रकृति के सर्वश्रेष्ठ और सर्वाधिक प्राकृतिक सफाई कर्मचारी माने जाने वाले इस पक्षी की कमी से बहुत सारे क्षेत्रों में संकट पैदा हो गया है। गिद्धों की कमी के कारण ऐसे पशुओं की संख्या बढ़ रही है जो कि महामारियों और विभिन्न प्रकार की बीमारियों को जन्म देते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

गर्मी का इलाज

पर्यावरण विज्ञान कई वर्ष पूर्व ही खुलासा कर चुका है कि आने वाले दिनो मे प्रत्येक मौसम अपने चरम पर होगा। इसका प्रमाण कई देशो मे आ रही बाढ़ और पड़ रहे सूखे से मिलता है। इस बार भी गर्मी के तेवर अभी से झलकने लगे है। न सिर्फ भारत मे, बल्कि मनीला जैसे देश मे रह रहे लोग गर्मी से अभी से त्रस्त होने लगे है। और इससे बचने के नायाब-नायाब तरीके खोज रहे है। लोग गर्मी से बचने के लिए सिर पर बर्फ की छोटी-मोटी सिल्ली उठाए घूम रहे है। इसके बावजूद गर्मी है कि कम होने का नाम ही नही ले रही।

ऐसा भी नही है कि मिट्टी स्नान कोई धार्मिक अनुष्ठान है जिससे सारे के सारे पाप धुल जाएंगे। और न ही इसमे स्नान करने से कोई गंभीर बीमारी ठीक हो जाएगी। इस स्नान की असली वजह गर्मी है और उससे छुटकारा पाने के लिए मिशीगन में लोग मिट्टी स्नान का सहारा ले रहे हैं।

पर्यावरण की चिंता

एक हमारा देश भारत है जहां लोगबाग किसी सुविधा के न होने पर सरकार को तो कोसना बिल्कुल नही भूलते। यह अलग बात है कि वे स्वयं अपनी जिम्मेदारियों से हमेशा मुंह चुराते रहते है। वास्तव में हमें दुनिया से सीखना चाहिए कि कैसे लोग अपने आस-पास घटने वाली घटनाओं के प्रति संजीदगी से सोचते विचारते हैं।

उदाहरण के लिए ग्रीनपेस संगठन को लिया जा सकता है । यह संगठन विश्वभर मे पर्यावरण के प्रति जनचेतना जगाने के लिए हरसंभव प्रयास कर रहा है। तभी तो पिछले दिनों संगठन के सदस्यों ने कूड़े के डिब्बे का रूप धारण कर हांगकांग के संसदीय भवन के सामने प्रदर्शन किया। वे सरकार से मांग कर रहे थे कि कूड़े के डिब्बे की रिसाइक्लिंग के सिलसिले मे कुछ ठोस कदम उठाते हुए दीर्घ योजना बनाई जाए।

विलुप्त चीता फिर जिंदा होगा दस लाख डॉलर में

सेंटर फॉर सेल्युलर एंड मोलिक्युलर बॉयलोजी में 1953 में विलुप्त हो चुके भारतीय चीते का क्लोन बनाया जाएगा। देश के प्रसिद्ध डीएनए साइंटिस्ट डॉक्टर लालजी सिंह एक विशेष परियोजना के तहत भारतीय चीते का क्लोन तैयार करेंगे।

चूंकि भारतीय चीता मौजूद नहीं है इसलिए ईरानी चीते के जीन्स का इस्तेमाल किया जाएगा। इसे बनाने में पांच वर्ष तक का समय लग सकता है। भारतीय शोधकर्ता भी उन्हीं विधियों से क्लोनिंग की प्रक्रिया पूरी करेंगे जिन विधियों को अमेरिकी वैज्ञानिक इस्तेमाल में लाते हैं। डॉक्टर सिंह और उनका दल चीते की जीवित कोशिकाओं से जेनेटिक मटेरियल को निकाल कर इसे चीते के खाली डिम्ब से मिलाएंगे। इनके मिलने से जो भ्रूण तैयार होंगे उन्हें सरोगेट मादा चीताओं में स्थापित कर दिया जाएगा। इस परियोजना की सबसे बड़ी मुश्किल यह है कि भारत में कोई जीवित चीता नहीं है जिससे डीएनए प्राप्त किया जा सके। उल्लेखनीय है कि 1953 में एक शिकारी ने आखिरी भारतीय चीते का भी शिकार कर दिया था। डॉक्टर सिंह का कहना है कि 'भारतीय चीते का क्लोन तैयार करने के लिए ईरानी चीते (लेपर्ड) को प्रयोग में लाया जाएगा और क्लोन्ड भारतीय चीते को सेंट्रल जू अथॉरिटी में रखा जाएगा। हैदराबाद के नेहरू जूलोजिकल पार्क के पास स्थित लेबोरेटरी फॉर द कन्जर्वेशन ऑफ एनडेन्जर्ड स्पेसीज में चीते को क्लोन किया जाएगा। इसे 50 करोड़ की लागत से बनाया गया है। इसमें शेरों, तेंदुओं और चीतों आदि जैसी अन्य प्रजातियों के क्लोन भी तैयार किए जाएंगे।

समुद्र तटों का निजीकरण

स्थानीय निवासियों के विरोध के बावजूद गोआ की भाजपा सरकार राज्य के तीन प्रमुख समुद्र तटों को निजी हाथों में सौंपने के बारे में सोच रही है। परिकर सरकार ने यहां इस आशय की घोषणा की है और संभावित सेवा प्रदाताओं से कहा है कि वे मिरामर, कालनगुटे और कोलवा के रख-रखाव का ठेका प्राप्त कर सकते हैं। मिरामर और कालनगुटे उत्तरी गोआ और कोलवा दक्षिणी गोआ के लोकप्रिय समुद्र तट हैं। इस परियोजना से जुड़े एक महत्वपूर्ण अच्किारी सैबाल डे का कहना है कि भारत में इस किस्म की पहली परियोजना को अंतिम रूप वित्तीय सलाहकार इन्फ्रास्ट्रक्चर लीजिंग एंड फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड के द्वारा दिया जाएगा।

इस योजना के तहत निजी एजेंसियों को विभिन्न प्रकार के कार्य सौंपे जा सकते हैं और ये एजेंसियां वेंडिंग, वाटर स्पोर्ट्स, पिकनिक हट्स, पार्क्स, इंटरनेटमेंट्स और झूलों आदि गतिविच्यिों को संचालित करने के व्यावसायिक अधिकार प्राप्त कर सकेंगी।

पणजी शहर के पास मिरामर करीब साढ़े तीन किलोमीटर तक फैला रेतीला क्षेत्र है, जिसकी व्यावसायिक क्षमताओं को परखने की पहली बार शुरुआत की जाएगी। परंतु इन योजनाओं का विरोध होना भी शुरू हो गया है। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) ने अपने एक बयान में इसे एक अपरिपक्व और अनुचित कदम बताया है और कहा है कि किसी प्राइवेट एजेंसी को इसे 20 साल के लिए सौंपना घाटे का सौदा होगा।

दूसरी ओर इस योजना के सलाहकार इन्फ्रास्ट्रक्चर लीजिंग एंड फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड (आईएलएफएस) का दावा है कि इस स्कीम के अंतर्गत समुद्र तट अधिक स्वच्छ हो जाएंगे और यहां पर वे सभी सुविधाएं उपलब्ध होंगी जिनसे अधिक संख्या में पर्यटक आएंगे। आईएलएफएस गोआ सरकार की अन्य पर्यटन संबंच्ी परियोजनाओं की व्यावहार्यता को जांच-परख रही है।

कॉर्बेट पार्क के बंटवारे से पशुओं की आफत

उत्तरांचल और उत्तरप्रदेश के बीच कॉर्बेट टाइगर रिजर्व (सीटीआर) और प्रस्तावित राजाजी पार्क का बंटवारा होने से पार्क में रहने वाले

राष्ट्रीय समाचार

हाथियों और बाघों के लिए खासी मुसीबत हो गई है। उत्तरांचल के बनने से सीटीआर का 32 वर्ग किमी का क्षेत्र बेकार हो गया है, जबकि जरूरत है कि पार्क के दोनों भागों को समन्वित रखा जाए। दोनों नए राज्यों के बंटवारे के चलते वन्य प्राणी विशेषज्ञों ने जिस भाग को नंबर 1 की टाइगर कन्जरवेशन यूनिट (टीसीयू) घोषित किया था, उसके हाथियों और बाघों के लिए भी पर्याप्त स्थान और भोजन का संकट खड़ा हो गया है, जबकि टीसीयू दो, तीन और चार के हाल में प्राणियों का अवैध शिकार और मानव बसाहट का खतरा बढ़ता जा रहा है।

कछुओं की विलुप्त होती प्रजाति को बचाने का प्रयास

घाना के पर्यावरण शास्त्रियों के सामने सबसे बड़ी चिंता यह है कि दैत्याकार समुद्री कछुओं की जो प्रजाति इस समय पर्यावरण के खतरों का सामना कर रही है, उसकी रक्षा किस तरह की जाए। फिलहाल तो उन्हें यही रास्ता नजर आ रहा है कि देश के अटलांटिक किनारे पर छह संरक्षणालय स्थापित कर वहाँ इन दुर्लभ और लुप्त होते कछुओं को रखा जाए। इस संरक्षण कार्य के लिए घाना वन्य जीव समिति ने 20 हजार डॉलर इकट्ठा करने के लिए एक अभियान चला रखा है, ताकि उन समुद्री तटों की सुरक्षा की जा सके जहाँ हजारों बड़े-बड़े कछुए आकर लाखों अंडे देते हैं। अभी इन कछुओं का प्रजननकाल चल रहा है। इस समिति की चिंता यह है कि घाना के तट पर अंडे देने के लिए जो कछुए आते हैं, उनमें से कम से कम दो-तिहाई कछुओं को स्थानीय मछुआरे पकड़कर अपना भोजन बना लेते हैं। ये कछुए घाना के स्थानीय प्राणी नहीं हैं। यहाँ की नर्म रेत और गर्म वातावरण पर निषेचन के लिए आने वाले कछुओं में कई कछुए तो दक्षिण अमेरिका जैसे सुदूरवर्ती सागर से तैरते चले आते हैं।

इन कछुओं को केवल इंसानों से ही खतरा नहीं है। कई पालतू जानवर जैसे कुत्ते और सूअर गड्ढे खोद कर प्रतिवर्ष लाखों शिशु कछुओं को चट कर जाते हैं। कछुओं की खोल का प्रयोग घरों में सजावट या सामान रखने में होता है। इस स्थिति से चिंतित घाना वाइल्ड लाइफ सोसायटी के प्रोजेक्ट अच्किारी गरॉड ओसेई बोआफी का कहना है कि यदि लोग इसी तरह निषेचन के लिए आने वाले कछुओं को मारते रहे तथा उनके अंडों को नष्ट करते रहे तो वे कछुओं की पीढ़ी को नष्ट कर देंगे। लेकिन कई लोगों को इससे कुछ लेना-देना नहीं है। कुछ लोग इसे अपने आहार से ज्यादा कुछ नहीं मानते हैं। वे इन्हें खा लेते हैं या इनका मांस बेचकर परिवार का पालन-पोषण करते हैं। संरक्षण समिति को भय है कि यदि लोग इसी तरह इन कछुओं को मारते रहे तो जल्दी ही यह प्रजाति विलुप्त हो जाएगी।

ठण्डे बस्ते में हैं प्रदूषण की जांच रिपोर्टें

मोटी रकम खर्च करके सरकारी, गैर सरकारी एजेंसियां व वैज्ञानिक संगठन प्रदूषण की जो जांच पड़ताल वर्षों से करते आ रहे हैं, उन मानीटरिंग रपटों पर सरकार आखिर कितना तवज्जो दे रही है? प्रदूषण के इन आंकड़ों को संज्ञान में लेकर क्या वाकई पर्यावरण को बचाने के लिए ठोस कदम उठाये जा रहे हैं? क्या प्रदूषण से जुड़े जन स्वास्थ्य के मुद्दों पर कोई 'एक्शन' लिया जाता है? यह तमाम प्रश्न उन महत्वाकांक्षी योजनाओं से जुड़े हैं, जिनका मकसद पर्यावरण का अध्ययन करके उसके संरक्षण के लिए प्रभावी प्रबन्धन करना है।

दरअसल हवा, पानी, शोर से जुड़े पर्यावरणीय पहलुओं का अध्ययन करने में जितनी तत्परता दिखाई जाती है, उनके निष्कर्षों पर पर्यावरण संरक्षण के लिहाज से कदम उठाना तो दूर, जिम्मेदार नियंत्रक संस्थाएं इन पर्यावरणीय रपटों पर गौर करने की भी जहमत नहीं उठाती हैं। आलम यह है कि ऐसे पर्यावरणीय अध्ययन रपटों के ढेर लगते जा रहे हैं, लेकिन

स्थानीय समाचार

उन पर अमल करने की कोशिश नहीं होती है। हैरानी तो इस बात की है प्रदूषण का स्तर बताने वाली ऐसी रपटें मीडिया द्वारा आये दिन सार्वजनिक की जाती हैं, परन्तु सरकारी अमला फिर भी नहीं चेतता है, बहरहाल, पर्यावरण की चौतरफा बदहाली से चिंतित अदालतें अब अक्सर इन पर्यावरणीय रपटों को संज्ञान में लेकर सरकारी तन्त्र को झकझोरती रहती हैं। लेकिन नियंत्रक संस्थाएं फिर भी हरकत में नहीं आ रही हैं। सवाल यह है कि जब इन पर्यावरण अध्ययनों के नतीजों पर कोई कदम नहीं उठाये जाते हैं तो फिर सरकारी खजाने से मोटी राशि व्यय करके इन अध्ययनों को कराने का फायदा क्या है। आईटीआरसी 'जनहित' में लखनऊ शहर में वायु, ध्वनि व जल गुणवत्ता की नापजोख करती है। ये आंकड़े हर बार आगाह करते हैं कि शहर में प्रदूषण की स्थितियां चिन्ताजनक हैं उस पर जनहित में की गई इन मानीटरिंग रपटों का कोई असर नहीं पड़ता है। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, नीरी, राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, स्वयं सेवी संस्थाएं समय–समय पर प्रदूषण की नापजोख करती हैं। लेकिन उनकी इस नापजोख का कोई लाभ नहीं होता है।

प्रदूषण के नमूने एकत्र करने व अनुश्रवण में सावधानी जरूरी

लखनऊ। वायु प्रदूषण और जल प्रदूषण के अनुश्रवण के पूर्व नमूना एकत्र करने के तरीके तथा परीक्षण पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इसके साथ ही गणना के समय भी सावधानी बरतनी चाहिए। यदि इसमें जरा सी भी चूक हुई तो सही परिणाम नहीं मिलेंगे।

यह तथ्य गत दिवस यहां औद्योगिक विष–विज्ञान अनुसंधान केन्द्र (आईटीआरसी) में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह में उभर कर सामने आये। आईटीआरसी में १२ दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में विभिन्न राज्यों से आये प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के प्रतिनिधियों को वायु और जल प्रदूषण के साथ ही कीटनाशक मापने तथा नमूना लेने आदि के बारे में ज़ानकारी दी गयी। कार्यक्रम के दौरान लोगों को उद्योगों से निकलने वाले उत्प्रवाह को एकत्र करने तथा परीक्षण की नयी तकनीकी के बारे में बताया गया। इसके साथ ही परीक्षण के बाद प्राप्त आंकड़ों की गणना की विधि भी बतायी गयी। प्रायः प्रदूषण बोर्ड के कर्मचारियों को नमूना लेने का तरीका ही नहीं मालूम होता है। यदि किसी तरह नमूना ले भी लिया तो उसके परीक्षण तथा गणना की सही विधि मालूम नहीं होती है। इसके चलते सही परिणाम नहीं आते हैं इसमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण विश्लेषण तथा गणना है।

राजधानी को जहरीला बना रहा है कूड़ा

लखनऊ। आंकड़े बताते हैं कि राजधानी में हर रोज १५०० से १६०० टन कूड़ा निकलता है लेकिन यह कूड़ा आखिर कहां जा रहा है और क्या इसका सुरक्षित डिस्पोजन हो रहा है? इन सवालों का जवाब फिलहाल सरकारी तंत्र के पास नहीं है। हकीकत यह है कि यह कचरा जमीन में ऐसा जहर घोल रहा हे जिसके दूरगामी दुष्प्रभाव निश्चित ही झेलने पड़ेंगे।

तमाम जगह कूड़े के ढ़ेर से जमीनको लैण्ड फिलिंग के जरिए पाट दिया गया है। कभी न खत्म होने वाले पालिथिन व प्लास्टिक कचरा जहां तेजी से जमीन में पैबस्त हो रहा है। वहां कूड़े–कचरे की बढ़ती समस्या व उसके दुष्प्रभावों की सच्चाई से हम मुंह नहीं चुरा सकते हैं। सालों से इसके निपटान की केवल बातें ही की जा रही हैं।

उभरती जल समस्या का समाधान—पानी की खेती

—शिवेन्द्र कुमार पांडे
छवि निकुंज, बांस बंगलो कम्पाउन्ड,
चौथी क्रासिंग, रांची रोड, पुरूलिया
(पं.बंगाल)—७२३१०१

लगभग सौ वर्ष पूर्व भारत के वाइसराय 'लार्ड कर्जन' ने कहा था कि भारतीय अर्थव्यवस्था मानसून के विसात पर, हर साल खेला जाने वाला जुआ है। यह बात आजादी मिलने के पचास वर्ष पश्चात भी एक वास्तविकता बनी हुई है। पर ऐसा क्यों?

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहां सत्तर प्रतिशत जनता, आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है। भारत का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल ३२६ मिलियन हैक्टेयर है, जिसके अंतर्गत केवल १४२ मिलियन हेक्टेयर कृषि योग्य भूमि है। इस कृषि योग्य भूमि का तीन चौथाई भाग सूखा ग्रस्त क्षेत्र है जिसमें कृषि उत्पादन मानसून वर्षा पर निर्भर करता है, यदि सिंचाई व्यवस्था स्थापित नहीं की गई है।

वर्ष १९४७ में, आजादी के समय, केवल १५०० भारतीय ग्रामों में बिजली सेवा उपलब्ध थी और मात्र ६५०० बिजली पम्प कृषि क्षेत्र में कार्यरत थे। वर्ष १९७६ में भारत सरकार द्वारा 'ग्रामीण विद्युतीकरण योजना' आरंभ किए जाने के फलस्वरूप कृषि क्षेत्र में बिजली पम्पों के ऊर्जायन में असाधारण वृद्धि हुई है। लगभग पांच लाख पम्पों का ऊर्जायन प्रति वर्ष होता रहा है व जनवरी—२००० में कार्यरत पम्पों की संख्या १२५ लाख का आंकड़ा पार कर चुकी थी।

इतनी भारी मात्रा में बिजली पम्पों की ऊर्जायन के फलस्वरूप सिंचाई व्यवस्था पिछले तीस वर्षों में बेहतर हुई है और खाद्यान्न उत्पादन भी तीव्रता से बढ़ा है व भारत इस क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त कर चुका है। लेकिन इन प्रयत्नों के बावजूद भी, केवल एक—तिहाई कृषि योग्य भूमि के लिए भूमिगत जल दोहन द्वारा सिंचाई व्यवस्था स्थापित हो पाई है। वर्तमान स्थिति यह है कि ३५ प्रतिशत सिंचाई आधारित कृषि भूमि (५० मिलियन हेक्टेयर) से ६० प्रतिशत खाद्यान्न उत्पादन होता है और बाकी बची ६५ प्रतिशत कृषिभूमि से मात्र ४० प्रतिशत पैदावार होती है, जिसका सारा दारमदार मानसून वर्षा पर निर्भर करता है।

दूसरी ओर यह देखने में आ रहा है कि लगातार बढ़ती जनसंख्या की मांगपूर्ति के लिए अन्धाधुंध वन—कटाई और इतनी भारी संख्या में बिजली पम्पों के ऊर्जायन के फलस्वरूप देश भर में पानी का संतुलन अस्तव्यस्त होता जा रहा है और भूजल स्तर में गिरावट प्रति वर्ष बढ़ती जा रही है। इसका कारण है कि भूजल संचयन व भण्डारण के लिए आवश्यक समकक्ष तरीकों की ओर ध्यान नहीं दिया गया है। इस समस्या का समाधान है 'जलसंभर प्रबंधा कौशल' (वाटरशेड मैनेजमेन्ट) माध्यम से पारिस्थितिक सुधार — इसका मुख्य उद्देश्य होता है। भूजल भंडारों

का पुनःपूरण करते रहना व कम से कम नमी का उपयोग करते हुए अधिक कृषि उत्पादन करना।

उल्लिखित संदर्भ में, वाशिंगटन स्थित 'वर्ल्ड वाच इंस्टिट्यूट' द्वारा वर्ष १९९८ के अंत में प्रकाशित रिपोर्ट (बियान्ड मेलथस) में कुछ अत्यन्त महत्वपूर्ण व्याख्या आंकड़ों सहित प्रस्तुत की गई है। इस रिपोर्ट के अनुसार अगली सदी के मध्य तक जनसंख्या वृद्धि के फलस्वरूप विश्व में पानी की कमी होने लगेगी। यदि जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित नहीं किया गया और वह वर्तमान दर पर बढ़ती रही, तो पानी की मांग जल-स्त्रोतों की दीर्घकालीन क्षमती को कम करने लगेगी, क्योंकि उनकी पुनःपूरण (रिचार्ज) क्षमता से अधिक पानी निकासी के कारण उनका जल-स्तर घटने लगेगा। फिर पानी की कमी के कारण खाद्यान्न उत्पादन भी कम होता चला जायेगा, क्योंकि विश्व का चालीस प्रतिशत खाद्यान्न उत्पादन सिंचाई पर आधारित है।

इस रिपोर्ट के अनुसार भारत में जल-स्त्रोतों का वर्तमान दोहन, भूजल संचयन क्षमता से दो-गुना अधिक हो रहा है। फलस्वरूप भारत के अधिकतर भागों में भूजल स्तर एक से तीन मीटर प्रति वर्ष नीचे की ओर गिरता चला जा रहा है। यदि समय रहते 'जलसंभर प्रबंध कौशल' की ओर भारत ध्यान नहीं देता है, तो भविष्य में कृषि के लिये पानी की उपलब्धता में लगातार कमी होती रहेगी और इसका प्रभाव खाद्यान्न उत्पादन पर पड़ने लगेगा। भारत में वर्तमान खाद्यान्न उत्पादन का ६० प्रतिशत भाग सिंचाई आधारित कृषि भूमि से प्राप्त होता है और इस रिपोर्ट के अनुसार सिंचाई के लिये पानी उपलब्धता में कमी होते रहने के कारण वर्ष २०५० तक भारत में खाद्यान्न उत्पादन घट कर एक-चौथाई हो जायेगा।

भारती संदर्भ में उल्लिखित रिपोर्ट की वास्तविक प्रमाणिकता वर्ष २००० में ही सूखे के रूप में प्रकट हो गई जब अप्रैल/मई के महीनों में महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा आदि में पानी को लेकर हाहाकार मच गया। वह भी तब, जब भारत में इसके पूर्व, पिछले बारह वर्षों में लगातार अच्छी मानसून वृष्टि हुयी थी, जिसके फलस्वरूप खाद्यान्न भण्डार भरपूर थे व भूख से मरने की स्थिति क्षीण थी। इसलिये इस सूखे को अकाल की संज्ञा नहीं दी जा सकती, यह तो मात्र पानी के दुरुपयोग से उभरती स्थिति है, जिसे 'जल-संभर प्रबंध कौशल' द्वारा निर्मूल किया जा सकता है।

भारत का तीन-चौथाई भूभाग सूखाग्रस्त क्षेत्र है, पर भारत के अन्य क्षेत्रों में जहां वृष्टि अधिक मात्रा में होती है (जैसे चेरापूंजी) वहां भी सूखा पड़ता है। बहुउद्देशीय बांध निर्माण व जलाशयों की दृष्टि से भारत का विश्व में चौथा स्थान होने के बावजूद देशभर में पानी की कमी स्पष्ट दिखाई देने लगी है। इस समस्या का निवारण 'जलसंभर प्रबंध कौशल व पानी की खेती' को अपना कर किया जा सकता है। लेकिन सरकार अकेले यह कार्य नहीं कर सकती है। इसके लिए नागरिकों को आगे बढ़ कर, स्वयं अपनी सुरक्षा के लिए इन्हें सम्पादित करना होगा-जैसा देवगढ़ व अन्य स्थानों में किया गया है।

पृथ्वी के भीतर भूजल संग्रहण, एक पानी की टंकी को भरने के समान है। वर्तमान में हम केवल इस प्राकृतिक टंकी से पानी खींचते चले जा रहे हैं, पर उसे भरते रहने की ओर हमारा ध्यान ही नहीं है। क्या किसी बैंक में खाता खेलने से ही हमें आवश्यकता पड़ने पर बैंक पैसा दे देता है? नहीं। इसके लिये हमें अपने खाते में पैसा जमा करते रहना पड़ता है और जितनी राशि हमने जमा की है, उसका भुगतान बैंक करता है। यही स्थिति पानी की भी है और इसके लिए हमें पृथ्वी रूपी टंकी को पानी से भरते रहना होगा। इस पानी भरण क्रिया को वर्तमान में 'पानी की खेती' (वाटर हार्वेस्टिंग) नाम से भी पुकारा जा रहा है। पर यह कोई नई विधि नहीं है क्योंकि भारत में परंपरागत प्रथा के रूप में इसका उपयोग सदियों पूर्व से किया जाता रहा था। लेकिन पीने के पानी के लिए पाईप लाइनों के प्रावधान व सिंचाई के लिये डीजल/बिजली पम्पों के प्रचलन के फलस्वरूप गहराई से भी जल प्राप्त करते रहने की क्षमता वृद्धि के कारण 'पानी की खेती' जैसी वैज्ञानिक प्रक्रिया, जो भूजल भण्डार वृद्धि की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है, को हम भूल बैठे हैं। इस विधि के अंतर्गत तालाब, बावड़ी व बड़े जलाशय निर्माण, उनकी गहराई व स्वच्छता बनाये रखने को समाज प्राथमिकता देता था। इनका निर्माण व रख-रखाव का कार्य सामूहिक व्यवस्था के माध्यम से किया जाता था। एक व्यवहारिक मान्यता के अनुसार यदि भारत के प्रत्येक जिले की तीन प्रतिशत भूमि में तालाब निर्माण कर दिये जाएं, तो पूरे देश का जल संकट समाप्त हो सकता है।

वर्ष २००० के दौरान, सभी सूखा प्रभावित राज्यों में यह स्पष्ट रूप से देखने को मिला कि जिस किसी गांव/शहर ने कुछ वर्ष पूर्व से 'पानी की खेती' की ओर ध्यान देना आरंभ कर दिया था, उन्हें इस संकट के समय भी पानी की कमी नहीं हुई थी व उनके पास सिंचाई के लिये भी पानी उपलब्ध था, जबकि आसपास के गांव

पानी का संकट झेल रहे थे। उदाहरण के लिए सौराष्ट्र (गुजरात), में जूनागढ़ के देवगढ़ ग्राम की चर्चा प्रस्तुत है–

'उत्तर गुजरात व सौराष्ट्र के अन्य सभी गांवों के समान देवगढ़ ग्रामवासियों ने भी भूमिगत पानी के दोहन के लिए डीजल पम्पों का उपयोग आरंभ किया था। यह बात मध्य १९८० के दशक से लेकर प्रारंभिक १९९० के दशक की है। इसके फलस्वरूप कृषि उत्पादन में वृद्धि होने लगी और कृषि कार्य भी सालभर के व्यवसाय का रूप लेने लगा। लेकिन दस वर्षों के भीतर ही भूजल–स्तर इतना नीचे गिर गया कि सबसे शक्तिशाली पम्प भी पानी खींचने में असमर्थ हो गए। खाद्यान्न उत्पादन तीव्रता से घटता रहा और कृषि एक बार दुबारा मानसून पर निर्भर होने लगी। ऐसा लगने लगा कि देवगढ़ के निवासियों ने वह जादूई–फार्मूला कहीं खो दिया है जिसके कारण उनके ग्राम में २००० रूपए प्रति एकड़ मूल्य की जमीन के २२,००० रूपए प्रति एकड़ तक चढ़ चुके थे।

धीरे–धीरे ग्रामवासियों को समझ आने लगी कि उनकी स्वयं की भूल के कारण ही इस प्रकार की स्थिति उभरने लगी है। इस प्रकार की चेतना जागृत होने पर उन्होंने संगठित होकर "देवगढ़ ग्राम विकास मण्डल" की स्थापना कर, अपने ही प्रयास से लगभग ४५,००० रूपए का एक बांध–निर्माण कोष भी स्थापित किया।

इस पूंजी व सरकार से आंशिक आर्थिक सहायता प्राप्त कर उन्होंने १९९७ के अंत तक अपने क्षेत्र में चार रोकबांध (चेक डैम्स) निर्माण कर लिये थे। बाद में, १९९८ व १९९९ की मानसून वृष्टि से इन बांधों में समुचित पानी भण्डार स्थापित हो चुके थे। और इस प्रक्रिया ने भूमिगत पानी के सूख गए स्त्रोतों का पुनर्भरण भी कर दिया था। यद्यपि १९९९ में इस क्षेत्र में औसत से कम वृष्टि हुई थी, पर देवगढ़ के निवासियों को इन रोक–बांधों के कारण पानी की कोई कमी नहीं झेलनी पड़ी। वर्ष २००० के भीषण सूखे के समय जब सौराष्ट्र व उत्तर–गुजरात के सब्ज़ी क्षेत्रों में पानी के लिए हाहाकार मचा हुआ था, उस समय भी देवगढ़ के भूजल–भण्डार भरे हुए थे और उन्हें तो मात्र अपने पुराने डीजल पम्पों का सहारा लेकर पानी प्राप्त करना पड़ा था। इस प्रकार के कई छुटपुट उदाहरण महाराष्ट्र, तमिलनाडु, मध्य प्रदेश, गुजरात, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, राजस्थान आदि में भी देखने में आए हैं, जहां स्थानीय लोगों ने स्वयं अपने प्रयास से 'पानी की खेती' प्रक्रिया को अपना कर अपनी जल–आपूर्ति समस्या का स्थायी समाधान ढूंढ लिया है।

भारत का तीन–चौथाई भूभाग सूखाग्रस्त क्षेत्र है, पर भारत के अन्य क्षेत्रों में जहां वृष्टि अधिक मात्रा में होती है (जैसे चेरापूंजी) वहां भी सूखा पड़ता है। बहुउद्देशीय बांध निर्माण व जलाशयों की दृष्टि से भारत का विश्व में चौथा स्थान होने के बावजूद देशभर में पानी की कमी स्पष्ट दिखाई देने लगी है। इस समस्या का निवारण 'जलसंभर प्रबंध कौशल व पानी की खेती' को अपना कर किया जा सकता है। लेकिन सरकार अकेले यह कार्य नहीं कर सकती है। इसके लिए नागरिकों को आगे बढ़ कर, स्वयं अपनी सुरक्षा के लिए इन्हें सम्पादित करना होगा–जैसा देवगढ़ व अन्य स्थानों में किया गया है। पर ये सभी कार्य विशेषज्ञों की सलाह से ही किये जाने चाहिए क्योंकि स्थानीय स्थलाकृति परिवेश (भू ढलान दिशा, समोच्च रेखा घेराव, कछार फैलाव आदि) और स्थानीय मूल की वनस्पतियों के आधार पर ही उस क्षेत्र विशेष के लिए परियोजना निर्माण द्वारा यह कार्य सम्पादित करने पर इसका सम्पूर्ण लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

'केन्द्रीय भूमि जल बोर्ड, के अनुसार भारत में प्रतिवर्ष ४३२ बिलियन क्यूबिक मीटर वर्षा का पानी उपलब्ध होता है, जिसके संचय से प्रति वर्ष १६० बिलियन क्यूबिक मीटर अतिरिक्त जल उपयोग के लिए मिल सकेगा और भूजल स्तर में भी वृद्धि होगी–फलस्वरूप भूमिगत पानी के दोहन में बिजली भी कम खर्च होगी। उदाहरण के लिए भूजल स्तर में एक मीटर की वृद्धि से ०.४० किलोवाट आवर बिजली बचत अर्थात साल भर में एक पम्प को दस घंटे रोजाना चलाने पर लगभग १४६० किलोवाट आवर बिजली की बचत संभव होती है। विश्व पर्यावरण में प्रदूषण अबाध रूप से बढ़ते रहने के फलस्वरूप पिछले दस–पन्द्रह वर्षों के भीतर मौसम में बदलाव दृष्टिगोचर होने लगा है और कई प्रकार की अनियमितता देखने में आ रही हैं– जैसे गर्मी बढ़ने लगी है, बेमौसम बरसात होती है, बाढ़ का प्रकोप दिन पर दिन बढ़ रहा है, आदि। इसलिये कृषि विकास को सफल बनाने के लिए भारतीय कृषि, भूजल, पर्यावरण व मौसम विशेषज्ञों को कृषकों से विचार–विमर्श कर (उनके अनुभवों का लाभ उठाने के लिए), इस प्रकार के बदलते कृषि परिवेश के अंतर्गत उपयुक्त फसलों का चयन कर उत्पादन कार्यक्रम व लक्ष्य, मौसम के अनुरूप लगातार निर्माण करते रहने होंगे, ताकि मृदा संरक्षण के साथ–साथ उसमें नमी की उपलब्धता को ध्यान में रख अधिक से अधिक खाद्यान्न उत्पादन किया जा सके। इसके अलावा सरकार को खाद्यान्न संचयन (कोल्ड स्टोरेज निर्माण) को प्राथमिकता देनी होगी, अन्यथा आलू, प्याज आदि के मूल्यों को नियंत्रित रखना कठिन होता जायेगा।

(लेखक : कोल इन्डिया लिमिटेड के सेवानिवृत्त मुख्य महाप्रबंधक (गवेषणा) एक भूवैज्ञानिक हैं।)

■ ■ ■

पर्यावरण ज्ञान पहेली

१. अन्तर्राष्ट्रीय आलू अनुसंधान केन्द्र कहां है?
क– मनीला (फिलीपीन्स) ख– लीमा (पेरू)
ग– मास्को (रूस) घ– न्यूयार्क (अमेरिका)

२. कुत्ते में गुणसूत्रों की संख्या होती है–
(क) ६४ (ख) ४८
(ग) ७८ (घ) ४४

३. गन्ने में गुणसूत्रों की संख्या होती है–
(क) ४२ (ख) ४८
(ग) १६ (घ) ८०

४. कवक विज्ञान के जनक हैं–
(क) ई. जे. बटलर (ख) माइकेली
(ग) स्टीफेन (घ) के.सी. मेहता

५. 'फ्लोरा ऑफ ब्रिटिश इण्डिया' नामक पुस्तक लिखी है–
(क) लैमार्क ने (ख) राबर्ट हुक ने
(ग) लुई पाश्चर ने (घ) जे.डी. हूकर ने

६. भौतिक विज्ञान के जनक हैं–
(क) हेकेटियस (ख) ऐतरिये
(ग) अरस्तू (घ) उपरलेस्ट हेकल

७. अस्थि में कौन सा प्रोटीन पाया जाता है?
(क) कॉण्ड्रिन (ख) ओसीन
(ग) केसीन (घ) एल्ब्यूमिन

८. गाजर किस कुल का पौध है?
(क) सोलेनेसी (ख) मिर्टेसी
(ग) अम्बेलीफेरी (घ) रोजेसी

९. पी.एच. पैमाना किस वैज्ञानिक की देन है?
(क) मैडम क्यूरी (ख) ऑस्ट वाल्ड
(ग) सारेन्सन (घ) एच.जी.जे. मोज्ले

१०. तापायनिक उत्सर्जन को सर्वप्रथम देखा था–
(क) लेनार्ड ने (ख) जे.जे. थामसन ने
(ग) एडीसन ने (घ) ह्ट्र्ज ने

११. सिलिका का वास्तविक रासायनिक नाम क्या है?
(क) सिलिकन डाईआक्साइड (ख) सिलिकन आयोडाइज्ड
(ग) सिलिकन ट्राईआक्साइड (घ) सिलिकन सल्फेट

१२. खगोलीय दूरबीन में कौन से लेंस प्रयुक्त होते हैं?
(क) तीन उत्तल लेंस (ख) दो उत्तल लेंस
(ग) एक उत्तल एवं एक अवतल लेंस (घ) दो अवतल लेंस

१३. स्पाइक रोग किसमें होता है?
(क) टमाटर (ख) चावल
(ग) तम्बाकू (घ) चन्दन

१४. किसके निर्देशन में पहले नाभिकीय संयंत्र का निर्माण हुआ था?
(क) अलबर्ट आइन्सटीन (ख) एनरीको फर्मी
(ग) आटोहोन (घ) चैडविक

१५. अश्रु गैस का सूत्र क्या है?
(क) CCl_2NO_3 (ख) CH_3NO_3
(ग) CCl_3NO_2 (घ) CH_2NO_2

१६. पानी में हवा का बुलबुला किस प्रकार के लेंस की भांति कार्य करता है?
(क) उत्तल लेंस (ख) अवतल लेंस
(ग) पतले लेंस (घ) कान्टैक्ट लेंस

१७. निर्वात में विद्युत चुम्बकीय तरंग का वेग होता है–
(क) $3X10^{12}$ मीटर/सें०
(ख) $3X10^{8}$ मीटर/सें०
(ग) $3X10^{10}$ मीटर/सें०
(घ) शून्य

१८. गेलेना किस धातु का अयस्क है?
(क) लेड (ख) कोबाल्ट
(ग) यूरेनियम (घ) मैग्नीशियम

१९. इलेक्ट्रान वोल्ट किसका मात्रक है?
(क) ऊर्जा (ख) वेग
(ग) शक्ति (घ) इलेक्ट्रानों की संख्या

२०. कुएं से प्रतिध्वनि प्राप्त करने के लिये कुआं कम से कम कितना गहरा होना चाहिए?
(क) २० मीटर (ख) १८.८ मीटर
(ग) १६.५ मीटर (घ) १४.५ मीटर

२१. ओजोन परत की मोटाई नापने वाली इकाई क्या है?
(क) नॉट (ख) डाप्सन
(ग) प्वायज (घ) मैक्सवेल

२२. निम्न में से कौन अष्ठिफल का उदाहरण है?
(क) मटर (ख) अनार
(ग) संतरा (घ) नारियल

ज्ञान पहेली के उत्तर

१. ख,	२. ग,	३. घ,	४. ख,
५. घ,	६. ग,	७. ख,	८.ग,
९. ग,	१०. ग,	११. क,	१२. क,
१३. ग,	१४. ख,	१५. ग,	१६. ख,
१७. ख,	१८. क,	१९. क,	२०. ग,
	२१. ख,	२२. घ	

क्या आप जानते हैं?

▶ घोंघा तीन साल तक लगातार सो सकता है।

▶ यदि कॉकरोच का सिर काट दिया जाए तो भी वह कई सप्ताह तक जीवित रह सकता है।

▶ केंचुए का सिर अगर काट दिया जाए तो उसका एक और एक सिर उग आएगा।

▶ 16वीं शताब्दी में मैक्सिको के एक सम्राट के 600 दरबारी 2000 बरनियों से भरी चॉकलेट खा जाते थे।

▶ अंतरिक्ष शटल में बैठे अंतरिक्ष यात्रियों को एक ही समय में 16 सूर्योदय व इतने ही सूर्यास्त दिखाई देते है।

▶ मुनष्य के जाँघ की हड्डी कांक्रीट से भी ज्यादा मजबूत होती है।

▶ ऑस्ट्रेलिया का 38 प्रतिशत इलाका रेगिस्तान है।

▶ विश्व के महासागरों में इतना पानी है कि पृथ्वी के प्रत्येक मनुष्य के हिस्से 36.5 करोड़ टन पानी आ सकता है।

▶ जिराफ अपनी 53 सेंटीमीटर लंबी जीभ से अपने कान साफ कर सकता है।

▶ एक बड़ा चम्मच शहद बनाने के लिए 2000 फूलों के पराग की जरूरत पड़ती है।

▶ कोरिया के लोग एक दिन में लगभग 30,000 साँप खाते हैं।

▶ मधुमक्खियों के पंख 1 सेकंड में 250 बार फड़फड़ाते हैं, जिससे गुँजन की आवाज पैदा होती है।

▶ मधुमक्खियाँ 15 मील प्रतिघंटे की रफ्तार से उड़ सकती है, ये उतनी ही रफ्तार है, जितनी आप सायकल चला सकते हैं। अधिकांश मधुमक्खियाँ केवल अपना बचाव करने के लिए काटती हैं।

▶ आपको गुदगुदी होने का संदेश आपके मस्तिष्क तक पहुँचाने वाला स्नायु संकेत 322 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से चलता है।

गिरगिट गिरगिट की आँखें एक-दूसरे से स्वतंत्र रहकर एक साथ दो दिशाओं में देख सकती हैं।

सफेद सांभर यूरोप के आलपाइन क्षेत्र में मृत्यु का अग्रसूचक माना जाता है। अंधविश्वासी दावा करते हैं कि इसका शिकार करने वाला स्वयं एक वर्ष के अन्दर ही मर जाएगा।

अफ्रीका की पैराडाइज व्हिडाह चिड़िया हमेशा अपने अण्डे 'वैक्सबिंग' पक्षी के घोसले में देती है, पर पूरी तरह तसल्ली करके कि उसके पंख और बोली भी 'व्हिडाह' के जैसी ही है।

वर्षा करने वाला पेड़ गर्म क्षेत्र में उत्पन्न होने वाला 'समानी समन' नामक पेड़ दिन में फलियों में पानी एकत्र कर लेता है और शाम को घनी वर्षा के रूप में उसे बरसा देता है।

मोरपंखी कीड़ा यह समुद्र की तली के दलदल में पाया जाता है। पानी के अंदर अपने भोजन को पकड़ने के लिए मोर के रंगीन पंखों जैसे अपने गलफड़ों को फैलाता है।

जीवित कंकाल सीपी मछली के शरीर का कंकालनुमा आवरण, जिससे वह शत्रुओं को धोखा देकर अपनी रक्षा करती है।

छल्लेदार ज्वालामुखी धुएँ के छल्ले उगलने वाला ज्वालामुखी माउंट एटना, जो विस्फोट के दौरान धुएँ के विशाल छल्ले निकालता है।

मैक्स शियरवाटर पक्षी घर लौटने की प्रवृत्ति के परीक्षण के दौरान देखा गया है कि उपरोक्त पक्षी ने बॉस्टन से स्कोकहॉल्म द्वीप (वेल्स) तक की 3,050 मील की दूरी साढ़े बारह दिन में पूरी की।

विचित्र पत्तियाँ सुमात्रा द्वीप के 'ब्रेडफ्रूट' वृक्ष की पत्तियाँ शुरू में कटावदार होती हैं, किंतु बड़ी होने पर उनमें कटाव नहीं रहते।

समुद्री खरगोश जो चार माह में 47 करोड़ 80 लाख अंडे देता है।

गरनर्ड मछली यह पकड़े जाने पर घुर्र की आवाज करती है। इसके शरीर में छाती पर तीन अँगुलियों जैसे अंग होते हैं, जिनसे यह समुद्र की कीचड़ भरी तली में भोजन खोदकर मुँह में डालती है।

पर्पिल शोर केकड़ा यह केकड़ा अपने भार के अनुपात में 40 आदमियों के बराबर ताकत रखता है।

अण्डे खाने वाली मादा मछली बाओफिन नामक मादा मछली अंडे देने के बाद स्वयं उन्हें खा लेती है, इसलिए नर बाओफिन को उन अंडों की रक्षा करनी पड़ती है, जब तक अंडों में से बच्चे न निकल जाएँ।

कॉलोरेडो नदी का मेढक जिसकी टर्र-टर्र की आवाज यात्रियों को भ्रमित कर देती है। इसकी आवाज नाव की सीटी जैसी होती है।

रंग-बिरंगी चिड़िया ऑस्ट्रेलिया की पिट्टा चिड़िया जिसके पंख नौ रंगों (नीला, पीला, हरा, नारंगी, भूरा, गुलाबी, लाल, सफेद और काला) के हाते हैं, जो सदैव चमकते रहते हैं।

पी.आर. इंटरमीडिएट कालेज
(उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा मान्यता प्राप्त)
सेक्टर–डी१, एल.डी.ए. कालोनी कानपुर रोड,
लखनऊ फोन:–४३६७६७
न्यू मिलेनियम स्कूल, इंदिरानगर लखनऊ
(उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा मान्यता प्राप्त)
पिकनिक स्पॉट रोड, फरीदीनगर, इंदिरानगर,
लखनऊ फोन:–३५६८६७
P.R. EDUCATIONAL SOCIETY
न्यू मिलेनियम स्कूल गोमतीनगर लखनऊ
विकास खण्ड–४ गोमतीनगर, लखनऊ फोन:–३०१६१५
न्यू मिलेनियम एजूकेशन रिसर्च सेंटर
कीर्ति शिखर अपार्टमेंट्स, निकट विकासदीप,
२२ऑफ स्टेशन रोड, लखनऊ
महारानी देवी विद्या मंदिर जू. हाईस्कूल,एटा
ग्राम जखेरा जनपद एटा, उत्तर प्रदेश
फोन:–०५७४४–८६२२३

"न्यू मिलेनियम शिक्षा पद्धति"

शैक्षिक जगत में एक विशिष्ट संकल्पना ! वैश्विक बोध से युक्त एक नवीन शिक्षा प्रणाली

नई सहस्त्राब्दी की चुनौतियों का सामना करने वाली नई पीढ़ी के विश्वनागरिकों के विकास के लिए एक प्रतिबद्ध संस्था....

II पी.आर. एजूकेशनल सोसाइटी II

सोसायटी द्वारा संचालित विशिष्ट एवं अनूठी शिक्षण संस्थायें.....

भारतीय एवं सार्वभौमिक जीवन मूल्यों से संपन्न शिक्षा के तीन आयामों की वैश्विक बोध से संपन्न नवीन उद्भावनाएं.....

यथार्थ (REALITIES),

मानविकी (HUMANITIES),

अस्मिता (IDENTITIES)

न्यू मिलेनियम स्कूल, इंदिरानगर लखनऊ

पिकनिक स्पॉट रोड, फरीदीनगर, इंदिरानगर, लखनऊ फोन:-359897

यह विद्यालय न्यू मिलेनियम एजूकेशन सिस्टम पर आधृत वर्तमान शिक्षा जगत में एक विशिष्ट प्रयोग है, जहां भविष्य के सम्राट के रूप में प्रत्येक बालक की संभावनाओं का प्रारम्भ से ही अभिज्ञान कर उसमें वैश्विक बोध (GLOBALVISION) शाश्वत एवं सार्वभौमिक जीवन मूल्यों से युक्त दृष्टि, आध्यात्मिक एवं भौतिक जगत के सर्वोच्च शिखरों तक पहुंचने की शक्ति विकसित की जा रही है। विगत दो वर्षों से संचालित इस विद्यालय परिसर में बालक बालिकाओं को

यथार्थ (REALITIES), मानविकी (HUMANITIES),

अस्मिता (IDENTITIES) के विभिन्न पक्षों के सहज एवं स्वाभाविक

रूप से परिचित कराया जा रहा है। इस संम्पूर्ण विद्यालय परिसर की कल्पना परंपरागत प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति एवं आधुनिकतम् वैश्विक स्तर की शिक्षा पद्धतियों में उपलब्ध गुणवत्ता के स्तर के सम्यक समायोजन के साथ की गई है। विद्यालय परिसर में जहां एक ओर शिक्षा की वैदिक संकल्पनाओं से संबंधित पर्यावरण उपलब्ध है। वहीं पर आधुनिकतम संचार सुविधाएं दृश्य–श्रृव्य माध्यम, इंटरनेट, एक समृद्ध लाइब्रेरी एवं वैज्ञानिक उपकरणों से युक्त प्रयागशालायें उपलब्ध हैं। संपूर्ण परिसर को इस प्रकार से विकसित किया गया है कि प्रत्येक बालक को यह अनुभूति हो कि वह अपने घर से दूर एक अधिक विस्तृत एवं आकर्षक अपने ही घर में विद्यमान है। शिक्षकों की भूमिका एक मित्र मार्गदर्शक एवं सह्रदय संरक्षक की है। विगत् दो वर्षों में विद्यालय का यह प्रयोग अत्यंत उत्साहवर्द्धक रहा है।

न्यू मिलेनियम स्कूल, गोमतीनगर लखनऊ

विकास खण्ड-4 गोमतीनगर, लखनऊ फोनः-301615

लखनऊ नगर के सर्वाधिक प्रतिष्ठित क्षेत्र में वर्ष 2002 में विद्यालय का विशाल एवं सुसज्जित परिसर इस क्षेत्र के बच्चों के लिए 'न्यू मिलेनियम एजूकेशन सिस्टम' पर आधारित शिक्षा प्रदान करने हेतु एक अप्रैल 2002 से प्रारंभ किया जा रहा है।

पी.आर. इंटरमीडिएट कालेज

(उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा मान्यता प्राप्त)

सेक्टर-डी1, एल.डी.ए. कालोनी कानपुर रोड, लखनऊ फोनः-436767

- न्यू मिलेनियम नर्सरी –पी.आर. चिल्ड्रेल्स ऐकेडमी (स्थापना वर्ष १९९४) उ.प्र. बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा मान्यता प्राप्त
- पी.आर. जूनियर हाईस्कूल (स्थापना वर्ष १९९६)उ.प्र. बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा मान्यता प्राप्त
- पी.आर. हाईस्कूल (स्थापना वर्ष २०००)उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा मान्यता प्राप्त
- पी.आर. इंटरमीडिएट कालेज (स्थापना वर्ष २००२)उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा मान्यता प्राप्त

प्रारंभिक स्तर से १२वीं कक्षा तक परंपरागत एवं गैरपरंपरागत माध्यम से न्यू मिलेनियम एजूकेशन सिस्टम पर आधारित शिक्षा की सर्वोत्तम व्यवस्था.....

न्यू मिलेनियम एजूकेशन रिसर्च सेंटर

(NEW MILLENNIUM EDUCATION RESEARCH CENTER)

कीर्ति शिखर अपार्टमेंट्स, निकट विकास दीप, 22 ऑफ स्टेशन रोड, लखनऊ

'न्यू मिलेनियम एजूकेशन सिस्टम' के संबंध में शोध कार्य हेतु इस केन्द्र में निरंतर अनुसंधान का कार्य किया जाता है। जिसमें शिक्षा के विभिन्न पक्षों के संबंध में परंपरागत एवं गैरपरंपरागत माध्यमों के प्रयोग के संबंध में आवश्यक विवरण एवं निरंतर मार्गदर्शन पी.आर. एजूकेशनल सोसाइटी द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं को दिया जाता है।

इसी केन्द्र से वर्ष १९९४ से पर्यावरण के क्षेत्र की विशिष्ट राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका 'पर्यावरण चेतना' का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका पर्यावरण के प्रति जनसामान्य में जागरूकता उत्पन्न करने की दृष्टि से निरंतर कार्य कर रही है। इस पत्रिका के 'बाल पर्यावरण चेतना' खण्ड में विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत छात्रों की रचनात्मक प्रतिभा को विकसित करने की दृष्टि से उनके द्वारा रचित लेख, कविताएं एवं अन्य रचनाओं को प्रकाशित किया जाता है।

वर्तमान में इस पत्रिका का प्रसार उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, राजस्थान, नयी दिल्ली, हिमांचल प्रदेश सहित सम्पूर्ण उत्तर भारत में है। इसी केन्द्र से समता मूलक समाज की स्थापना की दृष्टि से समाज के दलित शोषित एवं वंचित जनों की आकांक्षाओं को वाणी देने के लिए 'वंचित भारत वाणी' नाम के हिन्दी साप्ताहिक का भी प्रकाशन वर्ष २००१ से निरंतर किया जा रहा है। इस पत्र में भी विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत छात्रों की रचनात्मक प्रतिभा को मुखरित करने का प्रयास किया जाता है।

Message

Your children are not your children.
They are the sons and daughters of Life's
longing for itself.
They come through you but not from you,
And though they are with you yet they
belong not to you.
You may give them your love but not your thoughts,
For they have their own thoughts.
You may house their bodies but not their souls,
For their souls dwell in the house of to-morrow,
which you cannot visit, not even in your dreams.
You may strive to be like them, but seek not to
make them like you.
For life goes not backward nor tarries
with yesterday.
You are the bows from which your
children as living arrows are sent forth.
The archer sees the mark upon the
path of the infinite,
and He bends you with His might that
His arrows may go swift and far.
Let your bending in the Archer's hand
be for gladness;

-Khalil Zibran

(OUR MISSION- JOYFUL LEARNING)

राजस्थान के राज्य पक्षी गोडावण के अस्तित्व पर मंडराता संकट

–सुश्री अर्चना
शोध छात्रा

सृष्टि के वर्तमान स्वरूप का मूलाधार पारिस्थितिकीय तन्त्र का आधार जीवन–चक्र होता है। यह सर्वविदित तथ्य है, इसके बावजूद हमारे जीव जगत के पशु–पक्षी दिन प्रतिदिन कम होते जा रहे हैं, जो कि पूरे विश्व समुदाय के लिए समान रूप से चिन्ता का विषय होना चाहिए। इस दृष्टिकोण से यद्यपि पृथ्वी सम्मेलनों के माध्यम से कुछेक प्रयास किए गये हैं, लेकिन आज भी समाज का अभिलाषी वर्ग एवं अभिजात्य वर्ग अपनी भोग लिप्साओं एवं विलासिता के लिए इन पशु–पक्षियों को सताता रहा है फलतः कई प्रकार के पशु–पक्षी जातियों का अस्तित्व ही खतरे में आ गया है। भारतीय पशु–पक्षियों की अनेक प्रजातियां विलुप्ति की कगार पर हैं। पक्षियों में विगत एक दशक में गिद्ध एवं गोडावण जैसे पक्षी सर्वाधिक खतरा अनुभव कर रहे हैं। बदलते पर्यावरण एवं पारिस्थितिकीय तन्त्र में वे अपने को समायोजित करने में भारी परेशानियों का अनुभव कर रहे हैं। राजस्थान में गिद्धों के संरक्षण के लिए 'गिद्ध देखो गिद्ध बचाओ' जैसे आन्दोलनों के माध्यम से इनको संरक्षित करने का प्रयास किया जा रहा है। गिद्ध जैसे वल्चरों के अभाव में हमारा पर्यावरण किस हद तक प्रदूषित होगा यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

विश्व में सिर्फ राजस्थान में बहुतायत में पाया जाने वाला गोडावण पक्षी की संख्या दिन प्रतिदिन कम होती जा रही है, इसी कारण १९८२ में इनके संरक्षण के लिए इसे राज्य पक्षी का दर्जा दिया गया। वर्ष १९९५ की गणना के आधार पर राज्य में १९५ गोडावण पाये गये थे जो कि सन् १९९९ में बढ़कर २१३ हो गये थे। गोडावण भूरा या चितकबरे रंग का अत्यधिक शर्मिला पक्षी है। इसलिए अकेला रहना पसंद करता है इसकी पीठ पर काली रेखायें होती हैं और पेट सफेद रंग का होता है। गोडावण को बड़े पक्षी की श्रेणी में रखा जा सकता है। इसका वजन १३ से १४ किलो हो सकता है एवं ऊंचाई ३ फुट तथा लम्बाई १२२ सेंटीमीटर तक देखी गई है। मादा गोडावण नर से लगभग एक फुट छोटी होती है। मादा के गले में काली रेखायें होती हैं। जबकि नर गोडावण के सिर पर मुर्गे जैसी कलगी होती है। गोडावण मूलतः थलचर प्राणी है।

तेल के बदले सऊदी अरब के शहजादे को मरूस्थल में शिकार की इजाजत से सुर्खियों में आया राजस्थान का राज्य पक्षी गोडावण पूर्ण संरक्षण और सरकार की स्पष्ट नीतियों के अभाव में विलुप्ति के कगार पर है। बदलते पर्यावरण और शिकार से इसकी संख्या में निरंतर कमी आ रही है। बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी के एक सर्वेक्षण के अनुसार देश में कुल ७०० के करीब ही गोडावण बचे हैं, वहीं भारत के सबसे बड़े गोडावण बाहुल्यक्षेत्र राजस्थान में गोडावण की संख्या मात्र २५० के करीब बताई गई है। लगभग २५ वर्ष पूर्व सऊदी अरब के प्रिंस बदर को राजस्थान के रेगिस्तान में शिकार की इजाजत से सुर्खियों में आने वाले ग्रेड इण्डियन बस्टर्ड (गोडावण) की संख्या में लगातार कमी आती जा रही है। सन् १९६० के दशक में हजारों की संख्या में प्रकृति के वातावरण में स्वच्छन्द रूप से विचरण करने वाले गोडावण की संख्या आज अंगुलियों पर गिनी जाने लगी है। गोडावण की इस स्थिति का मुख्य कारण गोडावण के निवास स्थल घास फूस (तृणादि) में कमी आना एवं सरकार की ओर से गोडावण को संरक्षित करने एवं उनकी संख्या को बढ़ाने के लिए प्रभावी कदम नहीं उठा पाना है। ग्रेट इण्डियन बस्टर्ड (गोडावण) की देश के विभिन्न राज्यों जिनमें मध्य प्रदेश के करेरा (शिवपुरी) और घाटी गांव, कर्नाटक के रेनीबन्नुर ब्लैकबक सेंचुरी, महाराष्ट्र के शोलापुर के नानज क्षेत्र, आन्ध्र प्रदेश के रोलापड्डु के अलावा राजस्थान के डेजर्ट नेशनल पार्क, जैसलमेर, बाड़मेर और अजमेर के सोखलिया, बारां जिले के सोरसन तथा गुजरात के कच्छ क्षेत्र के लीला व नालियां, महाराष्ट्र के नासिक, नासिक–औरंगाबाद बार्डर (नये क्षेत्र) आदि क्षेत्रों में उपस्थिति बताई गई है। बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी के निदेशक डॉ. असद आर. रहमानी तथा प्रमुख पक्षीविदों द्वारा गत वर्ष

किये गये गोडावण सर्वे में देश भर में गोडावण की संख्या में कमी आंकी जा रही है। गोडावण के अस्तित्व पर मंडराते संकट को ध्यान में रखते हुए देश के प्रमुख पक्षीविदों ने उसे नेशनल बर्ड घोषित करने की मांग की थी। लेकिन सरकार ने और ना ही किसी राजनैतिक पार्टी ने इस ओर ध्यान दिया। यह दुर्भाग्य का विषय है कि देश की राजनैतिक पार्टियां पारिस्थितिकीय एवं पर्यावरण सन्तुलन पर मंडराते खतरों के प्रति सावधान नहीं हैं।

गोडावण का संरक्षण करने के लिए सन् १९८० में जोधपुर जंतुआलय में गोडावण का प्रजनन केन्द्र स्थापित करने के लिए जन्तुआलय के पूर्व अधीक्षक श्री वाई.डी. सिंह ने एक प्रस्ताव राजस्थान राज्य सरकार को प्रेषित किया था, लेकिन राज्य सरकार ने यह कह कर अस्वीकार कर दिया कि राजस्थान में गोडावण अच्छी संख्या में हैं। आज इस बात की परम्आवश्यकता है कि न केवल सरकार, अपितु गैर सरकारी संगठनों (एन.जी.ओ.) शैक्षणिक संस्थाओं एवं पर्यावरण व प्रकृति प्रेमी लोगों को गिद्ध, गोडावण जैसे जीवन चक्र के प्रमुख घटकों के संरक्षण के बहुविद उपाय सोचने चाहिए तभी इक्कीसवीं शताब्दी का सुखद सपना साकार हो सकेगा। ●

आलू में झुलसा रोग का खतरा

मौसम के अचानक बदलते रूख के कारण देहरादून क्षेत्र में आलू में झुलसा रोग के मामले प्रकाश में आ रहे हैं। मौसम का मिजाज और बादलों की घुमड़ यदि इसी प्रकार रही तो क्षेत्र में आलू की फसल क्षतिग्रस्त हो सकती है। जिला उद्यान विभाग ने किसानों को आलू की फसल का बचाव करने की सलाह देते हुए मोबाइल टीमों को भी तैयार रहने के लिए कह दिया है।

विशेषज्ञों की राय के अनुसार दिसम्बर माह आलू की फसल के लिए काफी खतरनाक होता है। इस माह में आलू की फसल पाले तथा बादलों से बचाकर रखनी पड़ती है। क्योंकि यह रोग एक महामारी की तरह फैलता है। इसी प्रकार खराब मौसम तथा पाले के कारण आलू की फसल में झुलसा रोग फैलने की संभावना काफी बढ़ जाती है। विशेषज्ञों का कहना है कि यदि फसल बचाने के लिए विशेष प्रयास नहीं किए गए तो आलू की ६० प्रतिशत फसल खराब हो सकती है।

दिन का तापमान अधिक तथा रात्रि का तापमान कम होने के कारण फसल अधिक खराब होती है। विशेषज्ञों का कहना है कि झुलसा रोग फाइटबथोरा इन्फ्रेस्ट्रास नामक फफूंदी के कारण होता है जिससे आलू की पत्ती की निचली सतह पर धब्बे पड़ जाते हैं। और पत्तियों के आकार में सिकुड़न एवं पत्तियां मुड़ जाती हैं। यह रोग एक महामारी की तरह फैलता है और फसल को ६० से ८० प्रतिशत तक नुकसान पहुंचाता है। उद्यान विभाग का मानना है कि इस रोग के कारण आलू का उत्पादन न के बराबर हो जाता है।

उद्यान विभाग का कहना है कि देहरादून जिले के रायपुर, डोईवाला, सहसपुर, विकासनगर और कालसी विकास खण्ड का मैदानी व घाटी के इलाके में आलू का उत्पादन व्यापक पैमाने पर किया जाता है। इन क्षेत्रों के किसानों का रूझान आलू की खेती की ओर लगातार बढ़ रहा है। और अधिकांश किसान आलू का उत्पादन कर रहे हैं। आलू ही एक ऐसी फसल है जो कम समय में तैयार होने वाली नकदी फसल है।

—डा. दीपक शर्मा

पर्यावरण चेतना मिशन

पर्यावरण संचेतना के प्रसार का जनांदोलन

'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' वसुन्धरा जननी है हम सब उसके पुत्र हैं, अथर्ववेद के भूमिसूक्त के सृष्टा वैदिक ऋषि ने सहस्त्रों वर्षों पूर्व उद्घोषित किया था। विश्व में विद्यमान प्रत्येक प्राणी, प्रत्येक वनस्पति एवं प्रत्येक स्पन्दनशील प्रजाति पर प्रकृति मां का बराबर स्नेह एवं संरक्षण है। विभिन्न प्रजातियों के अस्तित्व के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ी हुई है पारिस्थितिक संतुलन की अद्भुत प्रणाली है। इस विश्व प्रकृति की अनूठी व्यवस्था के मध्य कोई प्रजाति एकांग आचरण नहीं कर सकती, एकांगी आचरण का निश्चित परिणाम है उस प्रजाति का समूचा विनाश। मानव भी इसका अपवाद कदापि नहीं हो सकता। विकास की अंधी दौड़ में प्राकृतिक संसाधनों का निरंतर दोहन, विनाश की ओर अग्रसर होती मानव बस्तियां कचरे के ढेर में बदलते महानगर, मृतप्राय नदियां, विषाक्त होते सागर, निरंतर प्रदूषित होती हवा, पानी,मिट्टी और आकाश जैसे जीवन के आधारभूत तत्व। विस्फोटक स्थिति में पहुंचाने वाली मानव प्रजाति की संख्या। निश्चित रूप से यह सब मानव के अस्तित्व के विनाश की पूर्व सूचनाएं हैं।

बींसवी शताब्दी की इस सांध्य बेला में हमें चिन्तन करना होगा कि हम अपनी भावी पीढ़ी को विरासत में क्या देने वाला हैं.....प्रदूषण से भरा महाविनाश के कगार पर बैठा मानव संसार और मूल्यहीन जीवन पद्धति जो केवल स्वकेन्द्रित मोहांध मानवों की आसुरी प्रकृतियों में उत्तरोत्तर वृद्धि करेगी और जिसका निश्चित परिणाम है समूचा मानव जाति का महाविनाश एवं उसके साथ ही पृथ्वी पर विद्यमान सम्पूर्ण जीव एवं वनस्पति जगत की अकाल मृत्यु।

वसुन्धरा के अनुपम वरदानों की रक्षा एवं विवेकपूर्ण विकास की संकल्पना को जन–जन तक पहुंचाने के लिए **'पर्यावरण चेतना मिशन'** का सूत्रपात किया गया है। इसका लक्ष्य है प्रत्येक मानव को उसके अस्तित्व से सपरिचित कराना एवं विश्व के समस्त जीव एवं वनस्पति जगत की प्रजातियों से भ्रातृत्वपूर्ण सहअस्तित्व की भावना का प्रसार करना, संशय और अविश्वास के इस वातावरण में आस्था एवं विश्वास की ज्योति जगाना। प्रत्येक मानव में शाश्वत जीवन मूल्यों की पुर्नप्रतिष्ठा, एक ऐसी वैश्विक व्यवस्था की रचना का प्रयास, जिसमें वसुन्धरा के गर्भ से उत्पन्न प्रत्येक जीव, वनस्पति एवं स्वयं मानव पूर्ण सहअस्तित्व के भावच के साथ प्रकृति प्रदत्त वरदानों का सम्यक प्रयोग करते हुए उन्हें संरक्षित कर सकें।

'पर्यावरण चेतना मिशन' विश्व के प्रत्येक धर्म, जाति, क्षेत्र, देश और संस्कृति में विद्यमान शाश्वत जीवन मूल्यों को प्रत्येक मानव के अन्तर्गत तक पहुंचाने का महायज्ञ है। प्रत्येक प्रबुद्ध एवं चिन्तशील जन का हम आहवान करते हैं कि वे प्रकृति एवं समाज के स्वयं पर विद्यमान ऋण के प्रति सचेष्ट होकर उसवे चुकाने और इस महायज्ञ में दीक्षित होकर, पर्यावरण संरक्षण को जन–जन तक पहुंचायें एवं विवेकपूर्ण विकास की संकल्पना से प्रत्येक व्यक्ति को परिचित करयें। जीवन के आधारभूत तत्वों वायु, जल, मिट्टी जीव एवं वनस्पतियों के संरक्षण को अपनी जीवन पद्धति का अनिवार्य अंग बनायें। भोगपूर्ण, प्राकृतिक संरक्षण एवं जीव दया से संबन्धित वैदिक ऋषियों के उद्गीथ भगवान बुद्ध महावीर, ईसा, हजरत मोहम्मद एवं अन्यान्य महापुरूषों के शाश्चत संदेशों का अनुसरण कर पृथ्वी के अनुपम वरदानों की रक्षा में सतत सहयोग करें एवं भोगपूर्ण, एकांगी, स्वार्थपरक जीवन पद्धति का परित्याग कर विवेकपूर्ण विकास की संकल्पना को प्रत्येक मानव तक पहुंचायें।

संयोजक

पर्यावरण चेतना मिशन

सम्पर्क : **पर्यावरण चेतना परिसर,** मानस इन्कलेव, इन्दिरा नगर
लखनऊ, दूरभाष : 359897

● सी-5, दिलकुशा कालोनी, लखनऊ, दूरभाष : 482288

● बी-1/12, सेक्टर डी-1, कानपुर रोड योजना, लखनऊ, दूरभाष : 436767

'पर्यावरण चेतना मिशन' में सम्मिलित होने के लिए आयु, लिंग, धर्म, वर्ण, जाति, प्रदेश एवं अन्य किसी भी प्रकार को कोई प्रतिबंध नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति इस महायज्ञ में अपना दायितव स्वयं निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है। मिशन के संचालक एवं व्यवस्थ को दृष्टिगत रखते हुए मिशन में दीक्षितजनों की तीन श्रेणियां हैं :

☐ **पूर्णकालिक जीवनव्रती परिव्राजक** :- इस वर्ग में मिशन के लक्ष्यों के प्रतिवद्ध कार्यकर्ता हैं जिन्होंने अपने जीवन को पूर्णरूपेण अथवा स्वयं निर्धारित समय के लिये मिशन को समर्पित किया है। न्यूनतम एक वर्ष का समय देना अनिवार्य होगा। इस वर्ग में सामान्यतः उन्ही बंधुओं को दीक्षिता किया जाता है जो मिशन को समर्पित किये गये समय में पारिवारिक दायित्व से मुक्त हों। जीवनवती परिवाजकों की न्यूनतम आवश्यकताओं की प्रतिपूर्ति मिशन परिवार की ओर से की जाती है।

☐ **पर्यावरण बंधु** : - इन श्रेणी में दीक्षित किंये जाने वाले बंधुओं को मिशन के उद्देश्यों की प्रतिपूर्ति हेतु निर्धारित संकल्प-पत्र आवेदन करना होता है। संकल्पबद्ध बंधुओं को अपने दैनिक समय में से न्यूनतम दो घंटे का मिशन के उद्देश्यों हेतु देना होगा।

☐ **पर्यावरण मित्र** :

इस श्रेणी में दीक्षित किये जाने वाले जनो को निर्धारित संकल्प-पत्र पर आवेदन करना होगा और स्वयं निर्धारित समय पर्यावरण मिशन के कार्यों के लिए देना होगा।

यत ते मध्यं पृथिवि यच्च नभ्यं, यास्तूर्जस्तन्वः ऊर्जा स्तवन्यः सवंभूवुः,
तासु नो ध्येयभिः न पवस्व, माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः
पर्जन्यः पिता स उ नः पिपर्तुः।।
(अथर्ववेद / भूमि सूक्तः १२-१-१२)

हे, पृथ्वी तुम्हारी कटि, नाभि सम्पूर्ण शरीर से जो शक्ति सजात होती है वह हमारी रक्षा करें तुम्हारे मातृवत-स्नेहिल उच्छवासों से हम अभिसिंचित हों वसुंधरा जननी है, हम सब इसके पुत्र हैं, बादल हम समस्त प्राणियों के लिए पितृवत है।।

पर्यावरण चेतना

हिन्दी मासिक पत्रिका

दिल्ली प्रदेश एवं हिमाचल प्रदेश के शिक्षा विभाग तथा उत्तर प्रदेश शासन के वन विभाग, स्थानीय निकाय, शिक्षा विभाग, ग्राम्य विकास एवं पंचायत राज विभाग द्वारा अनुमोदित

पर्यावरण संचेतना के प्रसार के क्षेत्र में प्रयासरत राष्ट्र भाषा हिन्दी की एकमात्र पत्रिका

विश्व प्रकृति की धरोहर एवं वसुन्धरा के अनुपम वरदानों की रक्षा हेतु
पर्यावरण संरक्षण के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के महायज्ञ में आपकी सहभागिता अपेक्षित है।

''पृथ्वी मां का ऋण लौटायें, विश्व प्रदूषण मुक्त बनायें''

❁ मुख्य कार्यालय : पर्यावरण चेतना परिसर, पिकनिक स्पाट रोड, इंदिरा नगर, लखनऊ, फोन-359897
❁ रजिस्टर्ड कार्यालय : बी-1/12, सेक्टर-डी1, कानपुर रोड योजना, लखनऊ, फोन-436767
❁ सम्पादकीय कार्यालय : सी-5, दिलकुशा कालोनी, लखनऊ, फोन-482288

पत्रिका का प्रकाशन, मई 1994 से निरंतर हो रहा है। पूरे भारतवर्ष में इसका प्रसार है। स्वतंत्र प्रसार के साथ ही दिल्ली एवं हिमाचल प्रदेश के वन विभाग, ग्राम्य विकास विभाग, शिक्षा विभाग, पंचायती राज विभाग, प्रदेश के स्थानीय निकाय एवं अन्य विभागों द्वारा यह नियमित रूप से मंगायी जा रही है। आपसे अनुरोध है कि आप स्वयं/संस्थान/विभाग/पुस्तकालय हेतु ''पर्यावरण चेतना'' पत्रिका की सदस्यता ग्रहण करने की कृपा करें एवं पर्यावरण संरक्षण के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के इस महायज्ञ में अपना योगदान करें।

पत्रांक : .... दिनांक : ....

सदस्यता पत्रक

सेवा में,
प्रसार व्यवस्थापक
पर्यावरण चेतना हिन्दी मासिक
सी-5, दिलकुशा कालोनी
लखनऊ (उ0प्र0)

महोदय,

कृपया अपने कार्यालय/संस्थान/पुस्तकालय के लिये ''पर्यावरण चेतना'' हिन्दी मासिक की सदस्यता हेतु चेक/ड्राफ्ट (प्रधान संपादक, पर्यावरण चेतना, लखनऊ के पक्ष में देय हो) आपूर्ति आदेश के साथ संलग्न कर भेजने का कष्ट करें।

- पर्यावरण चेतना पत्रिका की शुल्क दरें :-

1.	आजीवन सदस्यता शुल्क	रूपये 5000/-
2.	त्रिवार्षिक सदस्यता शुल्क	रूपये 750/-
3.	द्विवार्षिक सदस्यता शुल्क	रूपये 525/-
4.	वार्षिक सदस्यता शुल्क	रूपये 275/-

नोट : कृपया सदस्यता अवधि अंकित करने का कष्ट करें।

भवदीय

पत्रिका प्रेषण हेतु पता
....
....
....

हस्ताक्षर..................................
नाम व पद..................................
जनपद..................................
कार्यालय..................................

पर्यावरण चेतना एक पत्रिका ही नहीं एक अभियान भी है
आइये! हम सब मिलकर इसे सफल बनायें।

पचीस साल में संभव हो जाएगी सभी रोगों के लिए चिकित्सा

जो सुख आज नहीं हैं कहीं भी हमारी जिंदगी में, वह सुख हम नहीं तो हमारी संततियाँ तलाश ही लेंगी एक न एक दिन इसी दुनिया में।

कवि की इन पंक्तियों में जो सपना था, वह अंशत: ही सही, साकार हो चुका है।

डीएनए में छिपी 'जीवन की इबारत' ह्यूमन जिनॉम प्रोजेक्ट (एचजीपी) वैज्ञानिक हलकों में वर्षो से संजोया हुआ एक सपना था। 26 जून 2000 को इसकी पूर्णता का ऐलान कर दिया गया। इसका अर्थ है मानव शरीर की गुत्थियों का एक बड़ा हिस्सा रेशा-रेशा आँखों के आगे साफ हो गया है। जीवन की प्राथमिक इकाई जीन्स की कार्यप्रणाली को लेकर चले आ रहे रहस्य यक-ब-यक ठोस हकीकत की तरह बेबाक हो चुके हैं।

ग्रीक दार्शनिक हिप्पोक्रेट्स ने घोषणा की थी कि मानव शरीर के रहस्यों का पिटारा अतींद्रिय दृष्टि के बजाय लौकिक धरातल की कुंजी से ही खोला जा सकेगा। मनुष्य की कायिकी धुरी डी.एन.ए. पर मौजूद 3.1 अरब जैव रासायनिक गूढ़ाक्षरों की सूक्ष्मतम जमावट का शोध के प्रतिदर्श पर स्पष्ट हो जाना वैज्ञानिकों की चिरंतन साधना का परिणाम है।

क्रेग वेंटर चिकित्सीय जगत में इसके शत-प्रतिशत नतीजे पाने के लिए हमें इंतजार करना होगा। पर अब आनुवंशिक व्याधियाँ असाध्य नहीं रहेंगी। पर्किन्सन, डाउन्स सिंड्रोम, हीमोफीलिया जैसी बीमारियों के आगे घुटने नहीं टेकने पड़ेंगे। पच्चीस साल बाद कमोबेश सारे रोगों के लिए जीन चिकित्सा संभव होगी। इसे मुमकिन बनाया है ह्यूमन जिनॉम प्रोजेक्ट ने। बीसवीं सदी की शुरुआत में वंश विज्ञान के इतिहास का अहम पड़ाव जैव रसायन आर.एन.ए. की खोज थी। नई शताब्दी ने इस ऐरावत की पूँछ पकड़कर चिकित्सा जगत के स्वर्ग में प्रवेश कर लिया है। आर.एन.ए. और डी.एन.ए. मानव कोशिकाओं के केंद्रक में मौजूद आनुवंशिक पदार्थ गुणसूत्रों के संघटक हैं। डीएनए के बुनियादी जोड़े कुंडलीनुमा सीढ़ी की तरह मौजूद होता है, जिसके दो समांतर छोर एडीनिन, ग्वॉनीन थायमीन, सायटोसीन नामक जैव अणुओं की पट्टी से जुड़े रहते हैं।

प्रत्येक पट्टी की भिन्न जमावट होती है। जैव अणुओं की बारहखड़ी को जिनेटिक कोड के नाम से जाना जाता है। चार आणविक अक्षरों की त्रिवर्णीय शृंखला (4X4X4=64) अनेक प्रारूपों में विभक्त की जा सकती है। गुणसूत्रों पर मौजूद इसी पदावली को जीन्स कहा जाता है।

मानव शरीर में लगभग 80 हजार जीन्स होते हैं। यही व्यक्ति की नस्ल, रंग-रूप, मेधा के विभेद के आधार हैं। ब्रिटिश वैज्ञानिकों जेम्स वॉटसन और फ्रांसिस क्रिक ने इस दिशा में मार्गदर्शक की भूमिका निभाई थी। आज अमेरिका, जर्मनी और ब्रिटेन की शोध मंडली ने मानव जीन समूह (पूल) पर अभिव्यक्त तीन अरब से ज्यादा अक्षर पढ़ लिए हैं, लेकिन सुव्यवस्थित क्रम में आरेखित करने के लिए काफी वक्त लगेगा।

डॉ. जॉन सल्सटन क्रेग वेंटर/फ्रांसिस कोलिन्स/चार्ल्स द लेसी नामक वैज्ञानिकों के नेतृत्व में वैज्ञानिकों ने 12 हजार गूढ़ाक्षर प्रति मिनट की रफ्तार से खोज कर ह्यूमन जिनॉम प्रोजेक्ट को मूर्त रूप

दिया है। इस महती शोध कार्यक्रम के लिए अमेरिकी सरकार और लंदन के वेल्कम ट्रस्ट ने धन मुहैया कराया था।

हॉर्वर्ड विश्वविद्यालय के जैवशास्त्री वॉल्टर गिल्बर्ट ने इसे होली ग्रेल (दैवीय रत्न) की तरह महत्वपूर्ण खोज करार दिया है। एच.जी.पी. की सफलता के कई दूरगामी परिणाम होंगे। जैवशास्त्री बता सकते हैं कि किस जीन के सक्रिय होने पर शरीर का घाव भरता है या बच्चों के दूध के दाँत टूटते वक्त किस जीन प्रणाली में परिवर्तन आता है। भविष्य के बच्चे गर्भाधान के पूर्व ही जिनेटिकली इंजीनियर्ड या आनुवंशिक रूप से दुरुस्त होंगे।

जीन्स इन उजली संभावनाओं के आगे एक स्याह संदेह भी है कि क्या आने वाले कल का वही बच्चा माँ-बाप का दुलारा होगा, जिसका जीन पूल प्रयोगशाला में संश्लेषित हो? क्या चरित्र के प्रमाणपत्र भी तब वैज्ञानिक प्रदान करेंगे? जिनॉम प्रोजेक्ट से जुड़े यह कुछ हठी सवाल हैं, जिनका जवाब शोधार्थी विक्रमादित्य को देना होगा। चिकित्सा क्षेत्र में चमत्कारों की संभावनाएँ

मानवता को व्याधियों के अभिशाप से मुक्त करने की दिशा में एच.जी.पी. एक 'हनुमान कूद' है। ड्रोसोफिला मक्खी के एक जिनॉम को परखने में दुनिया के 195 वैज्ञानिकों ने दिन-रात एक कर दिए थे। नवीनतम जानकारी के अनुसार मानव शरीर के 289 जिनॉम आनुवंशिक बीमारियों के कारक हैं।

डीएनए रसायनों की चार कोड वाली पट्टी

अब एक विकृत जीन का पता लगाकर वैज्ञानिक उपयुक्त विकल्प बाहर से उपलब्ध करा सकते हैं। जिनॉम प्रोजेक्ट के तहत इनसाइट कंपनी द्वारा एक ऐसी किट उपलब्ध कराई गई है, जो एक बार में 10 हजार जीन्स के बारे में जानकारी उपलब्ध करा सकेगी।

रक्त कैंसर के मरीज को दी जाने वाली दवा मर्केप्टोप्यूरीन के कारण शरीर को विषाक्त होने से बचाने वाले एंजाइम का संश्लेषण संबंध्ति जीन्स कर सकेगा। एक सामान्य जीन शरीर में उपयुक्त एंजाइम या प्रोटीन का निर्माण करता है, इसलिए भविष्य में चिकित्सा जगत की अबूझ पहेली जिनेटिक व्याधियाँ वैज्ञानिकों के समक्ष चुनौती के बतौर नजर नहीं आएँगी।

वैज्ञानिक हलकों में हर नई खोज पेटेंट (एकस्व) के झगड़ों को लेकर आती है। जिनॉम प्रोजेक्ट का मामला यूँ कुछ अलग है कि यहाँ सूचना ही उत्पाद होगी। गुणसूत्र की संरचना आमतौर पर एकस्व संबंधी तमाम विवाद उत्पाद के एकाधिकार पर होते हैं। एच.जी.पी. को वित्त मुहैया कराने वाली दो शीर्ष सरकारी संस्थाओं द्वारा जब ऐलान किया गया कि इससे जुड़ी जानकारी सार्वजनिक की जाएगी, सेलेरा जिनोमिक्स और मिलेनियम फार्मास्युटिकल जैसी शीर्ष कंपनियों के शेयर नीचे आ गए थे। इनके अलावा विभिन्न प्रतिष्ठानों से करीब 10 हजार आवेदन अमेरिकी एकस्व अच्किार दफ्तर में दाखिल हुए थे। फिलहाल जिनॉम के व्यावसायिक धरातल पर उतरने में काफी अड़चनें हैं। तकनीकी परेशानियों से निजात के बाद कारोबार को लेकर उपजने वाली दिक्कतें जिनॉम प्रोजेक्ट की उपादेयता पर प्रश्नचिह्न लगा सकती हैं।

• • •

पंचचुली ग्लेशियर पर्यटकों के लिए खुलेगा

प्रकृति प्रेमियों के लिए यह एक सुखद समाचार है कि पंचचुली ग्लेशियर अब उनके पर्यटन के लिए खुल रहा है। अब पर्यटक बर्फ से आच्छादित पंचचुली चोटियों से पंचचुली ग्लेशियर तक का मार्ग प्रयोग कर सकेंगे। मध्य मई में पर्वतारोहण के लिए प्रथम दल रवाना होने की संभावना है।

४६२० मीटर की ऊंचाई पर स्थित दरया घाटी जो कि पिथौरोगढ़ के सीमान्त क्षेत्र में स्थित है, बर्फ से ढकी पांच चोटियों से घिरी है, जिसे स्थानीय भाषा में पंचचुली कहा जाता है। वर्तमान में केवल पंचचुली ग्लेशियर तक जाने के लिए घोड़ों का मार्ग ही है और ट्रेकिंग मार्ग अभी तक नहीं बन पाया है। इसी कारण अभी तक पंचचुली चोटियों तक ट्रेकिंग मार्ग नहीं खोजा जा सका है।

कुमाऊं मण्डल विकास निगम ने इस संबंध में एक कार्ययोजना तैयार की है और लोक कल्याण विभाग ३६ किमी. पंचचुली मार्ग को तैयार कर रहा है। ताकि ग्लेशियर तक पर्यटक पहुंच सकें। इसके अन्तर्गत मार्ग में पड़ने वाले गांवों की आर्थिक स्थिति को भी सुधारने के प्रयास किए जा रहे हैं। यह कार्य राज्य सरकार की पर्यटन नीति, २००१ के अन्तर्गत किया जा रहा है और प्राथमिकता के आधार पर पर्यटक स्थलों को विकसित किया जा रहा है। पर्यटन गतिविधियों से क्षेत्र की जनजाति और गैर–जनजाति आबादी लाभान्वित होगी।

यदि एक बार पर्यटन नीति नियमित रूप से लागू हो जाती है तो स्थानीय जनजातियों का दरमा घाटी से निचले क्षेत्रों में जाना भी रुक सकेगा। स्थानीय ग्रामीणों तथा जनजातियों का स्थानान्तरण आर्थिक कारणों से होता है जो पर्यटन नीति के अन्तर्गत उन्हें स्थानीय रोजगार दिला कर रुक सकेगा।

—डा. दीपक शर्मा

पर्वत की पुकार

अशोक चतुर्वेदी

प्रकृति के कुछ बेटे-बेटियाँ ऐसे भी होते हैं जो अपने दम-खम पर ऊँचाइयों से दो-दो हाथ कर लेने को उतावले रहते हैं। पर्वत इन्हें इसलिए प्यारे होते हैं कि उनकी आड़ी-तिरछी ऊँची-नीची चट्टानें और दीवार की तरह खड़ी ऊँचाइयाँ इन्हें चुनौती भरी दावत देती हैं। जो इसे चाव से मंजूर करें, उन्हें हम पर्वतारोही कहते हैं।

मजबूत कद-काठी के अलावा फौलादी इरादों के धनी इन इन्सानी पुतलों को पर्वत कुछ इस तरह खींचते हैं, जैसे लोहे को चुम्बक। अनेक देशों में बकायदा पर्वतारोहण पाठ्यक्रमों की व्यवस्था है। मैनचेस्टर का ब्रिटिश पर्वतारोहण संस्थान शायद इनमें सबसे महत्वपूर्ण है। यहाँ चट्टान चढ़ाई, बर्फ चढ़ाई, अल्पाइन चढ़ाई और स्काई चढ़ाई जैसे विषयों में शोध और प्रशिक्षण की व्यवस्था है।

जैसे-जैसे नई तकनीक और उपकरण ईजाद हुए हैं, पर्वतारोहण ज्यादा सुरक्षित और आसान बनता जा रहा है। दूसरी ओर युवा पीढ़ी में इसका आकर्षण भी दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है। प्रकृति से जूझ कर युवा उसी तरह खुश होता है, जिस तरह शेरनी का बच्चा, उसकी पीठ पर लुढ़क-पुढ़क कर इतराता है। इस जूझने में संघर्ष होता है मगर द्वंद्व नहीं।

दुनिया की सबसे ऊँची पर्वत चोटी 'माउण्ट एवरेस्ट' जिसे हिन्दी में 'सागरमाथा' और चीनी-तिब्बती में 'कू-मोलांग्मा' कहते हैं, विश्वभर के आरोहियों की चहेती रही है। गुजरी सदी ने इस चोटी पर चढ़ने के सैकड़ों अभियानों को दर्ज किया है। इनमें से ज्यादातर असफल रहे हैं। एवरेस्ट की चाहत में मौत की गोद में समाने वालों की सूची सन् 1989 की शुरुआत में ही सौ का आँकड़ा पार कर चुकी थी।

इनमें वे वीर पर्वतारोही शामिल नहीं हैं, जो आच्चार तम्बुओं में चल बसे। एवरेस्ट पर हुई मौतों के अनेक कारणों में ऊँचाई से गिरना, दम घुटना, सिर की नस फटना, ऐवालेंच, लीवर क्षय और सर्दी लग जाना शामिल हैं। इन शहीदों के बारे में पढ़ते हुए महाभारत के पाण्डवों की हिमालय यात्रा सहसा याद आ जाती है।

जीवन के संध्याकाल में एक गरिमामय मौत की चाह, किस तरह वीरों को पहाड़ों तक खींच ले जाती थी, यह कोई पाण्डवों से सीखे।

बहरहाल सदी के पहले शहीद आरोहियों के रूप में शेरपा नेरबू का नाम इतिहास की किताब में दर्ज है। 7 जून 1922 को वे एवरेस्ट का उत्तरी दरवाजा खटखटाते हुए एवलेंच यानी बर्फीले तूफान के शिकार हुए। कुंभू का बर्फ प्रपात, एवरेस्ट मार्ग की सबसे बड़ी बाच्चा है। नेरबू यहीं चल बसे।

एवरेस्ट पर चढ़ने वालों में सबसे पहले दो नाम सर एडमंड हिलेरी और शेरपा तेनसिंग नोरके के हैं। इन्होंने कोई पाँच दशक पहले, उनतीस मई की दोपहर हिमाच्छादित शिखर की बर्फ को माथे से लगाया था। दि टाइम्स के पत्रकार जेम्स मोरिस ने इनकी यात्रा का रोचक वृत्तांत लिखा है। मजे की बात यह है कि वे भी अभियान दल के सदस्य थे और कैम्प से रिपोर्टिंग करते जाते थे।

दल के नेता थे कर्नल हण्ट। इसके दो सदस्यों ने बंद सर्किट ऑक्सीजन सिलेण्डर की मदद से दक्षिणी चोटी (समिट) का स्पर्श किया, जबकि मुख्य शिखर तक न्यूजीलैण्ड के हिलेरी और नेपाली शेरपा नोरके पहुँचे थे। हिलेरी ने उन पलों में झाँकते हुए अपनी पुस्तक 'एडवेंचर हाई' में लिखा है, 'वहाँ पहुँचते ही मुझे संतोष हुआ कि एक लम्बी जद्दोजहद पूरी हुई। इससे पहले कि ऑक्सीजन उपकरण में गैस का दबाव खतरे के निशान से नीचे पहुँचता, हम शिखर पर पहुँच चुके थे। ....हमें संतोष यह देख कर भी मिला कि अंतिम सिरे पर पहाड़ का आकार चपटा था न कि खतरनाक नुकीला। हमें रोमांच हो आया उस उपलब्धि को हासिल करने का, जो बहुतेरे बहादुर और संकल्पित पर्वतारोहियों के लिए एक हसरत भर थी। पहले तो भरोसा ही नहीं हुआ कि हम सचमुच वहाँ पहुच गए हैं। मैं बेहद थका हुआ महसूस कर रहा था। लगा कि हम सुरक्षा को बहुत नीचे छोड़ आए हैं, मैंने मुड़कर तेनसिंग की तरफ देखा। ऑक्सीजन सिलेण्डर के मास्क और बर्फानी चश्मे से ढँके होने के बावजूद मैं उसके चेहरे की प्रफुल्लता को पढ़ सकता था। ....मैंने अपना हाथ बाहर निकाला और ठेठ एंग्लो-सेक्सन अंदाज में चुपचाप उससे मिलाया पर तेनसिंग के लिए जैसे खुशी का ऐसा इजहार नाकाफी था। एक रौ में उसने अपनी बाँह मेरी पीठ के गिर्द

1982 सन् 1986 का कालखंड एवरेस्ट आरोहियों के बीच काले वर्ष की तरह याद किया जाता है। इस दौरान तेरह पर्वतारोही स्वर्ग की सीढ़ियाँ चढ़ गए। हालाँकि लम्बे अर्से तक एवरेस्ट विजय के लिए ऑक्सीजन उपकरण को अनिवार्य माना जाता था, लेकिन शेरपा एंग रिता ने सन् 83 से 87 के बीच पाँच बार बिना ऑक्सीजन के एवरेस्ट विजय से साबित कर दिया कि यह धारणा गलत है। एवरेस्ट सांख्यिकी बतलाती है कि सबसे ज्यादा नेपाली शेरपाओं ने एकाधिक अभियानों में एवरेस्ट विजयारोहण किया है। इनमें संगदारे और एंगरिता के खाते में पाँच-पाँच चढ़ाइयाँ दर्ज हैं। आखिर क्यों न हो ? हिमालय तो उनका घर आँगन है

डाल दी और फिर तो बड़ी देर तक हम एक-दूसरे की पीठ थपथपाते रहे।'

पहला सफल एवरेस्ट अभियान, पर्वतारोहियों के लिए आशा की रूपहली किरण बनकर आया। सारे विश्व में इसे जिस तरह ख्याति और मान्यता हासिल हुई, वह अभूतपूर्व थी। इसके बाद तो स्वीडन, चीन, अमेरिका, भारत, जापान, इटली, कोरिया, जर्मनी, पोलैंड, फ्रांस जैसे अनेक देशों के अभियान दलों ने इस जीत का स्वाद अपनी-अपनी तरह से चखा। एवरेस्ट के सफल आरोहियों की सूची बरस दर बरस लंबी होती जा रही है। पिछली गर्मियों तक इसमें लगभग तीन सौ से ज्यादा सूरमा शामिल हो चुके हैं। इनमें भारतीय महिलाओं की वह सात सखियों की टोली भी है, जिसमें संतोष यादव, कुंगा भूरिया, सविता मरतोलिया, बंता बीना राम, दीपू शर्मा, सुमन कुरियाल, डिली गोमल्या और राधा दस्ती के नाम शरीक हैं।

ये सात सहेलियाँ, एवरेस्ट पर उसी रास्ते से पहुँची थी, जो चालीस साल पहले हिलेरी-तेनसिंग की जोड़ी ने अपनाया था। एवरेस्ट अभियान के लिए अब तक प्रमुख तेरह रास्ते आजमाए जा चुके हैं। 'ल्हो ला' से घड़ी के काँटों की दिशा में ऊपर और गोलाकार बढ़ते हुए ये रास्ते हैं-

1. पश्चिम रिज सीधे (यूगोस्लावी) 1979
2. पश्चिम रिज हार्नबिन होते हुए (अमेरिकी) 1979
3. उत्तरामुख हार्नबिन (जापानी) 1980
4. उत्तरामुख ग्रेट कोलियर, 1984
5. उत्तरामुख (मेस्नर पथ), 1980
6. उत्तरामुख (चीनी) 1960
7. उत्तरपूर्व रिज इंटीग्रल, 1988
8. पूर्वाभिमुख केन्द्रीय खंभा, 1983
9. पूर्वाभिमुख, दक्षिण-पूर्वी रिज, 1988
10. दक्षिण-पूर्व रिज (मूल रास्ता), 1953
11. दक्षिणी खंभा (पोलिश), 1980
12. दक्षिण-पश्चिमी मुख, 1975
13. दक्षिण-पश्चिमी मुख केन्द्रीय खंभा (रूसी)

1982 सन् 1986 का कालखंड एवरेस्ट आरोहियों के बीच काले वर्ष की तरह याद किया जाता है। इस दौरान तेरह पर्वतारोही स्वर्ग की सीढ़ियाँ चढ़ गए। हालाँकि लम्बे अर्से तक एवरेस्ट विजय के लिए ऑक्सीजन उपकरण को अनिवार्य माना जाता था, लेकिन शेरपा एंग रिता ने सन् 83 से 87 के बीच पाँच बार बिना ऑक्सीजन के एवरेस्ट विजय से साबित कर दिया कि यह धारणा गलत है। एवरेस्ट सांख्यिकी बतलाती है कि सबसे ज्यादा नेपाली शेरपाओं ने एकाधिक अभियानों में एवरेस्ट विजयारोहण किया है। इनमें संगदारे और एंगरिता के खाते में पाँच-पाँच चढ़ाइयाँ दर्ज हैं। आखिर क्यों न हो ? हिमालय तो उनका घर आँगन है।

सन् 1984 की गर्मियों में विश्व की प्रथम एवरेस्ट महिला विजेता का खिताब भारत की सुश्री बछेन्द्री पाल ने हासिल किया है। दर्शन कुमार खुल्लर के नेतृत्व में बछेन्द्री ने वही रास्ता अपनाया था, जो सन् 1953 में पहले विश्व विजेताओं ने बनाया था।

हिन्दुस्तानी महिलाओं ने यह साबित कर दिया है कि दम-खम में वे किसी से कम नहीं हैं। अलबत्ता भारतीय बुजुर्ग अभी इस मामले में काफी पीछे हैं, उन्हें अमेरिकी पर्वतारोही रिचर्ड बास से प्रेरणा लेनी है जो सन् 85 में साढ़े पचपन साल की उम्र में एवरेस्ट भ्रमण कर आए हैं। काबिले गौर बात यह है कि उनकी उम्र का रिकॉर्ड अभी कोई और नहीं तोड़ पाया है। ये सारे रिकॉर्ड विश्व प्रसिद्ध अल्पाइन जर्नल में प्रकाशित हो चुके हैं। यह पत्रिका, जो अब हर साल प्रकाशित होती है, विश्व का ऐसा अनूठा दस्तावेज है, जो सन् 1863 से लगातार पर्वत प्रेमियों को दिशा देती रही है। इसे विश्व का सबसे पुराना (सन् 1857 में लंदन में स्थापित) अल्पाइन क्लब निकालता है। क्लब की सदस्यता के लिए बकायदा चुनाव लड़ना पड़ता है।

और अंत में, हिमालय के इस सर्वोच्च शिखर का नाम एवरेस्ट क्यों पड़ा ? हालाँकि पर्वतारोहियों को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि जिस शिखर पर उनका लक्ष्य है, उसे दुनिया किस नाम से जानती है। चीनी-तिब्बती सैकड़ों वर्ष से इसे 'कू-मोलांग्मा' के नाम से जानते हैं। सन् 1852 मे अंग्रेजों ने गणितीय पद्धति से मालूम किया कि यह तो विश्व की सबसे ऊँची चोटी है। बंबइया फिल्मों की तर्ज पर उन्होंने इसे कच्चा नाम दिया 'चोटी नंबर पन्द्रह'। फिर तेरह बरस तक इस तरफ किसी का ध्यान नहीं गया। सन् 1856 में भारत के तत्कालीन सर्वेयर जनरल ने सुझाया कि उनके पूर्ववर्ती अधिकारी सर जॉर्ज एवरेस्ट के नाम पर इसका नामकरण कर दिया जाए। लिहाजा तब से इसे एवरेस्ट कहा जाने लगा। इसे लेकर काफी विवाद भी मचा। आप किसी भी तरह पुकारें, किन्तु न तो इससे उसकी शानदार ऊँचाई पर फर्क पड़ेगा और न उस दिव्य सम्मोहन पर जो, आदमी के शौर्य, साहस और संकटों से जूझने की कूवत को रह-रहकर पुकारता है।

गन्ना एक : गुण अनेक

गन्ने को आयुर्वेद में रसों का भंडार माना गया है। इसका रस स्वादिष्ट, पोषक, पौष्टिक और औषधीय गुणों के चमत्कारों से भरपूर होता है। इसे अनेक रोगों में बलकारक, रक्तापित–नाशक, स्नायुविक शक्ति–प्रदाता, कफ–नाशक, पाचन क्रिया में सहायक तथा विटामिन ए, बी, सी और के से भरपूर बताया गया है क्योंकि इसमें मैगिनशियम, लोहा, कैल्शियम लवण तथा फास्फोरस आदि विद्यमान होते हैं।"

गन्ने के रस में १५ प्रतिशत शर्करा होता है, जो मनुष्य को संक्रामक रोगों से बचाता है और हमारे शरीर को विकसित करता है। चरक तथा सुश्रुत के अनुसार "गन्ने का रस स्थितर, शीतल, मूत्रल, बलवर्द्धक, कंठ–हितकारी तथा वातहर होता है। गन्ने का रस शरीर के समस्त अंगों में शक्ति का संचार करता है और रक्त को शुद्ध करके हमें अनेक संक्रामक रोगों से बचाता है। गन्ने का रस फेफड़ों के लिए अमृत है। यह फेफड़ों को मुलायम बनाता है। हमें सदैव ताजे गन्ने का रस पीना चाहिए क्योंकि यह उच्च दर्जे का नर्व टॉनिक भी है।

दैनिक जीवन में हम गन्ने के उपयोग से कई रोगों से मुक्ति पा सकते हैं। इसमें कुछ उल्लेखनीय घरेलू उपयोग इस प्रकार हैं:– लू लगने पर गन्ने का रस पीने से शरीर में ठंडक और स्फूर्ति उत्पन्न होती है।, जब कभी पेशाब में रूकावट या जलन महसूस करें तो गन्ने का रस पीने से शीघ्र आराम मिलता है।, गन्ना चूसने से पथरी टुकड़े–टुकड़े हो जाती है।, अफरा, गैस, बदहजमी हो जाने पर गन्ने का रस गर्म करके इसमें आधा नीबू और एक चम्मच अदरक का रस मिलाने से तुरन्त फायदा होता है।, गन्ने का रस पीने से हिचकी का आना बन्द होता है।

यदि कब्ज की परेशानी हो तो एक गिलास गन्ने के रस में दो नीबू निचोड़ कर पी लेने से लाभ होता है। अदरक के साथ गन्ना चूसने से आवाज सुरीली होती है। रक्तहीनता होने पर दो गिलास गन्ने का रस पीने से इस रोग का निदान हो जाता है। गन्ने के रस में अनार का रस मिलाकर पीने से रक्तातिसार मिटता है।, किसी भी तरह के त्वचा रोग जैसे– दाद, खाज, एक्जिमा होने पर नीम का रस और गन्ने का रस मिलाकर पीने से रक्त की शुद्धि के साथ–साथ त्वचा रोग से भी मुक्ति मिलती है।, रक्त में शर्करा की कमी तथा चक्कर आने की स्थिति में इसका रस पीने से फायदा होता है।

खूनी दस्त होने पर गन्ने के रस में अनार का रस मिलाकर पीने से शीघ्र ही आराम मिलता है। गन्ना चूसने से पाचनक्रिया में बहुत सुधार होता है।

गर्मियों में गन्ना चूसने से नेत्रों की ज्योति बढ़ती है। गन्ने के रस का सेवन करने से बल वीर्य की वृद्धि होती है और शरीर बलवान हो जाता है। यदि किसी की भूख न मिटती हो, दिन भर कुछ न कुछ खाता रहता हो तो गन्ने का रस

—नोतन लाल

दिन में तीन बार सेवन करने से सप्ताह भर में ही उसकी खुराक सामान्य हो जाती है। स्मरण शक्ति तीव्र करने के लिए गन्ने का रस और पुराना गुड़ लाभदायक होता है। गन्ने को चूसने से दांतों की चमक भी बढ़ती है।

गन्ना चूसने से शरीर को अधिक ऊर्जा भी प्रदान होती है। यदि कुकुरखांसी हो गई हो, तो गन्ने के रस में मूली का रस मिलाकर पीने से फायदा होता है। मुंह में बदबू आने पर प्रातःकाल गन्ना चूसने या रस को थोड़ी देर मुंह में रखकर धीरे–धीरे पीने से मुंह की बदबू दूर हो जाती है। पित्त की उल्टी होने पर एक गिलास गन्ने के रस में दो चम्मच शहद मिलाकर पीने से तुरन्त लाभ होता है। छोटे बच्चे के पेट में कीड़े दूर करने के लिए उन्हें खाने से पूर्व १०० ग्राम गन्ने का रस पिलाने से लाभ होता है। छोटे बच्चे के पेट में कीड़े दूर करने के लिए उन्हें खाने से पूर्व १०० ग्राम गन्ने का रस पिलाने से लाभ होता है।

कैसे अपनी रक्षा करते हैं पौधे शत्रुओं से?

पंकज अवधिया
कृषि वैज्ञानिक

जब किसी पर जानवरों जिसमें कि कीट भी सम्मलित हैं, का आक्रमण होता है तब पौधेन तो भाग सकतें हैं और न ही कही खड़े रह कर अपने शरीरिक अंगो के माध्यम से अपनी रक्षा कर पाते हैं। ऐसी परिस्थितियों में पौधे क्या करते हैं?क्या वे असहाय हो जाते हैं और शत्रुओं के सामने आत्मसमर्पण कर देते हैं? इन प्रश्नों के उत्तरों की खोज मनुष्य प्राचीन काल से ही करता आ रहा हैं। देश–विदेश में इस पर विस्तृत शोध चल रह हैं। इन शोधों में से कुछ शोधों के परिणाम अब सामने आने लगे हैं। इन परिणामों के आधार पर पौधों के आत्मरक्षा के ढंग को समझने का रास्ता खुल गया है।कुछ पौधों के आत्म रक्षा तंत्र के विषय में जानकारी देने का प्रयास इस लेख में किया गया हैं।

वैज्ञानिक अनुसंधानों से पता चला है कि पौधे अपने शत्रुओं से रक्षा के लिये नाना प्रकार के घातक रसायनों का स्रावण करते हैं। क्या ये घातक रसायन पौधे शत्रुओं से अपनी रक्षा के लिये ही बनाते हैं या फिर अन्य शरीरिक क्रियाओं में भी इन घातक रसायनों का योगदान हैं? इस प्रश्न का उत्तर दिया कृषि वैज्ञानिक डॉ. फ्रैंकनेट ने। उन्होंने अपने शोधों से पाया कि ये रसायन वास्तव में पौधों की वृद्धि के लिये आवश्यक नहीं होते हैं। ये प्राथमिक चयपचय किया से नहीं बनते हैं बल्कि द्वीतियक चयपचय किया से बनते हैं। इन रसायनों को एलिलोकेमिकल (एलिलो रसायन) कहा जाता हैं। ये रसायन अलग–अलग पौधों में अलग–अलग प्रकार के होते हैं। विभिन्न पौधे में विशेष प्रकार के एलिलो रसायन होते हैं। यदि यह कहा जाय कि किसी विशेष एलिलो रसायन से उस पौधे विशेष को पहचाना जा सकता है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। ये रसायन शत्रुओं को फांसने ,भगाने व मारने के काम आते है। इन एलिलो रसायन में से एक है सिनिग्रिन। (यह रसायन सरसों कुल के पौधों में पाया जाता है। इन फसलों पर आक्रमण करने वाली काली तितली पैपिलो पॉलीजिनीस को जब जलरदस्ती सरसों कुल की फसलों सेवन कराया गया तो उनकी वृद्धि पर नकारात्मक प्रभाव देखा गया। सिनिग्रिन के अलावा इन फसलों एलिल आइसो थायोसाइनेट नामक घातक रसायन भी पाया जाता है।वैज्ञानिक अनुसंधानों से पता चला है बरसीम के पौधों में सायनोजेनिक ग्लूकोसाइड पाया जाता है। ये रसायन पतियों में रहता है। जब इन पतियों को क्षति पहुँचायी जाती है तो बरसीम की पतियों में उपस्थित दो विशेष प्रकार के एन्जाइम इन जटिल रसायनों को तोड़कर सायनाइड नामक घातक विष बनाते हैं जो कि शत्रुओं को धराशायी कर देता है। इस तरह के एन्जाइमों की उपस्थिति बरसीम की ही विशेषता हैं। यूं तो कई तरह के पौधों में सायनोजेनिक ग्लूकोसाइड होता है पर बरसीम की तरह यह घातक साइनायड में नहीं बदलता है।

> अजुगा रिमोटा नामक पौधे पर आर्मी वर्म नामक कीट का आक्रमण होता है तो ये पौधे फाइटोएकडायसोन्स नामक रसायन का स्रावण करते हैं। यह रसायन कीट के वृद्धि हार्मोन की तरह ही रासायनिक संरचना वाला होता है। इन रसायन के संपर्क में आने से मादा कीटों में जनन विकृतियाँ आ जाती हैं और अंडो से तीन से चार सिरों वाले विचित्र शिशु निकलते हैं जो कि कुछ ही समय बाद मर जाते हैं।

महकुआ (एजिरेटम कॉनिजॉयडीस) एक घातक खरपतवार है जो कि फसलीय पौधों से नमी, प्रकाश व भोजन के लिये प्रतियोगिता करता है और फसलों की बृद्धि पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। चूंकि यह खरपतवार है इसलिए शत्रुओं से अपनी रक्षा करने के लिये उसे मानवीय सहायता नहीं मिलती है। इसे प्रकृति ने रसायन के रूप में घातक हथियार दे रखा है जिसकी सहायता से ये अपनी रक्षा करता है। वैज्ञानिकों ने इन रसायनों को प्रोकोसिन व।प्रोकोसिन।। नाम दिया

है। ये रसायन इन कीटों की हार्मोन उत्पादन क्षमता को नष्ट कर देते हैं जो कि महकुआ पर आक्रमण करते हैं। ये रसायन अमेरिकी काकरोच के उन रसायनों को नष्ट कर देते हैं जो कि मादा काकरोच नर काकरोच को आकर्षित करने के लिये श्रावित करती है। इससे दोनों में संयुग्मन नहीं हो पाता है और आगे की पीढ़ी तैयार नहीं हो पाती है। इन दोनों रसायनों में से प्रोकोसिन।। कई प्रकार के कीड़ों के अंडों की उर्वरता को नष्ट कर देते हैं। कोलेरेडो में आलू की फसल को चौपट कर देने वाले कीट पोटेटो बीटल जब महकुआ के पौधों को अपना भोजन बनाते हैं तो उनके आहार–व्यवहार में भारी परिवर्तन आ जाते हैं। और सम्य समय से पहले ही वे निष्क्रिय अवस्था में मिट्टी के अंदर विश्राम के लिये चले जाते है।।

कई प्रकार के पौधे कीटों को बेवकूफ बनाने से भी नहीं चूकते हैं। इसका एक उदाहरण जंगली आलू के पौधे का है। आलू में माइजस पर्सिकी नामक रस चूसने वाले कीट का प्रकोप होता है। जब इन कीटों पर कोई अन्य कीट आक्रमण करता है तो माइजस खतरे के सूचक एक विशेष प्रकार के रसायन छोड़ते हैं। इन रसायनों के कारण इस कीट के साथी खतरे को भाप जाते हैं और वहाँ से भाग खड़े होते है। जंगली आलू के पौधो की शरारत देखिये। यह पौधा अपने अंदर से जान बूझकर खतरे वाला रसायन छोड़ता है जिससे माइजस कीट शत्रु कीट का आक्रमण हो रहा है ऐसा सोचकर भाग खड़े होते हैं, और इस प्रकार जंगली आलू के पौध ो को माइजस से मुक्ति मिल जाती है। पर सभी पौधे सभी प्रकार के पौधों को बेवकूफ नहीं बना पाते हैं। रेगिस्तान में मिल्कवीड नामक खरपतवार पाया है।ये खरपतवार अपनी रक्षा के लिए कई प्रकार के तंत्रिका तंत्र व रक्त परिवहन तंत्र को भिन्न–भिन्न कर देते हैं। कि घातक रसायनों का इन पर कोई असर नहीं पड़ता है। उल्टे जब इन टिडों पर दूसरे बड़े कीटों का आक्रमण होता है तो ये टिडे मिल्कवीड के पौधे का रस लेकर पिचकारी के रूप में शत्रुओं पर छोड़कर उन्हें घायल कर देते है और अपनी रक्षा करने में सफल हो जाते हैं।

एक बार जब अमेरिकी शोधकर्ता पाइरोकोरिस नामक कीट पर अध्ययन कर रहे थे तो उन्होने यह महसूस किया कि कीड़ों को रखने के लिये बनाये गये डब्बो में जब अमेरिकी अखबार व पत्रिकाओं को बिछाया जाता है तो इन कीड़ों की वृद्धि पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। ऐसा यूरोपीय व जापानी अखबार व पत्रिका बिछाने पर नहीं होता था। शोधकर्ता आश्चर्य में पड़ गये कि आखिर माजरा क्या है कई वर्षों तक किये गये गहन शोधों से पता चला कि ये प्रभाव उत्तरी अमेरिका के घने जंगलों के पाये जाने वाले उन जंगलो का है जिससे कि तैयार कागज पर अमेरिकी अखबारों व पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जाता था। यह वृक्ष था एबीस बालसामिया (बालसम फर)। बाद में इस वृक्ष पर विस्तृत शोध किये गये और एक घातक रसायन की पहचान की गई जो कि जो कि शत्रुओं से अपनी रक्षा के लिये यह वृक्ष स्त्रावित करता है। इस रसायन का नाम जुआबियोन रखा गया।

अजुगा रिमोटा नामक पौधे पर आर्मी वर्म नामक कीट का आक्रमण होता है तो ये पौधे फाइटोएकडायसोन्स नामक रसायन का स्त्रावण करते हैं। यह रसायन कीट के वृद्धि हार्मोन की तरह ही रासायनिक संरचना वाला होता है। इन रसायन के संपर्क में आने से मादा कीटों में जनन विकृतियाँ आ जाती हैं और अंडो से तीन से चार सिरों वाले विचित्र शिशु निकलते हैं जो कि कुछ ही समय बाद मर जाते हैं। घातक खरपतवार गाजर घास के पौधें में छोटे–छोटे रोम पाये जाते हैं। ये रोम विषयुक्त होते हैं। इस रसायन का मुख्य प्रभाव तंत्रिका तंत्र पर होता है।

बहुत से पौधे शत्रुओं का नाश करने वाले रसायनों के संग्रहित करके नहीं रखते बल्कि आवशकता होने पर उसका निर्माण करते हैं। टमाटर का पौधा भी ऐसा ही है। जब टमाटर के पौधे पर पत्तियों को चबाने वाले कीटों का आकमण होता है तो वे प्रोटीनेज इनहिबिटर नामक रसायन का निर्माण करते हैं। ये रसायन कीटों के शरीर में कई प्रकार के पौध प्रोटीनों का अवशोषण रोककर पाचन किया को प्रभावित कर देता है। सिटका विलो नामक वृक्ष पर जब कई प्रकार की इल्लियों का आकमण होता है तो ये पौधे एक प्रकार के सुगंधित रसायन का स्त्रावण करते हैं। ये सुगंधित रसायन आस–पास के अन्य विलो पौधे का सावधान करने के लिये स्त्रावण होता है। इसके अलावा जिन पत्तियों पर इल्लियाँ आकमण करती हैं उन पत्तियों का पोषक तत्व तुरंत ही दूसरी पत्तियों पर स्थानांतरित कर दिया जाता है ताकि वृक्ष को अधिक नुकसान न पहुँचे।

पौधो के रक्षा तंत्र को समझने कई अनुसंधान देश–विदेश में जारी हैं। पौधों व कीटों के बीच रासायनिक युद्ध की प्रकिया को जानने के कम में कई ऐसे रसायनों का पता लग रहा है जो कि प्राकृतिक कीटनाशक के रूप में उपयोगी हैं। इससे जैविक कृषि से जुड़े शोध कर्ताओं को भी काफी उत्साह मिला है। उम्मीद की जानी चाहिये कि निकट भविष्य में पौधों को प्रकृति द्वारा दिये गये इस उपहार के विषय में हम विस्तार से जान पायेंगे।

बाल पर्यावरण चेतना क्लब

प्रिय बच्चों,

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि 'पर्यावरण चेतना' ने आपके लिए 'बाल पर्यावरण चेतना क्लब' का गठन किया है। जिसके अन्तर्गत आप हमें अपनी रचनाएं, लेख, कविताएं आदि प्रेषित कर सकते हैं। तथा साथ ही अपना पासपोर्ट साइज फोटा, नाम, स्कूल का नाम व पता तथा अन्य विवरण भी भेजें जिसे आपकी रचनाओं के साथ प्रकाशित किया जाएगा।

इस क्लब के अन्तर्गत पत्र–मित्र कॉलम भी शुरू किया जा रहा है। जिसमें आपका चित्र व नाम, पता आदि प्रकाशित किया जाएगा। जिससे आपके अच्छे व प्यारे दोस्त बनेंगे। आशा है आप सभी को 'बाल पर्यावरण चेतना क्लब' अवश्य ही पसंद आएगा और आप अपनी रचनाएं भेजेंगे। प्रकाशित उत्कृष्ट रचनाओं को क्लब द्वारा पुरस्कृत भी किया जाएगा। जिसके अन्तर्गत पुरस्कृत प्रतिभागियों को एक वर्ष तक निःशुल्क 'पर्यावरण चेतना' भेजी जाएगी। साथ ही जिन छात्रों की रचनाऐं छपेंगी उनको भी रचनाओं के छपने पर उक्त अंक की प्रति निःशुल्क प्रेषित की जाएगी। इसके अलावा यदि आप, आपके मित्र, स्कूल व अध्यापकों आदि के द्वारा 'पर्यावरण संरक्षण' के लिए जो भी प्रयास किए जा रहे हों तो उन्हें भी 'पर्यावरण चेतना' को प्रषित करें जिन्हें हम प्रकाशित करेंगे जिससे इस कार्य के लिए अन्य जो लोग आपका सहयोग करना चाहते हैं वे आपसे संपर्क कर सकें और लोगों में पर्यावरण चेतना जागृत की जा सके।

साथ ही हम आपको यह भी बताना चाहेंगे कि यदि आप 'बाल पर्यावरण चेतना क्लब' की सदस्यता लेना चाहते हैं तो इसके अन्तर्गत हम आपको विशेष छूट के रूप में मात्र सौ रूपए में एक वर्ष तक 'पर्यावरण चेतना' पत्रिका प्रेषित करेंगे तथा साथ पर्यावरण संरक्षण से संबंधित विविध कार्यक्रमों में भागीदारी के लिए विशेष रूप से आमंत्रित करेंगे।

हमारा पता हैः–

बाल पर्यावरण चेतना क्लब
पर्यावरण चेतना
कीर्ति शिखर अपार्टमेंट्स
निकट विकास दीप
२२, ऑफ स्टेशन रोड, लखनऊ
फोनः– ६३८६२६, ४८२२८८

अध्यापकों / अभिभावकों से

'बाल पर्यावरण चेतना' क्लब के गठन के अवसर पर बहुत ही हर्ष के साथ हम आपको सूचित करना चाहते हैं कि आप अपने व स्कूल के बच्चों की रचनात्मक क्षमताओं को विकसित करने और पर्यावरण संरक्षण में योगदान देने के लिए छात्रों को इस दिशा में प्रेरित करें। स्कूल एवं छात्रों द्वारा किए जा रहे पर्यावरण संरक्षण के कार्यों के बारे में आप हमें सूचित करें एवं इस विषय में जानकारी भी हमें प्रेषित करें जिसे हम पर्यावरण चेतना के 'बाल पर्यावरण चेतना क्लब' स्तंभ में प्रकाशित कर सकें। रचनाओं के साथ छात्र का नाम व फोटो, पता आदि भी भेजें जिसे हम प्रकाशित करेंगे।

रचना के प्रकाशन पर अच्छी रचना को पुरष्कृत किया जाएगा जिसे भेजने वाले छात्र को एक वर्ष तक निःशुल्क 'पर्यावरण चेतना' पत्रिका प्रेषित की जाएगी। अध्यापकगण भी अपने स्कूल की व अपनी रचनाओं को प्रेषित कर सकते हैं जिन्हें 'पर्यावरण चेतना' में प्रकाशित किया जाएगा। इसके अतिरिक्त जो भी छात्र 'बाल पर्यावरण चेतना' क्लब के सदस्य बनना चाहते हैं उन्हें विशेष छूट के अन्तर्गत मात्र सौ रूपए में क्लब की सदस्यता दी जाएगी जिसमें उन्हें एक वर्ष तक 'पर्यावरण चेतना' प्रेषित की जाएगी तथा पर्यावरण से संबंधित गतिविधियों एवं कार्यक्रमों में उन्हें भागीदारी के लिए विशेषरूप से आमंत्रित किया जाएगा।

उल्टा सीधा एक समान

प्यारे बच्चों, आपने अपनी स्कूल की पढ़ाई तो पूरी कर ली और परीक्षा भी पास कर ली है, लेकिन आप कितने बुद्धिमान हैं, यह हम आपको बताएँगे। आप अपनी बुद्धिमान की परीक्षा के लिए हमारे इन सवालों का जवाब दीजिए और देखिए आपके कितने जवाब सही हैं।

1. पानी में यातायात का साधन- जहाज
2. एक प्रकार के घी का नाम - डालडा
3. एक रोशनी देने वाली चीज- बल्ब
4. एक प्यारा रिश्ता- चाचा
5. बच्चों के पेंसिल बॉक्स में रखी जाने वाली चीज- रबर
6. इकलौता लड़का घर में सबका होता है- लाडला
7. भगवान को करते हैं- नमन
8. ज्यादातर किसी लंबे पदार्थ को रखने वाली वस्तु- शीशी
9. एक भारतीय भाषा का नाम- मलयालम
10. शरीर का एक अंग- नयन
11. मनोरंजन का साधन जिसमें जानवर भी होते हैं- सर्कस
12. किसी मेहमान को विदा करते समय करते हैं- टाटा
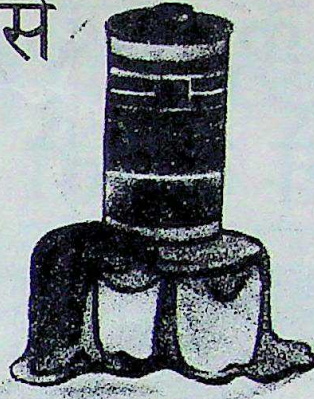
सेल से बिजली कैसे पैदा हो जाती है?

हम सभी लोग टॉर्च और ट्रांजिस्टर-रेडियो में सेलों का प्रयोग करते हैं। टॉर्च का बटन दबाते ही उसमें लगा बल्ब जल उठता है।

इसी तरह ट्रांजिस्टर का स्विच दबाते ही उसमें से आवाज आने लगती है। क्या तुम जानते हो कि सेलों से बिजली कैसे पैदा हो जाती है?

इन सेलों में जस्ता का एक बेलनाकार बर्तन होता है। इसके बीच में पीतल की टोपी चढ़ी हुई एक कार्बन की छड़ रखी जाती है। जस्ता ऋणात्मक इलेक्ट्रोड और कार्बन धनात्मक इलेक्ट्रोड का काम करता है। कार्बन की छड़ के चारों ओर अमोनियम क्लोराइड, जिंक क्लोराइड, मैग्नीज-डाई-ऑक्साइड और कार्बन के चूर्ण की गाढ़ी लेई भरी जाती है। इस लेई के चारों ओर बेलनाकार शक्ल में प्लास्टर ऑफ पेरिस, अमोनियम क्लोराइड और जिंक क्लोराइड की लेई रखते हैं, जो प्लास्टर ऑफ पेरिस के कारण सख्त हो जाती है। सेल की ऊपरी सतह पर पिच की तह जमा दी जाती है। जस्ते के बर्तन को गत्त के आवरण से ढक दिया जाता है; यही हमारा विद्युत सेल है।

इस सेल में जस्ते के बर्तन और अमोनियम क्लोराइड के बीच एक रासायनिक क्रिया होती है, जिसके फलस्वरूप बिजली पैदा होती है। इस क्रिया में पैदा होने वाली हाइड्रोजन गैस को मैग्नीज ऑक्साइड पानी में बदल देता है। ये सेल तब तक चलते हैं, जब तक कि सम्पूर्ण मैग्नीज-डाई-ऑक्साइड हाइड्रोजन से क्रिया करके मैग्नीज ऑक्साइड में नहीं बदल जाता। ये सेल कैमरा, फ्लैश लाइट, टेलीग्राफ आदि उपकरणों में भी प्रयोग किए जाते हैं।

—राजकुमार

हाथ मिलाने का सिलसिला कब शुरू हुआ?
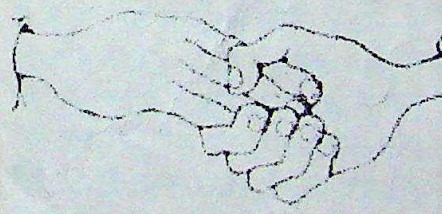
हाथ मिलाना संसार में अभिवादन का एक जाना-पहचाना तरीका बन गया है। जहाँ भी लोग मिलते हैं, एक दूसरे से हाथ मिलाकर दोस्ती और अपनेपन का परिचय देते हैं, लेकिन अधिकतर लोगों को यह पता नहीं कि हाथ मिलाने का सिलसिला शुरू कैसे हुआ?

आदिकाल से ही हाथ को शक्ति का प्रतीक माना जाता है। शुरू-शुरू में हाथ का प्रयोग दुश्मनों का सफाया करने, जानवरों को मारने और हथियार बनाने में किया जाता था। विकसित भाषा के अभाव में जब कोई व्यक्ति किसी की तरफ हाथ बढ़ाता था, तो यह माना जाता था कि उसका इरादा नेक है और वह दोस्ती करना चाहता है। प्राचीन धर्मों में भी हाथ को शक्ति का प्रतीक माना गया है। यूनानी लोग जब अपने देवताओं की पूजा करते थे तो सम्मान में अपने हाथ ऊपर उठा देते थे। किसी समय हथेली से हथेली जोड़कर नमस्ते करने को सम्मानसूचक चिह्न माना जाता था। भारत व एशिया के कई देशों में यह परंपरा आज भी प्रचलित है। अरबी लोग सैकड़ों साल पहले अपने से बड़े व्यक्ति का हाथ चूमकर उसके प्रति सम्मान प्रदर्शित किया करते थे। लेकिन इससे हाथ चूमने वाले व्यक्ति में हीन भावना पैदा होती थी, इसलिए इस प्रथा को धीरे-धीरे बंद कर दिया गया।

हाथ मिलाने का सिलसिला यूनान से शुरू हुआ। प्राचीन यूनान में जब कोई व्यक्ति किसी अजनबी से दोस्ती करना चाहता था, तो उसकी तरफ दायाँ हाथ बढ़ा देता था। धीरे-धीरे यह सिलसिला इतना बढ़ा कि हाथ मिलाना एक सामान्य बात हो गई। आज हम जब भी किसी व्यक्ति से मिलते हैं तो बिना सोचे-समझे ही हमारा दायाँ हाथ उस व्यक्ति की ओर बढ़ जाता है। आज सारे संसार में हाथ मिलाने को मित्रता का प्रतीक माना जाता है।

खाना खाने के बाद हमें नींद क्यों आने लगती है?

यह एक आम अनुभव की बात है कि अधिक भोजन करने के बाद हमें नींद-सी आने लगती है और शरीर में शिथिलता आ जाती है। खाना खाने के बाद नींद काफी गहरी आती है। भोजन करने के बाद नींद आने का कारण निम्न प्रकार समझा जा सकता है : सामान्य व्यक्ति के शरीर के लगभग 5 लीटर रक्त होता है। यह रक्त सारे शरीर में संचरण करता रहता है। शरीर के विभिन्न भागों में रक्त की मात्रा अलग-अलग होती है, जो आवश्यकतानुसार समय-समय पर बदलती रहती है। सामान्य स्थितियों में हृदय से आने वाले रक्त का 28 प्रतिशत जिगर को, 24 प्रतिशत गुर्दो को, 15 प्रतिशत माँसपेशियों को, 14 प्रतिशत मस्तिष्क को और शेष 19 प्रतिशत शरीर के दूसरे भागों को जाता है। यह अनुपात कार्यों के अनुसार बदलता रहता है।

जब हम भोजन करते हैं, तब भोजन की पाचन क्रिया के लिए पेट को रक्त की अधिक आवश्यकता होती है। भोजन के बाद शरीर के खून का बहुत सारा हिस्सा पेट को प्रवाहित हो जाता है परिणामस्वरूप मस्तिष्क में रक्त की मात्रा कुछ समय के लिए कम हो जाती है। मस्तिष्क में रक्त की मात्रा कम हो जाने से उसकी क्रियाशीलता मंद हो जाती है।

मस्तिष्क की क्रियाशीलता कम होना सुस्ती या नींद का कारण है। मस्तिष्क में रक्त को उचित मात्रा पहुँचने में समय लगता है। वास्तव में यह एक ऐसी स्थिति है, जब शरीर को आराम की आवश्यकता होती है, इसलिए भोजन करने के बाद थोड़ी देर आराम करना बहुत जरूरी है।

—अंकुर

जीभ और दाँत

हम सब के मुँह में एक जीभ होती है और दाँत होते हैं, लेकिन क्या तुम जानते हो, जीभ किस काम आती है? जीभ का महत्व जानने के लिए उसे पकड़ो और 'हैलो' बोलने की कोशिश करो। अब तुम समझ गए होंगे कि जीभ बोलते वक्त हमारी कितनी मदद करती है। इसके अलावा जीभ हमें खाने का स्वाद भी बताती है। हमारी जीभ पर कुछ छोटी-छोटी रचनाएँ होती हैं, जिन्हें खाद्य ग्रंथि यानी टेस्ट बड्स कहा जाता है। यह तो तुम सब जानते हो कि दाँत चबाने के काम में आते हैं। हम जैसे-जैसे बड़े होते हैं, हमारे शरीर के सब भाग शरीर के अनुसार बढ़ते जाते हैं, लेकिन दाँत बड़े नहीं हो पाते, इसलिए ये बदलने के लिए दाँत अपने आप टूट जाते हैं। इन दाँतों को दूध के दाँत कहा जाता है। यह दाँत पाँच या छह साल में टूटते हैं और उनकी जगह नए बड़े दाँत आ जाते हैं। हमारे मुँह में कुल 32 दाँत होते हैं।

—आजाद

हमारा मष्तिष्क क्या काम करता है?

मस्तिष्क हमारे शरीर का महत्वपूर्ण अंग है। यह केंद्रीय नाड़ी संस्थान का हिस्सा है। यह कोशिकाओं से बना होता है। हमारे मस्तिष्क में लगभग दस अरब कोशिकाएँ होती हैं। मनुष्य के मस्तिष्क का भार लगभग 1.4 क्रि.ग्रा. होता है। यह खोपड़ी में होता है। सोना, उठना, बैठना, चलना, फिरना, भोजन का पचना, शरीर के तापमान को एक-सा रखना, साँस लेना, देखना, सुनना आदि समस्त शारीरिक क्रियाएँ मस्तिष्क द्वारा ही नियंत्रित की जाती हैं। हमारे मस्तिष्क के तीन हिस्से होते हैं- सेरीब्रम, सेरीबेलम और मेडुला ओबलौंगटा।

सेरीब्रम - यह मस्तिष्क का सबसे महत्वपूर्ण भाग है। यह खोपड़ी के पीछे के हिस्से में ऊपरी सतह पर स्थित होता है। यह दो गोलार्द्धों में बँटा हुआ होता है। इसकी सतह पर बहुत से घुमाव और झुर्रियाँ होती हैं। यह सतह ग्रेमैटर से बनी होती है। इस सतह के नीचे व्हाइट मैटर होता है, जो बहुत से तंतुओं से मिलकर बना होता है। मस्तिष्क का यह हिस्सा सभी ऐच्छिक क्रियाओं पर नियंत्रण करता है। देखना, सुनना और कुछ माँसपेशियों की गति इसी भाग द्वारा नियंत्रित होती है।

सेरीबेलम - खोपड़ी का नीचे का हिस्सा सेरीबेलम कहलाता है। यह हिस्सा सेरीब्रम के नीचे स्थित होता है। यह शरीर को संतुलन में रखता है और माँसपेशियों में समन्वय स्थापित करता है। यदि मस्तिष्क के इस भाग में चोट लग जाती है, तो आदमी चल-फिर नहीं सकता।

मेडुला ओबलौंगटा - मस्तिष्क का तीसरा हिस्सा अर्थात् मेडुला ओबलौंगटा का आकार अंगूठे के ऊपरी भाग के समान होता है। यह रीढ़ की हड्डी के ऊपरी सिरे में स्थित होता है। मस्तिष्क का यह हिस्सा साँस लेने की क्रिया, दिल की धड़कन, पाचन क्रिया आदि को नियंत्रित करता है। यहीं से नाड़ी-तंतु रीढ़ की हड्डी को जाते हैं। मस्तिष्क का बायाँ हिस्सा शरीर के दाएँ भाग को और दायाँ हिस्सा शरीर के बाएँ भाग को नियंत्रित करता है। मनुष्य का मस्तिष्क खोपड़ी की मोटी हड्डियों के बीच में सुरक्षित रहता है, लेकिन सिर में चोट लगने से मस्तिष्क के किसी भी हिस्से को हानि हो सकती है इसलिए सिर को चोट लगने से हमेशा बचाने का प्रयास करना चाहिए। यदि मस्तिष्क को थोड़ी देर के लिए भी ऑक्सीजन न मिले तो भयानक परिणाम हो सकते हैं।

कुछ रोगों के आक्रमण से मस्तिष्क के कार्यकलापों में अंतर आ जाता है। इससे मनुष्य के व्यवहार और दक्षता में भी अंतर आ जाता है। कुछ औषधियों से भी मस्तिष्क पर प्रभाव पड़ता है, इसलिए अधिक औषधियों का सेवन भी हानिकारक होता है। मस्तिष्क हमारे शरीर का महत्वपूर्ण भाग है, इसलिए इसकी सुरक्षा करना हमारा पहला कर्तव्य है। —बंटी

पक्षियों की मजेदार बातें

घरेलू कौओं को घर में आने-जाने वालों की शक्लें याद रहती हैं। शायद इसलिए घर की मुंडेर पर कौओं की कांव-कांव को मेहमानों के आगमन का सूचक माना गया है। कौआ बहुत ही समझदार पंछी है। यह अपना घोंसला उजाड़ने वालों को कई सप्ताह बल्कि महीनों तक नहीं भूलता और उसके सिर पर बदले का भूत सवार रहता है। अमेरिका की फुदकी चिड़िया बिलसोनिया सिट्रिना बहुत मधुर गीत-गाती है। स्कारलट मिनीवेट चटकीले रंगों वाला पक्षी है। जब वे झुंड बनाकर चलते हैं तो आंखें चौंधिया जाती हैं। शत्रुओं से सुरक्षा भी ये खूब कर लेते हैं। इनके घोंसले प्याले के आकार के होते हैं, जिनमें घास-फूस और जड़ों का नर्म आसन होता हैं। वे इसे बड़े लगन से बनाते हैं। इनके बाहरी भाग पर यह पक्षी दरख्तों की छाल के टुकड़े चिपका देते हैं। इसी तरह के एक विदेशी पक्षी चिकारी और जोय भी बड़े खूबसूरत घोसलों में भोजन बचाकर रखते हैं। याददाशत के मामले में अफ्रीकी तोता भी किसी से कम नहीं होता। यह लगभग 40 चीजों को पहचानता है। इतना ही नहीं, यह आकृति या रंग के हिसाब से भी उनका सही वर्गीकरण कर लेता है। अपना भारतीय तोता भी याददाशत के मामले में अफ्रीकी तोते से 19 नहीं बैठता।

वैदिक काल से ही इन तोतों को श्लोक कंठस्थ कराए जाते रहे हैं। आगे चलकर रामायण की चौपाइयां भी तोते रटने लगे। मधुमक्खियां फूलों का रंग पहचानने में माहिर होती हैं। —श्वेता

सीख-चिड़ियाघर से

शेर -
जंगल में अपनी ताकत का
मुझको था बड़ा ही घमंड
फँस गया एक दिन जाल में
पिंजरे में होना पड़ा बंद।

बंदर -
देखो हम उछलते-कूदते
बच्चों तुम हँसते रहते
हम भी शायद आदमी होते
सदा ना हम पेड़ पर होते।

भालू -
चोरी, चुराने की आदत
शहद खाए बिना मेहनत
सजा मिली है मुझे देखो
बंद पड़ा हूँ पिंजरे अब।

कबूतर -
खूब जनसंख्या बढ़ाने की
जो हम नहीं करते नादानी
यूँ नहीं झगड़ना पड़ता
पाने के लिए दाना-पानी।

उल्लू -
रातों में यदि जागोगे देर तक
तो सुबह जल्दी नहीं उठ पाओगे
बनोगे मुझ सरीखे उल्लू
बुद्धिहीन रह जाओगे।

हाथी -
खूब ज्यादा खाने का
पाया हमनें यह नतीजा
हमारे जैसा भारी-भरकम
जानवर नहीं जगत में दूजा।

खरगोश -
खतरा सामने होने पर
तेज रफ्तार बचाती है
बेवजह की तेज रफ्तार
खतरों को स्वयं बुलाती है।

भेड़िया-
बुरे काम बुरे होते हैं
चाहे करो झुंड के साथ
साथियों के बहकावे में
गलत ना करना कोई काम।

- एम. के. सांघी

पानी की बचत

टिंकू खूब नहाता था
पानी व्यर्थ बहाता था।
ट्यूबवेल था जो घर में
पानी दिन भर आता था।
टिंकू के दादा सयाने थे
समाज सेवी जाने-माने थे।
उन्होंने टिंकू को पास बैठाया
प्यार से उसे बहुत समझाया।
वर्षा का जल धरती में
बूँद-बूँद करके इकट्ठा होता है।
सुरक्षित भंडार के रूप में यह
धरती में सोता रहता है।
विज्ञान की उन्नति का
सुखद फल हमनें पाया
ट्यूबवेल के माध्यम से
धरती का जल सतह पर आया
कई वर्षों में तैयार हुआ
यह जल भंडार नहीं है अनंत
यदि इसे हमनें व्यर्थ बहाया
जल्दी यह हो जाएगा खत्म।
फिर हम न केवल
पीने के पानी को तरस जाएँगे
बल्कि अनाज न पैदा होगा तो
भूखे ही मर जाएँगे।
बात टिंकू की समझ में आ गई
दादाजी की सीख मन को भा गई।

दिल्ली, हिमाचल प्रदेश एवं राजस्थान के शिक्षा विभाग, उ0 प्र0 शासन के वन विभाग, शिक्षा विभाग, पंचायत राज विभाग, पर्यावरण निदेशालय एवं स्थानीय निकाय द्वारा अनुमोदित पत्रिका
डाक पंजीकरण सं0- LW/NP-882

स्वत्वधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक मीता सिंह द्वारा नीलम प्रिंटर्स, नरही, लखनऊ फोन - 239672 से मुद्रित